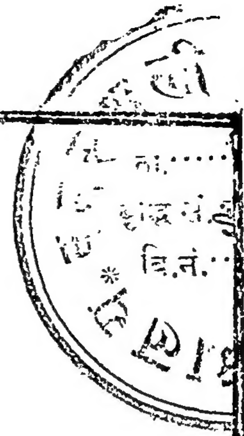


वंशभास्करमें

को

बुधसिंहचरित्र

जाकौं

श्रीमन्महाराजाधिराजमहारावराजासाहि

बश्री१०८रामसिंहजूबहादुरजी,सी,ऐस,आई

सी,आई,ई,

की

आज्ञातें

कविसूर्यमल्लचारणबूंदीनिवासीके

एकविचक्षणदीरानाममिश्रणके

ने सुललित

छन्दोंमें

बनायो

सोअबश्रीमन्महाराजाधिराज

हिबश्री१०८रघुबीरसिं

मूल्य) नाथनरा

बिलाजिल्द ६०२७/

॥श्रीपरमेश्वरायनमः॥गीर्वाणभाषा
शालिनी॥ वन्देथाहंसाञ्जलिः प्रीतिपू
र्वंचण्डीदानंसीयवसारसार्यम्॥ हैला
रण्यप्रस्फुरद्धोरदावंतीव्राद्वैतंपारिडता ४
ञ्जुनाथम्॥ १ ॥ प्रायोमिश्रिताप्राकृत
भाषा॥दोहा॥जुगलबानमुनिइंदु ४
१७५२ मित विक्रमअब्द बिबेक॥जरा
भीरुतिथिपोसवदि बुद्धसिंहअभिसे
क॥ २ ॥षट्पदी॥तीरथसलिलसम
स्तउचितनिजमस्तकसिंचिय ओषध
बिहितउपेतनिगमसंत्रनपबिन्नकिय
हवनबस्तुहबिरसनमध्य आज्यादिय अ
कुत॥कुवलुगानगायकनबिबिधबंदी
नबिरुदकृत दियदानद्विजनप्रभुसुरव
लखिसुरीतिसुरपतिलजियबुद्धिबजा

तस्पतिब्याहकोरवलनखंडखुसकबजि
य ॥ ३ ॥ पज्झटिका ॥ बुधसिंहभूपविय
पंचव्याहसुलखटरुसुतादुवलहियताह
॥ उम्मेदकुमारिपहिलीउमाहिजयसिंहरा
नातनुजाबिग्राहि ॥ ४ ॥ रानीद्वितीयजु
अमरकुमारिनृपकूर्मविष्णुधीदासुधारि
॥ बेगमपतिअनुपमसिंहधीयफुलकुम
रिकुडाउतितृतीय ॥ ५ ॥ चंद्रकुमारिचो
थीपुरसनायरहोरजातनृपजासुमाय ॥
आनन्दोपंचमयुतमारीयअभिधागुमान
कुमरीतहीय ॥ ६ ॥ जोवंसबहालापुर
पधारिअमकूहअजबरायलकुमारि ॥
सुलदेवसिंहधोंकलकुनामलिम्मावतसिं
हसुलालताम ॥ ७ ॥ अमजेहेसुतयेक
हातजेहूजीरानीजाहजात ॥ अरूपमसिं

हतीजोप्रमानिचुंडाउतिउरपहिलोबरखा
नि॥ ८ ॥उम्मेदसिंहचोथोकुमारअरु
दीपसिंहवड्डोउदार॥तिमदीपकुमारि
दूजीकनीसुतियतीजीनेत्रितयोजक्रीसु
॥ ९ ॥पुनिचंद्रसिंहपंचमजुसोहिक्रम
पंचमरानीजनितजोहि॥कन्याबडीजुस
रजकुमारिचौथीरानीभवजोबिचारि॥ १०
॥व्याहीजयसिंहहिंजनकबुद्धआमेरअप
धीसहिंसबिधिसुद्ध॥दूजीकनीसुउम्मेद
भ्रातमरुपतिबिजयहिंदियमहमख्यात॥
११॥बुधअनुजजोधकियच्यारिव्याहक
न्यादुवबिधिबसलहियलाह॥जयसिंह
रानकोअनुजभीमजोभूपबनेडकुंभसी
म॥ १२ ॥कन्यातदीयजालमकुमारिधव
जोधसिंहबामांगधारि॥अग्रजकेसंगहि

कुलकछ्वाहाप्रगट्योंसुउदैपुरमहाराणाप्रमाद ।।
।। १३ ।। राजाउतिजमुताकुमरिनामअज
सिंहसुताकूंजोललाम ।। तीजीरानाउतिमा
कमृताप्रगद्दा कियसुभिजनकुमरिस्माप
चोथीबघ्वाउतिरामकृंगइमचंद्रकुमरिप्र
त्योंश्रुसंग ।। कृनमैंपहिलीकैइकसुताहिउ
सोदकुमरिजयपकछ्वजाहिं ।। १४ ।। रुहोनि
केरनाबिनसुलिराहबुधसिंहदयोजयसिंह
रोह ।। चोथीतियकेदूजोसुतसुक्हलपकुम
रिमृतसिसुहिमाहु ।। १६ ।। इनचउनमांहिं
तीजीनिवारिणतिसंगजरीपटुनिरिवलना
रि ।। स्वनुजाकुवकुंवरिवलपनुजउनाकुंव
रोनरउवालाहिवालासुना ।। १७ ।। दो० ।। स्व
जाकुंवलकुंमारिप्रगटल्यानादिकुंमा
रि ।। स्वसारविजयतिपनृपप्रनुजनखेमसु

हिमृतच्चारि॥ १८ ॥भावीसानुजभूपकी
व्याहप्रजादिकबत्त।।बर्त्तमानपट्टराभ्यबि
धिग्रबजानकुअनुरत्त ॥ १९ ॥ पद्धतिका ॥
इमलियउबुद्धपट्टाभिषेकथपिराज्यचं
गबसिक्ककमएक ॥सितरोमगुच्छछहरि
दुदिससीसकनकातपत्रभूषितमहीस॥
२०॥आवापतंत्रचिंतनउपेतसुभबलबि
दग्धधीसरवसमेत॥पट्टसंधियानबिग्रह
बिलासद्वैधासनआश्रयगुनप्रकास ॥
२१।प्रभुमंत्रसक्तिउत्साहपूरसमचतुरुपा
यसामर्थ्यसूर॥सबिचारब्यसनसप्तकनि
षेधिबानैतबानबिनलेतबेधि॥ २२॥ बि
धिच्यारिहेतिकोबिदबिनोदचतुरंगचक्र
साधनसमोद।।जुतधर्मनीतिअनसरजमा
यलोकानुरागनयरीतिलाय॥ २३॥इत्या

दिराजपुरजोरजग्गिबुधसिंहबलियजतु ञ्चतिलक्यपि ॥ कुवबिदितकित्तिदिस दिसनक्षावक्याकिबकिग्परातिरकिबदन काक ॥ २५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पू स्त्ररूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच रित्रेप्रथमो १ मयूख: ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दो० ॥ उदयनैरजयसिंहनृपरानीकछ वैसबंस ॥ तासबासतनुजाचतुरभईद्दंदि रानृसंस ॥ १ ॥ पज्झटी ॥ कुवमंजुसुतार नांनिकेतउपमेदकुमारसुभगुनउपेत ॥ बयसंबयचहायनविधानसौंदर्य्यरूपगुन गनसमान ॥ २ ॥ लखिबनाहिभूपजयसिं हआपउद्वाहकरणचिंतासबाप ॥ लग्गि गनबिचक्खनसबानिहारीविधिसहितक

नीव्याहन बिचारि ॥ ३ ॥ दिय दूत देस
देसन पठाय जंघाल चतुर मति चउ उपाय
॥ मरु माल वडाहल शाल्व अंग टक्क केरल
कुंतल मगध वंग ॥ ४ ॥ जालंधर लक्ष्मिक
कासमीर कर्णाट द्रविड मैथिल सुवीर ॥
इत्यादि बिसय उत्तम अपार तिन मांहिं
नपठये सचार ॥ ५ ॥ कहि हेर कुंवरमम ब
चन मानि जामातृ बयैपद योग्य जानि ॥ भू
पाल तथा भूपति कुमार इन सूर राज गुनजु
त उदार ॥ ६ ॥ दस अब्द ताव बय रूप दे
खि बर बरन खबरि आनहु बिसेखि ॥ सुनि
रुह्रूपद्र बुंदिय सुथान बुद्धहिं सुनिय लगुन
रूपवान ॥ ७ ॥ तासौं कु रूप गुन अधिक भू
प को उ होय ताहि हेर हु अनूप ॥ सुनि बानि
चलिय दिस दिसन दूत रव जिय असेस नृप

कुलसपूत ॥ ८ ॥ कथितादि देम लखि
नृपकुमारबुंदीपुरी कुचरचय च्चार । लखि
प्रकृति सतरूलि सावधान बुधसिंह राज्यप
ति बंससमान ॥ ९ ॥ बुधधर्म निपुन खुरली
निनोद हय हत्थि चढन सह बहसमोद ॥ र
नवीर दान उत्सव उदार लावण्य ललित मा
रावतार ॥ १० ॥ क्रमबुद्धसिंह लखि बितजि
बैर सानंद यंस उदयनेर ॥ सबकहि उदं
तप्रति दंसदेस बुधसिंह किन्नि पुनि किय
लिसेस ॥ ११ ॥ कहि हम कुल रिवय जनप
दछनेर हुंदीस समन अन्यन अराक ॥ कुमरी
परलला यहसएव तत्रैव रच्छहु संबंध देस
॥ १२ ॥ बुंदीन्द्र किन्ति सबसों बिसेस क्रमसा
पुरव्यवन सुनि सुनि नरेस ॥ संबंध चिंति
तन्हहि बिचार आत्मीय पुरोहित किय लघ

र॥ १३॥ संतोखराम नामासु बिप्रतिहिं कहियतत्र गंतव्य छिप्र॥ दियसगभर्म लौं गतिमढाय सामज चतुष्क ह्यय सत सुभाय ॥ १४॥ बर दिबिध बस्त्र रत्नन समाज भूषनाभि चंद्र घुसृण दि साज॥ इत्यादि तिलक मंगल असेस द्विज संग दये लखि काल देस ॥ १५॥ श्रीकृष्ण नाम इक गणक राज सम धीत त्रिबिध ज्यौतिष समाज॥ दाधीच ज्ञान नभव जो द्विजेन दियसो कुपुरोहित संग तेन ॥ १६॥ अरु कहिय उभय तुम बुद्धिमान लुं दीं द्र निकट बिचर हु प्रयान॥ मिलिमा रव कुल्ला शिख असम सीय सविनय उदंत सुनि फहि स्वकीय॥ १७॥ सबबस्तु संगज हय नहिसु बर करी तिलक निवेद कु नालिकेर चीकार करहिं जो तिलक बिप्र तोल खकु

लग्नलग्यैवक्षिप्र ॥ १८ ॥ जोलग्नप्रथमत्र्प्रा
गमिलेइ सोकारअवनिलिखिदेहुसोइ ॥
यहसुनिद्विजबुंदियअप्राजगामजाहिरकि
यअप्रशिखिवपदललाम ॥ १९ ॥ सुनिस
चिवद्विजागमसावधानसनमानियसाध
नखानपान ॥ पुनिलहनुधम्मकतिपयवि
हायबुंदींद्ररचियसहपुत्रराय ॥ २० ॥
संतोखरासलियवुल्लितामदाधीचबह्मरि
शीकृष्णनाम ॥ तिनपूछिअनामयदिय
अशीससह्नन्ह बुंदियदेऊबिमर्द्दईस ॥ २१ ॥
लहिमिसलबैठिकहिसवनसारबिधिसु
नहुसभासगपनबिचार ॥ चीतोरसोरजय
सिंहखानतिनगेहलेहतनयासुजान ॥ २२
॥ बुंदियनरेसकंहैंवहबिबाहिसंबंधअव
नलोसोदचाहि ॥ तुरकानसिंधुबिरजे

सरोज तिन गेह उचित संबंध मोज ॥ २३ ॥
भटसचिव सबन सुनिय हसुमंत हियक्कुल
सिकह्यो उचित हि उदंत ॥ लब्जनन लबहे
उज्वलल सातज्यों जननलयहै चंडासि जा
त ॥ २४ ॥ स्वीकार सब हि सुल्लिय सुबानि
मान सत्र प्रपुल्ल आल्हाद मानि ॥ संतोस बरा
मइमल्ल हि सुबेर करि तिलक निवेदियना
लिकेर ॥ २५ ॥ बर बरिय बक्कुरि निज अनु
जजोधराण अनुज कन्या कहि सुबोध ॥ दुव
बंधुन करि संबंध एम देख्यो मुहूर्त्त सुभप्र
थित प्रेम ॥ २६ ॥ संवत हि पंच सरु षिइंदु
१७५२ मान मेचक तप स्सनवमी बिधान
॥ गणकन बिचारि सुभलग्न तत्थ इक मा
सत्रवधि अंतर समत्थ ॥ २७ ॥ करिसी
खतबहि द्विजबर सुजान कोटा प्रतिसत्वर

कियप्रयान ॥ चहुवानरामकोटाधिईसमु
जमेटिबंदितन दियश्रसीस ॥ २८ ॥ श्ररु
कहिल गुरुन्नो हेतरान तुमरोसुलमान्योंसं
प्रदान ॥ चहुवानरामयहसुनिसन्नाह ॥ उ
पयमश्रप्रत्यकीनोउछाह ॥ २९ ॥ इसलुंदि
यकोटाबरिउमंगसंतोरनरामगयउदयदंग
॥ सबकहिउदंतसांगोपश्रंगउपयमबि
धाननिजकृतश्रभंग ॥ ३० ॥ बुधसिंहबि
वेदाश्रलिउदार बिख्यातसुभगपटुसबप्र
कार ॥ तिनसोंरचिउपयमनीतिबांधकुव
श्रनुजबरियणुनिभीमजोध ॥ ३१ ॥ श्रबर
चहुब्याहबिधिजोश्रजातचेंहैंतिरल्य
सुखसजिबरात ॥ उतकुवबिबाहउपकर
नएमहतसजिबरातपरिकरसप्रेम ॥ ३२ ॥
इतिश्री वंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिण

यनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेद्वितीयोमयू
खः॥ २ ॥ष०प०॥ घमघमंकिधुग्धरनबा
जिचल्लियमगऊंपल। धमधमंकिनउब्बनि
षजतभूतलादिनकंपत। तमतमंकि
गजराजसुंडिसुरपथफटकारत। रमरमं
किभूरवननरोचिरबिरोचिबिगारत। बानै
तबिहितरवुरलोरमलक्रमतबीरबिरुदन
बलिय। बुधसिंहबिदितबुंदियनृपतिसज्जि
सानुजदुल्लहचलिय॥ १॥ दो०॥ बुल्लिबि
दितकबिबिबुधलियभूसुरचारनभट्ट॥ ऋयु
नहुत्यागउमंगधरि। स्वनाहूतचल्लिथट्ट॥
२॥ सेवकजातिसिरोहिया। भारव्योभट्टप्र
ताप॥ उदयनैरममहेयनृप। लैनचलकु
सँगआप॥ ३॥ ष०प०॥ कबिप्रतापयह
कबहुपन्नकुलभट्टउदैपुर। राजसिंहजंहरा

नहीरदाससुधीसरखधुर। इकरानीअभि
स्वापणलखिपहुपकुमारपर॥ तदनुमरायोता
हिकुमतिबहिकाइरानकर। लसअनुजकु
मरससरलारतिमंतुबिनुहिलैबिषमरयो।
तिहिँअथप्रतापजावलतजिरुपुरहिउदै
पुरणीरहयो॥ ४ ॥दो०॥जलकुउदैपुरको
तजन। बंदीजिहिँपनबंधि॥ कह्योसत्यम
मम्हकुल। सत्यबचनयहसंधि॥ ५॥बहु
कथसितिप्रतापतँहँ। नचलनअग्रजउचा
रि॥ नृपतिकह्योहमलैचलहि। अप्पुनदे
सनघारि॥ ६॥हुवपूर्बयहकुकमकीरेलि
यतिसंगप्रताप॥ ओसिसकटननिजदेसम
व। रिसीकरीरनथाप॥ ७॥ष०प०॥हमसस
लकारिथूरय सुकबिपंडितसनमानिय। ऋ
णअणकहिमारीचहोदहाटकजुतदानिय।

बज्जिमृदंग दुंदुभिय बिजय मर्द्दल पणवानक॥ हेसा बृंहित हाक भद्द जिम तज्जित भयानक। रस रंग राग गायक रचत भनत बंदि बिरदावलिय। बुधसिंह बिदित बुंदिय नृपति इहिं बिनीत संभ्रम बलिय॥ ८ ॥ कुट्टि कुट्टि हयखुरन गिरिन पाखान गरद मिलि। छुट्टि छुट्टि छिति संधि सिथिल भोगीस सीस झिलि। तुट्टि तुट्टि तरु दुगम पृथुल पद्धति हुव पद्धर। कुट्टि कुट्टि आघात पटह रव पूरि दिगंतर। बित्थरिय कथा नकदिस बिदिस बिदित बन्न हुव नरन रन। बुधसिंह जात बुंदिय नृपति यद यनैर उपयम करन॥ ९ ॥ गज्जन फरकि बहु रक्क थरकि आकास बिराजत। छरकि छोनि बमथून झरकि भद्दव घन साजत। दरकि दडूभू दारल रकि फन मालन गइन॥ धरकि

धरकिनिसदीहदरकिच्छत्तियआरातिन।
गद्दगद्दलसंकअंतरउपजिकरतमंत्रसचि
वनकालिक। हहुनहमेसकुलरीतियहस
मितिव्याहउच्छाहहक्क॥ १० ॥गरदअ
क्कअच्छादियसरदघनकुमुदनाथजिम।
गयनतोमतोमरनप्रदरपुरवनकलापतिम
।सज्जतभज्जतबनजंतुकटकअंतरथकिहु
हुत॥ बिदितबीरबानैतबिसिखबिकिरन
बपुहुहुत। इमपिट्ठिअप्पबिरुदनसुनतभ
नतदैनसंकनबिभव।संचरतसरनिसाहुज
ससुरसरटतनकौबजलेबरव॥ ११ ॥उलटि
उलटिदलओटपवनसज्जतप्रत्यागम।सु
गमहरोलनसलिलदुमअंदोलनकहम
।स्वासमासइहिंघासथासभेबासप्रपन्नी॥
हेलुनहासकुलासबाससेतुनजसबन्नी।

कोटाधिनाथसुतभीमकीमिलिबरातसंग
ह्हिल्लिय। प्रतिगामगामबंधतकलसधा
मधाममंगलच्छलिय॥ १४ ॥मागधेयभुम्मि
यननिकरलैलैप्रतापनत। आतजोरिकं
जलियनातसिरभेटनिवेदत। कह्लनाथ
किंकरनपूतकरिओदनधानी॥ मग्घरले
हुमिलानमानिर्खीकृतमहिमानी। लखि
भीतकहुँकदुल्लहललितमानुहारिय। रत
मुदित। मनबढिउछाहआवरिमनुजह्वोल
निछावरियरसहित॥ १५ ॥ दो०॥ इमबरा
तसुखसरानिचलि। पहुँचिउदैपुरपास॥
नटनगानपातुरिनिकर। बिधिबिधिरचिय
बिलास॥ १६ ॥ ष०प०॥ पृथुलदारुपहुरि
यंगचित्रितफुलवारिन। कंचनरनसांकम
[illegible]

झोकरागनझुम्मावत ॥ चंडातकचलचरनधे
रघुम्मरघुम्मावत । श्रुतिजातितालबादनकु
सलमोहनरसगीतनसुमति । अवरोहग्राम
मध्यमउद्धतग्रामप्रथमआरोहगति ॥ १७ ॥
घुरिनेउरघंटिकनझनकिसिंजितमहनाव
त । बिधिक्रमतालबद्धायबक्कुरिमतिलोमब
नावत । मिलिसंक्रमप्रुच्छनमोदनिकसं
तनादमय । कंदुकआहिगतिक्रमनचहल
उलरतअलापचय । आनद्धतंत्रबादनउदि
तमादनमुदितनरेसमन । बसिबासआय
सायकबिरम्मनिजनिवासगावननटन ॥
१८ ॥ दो० ॥ कोटाकीकुबरातबनि । मि
लिमगसंक्रामिसंग ॥ पहुंचेदुल्लहउदयपु
र । महमहउदितउमंग ॥ १९ ॥ पद्धतिः
॥ अतिमोदरानमनमुकवआइ बिधिजुत

जामातालियबधाइ॥दलउतरिद्रंगढिग
सरसमीप।दुतिबढिगआरतीकलसदीप
॥२०॥पधराइसमयमहलनसप्रेम।तनि
सुचितउचितउपहारतेम॥बुधसिंहहिय्या
हियरकिवरीति।बिंदाबयबाल्यसुप्रथि
तप्रीति॥२१॥परिनायसोदरकुजोधनाम।
पुनिभीमपितृव्यकरामजाम॥मकुकम्मबंस
भटबंधुबर्ग।परिनाइनामसालमकुसर्ग॥
२२॥इत्यादिरानबरबरिअनेक।अद्रुरु
सतव्याहेलग्नएक॥बुंदीन्द्रसंगबिधिउचि
तसाजिदुल्लहसमोत्तरसतबिराजि॥२३॥
दो०॥छप्पनदेसनरेसकी।तनयाव्याहीरा
न॥प्रेमरीतिअंतरप्रिया।सोहीरहियसुजा
न॥२४॥ताकेउरसुंदरसुता।कुंवउम्मेद
कुमारि॥सोदुलहनिबामांगबिधिबुद्धसिं

हक्कवधारि ॥ २५ ॥ ष० पू० ॥ कुमरीजेठेकुम
रनामउम्मेदसिंहजिहिं। प्रियरानियसुत
जानिरानलगिराजदैनतिहिं। सत्रुसल्लनंदि
नियननामयोंगुलगाई ॥ भावसिंहभगिनीसु
बुद्धरानहिंपरिनाई। अमरेसकुमरताकेउदर
प्रथमभयोकुलपट्टपति। तुरकानतेजसंगति
प्रबलघरघरहिंदुनअनयरति ॥ २६ ॥ लखि
यहअमरकुमारराजलघुबंधवपावत। कु
णिअप्पनयउपक्कनियजनकउप्परभुवजावत
। ह्वानिधरमहिंदूनलायघरघरदूसनलगौं ॥ अ
णुकेसमितअनर्थमिहुरगृहपक्षयमगौं। अ
मरेसउदितआहवरचनबलबिसेसधनबि
त्रुकटिन। यहसोचिआयमातुलनिलयबुंदि
यमहलिहिंमंत्ररचिन ॥ २७ ॥ यहसाउम्म
भिराजदेतअनर्हनकप्पहुन। तीनलक्खवत

बदम्मणाय निढ्ढहिमातुलसन। अरकुमारअ
मेरस आय बेघमपुर ओसरि ॥ राउत अनुप
मसिंह पग्घ पलटि रुधीसरवकरि। बस्खरी
सच्यारि चामर बिरचि संगर उचित अनीक
सजि। पुर उदयजाय घेरिय प्रबल हूंकित्तिह
षानिनदबजि॥ २८ ॥सुसुनि रान जय
सिंहपुत्रलघु सहित पलायो। किल्लाकुंभि
लमेरु बसिरु वहकाल बितायो। सुतहल्ला
लखिसत्यमात गंगा सकोपमन ॥ खेटक
खग्गउचाय आयठड्डी गृहतोरन। पठईक
हि अनुपमसिंहपैं हंतुमभटबरधारतधर
म। समुझावहुकुलनय बिनयसन जोचौंडा
घरतुमजनम॥ २९ ॥यहसुनि अनुपमसिं
हसुमिरि निजपुब पितामह। प्रथम मिल्यो
चलबुद्धि अबसुबदल्यो डर दुस्सह। साजि

अप्पनौं सत्थ समुख प्रतिभट ह्वै धायो ॥ चो
सरचलर उदय नेर लुट्टन नहिं पायो । समुझ
यकुम्मर अप्पमें ऐसक हैं तुल्य सुभट एक कत्र जुरि
। कुलधरम सथ्थ्यी सुत जनक कैं सुनय सामग्रि
लो बहुरि ॥ ३० ॥ दो० ॥ रहैं तरवत जय सिं
ह नृप । तौलौं अम्मर हिं अप्पि ॥ राज समुद्र त
डाग तट । राजनगर गढ थप्पि ॥ ३१ ॥ इम
संगा पहिले समय । पुहविपति ब्रत पाय ॥ मे
दिनु अनुपम सिंह भट । लिय स्व पुत्र समुझाय
॥ ३२ ॥ संगा सम गंगा कही । सुधरम सलिय
सुजान ॥ श्रीखम सम कैसैं कहौं । अनई अ
म्मर अप्रमान ॥ ३३ ॥ लहि प्रसंग कछु
यहैं कहौं । खोडा कीन यवन्न ॥ जाहि सुमि
रि अनुपम भयो । संगा वच अनुरत्त ॥ ३४ ॥
षा० प० ॥ इक्क समय चीतौर रानल रवपति

खेतलसुत। तरुनकुमरइकतासनामचौं
डानयजयजुत। नृपरनमलरट्ठोरगेहतन
यामंडोवर॥ चौंडासौंसंबंधकरनआयेलस
कग्गर। सुनिपत्ररानलखपतिकहिय तरु
ननकौंहेरतजगत। यहजनककेनसुनिसु
निकुमर कियमन निहिंब्याहन बिरत॥ २५॥
कहिचौंडाकरजोरिसुनहु मरु बरसुज्ञाता।
ब्याहपिताकोरचहु वहै कन्याममभाता। य
हसुनिमरुबासीनकह्यो लिखिदेहुअप्प्य
कर॥ रट्ठोरनकोभागिनेयचीतोरपट्टपर। य
हसुनतलिखितनिजहत्थकरिमरुबासिन
सौंप्योकुमर। लखपतिहुरानहिं मंदमतिब्या
हिलइयवहवृद्धबर॥ २६॥ तुच्छदिननके
अंतगरभरट्ठोरिग्रहनकिय। समयअंतसुत
जनमिनामसुक्कलबिप्रनदिय। लखपति

कूजा तिल दिनन काल कंठीरव मार्‌यो ॥ चौं
डासौं दोरि हद्दि पीहर बल धार्‌यो । बुलवाय
तातर नमल्ल पुनि जोध भ्रात चीतोरगढ । ति
न हत्थ द्वार कुंचिय अपर पिकिल्ला करिय अपं
चढ्ढ ॥ ३७ ॥ नारि बुद्धि रट्ठोरि सुज्झि नहि
णरिग फत्ता फत्त । तब सुरवर नमल कहियत
जैसैं चौंडा नव यह थल । यह सुनि चौंडा रान
जुन्ति निकर्‌यो भीसम मधुर ॥ मुलक छोरि मेवा
रयायो मालव मंडू पुर । मार वनदाव लग्यो त
बहि जोधा रनमल मंत्र जपि । करि भागिनेय
सुकाल कढन थिर हि लैन चीतोर थपि ॥ ३८ ॥
इक रान अनुचरि अनेह मंड्यो जोधा सम ।
इक दिन आसव पान जोध बुल्ल्यो मति विभ्र
म । सुकाल कौं अब मारि दुग्ग दल देस कोस
लहि ॥ इक [illegible]

रि॥ यहबत्तडारिदासियदईमुकुलक्कीसा
ताश्रवन। सुनिसोचिंतबहिरद्धोरिकौंचौं
डाआयउचिंतमन॥ ३९ ॥पत्रमंडिय
छन्नदूतमंडुवपठवायो। सुनिचौंडासज्जि
सेनअहुरजनोगढआयो। करिहल्लारादि
कोटधस्यो बीराधिबीरबल॥ कुमरजोध
मजिकढिगमारिलिन्नोनृपरनमल। मुकु
लहिंपट्टगद्दियअरपिरहितटस्थजगज
सलियउ। हिंदवानबत्तधारहुहृदयकर
कुजेमचौंडाकियउ॥ ४०॥ दो॰॥ चौं
डाकरिचिंतमनअनुपमधरमबिचारि॥ कि
योसामसुतजनककौं। निजपुरलूटनिवा
रि॥ ४१॥रानअनयमनठानिकैं।राजदे
नलगिजाहि। ताकोबरसोदरखमा। बु
न्दनेससहिंब्याहि॥ ४२॥ तीजीरानीकी

सुता। भीमहिं दइय बिचारि ॥ भ्रात भीमकी नंदनी जोधसिंह अवधारि॥ ४३ ॥ मुक्कुक महरसालम अरथ। सुभटसुता परिनाय॥ छकुरि सीरखडेरन दई। सबहिन मोद सुनाय॥ ४४ ॥ डुल्लहडेरन आय किय। बिहित निल्य सु बिहाय॥ गोरन असन निमंत्रकों। रहे रानमग जोय॥ ४५ ॥ रानकै फसं डुल अकुल। आत आत अलसाय॥ गोरन दिवस अतीत कै। समय निसीथ सु आय॥ ४६ ॥ छ. प. ॥ सुपकुरान जयसिंह मद्धि मास टकसराग मन। भंगि अरक भुज्जैं सुप्रमित दुववीस पद्दीसन। प्रियरानिय छप्पनिय मौन पग धारि नित्यमल। असन अप्प अद्ध हिं फेर खट रितु हि अंबफल। इम मनमातुल्ल निय अरक दसमी निस ससिके

उदय। चहुवानसिविरसीसोदचलिमानु
हारिगोरनसमय॥ ४७ ॥ मिलिउपेतस
नमानरावशनाँ अनंदरजि। चढिगयंदच
हुवानस्वसुरमहलनप्रथानसजि। परिक
रसहपरिपंतिप्रसनकिन्नोअधिराजन॥
अतिसुखडेरनआयसयनमंडियप्रमोद
सन। जयसिंहरानतीजेदिवसजनकदोस
मेटनजहर। परतापभहडेरानप्रतिमुदित
आयमंडियमहर॥ ४८ ॥ दो·॥ अगेंरा
नाँराजसों। रुद्धोभट्टप्रताप॥ अबजय
सिंहप्रसन्नकिय। आयपटालयआप॥
४९॥ इतिश्री वंशभास्करेमहाचंपूस्व
रूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुध सिंहच
रित्रे तृतीयो ३ मयूख:॥ ॐ ॥ ॐ ॥
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ष॰प॰॥ दिन चउत्थ दीवान बुल्लि रघुप १
तिय पुरोहित। उच्चारन आनंदभट्ट पर
ताप बुद्धपित। च्यारि लक्ख निज चलन द
स्तूर वजूर संग दिय॥ हयवर इक्क हजार दो
य दस मत्त दंतिय। सिरुपाव उच्च ह्वादस स
हँस कति दिधि पूरवन संग किय। मंगनन
भागयन पत्ति मन हुँ देन त्याग इम हुकम दि
य॥ १॥ दिन पंचम हुव नृपन सजिय चीतो
रस सायस। पिक्ख्यो दुग्ग सुप्रथित समर जँ
हँ हुव अकबर साम। पुस्मि दिन करि गोठि
फाग कोतुक किल्ला पर॥ होरिय उच्छव ठा
नि बहुरि आये पत्तन वर। अति त्याग उफ
ल सुनि सुनि सुजस हरषि राजन जयसिंह
लिय। लिखि उचित पुज्जि वर बरनि हलिर
ल्लिरस मुंदिय सिक्क्स दिय॥ २॥ चलिव

रातप्रतिपंथभीम करजोरिभ्रातधुर। कोटा
प्रति किय सिक्ख अप्प आय उबुंदीपुर। द्वि
यमिलानसब्बसेन जेतसागर तडाग तट॥
दइवजोग निस समय अग्गिलग्गियडेरन
पट। सरसेतुमध्यगृह पिहितइक भजिकृत
त्थबर बरनिरहि। कुवधार कहसमडेरन सहि
तमनुजतुरंगकुकछुकदहि॥ ३॥ इहिदा
रुनउतपातदानसत दोयसबिधिदिय। सु
हसमय निज नगर द्वार उत्तर प्रबेस किय।
पुरजनमंगलपुब्ब बिबिध उच्छाह बधारे॥
हट्टाचत्वर चोक सउध प्राकार सिंगारे। द्विज
निगम साधि बर बर नियम नीराजितगृहग
मन किय। कछु दिन नअंतजननेसकेचर
नआयफरमानदिय॥ ४॥ दिल्लियप
तिअवरंगतपतइकछत्रतीनदिस। दक्खि

नदक्खिनकाजचढिगअतिबलअतीवरि

स।पहिलैंसैधारनामनिजनगरबसायो

लक्कुलरसरहिततत्यकछुकअरिअमलउ

ठायो।।अजरिसमरत्तहिंदुवतुरकजोनअ्

वरदिसमुक्कल्यो।तुरकाननतहरत्नालमज्ज

हल्लोपिलहरकाहुनरुल्यो।। ५ ।।दो० ।।

काबलरव्वाकालबसि।सुनिअनिरुद्धज

रूर।।अनसेवनअंतरसमुभि।बुल्लियबुद्ध

हजूर।। ६ ।।अहदीतबअवरंगके।आतिज

लद्दियआय।।सिरधरिसाहनबंदगी।चल

कुकहो हितचाय।। ७ ।।जायसमुखफर

मानकैं।करिसलामलियझेलि।।उपयोच

ललनसंगअब।देतहुकमकोपेलि।। ८ ।।

सुनिकुमारपरिकरसबहि।मिलिइक्कांत

कियमंत।।स्वामिकालसेवाकठिन।आलो

चहुमतिअंत॥ ९ ॥इहिंअंतरअवरंग
सुत।जेठोआलमसाह॥बंदीगृहतैंकढि
चल्यो।चिंतिआगराचाह॥ १० ॥पद्धति
का ॥हुवपुत्रपंचअवरंगधाम।सुलतानमु
हुम्मदप्रथमजाम॥सुतदूजोआलमसाह
एह।सुततीजोआजमपितुसनेह॥ ११ ॥
सुतचोथोअकबरनामधार।हुवकामबख्स
पंचमकुमार॥जेठसुतहैमनकरिउदास।
बंदीगृहडारेबिसमबास॥ १२ ॥सुलतान
मुहुम्मदमरियतत्थ।आलमबच्योसुआ
युहिसमत्थ॥याकेहुपुत्रहुवप्रथमच्यारि।
आयेंबयजुब्बनकैदडारि॥ १३ ॥कैदहि
मैंपायेपलितकेस।अपमानितदीनकुसों
बिसेस॥बरसावधिपावैंदगलइक्क।परि
हुसहदहैंजूकारुलिक्क॥ १४ ॥नहिंबप

नन्हानन हि प्रसन्न दृष्ट। जूकान जनित स
ह्थित अरिष्ट॥ इक समय दुकव अरजी क
राय। जो भहरन थे मिलि दगलजाय॥ २५॥
अवरंग कछु कम पटयो अनेह। उलटा करि था
रहु दगाल एह॥ इक समय मिल्यो सरदा वि
सारि। तिहिं छेदन छुरिका हित उचारि॥
२६॥ पुनि कहिय साह भरि कोपभार। सि
रसौंहे फोर कुनाहि हथ्यार॥ इम कुपित सा
ह सुत ती सब्बाहि। इक समय सभा सों कहि
य चाहि॥ २७॥ जो मिलहिं हमारे हुकम
आज। तो पावहि आजम साहराज॥ जो
मिलहिं मुदा के हुकम पाय। लहिहैं तो आ
लम साह आय॥ २८॥ सुनतहि इम आ
जम कहिय एहु। बंदीगृह बासी मोहि देहु
॥ यह सुनत साह हिय बढि विखाद। कोपारु

नआजमप्रतिजगाद॥ १९ ॥सुतज्येष्ठ
ममायसधरलसीस। वहकैदीअरुतुमतख
तईस॥यहकहिबुलायआलमउदास।नि
कस्योतजिकारागृहनिवास॥ २० ॥करिगु
सलबपनमंजुलकराय।अतिदिव्यबसन
धरि आमआय॥लखिसाहछिप्रहि
यसोंलपेटि।जुगदुवगहिलीनोंभुजनभेटि
॥ २१॥ चिरकालकंठगदगदबढात।दुव
घाँदुवअश्रुनअधिकपात॥तहँदियउरी
झिअवरंगसाह।अकबरपुरसूबाजुतउछा
ह॥ २२॥बारहहजारमनसुबलिखाय।
दियसीखआगराहितबढाय॥लहिसीख
चलनमनकरिबिचार।कुलचढिगसाहआ
लमकुमार॥ २३॥रेवाउलंघिअतिदल
अमान।पुरआयअवंतीदियमिलान ॥

अग्गैं अवंतिसूलापधारि। कछुकामपीर
अर्द्धेन उच्चारि॥ २४ ॥ कुलकैदजोगवहर
हियसेस। अबकरिय आयपूरनसुदेस॥ रैसेरा
तर्हिं दिवसु बिबिधनाम। क्रमिमग्गअग्ग
रापुरजयाम॥ २५ ॥ नृपबिष्णुसिंह आसे
रनाथ। निजबंससुभटहरिसिंहसाथ॥ अ
वरंगकुकमजोलहिजरूर। कुवआयसाह
आलमहजूर॥ २६ ॥ दो० ॥ अग्गैंइकअ
वरंगको। सोसमसोणबिचारि॥ बिष्णुसिंह
नृपसौं कुकम। कुवमारनजटवारि॥ २७ ॥
बिष्णुसिंहनृपसुभटनिज। लियहरिसिंह
बुलाय॥ कियउबिदाजटवारिपर। संगरसे
नसेनपाय॥ २८ ॥ षट्प० ॥ हरियसिंहके
हलाहुजायजटवारिबिंटिलिय। बहुजहू
नासिरकाहिरवानिलरवहुनप्रबिष्टकिय।

वह लंबापुरनाथबंसरवंगारसंगसजि ॥ से
वनआलमसाहआयकूरमनरेसरजि । दै
दलमिलानजमुनापुलिनसंचरिअसम स
लामकरि । हरिसिंहमहिलठड्डुमिसलरचि
अंजलिआज्ञाबधरि ॥ २६ ॥ दो० ॥ हरिसिं
हहिंआलमदये । रीझिखिलतहयराय ॥
कूरमपतिकेकथनकरि । जहँकढनहितलाय ॥ ३० ॥ इमआलमकाढकेदमन ।
अकबरपुरद्रुतआय ॥ कूरमनिजताबीन
करि । बासरकछुकबिहाय ॥ ३१ ॥ यहउ
दंतभटसच्चिवसुनि । नृपहिंअलपवयजा
नि ॥ अरुदक्खिनअवरंगको । सेवनकूरम
मानि ॥ ३२ ॥ आलमप्रतिपुरआगरा । पठ
ईअरजलिखाय ॥ लेहुहमहिंकहिसाह
सों । निजसेवनमनलाय ॥ ३३ ॥ इतिश्री

शभाष्करेमहाचंपूत्वरूपेदसिणायनेनव
श्रीबुधसिंहचरित्रेचतुर्थोमयूख:॥ ४॥
ह। यहैबिनतीसुनिभ्यालमतत्त।
ता। प्रतिदैभ्बरजीलिखिपत्त॥ इहाँन्टप
जस्मज्योभटभाव। रहैंममसंगहिबुंदियरा
व॥ ५॥ यहैसुनिसाहपठायनिदेस
संगहिबुंद्नरेस॥ दयोतबभ्यालमपत्त
ठाय। स्वसंगबुलायतिबुद्धबुलाय॥ ६॥
थोदलबंधिसमस्तनमोद। बढ्योलखि
लग्गप्रयानबिनोद॥ दयेबकुदानबि
रीति। प्रबासिनहेयतजेनयनीति॥ ७॥
नीकुलदेबियपूजनमोद। नरेसहरिप्पाय
नलैचरनोद॥ कियेसबिधानप्रबासिकव
र्म। लखेसुभसाकुनलग्गसधर्म॥ ८॥ किते
भटसंगनिनभ्भायसथ्थापि। इहाँगृहराजनि

बाहनथप्पि॥ दयेतिन्हग्रामपटागजबा
जि।दयोभुजभारबिचारबिराजि॥ ९ ॥
सजीतबबुद्धबलापतिसेन।दियैंभटतारक
अप्पहिजेन॥रहेनिजआलयसोदरजोध
।चल्योदलहोतप्रभंजनरोध॥ १० ॥रवु
लेउडिकुंभिनकंधनिसान।तिरोहितकैर
बिरेणुबितान॥हरोलनहाकनकीबनछो
ह।बडेगजखैंचतलंगरलोह॥ ११ ॥रहीफु
किपीतपताकनपंति।मरातबमाहियभा
सिगभंति॥अकब्बरपुत्रदयोलहिकाज।
बज्योवहराजतदुंदुभिराज॥ १२ ॥मलंग
तफांदतुरंगनजूह।चलेउडिनोबतिनादसु
रूह॥चल्योदरकूंचनयौंचहुवान।दयेम
थुरापुरजायमिलान॥ १३ ॥लईसनलइक्क
सअष्टकगाय।समानहिहाटकरूकनमिलाय

॥ बिधीरितयों बहुधा करिदत्त। अकब्बरप
त्तन आय प्रपन्न ॥ १४ ॥ मिले क्रम आलम
साहहजूर। कियो सनमान रह्यो हितपूर ॥
रत्यो हित साहहुमा ख्रवंतियजैन। रह्यो तुमरो ह
मसों हक लेन ॥ १५ ॥ करौं पलटा हम कृतसम
त। लहौ हम संभजिरिद्दिन ब्रात ॥ कही सुनि
सों असुजीनरनाह। भली करिहैं सब ज्यान पन
ह ॥ १६ ॥ परस्पर प्रीति उभैं सनमान। रहे इम
कृत्सम छोरचकुवान। उहां दिन बित्तत केन्रव
रंग। सुनी सुलआलम कित्ति अभंग ॥ १७ ॥
झले बिच सोर सुन्यो सुलतान। बढे सिखलु
पत साहन थान ॥ तबै सुलआलम कों जव
नेस। दई सुलतान सम्हारि सुपेस ॥ १८ ॥
यहै सुनि आयस आलमसाह। सजे दलहिं
दुव मिल्ल सिपाह ॥ भयो बिधि सों चतुरंग

मयान। गये दर कूंच धरा मुलतान॥ १९॥
कुबियह मेटि रच्यो नयराज। भजे सिव्वति
त्तिर ज्यौं डरबाज॥ दपै करि देस प्रजा दुख
दंद। रहे इम आलमतत्थ अनंद॥ २०॥र
चैं इव भूपन सौं अति प्रीति। सबै दल कौं सुख
आदर नीति॥ करै दिन इक्क नदी जलकेलि।
चले चढि नाव प्रवाहन पेलि॥ २१॥रजू बु
ध भूपति सेवन लार। सजें जल कुक्कुट बंधि सि
कार॥ कही तँहँ कूरम सौं सुत साह। करो इम
सौं दुहिता निज ब्याह॥ २२॥ कही तब कू
रम यौं कर जोरि। कवैं दुहिता जब होय बहोरि
॥ सुता इक आहि सुतो करि नेम। दई बुधसिं
हहिं पुब्ब क प्रेम॥ २३॥ कही बुधसिंहहिं
आलम तत्त। करो तुम सौं इन ब्याहन बत्त॥
कही तब बुंदिय राव सहास। कही इन जो सु

भई कथतास॥ २४ ॥यहै सुनिजंपिग आलमसाह। तो हम हीकरिहैं तवब्याह॥ करी सुनियों बुधसिंह सलाम। कह्यो निजआसहै सिरकाम॥ २५ ॥यहै सकचोवनसत्र १७५४ साल। नई कथब्याह बनी बसिकाल॥ भई वय द्वादसहायनबुद्ध। सजें खुरली नयसायन सुद्ध॥ २६ ॥दयो लखिबुद्धहिं बीर सिपाह। परग्गन टोंकसु आलमसाह॥ कही तवयों करि बुद्ध सलाम। लह्यो पुरटोंक बच्यो मम नाम॥ २७ ॥परंतु कह्यो हमरो हककेस। तो करिये पुर पट्ट निषेस॥ गईय हपट्ट निपूरब काल। बच्यो अबजट्टन बैरकराल॥ २८ ॥सुनी अवरंग हुरवून पुकार। कियो सुतआजमको सुलत्यार॥ दये संग बुद्ध थतैं षनिरुद्ध। बन्यो सम योगुन गोरिम युद्ध॥

२९ ॥ रहेतिहिँकारनहैदिनगेह। नकाबलयैँ
पहुँचेतियनेह ॥ भईतुरसीइहिँकारनआय।
समासरबेदरुसत्रह १७४५ पाय ॥ ३० ॥ ल
ईलबपट्टनिसाहउतारि। दईनृपरामहिँकाम
बिचारि ॥ छुटीलबकीअबसेवनपाय। दई
इलआयससाहमँगाय ॥ ३१ ॥ जम्योंनिजदेँ
कपरग्गनराज। बच्योमहँदीपुरइकअकाज
॥ लरेमँहँदीपुरकेकछवाह। तजीसुरतानषि
नातिनराह ॥ ३२ ॥ भईमहँदीपुरतोपनमा
र। लयेंसबजीतिकियोगढछार ॥ रजूकपदौं
कजिलाकरखाय। रहैंमुलतानसुबुंदियराा
य ॥ ३३ ॥ दो॰ ॥ बुदभूपनकौं बरसइक ग
योरहतमुलतान ॥ सेवतआलमसाहकौं।
इमकूरमचकुवान ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभा
स्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौ

बुधसिंहचरित्रे पंचमो ५ मयूखः ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ इक्कनबाबअमीरखाँ। अग्गेंकहि
अवरंग ॥ थप्योदैभुजभारनिज। सूबाकाब
लसंग ॥ १ ॥ तोटकम् ॥ इतनैंवहखानअ
मीरमरयो। अवरंगयहेसुनिसोकपरयो ॥ क
हिसाहअमीरखयोजितनैं। हमभोगलहे अव
तुक्खघनैं ॥ २०२ ॥ लहिकाबलसाहयहेस
मयो। उतदिल्लियराजसुदल्लिलयो ॥ तबसा
हहियैतसचानबसी। धरकाबलआलमकों
नखसी ॥ ३ ॥ इनहूमुलतानजमायजिला
। लियकाबलकामुकमानघिला ॥ रुतुसार
दवारदनक्खमये। सरितासमिपद्धतिपंकग
ये ॥ ४ ॥ सरबानतुरंगम ९७५५ इकसम
। सुतसाहचल्योइसमासअमा ॥ अतिआ

रवभेरिनकेगरजैं। पबिपातकिपब्बयदेदरजैं ॥ ५ ॥ खुलिदण्डपताकन पंतिलसी। रसना जनुकालियकी निकसी॥ बढिकोशन फोज हसेलचली। बहुजंगउछाहहसिपाहबली ॥ ६ ॥ चहुवानरु कूर्मसंगचलें। बरबीरपठा नगुमानफलें ॥ मनमैं बलसोदरजूरनमैं। उ रगातसदागतिसेलनमैं ॥ ७ ॥ धनुपहिम खेटकरवग्गकसैं। बपुहानहियेत्वनमानब सैं ॥ इमहिंदुवम्लेच्छचलेरनकौं। छबिनिंदत भद्दवकेघनकौं ॥ ८ ॥ सननंकियश्रोधनल लबहैं। हननंकियहीँसदिगीसदहैं ॥ रननं कियकोचकरीकरकैं। फननंकियनागफटा लरकैं ॥ ९ ॥ गननंकियगैलथरायसकैं छननंकियनेउरहेडमकैं ॥ रुननंकियप कवरभारसिरैं। खननंकियनालनभ्राम्मि

द्दिबैं ॥ १० ॥ ठननंकियकुंभिनघंटघसैं।
भननंकियभेरियहूरहसैं॥ बजिआरबआर
चक्रूहचली। बहुभाँतिअनीकरसैंखुरली॥
॥ ११ ॥ भटकेकनिभागनद्यावक्षरैं। कमने
तबिहंगनबेधककरैं॥ रुपटायतुरंगनबाहल
सैं। असिसगाउदग्गकितेदिरसैं॥ १२॥भट
केकबंदूकनलच्छचलहैं। बहुबारकटारगहा
निवहैं। करटीननवीनघटाबहुधा। बरछी
लच्छनीलअकासमुधा॥ १३॥ खुरतालन
खेहबितानजुर्यो। नदतालनपंकिलनीर
पुर्यो॥ कुलसेइभकाबलकीधरपैं। दलआ
लमबेजयसंगरपैं॥ १४ ॥ष०पं०॥ इतक
सरितउल्लंघिकटकआलमबढिआयो। का
बलपतिप्रतिपत्रप्रथमलिखवायपठायो।
भरतहिरखाँनउभीरछिद्रतुमतकतनिहार्यो।

॥ दिल्लियथाँनौंरवंडिअमलअप्पनउपचा रयो। अबछोरिपहुमिअवरंगकीकरनजो रिलग्गहुचरन। दिल्लीससेनजानहुहुसह इक्कइक्कलक्खनलरन॥ २५ ॥ काबल पतिदलबंधिसमयबलषानसोधिमति रहिअप्पुननिजगेहसेनपठयोआलमप्र ति। आयसेलअप्रतिबेगाभेरलतुरकानम नवद्दे॥लटाबधअभिधानअद्रिआंटा रुकिठट्टे।इतउमंगिसाहआलमअचमूसी मासंगरसज्जहुव।तिनदिननआलदिल्ली सकेबिधिमंडोजयपत्तधुव॥ २६ ॥इत तोपनजुरिपंतिइक्कतोपनउत्तरकैं।इत परिमितआहारइक्कभक्करउतचकैं।इत लारवनबहुरंगउतसुअयुतहिइकरंगी॥ इतबलबुद्धिअपारउतसुबहुजोरअभंगी।

दिल्लियसुहागइतभारपरिउतगरलगीग
ज्ञनिय। दुवदलनजुद्धजालमजुरिगपरि
गरोरघातकिपविय॥ १७ ॥ गिरिनच्चूरहय
खुरनमग्गउच्चटधरपद्दर। खुंदिकमठखुप्प
रियउरगफनमालथरत्थर। दिकपालनउर
संककंकगिद्धन परब्भैं गहकिचिल्लगोमायु
भारभे रुनगनभज्झैं। दुवदलनबीरबत्थ
नबिलगिमनहुमित्रचिरकालमिलि। बि
थिच्चारिहेतिउडुतबिसमथारनधारभहार
भिलि॥ १८ ॥ बजिआयुधरनरीठ फुटिह
नपलछुट्टैं। कवचरंडअसिकरकितर।
किअंत्रावलितुट्टैं। सरनसोकसननंकिपर
तझरिदंडपताकन॥ झुकतबीरघनघायम
नहुँघामरमदछाकन। इभबिरचिमुत्कआ
युधकलहअवन्नमुक्तगहिछोरिहय। कारि

हल्लदुदलगिरिसिरचढि। जुरिजुरिजंपत
जयतिजय॥ १९ ॥दो॰॥बुंदियपति(
आमेरपति। उद्धे हय असवार॥ आलमग
जआरुहिरह्यो। उत्तरिअवरअपार॥ २०॥
उतइतनैं नाहिं बढिसके। त्तउतनैं नाहिं क
म्म॥ इक्कपहरवह गिरिरह्यो। बाजीगर को
दम्म॥ २१ ॥ष॰प॰॥ तबदुव दिस तजिह
यनचढिगगिरि सिखरमहाभट। कहिकरी
मरबतुरकहोतहरिहर हिंदुनरट। बुद्धनृपति
कोबंधुराजसिंहहकुलजायो॥ नामसुअनु
पमसिंहतबहिंमधुसुबनचलायो। दससं
हँससेननिजसंगकरिनृपपिल्ल्योगिरिबि
कटपर। मिलिबत्थलुत्थिकटिकटिपरतम
नहुबिबंधबबंटिधर॥ २२ ॥दो॰॥ बुं
दियदलआमेरदल। पल्लयचढिगिरिसाय

॥ कलहभिरेभटकाबली। उततैंबढिअप्रति
काय॥ २३ ॥ ष०प०॥ पहरइक्कदिनसेस
बहुरिआलमदलपिल्यो। दुदिसछोहछकि
लोहबीरबत्थनबलढिल्यो। उडतकुहिनि
गोदयंत्रजावकसमलोहित॥ धपिधावत
बिनुमत्थहोतअच्छरिगनमोहित। बाहु
लसिरसकंकटकटत फटतमुंडभेजनभर
कि। खिलखिलतभि तजुग्गिनिजट्टिय
किलकिलातकालियकरकि॥ २४॥ घ
ट्टियदोयदिनरहतजोर दिल्लियदलजि
त्यो। कद्योक टककाबलिय विसमअल
धानलबित्यो। गोपीनाथवतंसपर्योअ
नुपममधुनंदन। माधवहरगुम्मानदोयह
डेहनिदुज्जन। इत्यादिबहुतआलमचमू
पद्धयपरकटिकटिपरिय। करितत्थबहुरि

अप्पनअमलकाबलदलहनिबिजयी
य॥ २५ ॥इमआलमलहिबिजयसीम
काबलकरिपहुर। बिष सिंहबुधसिंह
सहितरहितहँबहुबञ्छर।सुविसुतको
जयसुजससाहअवरंगसुखकिन्नौं॥ना
मबहादुरसाहरीझिआलमकहँदिन्नो।
इमजीतिबहादुरसाहबहरमिकाबल
सूबारह्यो।चहबानबहुरिकूरमइनहुप्रेम
परसपरनिब्बह्यो॥ २६ ॥रवटरुपंचहय
इक्क १७५६ सालआगमसकबिक्रम।रु
किजुबनकछुफलकबुहभूपतिबयउत्तम
।बुंदियतैंबुलवायअप्पअंतहपुरलिन्नौ
॥साहबहादुरसंगजंगजित्तनजसकिन्नो
।मुलतानसतासगपनभयोतबतैंनृपम्न
मेरपति।बुधसिंहहिंतुमंडतबिनयगिन

तसिंहजामातगति ॥ २७ ॥ दो० ॥ खर
वक्रबंधसुतकुंयह । ब्याह्योपूरबकाल ॥
संतति इक किंभयो । बुंदाहरधरपाल
॥ २८ ॥ पुत्रप्रसवपुत्रियप्रकटि । नामसु
अमरकुमारि ॥ जयसिंहसुदूजेप्रसवती
जेविजयविचारि ॥ २९ ॥ कन्याअरुपद्द
पकुमर । अंतरहायन तीन ॥ नृपआयसदो
उरहत । पुरआमेरप्रबीन ॥ ३० ॥ विजय
सिंहलघुपुत्रअरु । कछुपातुरिगनसंग ॥
इमकाबलआमेरप्रति । रहतबुद्धरसरंग ॥
३१ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूसप्तमरा
दक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेष
ष्ठोमयूख: ॥ ६ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
प्र०प० ॥ प्रीतिस्वसुरजामातसाल ॥मिप

मंडतश्रति। गृहविधिदुवश्रवनीसजात
आवतडेरनप्रति। कूरमपतिकेसंगपानश्रा
सवनृपलग्गो॥नश्वनबादनगाननाननता
ननमनपग्गो। जिनदिननपातसाहनस
भाजातनसायुधइक्कजनन। लेजातसबहि
केवलफलकबिनुबुंदियहिंदुवजवनन॥१
॥अग्गैंश्रकबरबेरराबसुरजनयहरक्खी।
कसिकटारइहिंहेतुरहैंबुधसिंहसमक्खी।
बसुसायकहयइंदु १७५८ जेठधौरवमरनर
त्तो॥साहबहादुरधामश्रामश्रवसरनृपप
त्तो। जवनिकाद्वारलंघेजुगलतीजेद्वारस
मीपभुव। पहुंचतनरेससुबुधसिं प्रतिजवन
इक्कभटभेरहुव॥२॥वहेजवनश्रा॰ सर्ष
साहश्रालमकोकिंकर। सहसाभिरनप्रसं
गबकोश्रप्रियकुबादपर।रानिकुबेनसंभ

रियकुप्पिमारीयकत्तारिय॥ कालखंजहि
यन्नविखि ख्यथप पहुंचीच्छनियारिय। रीठ
कविदारि निकसी चुवत मनहुं बिज्जुमानि
कनमत। कैतियसहीयपरकीयकोबाता
यनचारजावरत॥ ३॥ पटबैरुकम्रांका
रच्छयुत हत्थन चतुरायत। सालफेरसंसु
ढित खित्रतोरनबनिसायत। कलबिछाति
कुंकुमियनीरजलजंत्रन नच्चैं। उड्डिउसीर
च्छामोदराग गायक बहु रच्चैं। सोहत गुला
बमाछियमहहिकिइंद्रू बिम्बसोहत स्यजव।
दिल्लीससुवन जहं थितमुदित तहं नृपथ
हडारियराजल॥ ४॥ जहं जमीनजोज
ननसेन संकुलि नहिं सुज्झत। तीनसहंस
तुरक्खार पीराधिंचो कियबाढि बुज्झत। सहं
सतोपसाथालजाल चहुं दिस अंजीरित॥

रुंडनकेतुरुपेटपौंनकंदतपथपीरित।असवारअप्रहोनिसपंचसतप्रतितोरनजामिकरहिग।बुंदियनरेसबुधसिंहकीलंहअकुण्यिपट्टिसबहिग॥ ५ ॥चक्कचक्कचहुंकोदकूककद्दुतकटारपरि।बहलभीरुचलछिन्नलगिरततुरक्कानगरबगरि।मारिजवनकुम्मरावचुवतपट्टिसथकिठड्डो॥साहबहादुरसंकगंजिचाहतरनगड्डो।सुतसाहहिंलुभाखीसबनआनिअरजउप्परअरज।कुणपहिसदोसआलमकह्योगुनहआपिहेरियगरज॥ ६ ॥ दोहा ॥कहिआलमसागसहन्यो।नहिबुंदियपतिदोस॥रहलककइलाहीकुबचसुनि।कोनहिरंगतरोस॥ ७ ॥गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥ औरङ्गिरेवम्प्रविचार्य्यकृत्यंबुन्दीन्द्रमाहूय

समक्षमास्थु ॥ आस्थास्थलीघाऽनुजनिंस्त्रि
गीषुर्दिल्लीमरम्भूपभुजे बबन्ध ॥ ८ ॥ शा
लिनी ॥ भोज्याचारं रत्नसेवान्तथैवन्दिल्ली
शान्त्रं शत्रु शल्यस्त्वभावम् ॥ कृष्णान्त्वद्याऽव
न्तिकाभ्यासमूलं सूनोरङ्गिः शुद्धभावन्द
धार ॥ ९ ॥ श्रा॰ मि॰ ॥ दो॰ ॥ यहउदंत
किसदिसउड्डिग ।जसहुंदियपतिजग्गि ॥
इसकाबलस्वाथ्यप्पनि ।लगनस्वामिभट
लग्गि ॥ १० ॥ कूरमपतिकोलघुकुमर ।
बिजयसिंहरनधीरं ॥ जावतथ्यवसरथ्य
सके ।स्वजनकूजामियसंग ॥ ११ ॥ बाल
बेसकौतुकबिरच्चि ।लगिछोनियकच्छुला
ह ॥ पूछ्छ्कपयहिंडोनिपुर ।सेवतआलम
साह ॥ १२ ॥ कूरमपतितत्थहिमारिय ।
लघुसुतसहियसमीप ॥ पहलहियजयसिं

हनृपपुरआमेरमदीप॥ १३ ॥ हरिगीत
म्॥ लहिपहनृपजयसिंहयौंबयअदहा
दशमैंलहौं। भटमंत्रिबर्गबुलायकैंकहिको
नमंत्रअवैंयहौं॥ करिकैंसमस्तनमंत्रभा
रिवयकालदेसप्रमानिये। अवरंगसाहस
मीपसेवनमैंसवैसुखजानिये॥ १४ ॥यह
एप्पिकैंजयसिंहलैदलदेसदक्खिनकोग
यो। दरगाहसाहसलामकैंमिलथानअप्प
नपैंगयो॥ बुलवायसाहसमीपआदुवह
त्थअंजलिसंग्रह्यो। करिहैकहाअबजेरतू
इमब्याजकोंपितक्कैकह्यो॥ १५ ॥जयसिं
हयहसुनिउच्चर्योममभागआजउदोतुहै
करइक्कथंभतसाहजोनरसर्वउप्परहोतुहै
॥अवरंगयहसुनिमोदमन्निरुझौरिआय
सअप्पयो। नृपमानकेकुलमानसोंजयसिं

भूपतिहूभयो॥ २६ ॥बयबालअरुबच
हूहतोनृपमानसौंहुसिबायहै।यहसिवा
ईजयसिंहनृपअबनामएहकहायहै॥
यह बचनअंकरु बानसमतरुइक्कसंवत
१७५९ मैंभईपदुमीसइक्कहिंसअबक
छुहोतजातनईनई॥ २७ ॥दो०॥हिंदु
नकीपदुमीप्रिया।भोगीतुरकनआय॥ज
हांगीरजाराहिंभरत।रतिरसअबनअघाय
॥ २८ ॥कछुअवरंगहुतरुनपन।भोगीस
कतिनिहारि॥अबयहजरठजईफभो।
नित्यनईयहनारि॥ २९ ॥ष०प०॥सर
ससिहयइक्क १७१५ सालअतसाहनि
जिह्यो।जित्तिधोलपुरसमरतखतअवरं
गबह्यो।बसुरुवेदमितबरसपातसाहीनि
रबाही।पुनरसटहयससि १७६३ सालआ

यअवसमयइलाही।इकदिनवुलायसुत
आजमहिंकिरिरहस्यअवरंगकहि।जंपतनि
माजममसिरअलगकरहुपुत्रतरवारिगहि
॥२०॥दो॰॥सुणिजरावयसाहअव।ल
योमृत्युनिजजोय॥जान्योंदिल्लरवसरहेंजो
निमाजवधहोय॥२१॥छ॰प॰॥सुनिआ
जमयहसकुचिचित्तमनसोधिविचारिय।
इहिंउद्यमसंधानहोतसंदेहजियनहिय।
कहतसाहकछुओरकरतकछु॰॰ ॰॰॰सय
॥यहदृढकरिउचारियहोयमोसोंनयहेनय।
जोचहतआपममसुखजनकतोयहहुकम
अलीककरि।दिल्लियसमेत॰॰॰ ॰॰मर
सबाआपहुमहरधरि॥२२॥दो॰॥सुन
साहअवरंगइम।मियसुलआजमसेन॥
अकबरपुरदिल्लियअरपि।कहंवासुन॰॰से

न ॥ २३ ॥ ष०प० ॥ कियआजमयहमंत्रसा
हपरिहैअलजीगन। मैंदिल्लियपुरजायबै
रियाहियअपंचपन। साहबहादुरसुतअजी
मसंजुतहनिसंगर॥ कामबखसपुनिअनु
जमारिहकछत्रतपैंधर। यहसोचिसीरवदि
ल्लियलई। आजमउचितअनीकसजि। च
ढिचलियचाहिगाहियगरज। तबअववंगा
लदलजि॥ २४ ॥ साहबहादुरसुतअजी
मआसियानलेकनर। पूरबपुरपटनांसुरहत
अवरंगहुकमबर। कछुककाजतिनदिनन
साहबुल्लयोअजीमबह॥ बंचिपितासहपत्र
चल्योंलखिबनदरकूंरह। खटसिजलतरकिय
अवकरनगरसैनपुरीसुअजीमरहि। उतस
मयपायआजमचल्यो। दिल्लियआयससा
सलहि॥ २५ ॥ प्रथमसाहकैंपुत्रभयोसुर

तानमुहुम्मद।कारागृहसंकटियमस्योदुख
पायमितंबद।दूजोआलममाहसोहुकारा
गृहडार्‌यो॥तबआजमअज्झोसुतबहिहुत
साहनिकार्‌यो॥आजमयहैसुतीजोलन्यता
हिसाहहितकरिचहैं।सुतकामबखसन्दो
योसुपैसाहहुकमअतिनिबहैं॥ २६ ॥तुर
कनकैंनहिंबरनअवधिचंडालइकलब।का
मबखसयहकुमरभयोगणिकापिंडभव।
याहिसाहकरिरीझधरादक्खिनसबाधुर॥
भागनगरअर्प्योरुबहुरिदिन्नोबीजापुर।पंच
मौंपुत्रअकबरभकटिअतिजुब्बनउद्धतब
ह्यो।परघरननकिंमंडतअनयकुपिसाहल
ख्यहिकह्यो॥ २७ ॥दो०॥अकबरमारककन
नकमुनि।भजिमारन्नधरआय।रट्टौरनढिंकि
रकवयउ।पुनिभयगयउपलाय॥ २८ ॥ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
यने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे सप्तमो ७ म
यूख: ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गी० भा० ॥ अनुष्टुप्युग्म विपुला ॥ सिंहाव
लोकिनीगाथा। प्रबन्धेषु प्रबध्यते ॥ योज
नीयेऽन्वयोवाक्य महावाक्यावसानयो:
॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ तया कथ
यामि नकोप्यऽथ्रजमतिशाहनिदेशपरा
क्रम: ॥ स्वपरशं सचिचार्यय यामनागक
लरोगतवानपिधन्वनि ॥ २ ॥ प्रा० सि० ॥
पद्धतिका ॥ अथौं नरेसजसवंतनाम। उज्झ
नजयंताजिभजिगधाम ॥ हुवजनकरासि
अवरंगसाह । लबजायमंदमग्योगुनाह ॥
३ ॥ रवजुवापुरसंगरसाहकीन। रजाभ

१ सिंहावलोकनरीत्याकथयामीतिकविवचनम

जायनिजभ्रातदीन ॥ तत्थहुकबंधलजिस्वामि
प्रीति। अवरंगहसमलुद्दियअप्रनीति ॥ ४ ॥ ध
नकोसजसौंननलूटगनि। मरुधरअनिअ्रा
यउत्रासमानि ॥ तबसाहमरुस्थललियउ
तारि। जसवंतनिमज्जिग बिपतिबारि ॥ ५ ॥
बहुअब्द मरुस्थलबिनु बिहाय। पुनिदुरिवि
तअ्रायलगिसाहपाय ॥ सकुटुंबरचियदि
ल्लीनिबास। बहुकालरवंचिसेवाबिसास ॥
६ ॥ दैसाहबहुरिधरधन्वराज। काबलधर
पठयोत्रानकाज ॥ नहिसोहुसधीरबासम्हा
रिबहुकालरह्योउद्यमबिसारि ॥ ७ ॥ किस
बिदिसपरनदबीजमीन। सुनिअ्रलसकोप
पुनिसाहकीन ॥ रनवासहुतोदिल्लीसुसाह।
अटक्योजरिफोजनइहिंगुनाह ॥ ८ ॥ इक
रानीधारतगर्भअ्रास। कुवअजितसिंहजनि

अठरजास॥दलसाहहवेलीफिरिदुरंत।अं
तहपुरथेयोंनदुरवअंत॥ ९ ॥रानिनपहँ
पठयोहुकमसाह।सुतजन्मसुन्योंनृपकेउछा
ह॥सोदेहुसोंपिजोमुलकचाह।लैहैंबिसा
सिअबनाहिंसाह॥ १० ॥जसवंतजोधपुर
जोग्यनाँहि।सुतदेहुभयोजोअबआँहि॥रन
वाससबहिसुनियहनिदेस।उमरावबुलाये
निजअसेस॥ ११ ॥आहूतसबहिरहोर
आय।करिमंत्रतबरानिनकहाय॥पठयेनृ
पकाबलदेसधाम।सोपेनसुधारनसाहका
म॥ १२ ॥सुतजोभयोसुनहिगुप्तअत्थ।अ
बताहिसाहपरातसमत्थ॥आरवतइहिँदेहु
धन्वराज।अरकोपलरवनदरसतअकाज
॥ १३ ॥नतउचितनाँहितुरकनबिसास।छे
लहोनलगेयहुआसपास॥अबकादिकुम

रजिहिंतिहिंउपाय। कन्हुचन्नि जिवाबहुध
न्वजाय॥ १४॥ प्रच्छन्नजन्योंअप्पनअप
त्य। तसभालकहहुभोयहअसत्य॥ तहँभ
ट्टियभटगोइंददास। कापालिकबनिलिय
कुमरपास॥ १५॥ भट्टियरघुनाथसुपतिल
वेर। सजिदुर्गदासरट्टौरफेर॥ एवनिसन्नाय
दुवभटअमान। कुमरहिं निकासिगयइषु
यान॥ १६ ॥ कियजंगअवरसुभटनअछे
ह। लरिहड्डिरानीतजियदेह॥ इमभावसिंह
भगिनीसुभाय। निरबाहिपतिव्रतस्वर्गपा
य॥ १७ ॥ जसवंतकुमरकसिंरुदेस। ल
हिकालक ह्वैबदलिबेस॥ तिनहनसाह
सौंधन्वजाय। इकबिप्रगेहरक्ख्योछिपाय॥
१८॥ मरुधररह्योनरट्टौरराज। छिपगेहकु
मरवसिदुखदराज॥ दिल्लीसौंसाहनहुकम

पायमरुधररनवासहु अप्पवर आय ॥ १९ ॥
लहि मिलत मातसुत बिपति बास । तपउग्र
साहित अवरंग नास ॥ इहिं अंतर नृप जसवं
त अंत । असि काल भयो काबल बसंत ॥ २०
जसवंत सुवन लवकुश लाय । इन कुपित जा
नरक वो दुराय ॥ नृप अजितसिंह जसवंत
जात । मन्त्र नर हेहुम बिसथाम ॥ २१ ॥ ग
जसिंह जनन यहैं नास होत । भट दुर्गदास र
क्ख्यो उदोत ॥ नवयुन रससमइक १७२९ अनु
छ्समान । जसवंत भूप किय देह हान ॥ २२ ॥
तिन दिन नय हे अक्कबर कुमार । मरुदेस आये
मय साह मार ॥ रट्ठोरन हैं न अपेस समत्थ ।
॥ २३ ॥
अवरंग छलि रक्खैं सु अत्थ ॥ तब तिन हुद
यो अक्कबर निकारि । ईरान गयो वह बल
बिचारि ॥ अक्कबर सुमर्यो पुर इस्पहान । सु

रहैंप्रतिइक्कबतीसजवान।परैंलगिगोल
ककोसप्रमान॥ललक्कतआजमकेदल
लार।हलीहूअडाकिनिदोयहजार॥२६
चलीगजपंचसहस्त्रनपंति।भयंकरकज्ज
लपब्बयभंति॥लगौंमगनिद्दिकरेघुनलो
भ।डगैंडगडाकनधक्कतछोभ॥ २७ ॥
मरोरतसाखिनजुत्थपमत्त।परीएलब्या
लरिसावनरत्त॥बडेबपुभद्रमृगादिकबं
स।सजेगुडसाजनअंतकअंस॥ २८ ॥
बहैंफटकारतसुंडिनव्योम।प्रभापरिपक्व
कजुबनजोम॥अहारतइच्छितपैनअघ
घात।जनैंजलपीवनकौंघटजात॥ २९ ॥
उडैंजिमकंदुकअंदुकपाय।जरेंत्रिपदी
नखुलेसमजाय॥घुमावतजेसिरवीतन
घाव।पयप्रतिमंडलअंगदपाव॥ ३० ॥

कसेमखतूलकलापककंध।बरत्तननद्ध
हलद्दनबंध॥जरीकुथजेवरजोतिचमक्क
।उथोंअसितांचलपैंमनुअक्क॥करैंपथ
पंकिलदानप्रवाह।लगैंतनतोमरचुक्कतु
राह॥सिरीमनिहाटकमंडितसीस।मनों
अहमंडलभर्गगिरीस॥ ३२ ॥करैंनभचा
रनवंचलचोट।उडैफटिफेटकपाटरुको
ट॥घटाघनमद्दवकेअनुकार।हलेगिरिजं
गमपंचहजार॥ ३३ ॥जुरेहयझंपतज्वाल
ललक्ख।तरारननिंदतमारुतलक्ख॥ज
रेवरजेवरपक्खरजीन।तरंगतिनीरकिमं
डतमीन॥ ३४ ॥धपैंधरिधीरतआदिक
धाव।फरैंछितिपातुरिकीगतिपाव॥प्रब्ब
लतासननासनधौंनबटानटकेजिमगुफ
लतौंन॥ ३५ ॥बनावतनालनभुम्मिबि

भाग। मनोगतिमप्पनमप्पतमाग॥ उडैंग
जगाहमलंगतच्छच्छ। मरोहिगजानिच्छ
पाक्कतपच्छ॥ ३६ ॥ चलैंनिजछांहजउक्क
लचित्त। घलैंबरघुम्मरमानसमित्त॥ पटीप
रपूरलगावतलीह। मनोक्षतगोतमपाठक
जीह॥ ३७ ॥ थरक्कतघुम्मतनीरकिथा
ल। फलंगतचित्रकतैंबढिफाल॥ लसैंगल
यालनमालउदोत। सुचंदनचापकिपन्नग
पोत॥ ३८ ॥ उठैंफुकिनद्दुतंगनअंग।
कमाननडारतकंठकुरंग। कढैंछिपिहत्थिन
मैंधपिधाव। बनैंजनुबारिदबिज्जुसलाव॥ ३९
॥ बहैंछितिछेकतबत्थनघल्लि। कसीसत
कंधरओंडउझल्लि॥ कुसानुगजेपटकैंजित
जाय। रहैंलखिलोभपतंगहुपाय॥ ४० ॥
घमंकियपक्खरघुग्घरनद्द। छमंकियनेउर

भेलकिमह्व ॥ दिसा बिदिसा बढि हिंकत हेस । सजैं जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१ ॥ ढुरैं पलटैं कुलटा जिमि दिट्ठि । चलैं चर ज्यौं परिपत्रिय पिट्ठि ॥ खलीन नले हृन मैं अनुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जत्त ॥ ४२ ॥ बनैं चकरी सकरी बिसिखान । महा यति क्षेप दिखेप टमान ॥ बडे तरु सारव नक्षै कढि जात । बर क्षिन पैं उडि लंघत बात ॥ ४३ ॥ भिरैं खुरसे गिय भूमट भेर । फिरैं गज फेटन तैं चक फेर ॥ सजे इम आजमके दल संग । तरे भय जामल लक्ख तुरंग ॥ ४४ ॥ अमेल कजुब्बन भेष बिसेस । बनैं जिन तैं घर देस बिदेस ॥ बजावत गल्लन हल्ल बितंड । चलैं धरि पब्बय पिट्ठि अखंड ॥ ४५ ॥ भरे सल जे दलडेरन भार । ह

लेजुरियुम्मतसट्टिहजार ॥ सजेबरबेसरबी(
ससहस्र। तथासकटावलितीससहस्र ॥ (
४६ ॥ जनाँननकेजनवाहनजुत्त। सजे(
सिविकारथइक्कअयुत्त ॥ चलीभुवडोरि
नमप्पतफौज। उदैहुवआयप्रवीरनओ
ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेलिसमान
। दिसाबिदिसाफहराय निसान ॥ सहस्र
कपंचनकीबजलेब। चलीपृतनारचिजे
वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
गैन। छईभुवपक्खरलक्खरलैन ॥ बिभा
गनबंटतसत्तुनबंस। उमीरनबीरनकेअ
वतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबनहा
क। करैंमगलुट्टनबाजिकजाक ॥ चलेइम
दिल्लियपैंरचिदाव। उमंगतआजमओ
उमराव ॥ ५० ॥ दो॰ ॥ इतआजमहुम

सजिकटक। प्रभुबनि किन्नप्रयान॥ उत
आलमप्रभुनिउझल्यो। सावनमुदिरसमा
न॥ ५१॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपू
स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेनवमो ९ मयूख:॥ ७॥ ९॥
॥ ९॥ ९॥ ९॥ ९॥ ९
॥ ५०॥ आलमसाहवकीलहुतेअवरंग
निकटजिन। समयसाहअनसानपत्रलि
खितप्रपंचिन। जतुगुटिकाबिचरखिव
रूतकरिबेसदिगंबर॥ काबलधरसुकलि
यअनिअटकियरेवापर। उनमग्नहोयस
रिताउतरिगतिसबेगकाबलगयो। निद्रि
तजगायअरिझियरजनिआलमप्रतिदल
अपयो॥ १॥ छल्लोदेकगरहिंछत्रभग्ग
तासुकभग्गी। अबनिवारिनिंदरियपिक्खि

पब्बयदवलग्गी। घरफुट्टाजरिफुट्टिकुहिहिं
दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
हितयहनबेरफिरिआयहै। बिनुजतनगये
लवलवबहुरिदूजेकलपदिखायहै॥ २॥
निश्शाणी॥ छ्ट्टीकेधरियारपैंचरपत्रलगा
या। धूजिथरत्थरनाजरैंअपसोधनलाया॥
साहबहादुरसैंनसैंबरजोरजगाया। जिनकैं
धैंसुखनिंदतेपरलोकपलाया॥ ३॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अब
हैंहीअप्पनानहिछत्रपराया॥ यौंसुनिबे
गमअप्पनीकरखैंचिउडाया। जाकौंसंतक
हावतेवहबासरआया॥ ४॥ लायसि
लग्गीभकवरौंतुमनिंदलुभाया। यौंसुनि
आलमजग्गिकैंअवरोधउठाया। कग्गरलैं

त्रिप्रपंचकैं बुधसिंह बुलाया। नैंनमिलाया
नेहसैं भुजभार झिलाया ॥ ५ ॥ बंससता
केबीर लूकहियैं बिरुदाया। हिंदूभूपहराम
केसब फोरि मिलाया ॥ दिल्लीके कुचकुंभपैं
कर आजम लाया। जोरजनानैजारकानहिं
जालपनाया ॥ ६ ॥ अपबलेरभुजदंडपैंर
सबीरलहाया। बाजीमैं औरन रह्या पणआ
णलयाया ॥ होरैं भुग्गलहूं रहे जिनैं जसमा
या। योंसुनि रावउदाहहिं करमुच्छ मिलाया ॥
७ ॥ सुद्धि सम्हारि संभरी रससत्त उडाया।
थाईबीररउद्दकाहूहैं छकछाया ॥ ज्योंकंद
लकूनउझकेभटसंजसजाया। कैगोरीसु
रतानपैं सजिकन्हधकाया ॥ ८ ॥ ज्योंसं
भासुरजंगपैं सतसत्तसुहाया। कैद्रोणाच
लालैनकौं कपिराजकसाया ॥ पीवनपारा

रहैं अलि इक्क बतीसजवान। परैंलगिगोल
कपोलप्रमान॥ललक्कत आजमके दल
लार। कलीक्षमडाकिनिदोयहजार॥२६
चलीगजपंक्ति सहस्रनपंति। भयंकरकज्ज
लपव्वयभंति॥लगैंमगनिट्टिकरेणुनलो
भ। डुलैं झांडावन ऋक्कतछोभ॥ २७ ॥
मरोरतसाखिनजुत्थपमत्त। परीणतव्या
लरिसावनरत्त॥बढेबपुभद्रमृगादिकबं
स। सजेगुडसाजनअंतकअंस॥ २८ ॥
बहैंफटकारतसुंडिनव्योम। प्रमापरिपक्व
कजुब्बनजोम॥ अहारतइच्छितपैनअप
घात। जलेजलपीवनकौंघटजात॥ २९ ॥
उडैंजिमकंदुकअंदुकपाय। जरेत्रिपदी
नखुलेसमजाय॥ घुमावतजोसिरवीतन
घाव। पयप्रतिमंडतअंगदपाव॥ ३० ॥

कसेमखतूलकलापककंध।बरत्तननद्ध
हवद्धनबंध॥जरीकुथजेवरजोतिचमक्क
।उयोजसितावलपैंमनुश्रक्क॥कोरैंपथ
पंकिलदानप्रवाह।लगैंतनतोमरतुंडकोत
राह॥सिरीसनिहाटकमंडितसीस।मनों
अहमंडलमेगिरीस॥ ३२ ॥करैंनअचा
रनचंचलचोट।उडैफटिफेटकपाटरुको
ट॥घटाघनमद्धवलेअनुकार।हलेगिरिजं
गमपंचहजार॥ ३३ ॥जुरेहयरूपतजाल
ललक्ख।तरारननिंदतमारुतलक्ख॥ज
रेवरजेवरपक्खरजीन।तरंगतिनीरकिमं
डतमीन॥ ३४ ॥धपैंधरिधोरितआदिक
धाव।परैंछितिपातुरिकीगतिपाव॥खञ्ज
नलासननासनपौंनबटानटकेजिमगुंफ
नगौंन॥ ३५ ॥बनावतनालनभुम्मिबि

भाग।मनोगतिमप्पनमप्पतमाग॥उडैंग
जगाहमलंगतअच्छ।मरोहिंगजानिअ
पाकतपच्छ॥ ३६ ॥चलैंनिजछाहजरुक्क
तचित्त।थलैंकरघुम्मरमानसमित्त॥पटीप
रभूरलगावतलीह।मनोमतगोतमपाठक
जीह॥ ३७ ॥थरक्कतघुम्मतनीरकिथा
ल।फलंगतचित्रकतैंबढिफाल॥लसैंगल
यालनमालउदोत।सुचंदनचापकिपन्नग
पोत॥ ३८ ॥उठैंकुकिनइदुतंगनअंग।
कमाननडारतकंठकुरंग।कहैंछिपिहत्थिन
मैंधपिधाव।बनैंजनुबारिदबिज्जुसलाव ॥३९॥
॥बहैंछितिछेकतबत्थनघल्लि।कसीसत
कंधरऐंडउरल्लि॥कुसानुगजेपटकैंजित
जाय।रहैंलखिलोभपतंगकुपाय॥ ४० ॥
घमंकियपक्खरघुंघरनद्द।छमंकियनेउर

ऐक किमह ॥ दिसा बिदिसा बढ़ि हिं छत
ऐस । सजें जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
॥ छुटें पलटें कुलटा जिमि दिट्ठ । चलें चर
ज्यों परि पक्खिय पिट्ठि ॥ खलीनन लेहन में
अनुरत्त । सदा जय सूचक जेजव जत्त ॥
४२ ॥ बनें चकरी सकरी बिसिखान । महा
गति ह्याप दिखें पट मान ॥ बड़े तरु साखन
हैं कहि जात । बरु च्छिन पैं उडि लंघत बा
त ॥ ४३ ॥ भिरें खुर भोगिय भूसट भेर ।
फिरें जिम फेटन तें चकफेर ॥ सजे इम आ
जम के दल संग । तरो भय जा मल लक्ख
तुरंग ॥ ४४ ॥ अमेलक जुब्बन बेग बिसेस
। बनें जिन तें घर देस बिदेस ॥ लजावत ग
ल्लन हल्ल बितंड । चलें धरि पक्खय पिट्ठि म
संड ॥ ४५ ॥ भरे सल जे दल डेरन भार । हू

लेजुरियुग्गतसट्ठिहजार॥सजेबरबेसरबी
ससहस्त्र।तथासकटावलितीससहस्त्र॥
४६ ॥जनाँननकेजनवाहनजुत्त।सजे
सिविकारथइक्कप्रयुत्त॥चलीभुवडोरि
नमप्पतफोज।उदेद्रुवआयमबीरनओ
ज ॥ ४७ ॥हजारनहोरियहेलिसमाल
।दिसाबिदिसाफहरायनिसान॥सहस्त्र
कपंचनकीबजलेब।चलीफुलनारथिजे
वरजेब ॥ ४८ ॥ समालनसेलनकेगन
गेन।छईभुवपक्खरलक्खरलेन॥बिभा
गनबंटतसत्रुनबंस।उमीरनबीरनकेअ
वतंस॥ ४९ ॥हरोलनचंडनकोलनहा
क।करैंमगलुट्टनबाजिकजाक।चलेइम
दिल्लियपैंरथिदाव।उमंगतआजमसओ
उमराव ॥ ५० ॥ दो० ॥तनआजमतु

सजि कटक। प्रभु बनि किन्न प्रयान॥ उत आलमसु निउच्छल्यो। सावन मुदिर समान॥ ५१॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपू स्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ वुधसिंहच रित्रे नवमो ९ मयूखः॥ ७॥ ७॥ ॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७

मत्ता॰॥ आलमसाह पर्काल हुते अवरंग निकट जिन। समय साह अवसान पत्र लिखि दृत्त प्रपंचिन। जतु गुटिका बिचरक्खि दूत करि बेस दिगंबर॥ काबल धर मुक्कलि यम्रा निघट कियरे बापर। उनमत्तहोय सरितापुतरि घाति सबेग हावलगये। निद्दिलअगाय अद्धिय अनि आलमप्रति दल्लप्पये॥ १॥ बुल्लोदै कग्गरहिं हत्त अप्पा तहुं लक्खी। अबनिसा रिनिंदारिय पिक्खि

पब्बयदवलग्गी। घरफुट्टाजरिफुट्टि फुट्टिहिं
दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुअपंचमंडहुवि
हिनयहनंबरफिरिआयेहै। बिनुजतनगये
लवलवबक्करिहूजेकलपदिखायेहै॥ २॥
निश्रशाणी॥ अद्धीकेधरियारपैंचरपत्रलगा
या। धूजिथरत्थरनाजरूंअवरोधचलाया॥
साहबहादुरसैंनसैंबरजोरजगाया। जिनकं
धैंसुखनिंदत्तेपरलोकपलाया॥ ३॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अबड
ट्टैंहीअप्पनानहिछत्रपराया॥ यौंसुनिबे
गमअप्पनीकरऔंचिउठाया। जाकौंकंतक
हावतेवहबासरआया॥ ४॥ तायसि
लग्गीभक्खरौंतुमनिंदलुभाया। यौंसुनि
आलमजग्गिकैंअवरोधउठाया। कम्मरबं

लिखिपत्रकैंबुधसिंहबुलाया। नैंनमिलाया
नेहनैंभुजभारमिलाया॥ ५ ॥ बंससता
केबीरखूकहियैंबिरुदाया। हिंदूभूपहराम
केसाखफोरिमिलाया॥ दिल्लीकेकुचकुंभपैं
कंचुकआजमलाया। जोरजनानैंमारकानहिं
जातपत्नाया ॥ ६ ॥ अबतेंरभुजदंडपैं
रधीरबढाया। बाजीमैंओरनरह्यापरणमा
पालगाया॥ हारैंभुमानकूरहे जितैंजसमा
या। यैंसुनिसाहउछाहकैंकरसुखमिलाया॥
७ ॥ सुद्धिसफ्फारीसंभरीरसमसलउडाया।
खाईबीररउद्दकाहकैंधकछाया॥ ज्योंकेह
लकनउज्जाकेभटसंजसजाया। केतोरासु
रसानपैंसजिकब्धकाया॥ ८ ॥ ज्योंसं
भासुरजंगपैंसतसत्तसुहाया। केहोराज
लोलनकौंकापीराजकसाया॥ पीवनपारा

वारकैघटजातघुमाया। कैबनसुत्ताबिंटि
कैंमृगराजजगाया॥ ९ ॥ कैकाकोदरचंप
तैंफनफेलबनाया। सोरकिधौंसाबातमैंह
वदुंगमिलाया॥ जमकाअंरवलजानिकैक
हिपावदबाया। यौंसुनिवत्तैंसंभरीमनजंग
लगाया॥ १० ॥ सोकसिलग्गासाहकाक
हिबैंनसमाया। मोसिरजोलौंकंधपैंसुरवअ
प्पकुमाया॥ गद्दीज्यौंनपनाहकी हमबीरसि
वाया। धर्महरामीसेरहै कोऊनकहाया॥ ११
अग्गैंपंडवजित्तिकैंकुरुबंसनसाया। रावन
किन्नीरामसौंसोही फलपाया॥ पापनपक्की
होनदै दलहेहुसिवाया। त्यौंचौं आजमकंठ
मैंधरिचापअधाया॥ १२॥ यौंसुनिसाहसि
राहकैं तवआमबनाया। भावीभूलसुनायकैं
तजबीजलगाया॥ सेनानीसंभरकियाचहु

रंगसज्जाया। बढ्ढे प्रात भयानकौंफरमानचढा
या॥ १३ ॥जंगलगारौंनढक्के घरकाबल (
छाया॥ सिंधूरागरनंकियाबंदिसोरसिवाया
॥डेरौंडेरौंसज्जढ्ढेनरबाजिकसाया॥लौंलग
तीजेजासकाघरियारबजाया॥ १४ ॥किग
नघेरौंघण्टिकैनेरौंगरदाया।काढ्ढब्यालप्रपं
चकैंबिरुदायमिलाया॥अंगरुमालोंमंजि
कैंरंजरंगउडाया। हद्दहैसनकेमानकैसंजाव
रिवलाया॥ १५ ॥केजलदेगौंपायंकैसुरब
लोसलगाया। अग्गैंर किवगजीनकौंबिस
वासबढाया॥ जंपिमहाउतकंधपैंपातिबंदर
आया।जंगीहोदनमंडिकैंगुडनद्धबनाया॥
॥१६॥ घायघसारीघोरज्यौंघलिघंट फि
लाया॥नाणजुपक्कौंआदिकैंसबहेतिसजा
या॥ लंधिबरत्तौंसज्जकैबड बाकलगाया।

फौजौंनायकभारएसिरतेरेआया॥ १७ ॥
यौंकहिकंधायप्पिकैंरनरंगरचाया॥जंगीअं
दुकडारिकैंआलानछुराया॥बारीबाहिर
बाकतैंरचिडाकडगाया।केकमतंगौंतुंगके
धुजदंडझुकाया॥१८॥मेघाडंबरकेकसे
सिरअंबरलाया।केकहवद्दौंसज्जह्वैगल
गज्जमचाया।यौंनभअंबरअम्भूपरिमान
गिनाया।हत्थीआलमसाहकेरनराहसजा
या ॥ १९ ॥ लक्खतुरंगौंलैनपैंबरसाजब
नाया।देतखलीनौंदोरपैंनचिकंधनमाया
॥जंगपलानौंडारिकैंकसितंगमिलाया।
घोरधमंकीपक्खरौंछोनीतलछाया॥२०॥
रंगबिरंगेराहकैंगजगाहलगाया।छोरिदुब
गौंथानतैंचरबाहिरलाया॥तुक्किमलंगौं
तुंगपैंरबिरुक्किलुभाया।तोपहजारातीर

कैंसहकालचलाया ॥ २१ ॥ डारिदवाली
लोरजेसजिजंगलुभाया ।साहबहादुरस
ज्जकैंअबबाहिरआया ॥ बारनपहआरो
हिकैंफरमानलगाया ।कुंचनकीबौंछुहिकैं
हरवल्लबढाया ॥ २२ ॥ एतेमानबिहान
काथरियारबजाया ।पायरकाबौंमंडिकैंच
ढिबीरचलाया ।छोनिमचक्कीभारकैंफनना
गडुगाया ।त्यौंकेदिग्गजचिक्करैंउरकल्पभ
लाया ॥ २३ ॥ध्यानसमाधीछोरिकैंमन
निन्नबढाया ।तहिंदिनधूरिबितानकेघनमान
पिधाया ॥ सारदपुन्निमकासमीजिमबद्दर
छाया ।दक्खिघरित्तीपक्खरौंइकओघलरचा
या ॥ २४ ॥सेलौंअंबरढंकियानभचार
रुकाया ।ठिंडुबातरूपेदवैंफीलौंफहराया
॥तारारउन्तरिपोदकीसुभसौंनबताया ।दक्खि

नभारह्याजनैंहुतलाभदिखाया ॥ २५ ॥
यौंदरकुंचअनीकनैंलाहोरनिराया। पंजाबी
दलबुल्लिकैंकछुतत्थमिलाया॥ आलम
साहसिपाहयौंसजिसेरसिवाया। दिल्लीके
सिरदाबपैंकरिचाबचलाया॥ २६ ॥ इति
श्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायने
नवमराशौबुधसिंहचरित्रेदशमो १० म
यूख: ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
गीर्वाणभाषा ॥ वसन्ततिलका ॥ लाहोर
नामपुरतोपिकृतेप्रयाणे। मेधानुकारकब
हादुरशाहचम्वा॥ आयातमाशुदलभी
भितमागरातो। ऽजीमस्यमूलयुलभाविवि
द: स्वसूनो: ॥ १॥ उपजाति: ॥ श्रुत्वाव
रङ्गकृतकायहानम्मयासमागत्यमनोजघु

र्था: ॥ तत्रत्यभूतिर्दूविणा दिशात्ताद्दुर्गज्ज्व
स्त्रीकृत मागरायाः॥२॥स्वास्थ्यं गृहाणे
ति विचार्य्य बर्जहीहि तत्सोदर चक्रचि
न्ताम्॥ विरच्यतेऽपिमयाप्रयत्नःप्रल
स्यतेचाजमशाहमार्ग:॥ ३ ॥आग
म्यतान्त्वागमवतापि विद्वत्सेनाभृता बुन्दिन्द्र
पेण साकम्॥ न्यस्यात्रखड्डान्तमुरवांबिभ
तिआल्मोरिपुर्जाजवसीम्नि जय्य:॥४॥
शुद्धप्राकृतभाषा ॥गीतिः॥ इअ[1]पत्तंसो
ऊणं अईमलिहिअंजयायमेणसमम्॥
साहबहाउरजोहाहरिससमड्डा जिईसवो
हूआ ॥५॥

(१) इतिपत्रंश्रुत्वा अजीमलिखितञ्जयागमेनसमम्॥ शाह
बहादुरयोधा हर्षसमृद्धा जिगीषवोभूता:॥ ५॥

(१) जैहस्ससमाणरिक्तेबुट्ठोमेहोपरूढसालिम्मि ॥ अहवदिणयरोउइओ निसा। दिसामूढवि हलपहिअगणे ॥ ६॥ (२) वारोआम्मिअसज्झे मिलिओधन्नंतरीछुहाइसमम् ॥ अह वाकुणवसरीरेअप्पोपच्चागयाअसु णो ॥ ७ ॥ प्रा॰ मि॰ । अ॰ प॰ ॥ कियउच्छाहइ मसाहबंचिकमारअूरासम। बुल्लिनृपति बुधसिंहकथ्योतदुदंतबिहितक्रम। इक्कइ क्कसंजोगहोतजिहिंबिधिएकादस॥ इम अजीमगढलेतदइवदीसतअप्पनबस॥ ९ । अब्बाहमहरसूचकयहे अबनबीनअरिभ यअटक। आगराओरपद्धतिउच्चितक्रमसठे

(१) यथासुष्यमाणक्षेत्रेवृष्टोमेघ: प्ररूढशालिके॥ अथवादिनकरउदि तोनिशि दिङ्मूढे विहूलेपथिकगणे॥ ६॥ (२) दारोगेऽसाध्येमि लितोधन्वन्तरि: सुधया समम् ॥ अथवाकुणपशरीरे अहहम त्यागताऽसव: ॥ ७ ॥—

गहंकछुकटक ॥ ८ ॥ यह प्रपंच अनुकूल
पिक्खि बुधसिंह चमूपति। कियफौजन दर
कुंच अंडि अहन बिदग्धमति। सेनमध्यसुर
तान हुवनरनाह हरोली॥ सुवनसाहके तो
नबाबदा किबन चंदोली। जयसिंह अनुज
कूरम बिजयलघुबयलरिनपसंगलिय। इ
हिं भांस उपेत दक्ख तअवनि चलिसबेग अनु
रंगिनिय ॥ ९ ॥ काकोदरकलमलतफनन
फुंकारिपलटावत। कछुहियअकुलातल
खतपुनहिंलचकावत। त्यौं बिनताउरति
कबपुब्बचितलदासीपन॥ यहकौतुकअद
भुतफैलिकरयपथरफौजन। संकरसमाधि
तजितजिसकजकारनलखतबिचारकरि
।नवमालहेतुकहिकहिइनक्खिगहकिसोद
बादलगवरि॥ १० ॥ मिजलइक्कसाहस

नअग्गचोकीत्रिसहस्त्रन। अरिनछन्नउप
चारप्रबलबिसआदिपरकवन। निधितृन
अन्ननिवानमग्गमैदानमुकामिक॥ खगमृ
गलरुउद्यानजातसोधतद्रुमजामिक। प्रति
दिसजिहानखलभलपरिगमनकुबज्रभुव
फोरिहै। पानिननिदानआयकिप्रलयछ
लिसमुद्रहदछोरिहै॥ ११॥ कमठभंगगि
लिअंगप्राननारिनपरिबुड्डिय। भिरिहम
त्रभुवभारपिट्ठिपावकघसिउड्डिय। झगिद
मंगबढिझालजातकच्छपपतंगजरि॥ दरि
तटारिदंतुलियटिकतसूकरतुंडाकरि।
आतंकसुरनउतपातइहिंकंपतजगकार
नकहिय। बुधसिंहमनकुंआगमविजय
अकूपारआहूतिदिय॥ १२॥ अहिक
च्छपभूदारद्रुहिनदिग्गजदिगपालक। भू

लोकस तिमभुवरबकुरिसुरलोक बिसालय ॥ इतससस्तस्ततलादितिमहिसागरइत आसहिं ॥ इक्कहिंपरिआयासअवरआ तंकउपासहिं । संकितबिलासधुज्जतस कलचकितचेतमूलनभजिय । प्रियजिय इतनारिनधरिगमदननेहनारिनतजिय ॥ १३ ॥ इसअनीकदरकुंचआयउत्तरिहं दालन । संभरपतिबुधसिंहमंत्रमंडियमप नमन । रानियरानाउत्तिआदिअप्पनअंते उर ॥ कासबिपिनब्रजबीचतत्थरक्खिय जुद्धातुर । सजिकुंचबकुरिआलमसहित नृपतिआयअकबरनगर । मिलतहिअ जीमसंबोधिमुद्दजटितपिक्खिबीरनज गर ॥ १४ ॥ तेरीबेरअजीमन्यायरक्खौरि सहियकुल । तेरीबेरअजीमथालबज्जो

सुसबनसुख। तेरीबेरअजीमपहदिल्लिय चढिपानी॥ तेरीबेरअजीमजन्योंओरनतुर कानी। इमतिहिंसिराहिबुंदियअधिपस बदलदुग्गसम्हारिलिय। मिलिसुतहिंसा हमंडियमहरकहितुमबिजयप्रपञ्चकिय ॥ १५ ॥ कछुकालरहितत्थसेनपिक्खि यसेनापति। दलसारधदुवलक्खतोपह ज्जारबिबिधतति। सवालक्खतुक्खारजं गपक्खरजिन्हडारिय ॥ दुवदीननबरबी रबरखुसिगजगामबढारिय। इमसहसखु कत्रैंचतनिगडबहुनिसानफहरानिलनि ।इमसबसम्हारिबुंदियनृपतिअतिजवने सप्रयानभनि॥ १६ ॥ दो०॥ अंतहपुर धनआदिसब। राजबिभवरखितत्थ॥ त्रंबकडकबज्जिगबकुल। संगरपढतसम

स्थ ॥ १७ ॥ अप्पन दल रु अजीम दल । सब रा कत्त सम्हारि ॥ करिय कुंच तजि आगरा । रोपन जाजव रारि ॥ १८ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे एकादशो ११ मयूख: ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

दो० ॥ मेचक फागुन साह मरि इन सुनि मधु कृष्ण वदात ॥ आवत बित्ते मास दुव । अवदआषाढ प्रभात ॥ १ ॥ आजम कछु क बिलंब किय । साह बहादुर भाग ॥ दल निबाहि आतप दिनन । आवत मुव अनुराग ॥ २ ॥ तपत जेठ दिनकर दुसह । आजम कटक दुरंत ॥ चलत पंगु जय चंद्र जिम । वसुधा तल दबंत ॥ ३ ॥ इमप

त्तोग्वालेरपुर। आजमबिभवउपेत॥स
जिकित्राबनितादिसब। रक्खियतत्थनि
केत॥ ४ ॥ ष० प० ॥ अग्रजअवरंगी
यसाहदाराअभिधानी। ताकीतनयाब्या
हिलईआजमअभिमानी। यहअग्गौंहू
कबेरपकरिबंधीमरहट्ठन। तबअनिरु
द्धनरेसजित्तिआनीभुजदंडन। दीदारब
खसजाकेउदरताहिनगरग्वालेरधरि। उ
ततैंउफानसागरउपमआयोआजमकोपकरि॥ ५ ॥ अकबरपुरइनतजियतजि
यग्वालेरनगरउन। रदक्खिनसम्मुहरुवे
सुउत्तरपरआरुन। इमआवततुवकटक
मिलेजाजवदिनअत्थैं। रहिमुकामरबइ
रातिकलहउग्गतरबिकत्थैं। तुवदलप
पातसोहतसहजमनहुसिंधुबीचिनभरि

ग । बहूलउदीच्चिश्रावाच्चिकेप्रबलबात
मेटकिपरिग ॥ ६ ॥ दो० ॥ सकच्चउरव
ट सन्नह १७६४ समय । असित
णाढ ॥ दियसुकामदुवदलनइम । मिलि
जाजवगहिगाढ ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥
दै दलसुकासहुंदियनरेस । कियमंत्रपि
क्खिअरिदलबिसेस ॥ रतिबाहबाह
रेकन बिचारि । निजदलप्रबंधबंधियनि
हारि ॥ ८ ॥ परवैरलसहँस द्वादसप्रबीर
। सजिथप्पिसेन बाहिरसधीर ॥ निजभट
रनपंडितजे तनाम । तिनमांहिमुख्यकरि
रक्खिताम ॥ ९ ॥ यहबैरिसल्लकुलभव
अभंग । निजबंधुजेत दियसोधिसंग ॥ क
हिनेह बचनसनमानकीन । अबकाकादि
हीतवअधीन ॥ १० ॥ जोरचहिं सम्मुरति

वाहजाल। तोंझेलिचासभेजहुउताल॥
इमभाखिछबीनाँकियतयार। हयजैलसंग
द्वादसहजार॥ ११ ॥ दलपरिधिजात्यनि
नचक्रदिन्न। क्रमइमप्रबन्धचहुवानकिन्न
॥ पुनिकहियनीतिसाहहिंप्रबोधि। सुख
सैंनकरहुअबकालसोधि॥ १२ ॥ निसजा
मरहतनिंदहिंनिवारि। पिकवहुबिहान
रनभटप्रचारि॥ सुनिसाहसैंनमंडियसतो
स। भूपालबुद्दभुजहुवप्ररोस॥ १३॥ स
बसाहहसमडेरनसम्हारि। न्पसितिरख्या
यकटिपटनिवारि॥ लियसबहिफोजना
यबबुलाय। समुझायकहियआगमसुना
य॥ १४॥ अगैंप्रमादसमुपेतसुत्त। पा
ड्डवदलमार्योद्रोनपुत्त॥ निससुत्तसाह
गोरियअनीक। कइमासइकाकियकालि

सीक ॥ १५ ॥ नसमातअसनअल्पहि विधाय। सज्जहिसमस्तसोवहुसुभाय॥ करितीलत्यत्रपरिकरबिभाग। कद्दहुनिजाजालजयरक्खिराग॥ १६ ॥गजहयनदे हुबिश्रामबंधि। अमपिक्खिअल्पआहा रसांधि॥ वपुमंजिसज्जहुहयगजबहोरि। जंगीपलानसंधानजोरि॥ १७ ॥ निसर हतजाय नजितजिनिकाय। पृतनासुरका लनदेहुपाय॥ छुल्लियबिदग्धलोपनचल्ला क। कहिलेटिदलहिंमंडहुकजाक॥ १८ ॥ पंचहहजारघायकतुरंग। आरोपिसाहतो रतअभंग॥ इममंडिव्यूहजामिकअनूप हहुथानअसनकिन्नौंचमूप॥ १९ ॥ हुत पुनिप्रोहिहैवरदिवान। सबढिगफिरि किन्नौंसावधान। इमसिविरपिक्खिनिज

थानआय।सुखसयनकिन्ननयबलसुभाय
॥ २० ॥ यहसुनिअनीकव्यूहनबिबेक।
आजमहुधियजामिकअनेक॥ इमकिय
मुकामदुवदलअमान।दुवघांनिघातब
ज्जतनिसान॥ २१ ॥रनसाहताबउद्दित
दुओरबकिवोंकिपरतजिनलखिचकोर॥
बढिदुवदलचंद्रजोतिनविकास।पुस्सिमम
यंकधुकुविफुरिपास॥ २२ ॥ दुहुँओरबा
जिगजरथतुरंत।दुवसेनउच्छडेरनदिपंत॥
दुहुँओरसहजामिकदुरूह।सजिसजिअने
कबिचरतसमूह॥ २३ ॥दुहुँओरलखत
पच्छन्नदूत।दुवदलनकीब्यारकअभूत॥
झंडनझपेटमच्चतदुओर।सिंधुवअकूलापद्रुव
दिसमजोर॥ २४ ॥दुहुँओरकरतजामिक
दुराव।दुहुँओरछबीनांलखतदाव।दुहुँओ

रबाजिफौंदतहुबंध।कहुंओरदंतिगज्जत
सदंथ॥ २५ ॥कहुंओरसुइसेलनचमक्क।
कहुंओरघंटपक्वरघमक्क॥कहुंओरसूरक्रू
रनउछाह।कहुंओरहोलहरिहरइलाह॥
॥ २६ ॥कहुंओरसुतरंगबालजात।कहुं
ओरचारुपलपलदिखात॥कहुंओरकरत
बहुरीतिदान।कहुंओरहोलबिधिजुतबिधा
न॥ २७ ॥गुनजासरस्तिकुवइमअपतीत।
गहिकियसुजंगआरंभगीत॥निंदहिंनिवा
रिबुंदियनरेस।करिनित्यबंदिप्रभुहरिकेस
॥ २८ ॥जासिकनसाहआलमजगाय।बु
धसिंहतबहिलियहुतबुलाय॥कहिउचि
तसैनमंडकुनरेस।अबनहिंबिलंबकुवसद
अपसेस॥ २९ ॥सुनिनृपउबाचबनयकहु
समर्म।अबहोतजंगबिधिबिधिअपधर्म॥

बहुतेपकरत दूरहि बिनास। बीरकुंसकैनय हटारित्रास॥ ३० ॥लैजातसबनधरिरिसि स्तथोर। मनमाँहिरहतसुभटनमरोर ॥तस मातअप्पदलपिट्ठिदूर। रहिछत्रकालकट्टु कुजरूर॥ ३१ ॥हमसुभटजुद्दपडितहरोल। बिधिसव निबाहिनयधर्मबोल॥मधि दलसमुद्रभुजमंदराग। निजबलकृपानर चिचंडनाग॥ ३२ ॥जयरत्नकढ्ढिजलन जरूर। हैख्यातनिवेदहिंनिजहजूर।इहि नीतिछत्रसाहहिंनिकासि। बलसजियअप्प हियजयबिकासि॥ ३३ ॥दलचढन बेगदैनिजनिदेस। बिधिकरिबिहानसंध्याबिसेस॥साजउनहुचढनआयसम सारि।नरगजतुरंगकलकलनिहारि॥३४॥ दो०॥दुवदलइमरवलभलपरिग।गहिकि

नकीरियगाल ॥ किलकनकीबनकुवककहर
।पक्करपलालपलाल॥ ३५ ॥भुजंगप्रयात
म् ॥जगीसेनदोऊरहीजामरत्ती।बजेबंब
भेरीबहीहल्लबत्ती ॥दुहूँश्रोरहेसुद्दकेनि
त्यमंडै।दुहूँश्रोरसंसारतैंप्यारछंडैं॥ ३६॥
दुहूँश्रोरगंगेदकेंश्रंगमंजैं।दुहूँश्रोरगी
तादिगीतादिरंजैं॥दुहूँश्रोरबानेलनागे
लबंधैं।दुहूँश्रोरकेटोपसन्नाहसंधैं॥ ३७
॥दुहूँश्रोरजालीदवालीनडारैं।दुहूँश्रो
रधारालधारालधारैं ॥दुहूँश्रोरसिंधूलउ
च्छाहजग्गैं।दुहूँश्रोरवाजीनपैंजीनलग्गैं।
॥ ३८ ॥दुहूँश्रोरमंडालसुंडालगज्जैं।
दुहूँश्रोरढिंजीरजंजीरबज्जैं॥दुहूँश्रोर
उच्छूलनेजाफरक्कैं।दुहूँश्रोरकेजोरछोनी
भचक्कै॥ ३९ ॥दुहूँश्रोरधानुक्कटंकार

पूरैं। दुहूंन्ओर देखैं लगी लोभ हूरैं॥ दुहूंन्ओ
रमैं दूतहूंके भूत मिद्धैं। दुहूंन्ओर बेताल खेलाल
लखिद्धैं॥ ५० ॥ दुहूंन्ओर के भीरु उद्धाव
मंडैं। दुहूंन्ओर के बीर बानैत तंडैं॥ दुहूंन्ओ
रबदीन कोसोर बढ्ढैं। दुहूंन्ओर तोपैं दरावी
न चढ्ढैं॥ ५१ ॥ धरैं कुंत बंदूक तुल्लैं बरच्छी। हुले
हूं कि हत्थी खुलैं सज्ज कच्छी॥ चढी
सेन दोऊ बढी जंग चाहैं। अवाची उदीची
घटा ज्यौं उमाहैं॥ ५२ ॥ दो० ॥ बुंदिय प
ति सन्नद्ध बनि। नय निकासि निज साह॥
दल सार धदुवल कवलै। चल्यो तुरग जय
चाह॥ ५३ ॥ उत आजम आरो हि गजलै
दल सम्मुह आय॥ मुलक प्रलय आगमन
महुं। उदधि सत्त उफनाय॥ ५४ ॥ इति
श्रीवंशभास्करे महाचंपूरूपे दक्षिणाय

10956

लेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे द्वादशोमयू
खः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

दो० ॥ सकचउरवट सत्रह १७६४ समय ।
मिलिचउत्थिसुचिमास ॥ असितपक्खउ
ग्गातअग्गरक । वढिदल विजय बिलास ॥ १ ॥
मुक्तादाम ॥ बढे दलतोपनकौं करिअग्ग
। मिले भटउद्धतसंगरमग्ग ॥ इतै बिचकौ
तुकजंगअचक्क । उग्यौ उदयाचलकै सिर
अक्क ॥ २ ॥ लख्यौ रबिदोउन बंदिबि
सेस । भयौ तबतोपन पुञ्ज निदेस ॥ पलह्
नि पिक्खि कमालन सौंन । लगी दुहुं ओरअ
लातनदैंन ॥ ३ ॥ मिली तहं हैं तीन हजार
नअग्गि । बही अपलीत दुहूँ दिसलग्गि ॥
भयो नभधूसित धुंधुरिमान । लगे दृगमीच

नकेव बिमान ॥ ४ ॥ परेअय गोलक विद्यु
त पात । जुरे नग्गे वर है उड़ि जात ॥ उगल्ल
त फेरहिं फैर अखंड । चलैं चटकारिन के
मित चंड ॥ ५ ॥ भुजंगम के सिर नव्वत भु
म्मि । थरैं फनतै फन धायन घुम्मि ॥ नचे जि
म कन्हर कालिय कंध । बनैं द्रुम छोनिय तंड
व बंध ॥ ६ ॥ लगे डगमग्गन अद्रिन शृंग
गिरैं जिन तैं मृग भ्रामित भृंग ॥ निवानन आ
कुलि तुट्टत नीर । परयो हम आतप धीरत अ
पीर ॥ ७ ॥ तजैं जलधि बीचिन सागर सीम
। भ्रमैं मलयानिल भैं जिम भीम ॥ जुरयो दि
न दद्धि कुहूतम जग्गि । अलाल लगैं जनु
प्रेतन अग्गि ॥ ८ ॥ परैं दृग वऊतसोर प्रका
स । लखैं इन कृइत फेर उजास ॥ दुहू दिस
यौं लखि मारत दाव । भयो दुहुँ घां इमसोर

भ्रमाव ।। ९ ।। सज्यो न दिधूममुगलयसंग
। श्रजोंनमबहलरजिहिंरंग ।। गिरैं बिन्ब
गोलकगोलकफेट । मनोंपबिनैंपबिन्दं
डच्चपेट ।। १० ।। गिरैं जमत्यच्छिनच्छिन
छूट । कटैंयबिपानकिभ्भ्रच्छिनकूट ।। गिरैं
गजगंडडकुगोलनगोन । गिरैंतरुतालकि
पक्कयपोन ।। ११ ।। लरव्यो रबिउगतज्यों
तमलाल । किते भ्रबलुक्कत भ्राक्किकका
ल ।। बिहानकुकोकनलग्गिबियोग । बि
नांनरजानतजामिनिजोग ।। १२ ।। परैं स
जगंडनगोलकपात । कहैंजनुमक्ककजाति
नख्यात ।। परैंहुकुभ्भ्रोरनुपक्कनपंथ । म
भ्रोरवभ्राष्ट्रकज्योंहरिसंथ ।। १३ ।। चहूंदि
समंड चलयोरज च्हर । पर्यो रजताच्चलको
उड्डर ।। जटीजटजूटकुपंकिलजात । ल

तोपनकोमगटारि ॥ ३० ॥ इमकहायबुंदिय
आंधप। मंड्योतोपनजंग ॥ इहिंअंतरदूतन
कह्यो। भोआजमअसुभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंअ
चारतभटनखिच। होहत्थियआरूढ़ ॥ गोला
लगिदोजरखगयो। महाअनयरतमूढ़ ॥ ३२ ॥
अबताकोसुतसज्जहुव। तथासचिवनृपती
न ॥ नरउरपतिदतियानृपति। कोटापतिहुक
कीन ॥ ३३ ॥ ष० प० ॥ सुनतराहबुंदीसमंत्र
निजदलसहमंडिय। अरिआजमउद्धुतखिल
रनतससुतहरोललिय ॥ अरकजाअअवरेस
तोपचल्लतत्रिजामगय ॥ अबहयदेहुउराय
जानिहरिहत्थजयाजय। इमकहिनरेसभु
टनउचितहयनहंकिसम्मुहहलिय। नीरद
उदीचिदिसतैंमनहुँचंडपवनदक्खिनचलिय
॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरुदसमरि

श्रिणाख्यनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रयोद
शोमयूख:॥ १३ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

नराचम् ॥ उठायजंगयौंतुरंगबुद्धसिंहउप्पट्यो
।मचीकजाकहड्डुहाकबीरबालबित्थर्‌यो।म
हागभीरधीरबीरनीरछीरज्यौंमिले।हमल्लको
कमुस्मिलोकखंदखंडह्वैखिले॥ १ ॥ऋनंकि
तंतिसिंधवीअलापरागफुक्कयो।रनंकिजी
नपक्खरीनपौंनगौंनरुक्कयो॥ खनंकिधार
ह्वैप्रहारअंगअंगउल्लटैं।सनंकिस्वाससेसकी
फनालिफुंकरैंफटैं॥ २ ॥छनंकिबानलैउ
डानआसमानछद्दयो।दनंकिघंटजंगजोम
नागतोमनद्दयो॥ तनंकिरच्चरवंचतैंपलंच्चा
पटंकरैं।भनंकिपच्छभीरभन्नगिद्धनीझरप्फ
रैं॥ ३ ॥झलीभलीकृपानमानसुद्धरावबुद्ध

की ॥ अरीनजुद्धकीउमंगराजरंगरुद्दकी ॥ म
च्छोअनीकसंभरीकआजमीकअंगच्छो । च
लैंकुचक्कभोगिभोगभोगपैंभच्योभच्यो ॥ ४ ॥
प्रहाररवग्गधारमारलुत्थिलुत्थिपैंपरैं । चिरैं
बितंडगंडरुंडखंडखंडह्वैझरैं ॥ दिसादिसान
मैंकृपानबिज्जुमाननिक्रवसी । भिरैंगरूरपूर
सूरपिक्खिक्रूरकुक्कसी ॥ ५ ॥ सुबाजिसोक
ओकओकभीरुलोकभग्गय । लरैंनिघातस
स्त्रपातइक्करीठलग्गये ॥ फरैंसमुंडगैमुसुंडकं
धबंधतैंकटैं । अटैंसुरुंडगोलकुंडफाटिमुंड
उच्छटैं ॥ ६ ॥ छिकैंबिछेकबानरूपत्तान
हानबित्थरैं । गिरैंउलहिसूरपिक्खिक्रूरस्फूर
रुग्गरैं ॥ जमातिजुग्गिनीनकीपिबंतपेयप
त्तकैं । किलक्किबीरबावनीफिरैंअमत्तरत्तकैं
॥ ७ ॥ चलैंसमग्गरवग्गकेकटारपारनिक्क

सैं। सुबीरसीससंच्चयी गिरीसकुल्लसैंहसैं॥ बरारि बारिजंत्रज्यौं छुलक्कि घायउब्बकें। अनीकनारिकेबइल्लछोहछाकमैंछकें॥ ८॥ दुरैंबिमानमुक्कि दानकुक्कि रुक्कि केकरी। कनंत हेति हेतिकैं मनो किदंडच्चरी॥ जरैं बितंड पिट्ठि रुंड अद्रिकूटताल ज्यौं। बहंतरत्तखालकै बिसालतालनाल ज्यौं॥ ९॥ मिलग्गि सोर ओर ओर ज्वालजोर संकुल्यौं। भयो निसानध्वानजो दिसा दिसानमैं भ्रम्यौं॥ पिधाय भानु रेनुको बितानव्योम बित्थस्यो। लखे परैं न अप्पपार अंधकार यौं भस्यो॥ १०॥ चलच्चलीम हीरसेनआजसीखलभ्भली। कलक्कली किलक्कझालज्वालकी झलज्झली॥ गिलं तपूरगिद्धनी फिकारि फिक्करी फिरैं। रवि

गेकुवकंजनपुंजलसात ॥ १४ ॥ भज्योससि
भीरुकभालहिं छोरि । रहैं रजलेतसुधासन
चोरि ॥ अकंजसकंजभयेद्रुमईस । समात
नसादभयोभरसीस ॥ १५ ॥ महानटयौंल
हिरवेदसमाज । निमीलतनैंनसमाधिकव्या
ज ॥ जलंधरबंन्धितचंडियत्र्यम्ग । लरैवधव
संकिमहाभयलग्ग ॥ १६ ॥ भयोयहविग्र
हसंकरभौंन । गिरैंधृतनाइतगोलनगौंन ॥
थरत्थरभुम्मिजथाजलथाल । बन्योंरनलोप
नयौं बिकराल ॥ १७ ॥ सिलग्गहिंतज्जहिं
गज्जहिंसोर । लरज्जहिं बज्जहिंसिंधुहिलोर
॥ भजैंगजसंगरलंगरतोरि । महाउतराउतल
वतमोरि ॥ १८ ॥ दिसाबिदिसाजगिजार
तज्वाल । मनौंकुकुउज्जदसैंधनमाल । चलैं
उडिसोरसिरव्वचमकात । परैंजिमभद्दवल

ञ्जुवधात ॥ १९ ॥ भ्रमैं कटिमुंडि गिरैं उडि भाग । मनौं जनमेजय अध्वर नाग ॥ पराव लि गिद्धन कीअजराल । जटायु क ज्यों अज ज्यों गिरिजात ॥ २० ॥ उडें ध्वज दंडन खंड अका स । रचैं जिम उद्धवि के क्रियरास ॥ जरैं अजापि ट्टिपताकन जूट । कियौं दवलगि बअद्विन कूट ॥ २१ ॥ कहैं पुरु जाजव हो न्रृप कोस । दयो चकुँ घात उसंगति दोस ॥ लयो समरं गन तोपन ताप । चल्यो नभ जा मलजा सदि वाप ॥ २२ ॥ दो० ॥ इम तोपन रत होत इत । जुलको तूहल अ्रास ॥ रवि बहु पहर लौं चढि रह्यो । तक्कान तुमुल लमास ॥ २३ ॥ इहिं त्र्पं तर दुव दिस अतुल । घुरत तोप निर्घात ॥ साहिबहादुर भागमन । वज्यो उत्तर बात ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ पलटत उत्तर पवन दाहतो

पनइतदग्गिय।उद्धतपिक्खिअनीकिला
यसत्तुनउरलग्गिय। आजमगजआरूढ
हुतोनिजकटकहरोली॥ गैंलीलगिलैगय
उपरिदलमध्धप्रतोली॥इमतोपजलकआ
जमउडतनिजदललखिखरभरनयो।दीला
रबरवसतससुलहुसहहुैनायकहरवलभयो
॥ २५ ॥ आजमसुतइमकहियमरनमंगल
भटसंगर।करहुसोकजिनबीरधरहुपायनल
जलंगर। इमबिसासिसबसेनअग्गठढ्ढोआ
जमसुत॥गातिअंगदपयगड्डिमरनमंडयोज
न्नूनजुत।दैपुनिनिदेसतोपनदगननृपनबा
बहलकारिसब। दीलारबरवससज्ज्योहुअन
गुमरटेकमंडलगजब॥ २६ ॥दतियापति
राउत्तनामदलपतिबुंदेलह।नरउरपतिग
जसिंहबंसकछ्वाहसमेलह।रामसिंहच

कुंवान अनय आकर कोटापति ॥ लगि बुंदि अपर लोय गिन तभो रोन कालगति ॥ सचिव लहते न आजम सुवन गजारूढ हरवल्ल गहि ।
कुन मंत्र अब बहि आजम उड्यो सुवन स्यास अ पसेसरहि ॥ २७ ॥ इम आजम उड्डु तहि सुव नहो चढि सिंधुर । दगत तोप दुहुं और उगत
वीरन रस अंकुर । इहिं अंतर जयसिंह नगर आमेर नरेसुर ॥ निजन कीब मुक्कालिय बुद्ध पति मति आतुर । गृह बिधि कहाय प्रच्छन्न
असा मिप तुम एव लजवन । कुलस्व सुर टारि कडु कलह होत तोप साल कहवन ॥ २८ ॥ दो० ॥
कुंविय पति यह सुनि बिनय । मति उत्तर पठ
याय ॥ घर अपन संबंध धन । यहं रन इंड अपा
य ॥ २९ ॥ तातैं तुम साहस तजहु बयन यस
मय बिचारि ॥ अच्छु बाम दक्खिन बदलि ।

लंतकंककस्यारखग्गधारधारतैंखिरैं ।। ११ ।।
उडैंदुम्भोरबीरयौंतुपक्कतोपत्यौंचलैं ।।जरैं
दुकूलकेहद्दीहकारिसम्मुहेहलैं ।। छिकैंबि
लंडकालखंडदखानसिद्धनीथसैं । गिरिंद्र
स्यामकीगुफामहामुनिंद्रज्यौंबसैं ।। १२ ।।
सिलग्गिअग्गिकीसिखाचमंकिगेनलों
चढैं। बिमानअच्छरीनकैंउछाहदाहयौं
बढैं ।। उडैंअलातओकअोककोकसोक
संकुलैं । खुलैंसमाधिईसकीधृतीदिगीस
कीडुलैं ।। १३ ।।उदीच्चिबातकेप्रपातसेन
आजमीचली । हरोलचंडबुद्धकीकरालकु
द्धकीहली ।।डरातडक्कडिंड्डिमीडमंकिडा
किनीनकीं ।। १४ ।। बिकत्तघत्तरत्तकीछ
छक्किछिछ्छिउच्छलैं । चलैंकिजंत्रजाव
की सिखाकिपावकीच्चलैं ।। ह्वबक्किधाय

नचैंउअंगनसोंकिनाकिनानकिनीनकी इति ३

नहु केकपोलभायउछरैंपलहिकहिकेउल
हिलुकाइक्कोपैंपरैं ॥ १५ ॥ दो॰ ॥ लरतमर
तनकुंदिससुभट। मिलिपयभत्तमिलाप ॥
कछुकछुतोपनदगनक्रम। धपतइक्कग्रसि
थाप ॥ १६ ॥ प॰प॰ ॥ कोटापलिबारनबढा
यरसबीरग्रघायो। बरखलबाननबिंदुनिनि
ढनीरढ्बनिआयो। सुंडिबीचइहिंसमय
घायगोलालगिघल्यो। इमपोगरउडिजा
तनकितच्चिकारिभजिचल्यो। गजभजतकु
द्दिबरबीरगतिकाढ्ढिअसियदारुनकलह। ह
यमथ्थचरनडारतहलियमरनमंडिअतिको
पमह ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटेसकृपानी
चंडचलानीघेरघलानीसेनघटा। तडैंर
चितालीजुग्गिनिजालीभूरिभटालीकरत
कटा ॥ कालीकिलकारैंबीरबकारैंचंडच्चिका

रैंकुंभिकैरैं।अतिपानइसारैं बोधबिसारैं
मुंडनमारैं प्रेतपरैं॥ १८ ॥असवारउल
हैं कंकटकहैं पूरपलहैं सूरसजैं।पन्नगफन
फहैं अवनिउछहैं बंबबिकहैं त्रंबबजैं॥
बुंदीपतिभारीकालकरारीतेगदुधारीबेग
चली।कोटेसअबाहनउग्रउछाहनमंडि
महारनबीरबली॥ १९ ॥ गिड्डीगहिअंती
अब्बुउडंतीझोकझिलंतीचंगनिभा।सूरम
सिरछायारचनरचायाबेसबनायाछत्रबि
भा॥सुंडिनभरिफुंकैंभैरवभुंकैंचोसट्ठिचुंकैं
नच्चनसा।हल्लीसकमंडैंतालिनतंडैंरवाय
अखंडैंबीरबसा॥ २० ॥गड्डुगड्डुबढिबानी
भटनभयानीधारधपानीमारमचैं।ढालन
लगिढल्लरिकेअसिकल्लरिरावसुझल्लरिभा
वरचैं॥कटिहड्डुकरक्कैंपिप्फपरक्कैंतेकतरक्कैं

राकउडैं। चोटन असि चंडैं खंडैं खंडैं छोरि बि
तंडैं गिरतगुडैं॥ २१॥ बिनुमत्थहु बाहें सं
भुसिराहे चंडिय चाहे उद्दिअरें। डोलैं गजडा
रे कुद्दिनगारे पत्थह्वारे बत्थपरैं॥ गजदंत
उपारैं कोपकरारैं मीरनमारैं बीरबढे। कटि
धारकृपानन गातसुभानन बीर बिमाननके
कचढे॥ २२॥ जुमिनिजयजंपैं कातर
कंपैं बाजि बिरूपैं वेगबली। लुत्थिनभुवछ्ठा
वैं बीरबढावैं मिज्जुनभावैं छोहछली॥ कोटे
सबिनौंहय छंडिमहागयरुद्दि बडे रयरारिरु
प्यो। गजबाजिगहम्महकूहकहकाहत्रंबक
हम्महलोकलुप्यो॥ २३॥ दो०॥ कोटाप
ति किल कतपस्यो। आलमदलसिर आय
॥ करिसुसंधचंडासिकुल। तुट्यो आसिनअ
भाय॥ २४॥ षं०प०॥ तजिमतंगभुवकु–

द्दिकड्ढि असिवरधकिकुप्यो। नटमलंगनचि अंगरंग अंगदजिमरुप्यो। रतनभोजरविम ल्लमग्गउज्जलकरिमाली॥ तिलतिलथार नतुट्टिभये अमरनअगवानी। पैंतीसलं ससिखवत प्रकटधारततदपिनधर्मधर। चंडासिबंसरनभजिचल ननसिक्खेपि स्सोनिडर॥ २५ ॥ चक्ख्योकछुचिल्ह निनकछुकगिद्धिननिजकिन्नों। कछुकल होबिसकंठकछुककालियलगिलिन्नों। खायकछुकरिखत्तालडमरुधरितालडक्का स्यो॥ भरिवजुग्गिनिकछुभागलकुतअ नुरागबढास्यो। अटिअटिहड्डुफग्गुन उप्पमकटिफटिफोजनउप्फन्यों। कोसाल रेसकटिकटिअसिनबटिअटिवढ्ढु पोलं कबन्यों॥ २६ ॥ दो॰ ॥ कोटापति

पय्यस्वेदन जोरिरच्चत उप्पर नररुंडन । सजि
सुंडिल अच्छीस मंसु कंदुक नृप मुंडन । गुडप्
करवर गाड्डीरु बंधि निकुच्चंत बरत्तन । इहिं
मं चलकम्मारलहु माल कालियक्ख अपप्पन ।
लेति तिहिं पिसाच्च बाहक बहल महल उध्ध
लह महमहल । जिलजित सुगंध तितलिल
सम्बरहि हरि सिद्ध हेरत रहत ॥ ४ ॥ भलन
भलकहुं मिरत कहुं कारे तेथ्थ अक्कंदल । कर
मकहुं कर कल्लारल मिरल गज कहुं कचिक्कार
त । कहुं कथ्थथ्थ कटि परत कहुं कघायल मद
झुमत ॥ कहुं कबंध उठिलरत कुहु कुरा
मन कहुं भुम्मत । कहुं कंक भेद केवल नकर
त कहुं सिचान मारत झपट । कुक्कात पिरंत
डाकिनि कहुं कलाकि जरंत पावक लपट
॥ ५ ॥ कहुं कौनक द्विपरत कहुं ककटि

भौंह फद ह्नत। उत्तमग कहुं उडत गहत हर
उडुमोद गत। कालखंज कहुं कटत बुद्धि बुक्क
न कहुं बुट्टत ॥ कहुं फुल्लत हिय कंज मधुपमा
नस उडि उट्टत। करपय बिभिन्न तरफत क
हुं कमन कुं मीन जल तुच्छ मत। दीदारबख
स बुधसिंह हुव रसिक प्रान बाजियर मत ॥
६ ॥ रुहिर रंग बढि ब हत छेद छत्तिय
पिचकारिन। डफ मद्दल डिंडिमिय तान मं
डत सिव तारिन। पात गुरुज पुट्टलिय पुह
प स्रृंगार प्रकासत ॥ खग्ग खग्ग मिलि ख
रत बूर अब्बीर बिभासत। जुग्गिनि जमाति
पन नारि जिम आलापन कुकि उच्चरत।
दीदारबख्स बुधसिंह दुव कलह फग्ग कौ
तुक करत ॥ ७ ॥ पक्कमि छत्र कटि परत
जरत चामर ज्वालानल। बरत बीर अच्छ

रियझरतहेतिनकृसानु झल। कोसनक
लहलुरंतबाढअसिबरइकबञ्जत॥ब
कुनिषंगबिकवरतचापतुट्टतसरसज्जत
।तरफतप्रमत्तहिंदुवतुरकआलमदल
जालमजम्यों।नववयरिवल्हारबुंदिय
नृपतिआजमसुतबढिअंगम्यों॥८॥
॥तोटकम्॥धरसंगरआजमपुत्तध
र्यो।पजउप्परलोहनछाकछक्यो॥द
तियापतिआदिकरीनचढे।बकुअग्गप
वीरउमीरबढे॥९॥रसघोरनिसानन
ज्वालरच्यो।बिदिसानदिसानकृसानुम
च्यो॥सिलिसूरझरैंपरपैनमुरें।जिमतक्कि
यसाहियबादजुरैं॥१०॥खगधारनधा
रसमाररिवरें।फलभोजनचोसठिसंगफि
रैं॥नटकेबटक्कैभटकेलटके।झटकेनझरें

बटकेबटके ॥ ११ ॥ किलकारतभैकरि
भूतमिलैं ।हलकारतरिच्छरपालरिवैं॥
उमडेअसिबिज्जुवअंकनसे।घुमडेदल
भद्दवकेघनसे॥ १२ ॥ गहिभैरवनर्त्तक
कीगतिकौं।मिलिबंचतकालियकीमति
कौं॥करितुंडसतुंडसमुंडकसैं।बनिआ
खुगसंकरअंकबसैं॥ १३ ॥ सुतजानिप्रचुं
बनईससजैं।भयधारितबैंकिलकारिभजैं
॥छहजोजनफौजनभुम्मिछई।अतिपाउ
सजानिघटाउनई॥ १४ ॥ पवमानदिगुत्त
रकोप्रसर्यो।सुमनोंघनपोसकहोयसर्यो॥
चहुँघाँतरवारिनकीचमकैं।तिदिपैंमनुबि
ज्जुवकीदमकैं॥ १५ ॥ मिलिभूरवनओ
जइरम्मदलौं।लगिसिंजितदद्दुरकेनदलौं॥
बकुरुंडसुरोहितचापबनैं।तनितारवदुंदु

मिढोलतनैं ॥ १६ ॥ करकावलिहट्टुनखं
डकिनैं। फटिटोपउडेबकपंतिफिरैं ॥ चमकैं
जोङ्गिरिगालोंचिनगी। उदसोनितबुट्टिय
रैंडमगी ॥ १७ ॥ रनजाजवपाउसयोंबिर
च्यो। मुगलानचुलालनदावमच्यो ॥ भटख
ग्गानकेकटिमुंडिभमैं। अहिज्यों जनमेजय
अध्वरमैं ॥ १८ ॥ करकैंकटकावलिकोंच
कटैं। फरकैंकढिकालिकबक्षफटैं ॥
रवारिनहट्टुतुटैं। छरकैंछितिछिंछिनरत्त
छुटैं ॥ १९ ॥ लटकैंअसवारतुखारलरैं।
पटकैंगहिइक्कहिंइक्कपरैं ॥ चटकैंकटिटो
पनकोंचटकैं। छुटकैंभटबाजिनलोंछुटकैं
॥ २० ॥ गटकैंपलगिद्धनिभेतगिलैं। खट
कैंअसिसंधुपरिखंडखिलैं ॥ भटकैंकिरका
ननपायभरे। भटकैंभटगज्जहिंछोहभरे ॥

॥ २१ ॥ लगि कोसन जंगन की लरसैं। बर
खान रअंगन की बरसैं ॥ सननंकत गोथन
मानसरैं। झननंकत आयुध अग्गि झरैं। ॥२२
तननंकत तेगन की तरकैं। थरकैं रननंकत लो
हथकैं ॥ रन होत मुहूरत भान रह्यो। बल लैंब
ललोह सुमार बह्यो। ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ बलब
ललोह सुमार बहि। घोर मचिग घमसान ॥
आजम सुत अधार भो। चंड किरन चकुवान
॥ २४ ॥ ष॰प॰ ॥ घटिय दोय रबि रहत प्र
थित आजम सुत पिल्ल्यो। नर उरदतिया नृप
तिग निहर वलदल ठिल्ल्यो। कुक्क परिग चकुं
को दटुक्क टुक्कन दल तुट्टत। हूरन मोह कुला
सच्छोह सूरन असुछुट्टत। निज साह भाग र
रीति नव प्रबल नीति फल पक्कयो। बुंदियन
रेस पावक बिसम तून आजमदल लक्कयो।

॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटानिभफोजनभो
घमसान । उलैं जवनेसइतैं चकुवान ॥ बजैं
असिहड्डनअड्डु बिदारि । किधौंतरुकट्टहिं
कूरकठारि ॥ २६ ॥ अस्योदतियापतिसम्मु
हआय । पर्‌यो भिरिबीरलयोफलपाय ॥ रुप्यो
गजासिंहकुकूरमराज । सज्योकुलहड्डनकोसि
रताज ॥ २७ ॥ बढीबुधभूपतिकीहतबाह
कटेभटओरभज्योकछवाह ॥ धरानभसंगर
संकुलिधुंधि । लर्‌योनृपआजमकोसुतरुंधि
॥ २८ ॥ रुपेइमजाजवहेदलरारि । झरैंअ
सिझारिलौंझनकारि ॥ महानटनच्चतमुंड
नमाह । करैंकिलकारलकालियकोह ॥ २९
॥ रुकैंबिहसैंन्चउस्सहिनकुंड । रचैंअसिवार
नचैंबहुरुंड ॥ अरैंइकतैंइकबत्थनआय ।
परैंगजनक्रयज्यौंपविपाय ॥ ३० ॥ धरत्थर

भुम्मि चलञ्चलथान। लग्यो अहिभोगनकौं
लचकाम॥ कुलालकचक्रभयोभ्रमिकञ्च
।बरक्कतसूकरदड्डु बिलञ्छ॥ ३१ ॥लगे
अतलादिककंपनलोक।इतैंअकुलातत्रि
बिष्टपओक॥ रमैंपलचारकुआरुनरंग।स
बैइमसूचतसोनिलसंग॥ ३२ ॥चढ्योगज
आजमपुत्तसचाव।धप्योनृपसम्मुहउद्धत
धाव॥ कमाननमैंचलकाननकानि।लख्यो
इमभारतबाननतानि॥ ३३ ॥लगैंसरव
त्तिलहूँइमलीन।मनों बिलसप्पकिसंबर
मीन।सजैंबाजिपन्नगसायकसोक।उडैंस
लभाजिमअंबरओक॥ ३४ ॥चलैंअसि
कुंतबरच्छिनचोट।असूरदुरैंबकुहत्थिन
ओट॥उडैंबकुअंबरअग्गिअलात।जरी
गिरिगिद्धनिच्चिल्हनिजात॥ ३५ ॥फिरैं

रन्धिफेरव फेरन फाल । बिबुल्लत कंक उडैं बि
कराल ।। कमान फटैं रु हटैं कमनैत । पलान
कटैं उलटैं पखरैत ।। ३६ ।। हरैं कहुं मानल
रैं कहुं हक्कि । जरैं कहुं मुच्छ परैं कहुं जक्कि ।।
बरैं कहुं हूरफरैं कहुं बाढ । गिरैं कहुं भीत धरैं क
हुं गाढ ।। ३७ ।। रुलैं कहुं मत्त खुलैं कहुं रो
स । फुलैं कहुं हत्थिडुलैं कहुं होस ।। बकैं कहुं
प्रेत छकैं कहुं बीर । धकैं कहुं ज्वाल हकैं कहुं
धीर ।। ३८ ।। चढैं कहुं बाजि बढैं कहुं चाव ।
पढैं कहुं बंदि कढैं कहुं पाव ।। धमैं कहुं स्वास
नमैं कहुं धूत । भ्रमैं कहुं गिद्ध रमैं कहुं भूत ।।
३९ ।। नचैं कहुं रीठ जचैं कहुं मुंड । रचैं कहुं
सामन चैं कहुं रुंड ।। बजैं कहुं प्रोथ सजैं कहुं
लाह । लजैं कहुं भीत भजैं कहुं लाह ।। ४० ।।
खसैं कहुं घुम्मि हसैं भट सग । त्रसैं कहुं रोय

कसैं कढुं तंग ॥ चटैं कढुं सोन घटैं कढुं चेत।
हटैं कढुं पिक्खि वरटैं कढुं हेत ॥ ४१ ॥ बहैं
कढुं संगि रहैं कढुं बेर। खवहैं कढुं भिंटिन्च हैं क
ढुं खेर ॥ चबैं कढुं उट्ठ फबैं कढुं चोट। अबैं क
ढुं मिच्छ दबैं कढुं ओट ॥ ४२ ॥ झिलैं कढुं
वार खिलैं कढुं झुम्मि। भिलैं कढुं घुम्मि मिलैं
कढुं भुम्मि ॥ लगैं कढुं मोह बगैं कढुं लोह। द
गैं कढुं तोप जगैं कढुं द्रोह ॥ ४३ ॥ गिनैं कढुं
याय बनैं कढुं गाय। हनैं कढुं दोरि भनैं कढुं
हाय ॥ चिपैं कढुं सोन लिपैं कढुं चेल। छि
पैं कढुं भज्जि दिपैं कढुं छेल ॥ ४४ ॥ तनंक
त चाप प्रतंचन तुट्टि। खनंकत खग्ग सुमुट्ठि
न खुट्टि ॥ सनंकत बानन प्रानन संकि। झनंक
त पक्खर रोचि झमंकि ॥ ४५ ॥ बढे पणवान
कन द्दबिहद्द। महाबल बुड्ढ रच्यो अवमद्द ॥

परयो अरिसेन उपक्रमपूर। सज्यो इम संभर पुं
वसूर ॥ ४६ ॥ थेइ त्थेइ नञ्च हिं उद्दिकबंध
मल्लप्प हिं दै करताल मदंध ॥ निसा दिनजा
दिन हिन्न अनंत। भिरैं गजतैं गज मत्त अमंत
॥ ४७ ॥ अटैं बक्कबीलि बिना असवार। जल
द्दहिं खुद्दहिं जीन अपार ॥ गिरैं द्रुमपाल क
दारित गत्त। सवों तरु लैं कपि निंद प्रमत्त ॥
४८ ॥ पताकिन होत सदंड प्रपात। बडे तरु
तालसकी सकि बात ॥ किरैं बकु मल्ल कल
ल्लकका हि। गिरैं गुन तुहि फिरैं धनु फाहि ॥ ४९
॥ खवैं बिखवैं सर छोरि निसंग। जथा ति
बकु भीम भुजंग ॥ इ ली असि धे नुन छुट्टि अ
पार। किधौं मलयाचल नागकुमार ॥ ५० ॥
बहैं परिघा लनकुंल सबेग। त्रिसीस किसंमि
रम्म हि सलेग ॥ अरैं कति अम्बन मंडि निसु

द्ध। करैं तुमुलाहवके भटक्रुद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफ
टि दुंदुभिभेरिनपूर। गरज्जहिं केनरमंडिगरूर
॥ परैंफरि बग्गकबीरुपलान। कटैंखुरप्रोथ्थह
यच्छटकान ॥ ५२ ॥ रची इमसंभरजाजदरा
रि। हनीअरिसेनघनीहलकारि ॥ घटागज
मध्यसुदे घनघाय। लयो नृपआजमपुत्तनि
राय ॥ ५३ ॥ भयोजबहीअसुआजमभंग
। सबै नृपतत्थटरे तजिसंग ॥ भज्यो इकभूप
रुद्वैहनिभिंटि। लयोअबआजमकोसुतबिं
टि ॥ ५४ ॥ चढ्योगजहोअबहारिबिचारि
। रचीसुतआजमबाननरारि ॥ सुसंभरहे
तिसबैबरसाय। दयोअरिनिब्बलपारिदबा
य ॥ ५५ ॥ कुती हयलक्खचमू हमगीर। भ
योअवसाननइक्कक्रुभीर ॥ रच्योजिहिंबि
ग्रहभुग्गनराज। बचैं वहतिन्निरिवर्यौं लहि

साज ॥ ५६ ॥ फितूरदफैकरिमंडलफेरि। घ
नीनिजसेनलयोगजघेरि॥ कियोतउबानन
जंगकराल। कहाँलगजोरकरैंलहिकाल ॥५७
अधर्मनहोतसहायकअंत। लगेबुधआयुध
सर्बसिलंत ॥ भयेसुलआजममोहिबिभान
।चल्योसमलंगहिलैचकुवान॥ ५८ ॥ दो०॥
घटियइक्कखिल्लरबिरहल। घल्लियसंभरघत्त॥
आजमसुतइक्षपालसह। मोहितभयउप्रमत्त
॥ ५९ ॥ इभसमेतलैतिहिंअधिप। उमडिसु
कालनआय॥ साहबहादुरढिगसजव। पत्रबि
जयपठवाय॥ ६० ॥ सरिताइक्कढिगसजत
हो। सफरनबडिससिकार ॥ आयोडेरनबि
जयसुनि। कहतहुइजयकार॥ ६१ ॥ इति
श्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेन
वमराशौबुधसिंहचरित्रेपंचदशो १५ मयूख:

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो०॥ आजम दल अबलग बज्यो। पृथक
लोभगतिपाय॥ अबटरि टरिसबउत्तरे आल
मदलबिचआय॥ १ ॥ ष०प०॥ चरमाच
लरबिचढत खिल अमुदित निसचारन। आ
जमसुत तजिमोह बक्करि बुल्ल्यो थितबारन।
कोजित्त्यो दल कोनसुसुनिइन कहियकुसी
लित॥ जित्त्यो आलमसाह कटकवाको तुम
कीलित। दीदारबरवसयहसुनिदुचित होइ।
सोंसिरहनिमरिय। अतिलोह छकित इभपाल
हू। परिभ्रमन्त असुपरहरिय॥ २ ॥ दो० ॥
जिहिं उप्पर आजमसुवन। मरिगफोरिउलमं
ग॥ बारनवहसोनितबमत। आयुधभेदितअं
ग॥ ३ ॥ आजमसुतमृतसुनि अधिप। इभ

सु सम्हारिय आनि ॥ कोटि इक्क जेवर कढिय। पृथक सुधरिय प्रमानि ॥ ४ ॥ खचर भेजि निज साह ढिग। कथ सब बिदित कहाय ॥ आ जमसुत गत असु भयो। प्रभु अप्पन जय पाय ॥ ५ ॥ कोटि इक्क जेवर कढ्यो। सो थित फौ ल समेत ॥ आय सब सिभ्रात कि अब हि। आउं सबल समेत ॥ ६ ॥ ष०प० ॥ सुनि बु द्धो दित साह खास निज दास खिनायो। मंडि बिबिध अनुहारि कथित अति नम्र कहायो। बल तेरे बुंदीस उअंडि आजम पर आये ॥ काब ल जे तैं कहिय बैन करि सत्य बताये। अब प रियरनि तुम अमित अति बपु बिसल्य करि बिधि बिहित। सेना सम्हारि मंड कुसयन। आ वहु भ्रात नरेस इत ॥ ७ ॥ दो० ॥ तब यह सु निस नाह तजि। निज बपु सल्य निकारि ॥

कियाँ बिधान भिसकनकथित। सबदलप्रथमस
म्हारि॥ ८ ॥क्रमसबसायंकृत्यकरि। संभरमंडि
यसैन ॥भीरानिसाआगमभयो। इहिंअनरतिहिं
अैंन ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिभानुछपासुजि
हानछई। मिलिकंजबिरंजकुसोकमई ॥ बि
छुआलयअल्लिरिघंटबजे। सुरभीनस्वबच्छनमे
लसजे ॥ १० ॥ दिनमूकनघूकनहूकदई। बि
तचक्कनचोंकितजीचकई ॥ चिलकारिनपि
गलिकाचरकी। निधिसीनिसचारनधारनकी
॥ ११ ॥ लकुंअरनचोरनचायचढे। लकुजारन
दारलमोदबढे ॥ दिनचारअयारअगारदुरे। कहि
व्योमनछत्रनचित्रफुरे॥ १२ ॥जुरेदीपनिवा
सनभासजगी। दहनोदयचुल्हिनहेतिदगी ॥
रचिगायकगोरियगानरहे। गनिकानउमंगनि
नंगगहे ॥ १३ ॥रसपीयस्वकीयनतीयजा पर

कौयन तीयनपीयतजे ।। भयमुग्ध नवोढनचि
तभस्यो । हियहच्छयमध्यनबोधहस्यो ।। १४
।। त्रसिप्रोढनकेलित्रपाबिसरी । कुथधारित्र
धीरनशारिकरी ।। छमिआगसधीरननाहछले
। चहिचालबिदग्धनवावचले ।। १५ ।। रसभूलि
स्वहूलिनऊलिरची । बथ नारिनलच्छितिका
नबची ।। कुलटालजिगेहसनेहक्रमी । जिय
मैंमुदितानरुप्रीतिजमी ।। १६ ।। अनुपुब्बस
यानन भीतिभरी । पियसंगसहेटनभेटपरी ।।
परभोगदुखीनसखीपरखी । हियरूपरुप्रेमव
तीहरखी ।। १७ ।। पतिप्रोषिलकानबिलाप
पस्यो । कुथमानसखंडिलिकानकस्यो ।। दिनटे
क निबाहिअवैंहरिता । तजिमानउठीकलहं
तरिता ।। १८ ।। ठगिबिप्रसलब्धनसोकझि
ल्यो । मनसेटसहेटनआनिमिल्यो ।। उतकंठि

निघुच्छिनिदानअली। लरवयोमगबासक
सज्जलली ॥ १९ ॥भरदर्पअधीनइनानभज्यो
।अभिसारिनिबेसनयोउपज्यो ॥बकुगंधकु
वेलनकोबिकस्यो।ससिहूबउदेगिरितैंनिक
स्यो॥ २० ॥सांझिकेबसिओषधिपोषलह्यो।ग
हकायचकोरनमोदगह्यो ॥भुवपैंइमहोतनिसी
थभयो।रसप्रेतनहासनयोरचयो ॥ २१ ॥थित
निदअजाब्यवहारथके। जिमसंजमइंद्रियजो
गिनके ॥गतियाभतिरत्तिसुबित्तिगई।भलब्र
ह्ममुहूरतबेरभई ॥ २२ ॥बिरुदारवबंदिनसो
बिथर्‌यो।क्रमजागितहाँनृपनित्य कर्‌यो।।छ
कतैंकसिआयुधजोमछल्यो।चढिबाहरुसाह
हजूरचल्यो ॥ २३ ॥इतआगमप्रातलुभेअह
के।चटकीरचनायुधहूचहके ॥दिकप्राचिय
आरुनरंगदिपी।लगिअंबरभुम्मिसुरोचिलि

पी॥ २४ ॥लघुदिट्ठिन छत्रननिट्ठिलहैं। चि
तज्यौं तजिभोगन ज्ञानचहैं॥ भजिकैं तम
गुफ्कानभस्यो। जिमतल्वलहैं ग्रह दंदजस्यो॥
२५ ॥दुतिपूरजरूरइतैं दमक्यो। चढिअक्क
दैं। ँ चमक्यो॥ छकमैं तिंहिं बेरनरेसछ
यो। गतिअर्जुनसाहसमीपगयो॥ २६ ॥ दो०
॥ साहबहादुर तिंहिं समय। बेगेआसबना
य॥ नगरि निछावरि लेत निज। परिकरलैंन
सपाय॥ २७ ॥सुनिआगम बुंदीसको। दारू
अटा चढिदेखि॥ प्रमुदित आयो तर तजु
। लोभ बिजय हिय लेखि॥ २८ ॥मनोहरम्
रतिमैं नरेसआयअंदरप्रवेसहोत। जब उन
कीनकीनी सूदनाअछूतीहै। जायकरिन
रि निछावरि मिसललेत निकट बुलायसाह
बरबसी छिबूतीहै ॥दोऊहाथहियलौंलगायसु

सिकाय कह्यो मरदबलीतैंरारवी रवूबमज्जबूती
है दिल्लीपुरगादीमैं लहीजोयहबादीबीरमहा
रावराजारावरीसपूतीहै ॥ २९ ॥ पादाकुलक
म् ॥ महारावराजाइमअक्ख्यो भूपहिं छिनक
लायहियरक्ख्यो ॥ पुनि बरवसीस करी दिल्लिय
पति । रामनृपतिवहसुनकुरवखिरति ॥ ३० ॥
कोटादिकचोरनगढदीनें । कहतनामजे सबह
मचीनें ॥ कोटा बकूरि मल्लारपट्टनि । गागरोनि
तीजोकुमानमनि ॥ ३१ ॥ साहाबादसेरगढथा
नक । अरु बडोदन्चेचत अभिधानक ॥ छबड़ा
अरुगूगोरहुर्गोबर । पंचपहाड पडावडग नगर ॥
३२ ॥ मधुकरगढके पोनप्रमानकु । रेलेटअंत
एरंड बखानकु ॥ मांगरोल बारोंमेदुबनर । आं
वांअरु कनवासमुभगधर ॥ ३३ ॥ गढसुकुंद
दीगोदरुअनता । रामगढसुकुंजेडूनानता ॥

आदोनीसौंगोदअत्यावा। भीलबातचाचरनि
खधावा ॥ ३४ ॥ सीसवालिघाटीघाटोली। खे
राबादसऊगलजोली ॥ नरसंगढकोकिलपुर
ल्यौंबर। बासथौंणमोहीसुवफावर ॥ ३५ ॥ से
रगढरुछीपाबडोदसह। देवीरखेटरीछवाअरिद
ह ॥ परवाटिगागचिरढलाई। अठरोईरुवका
आरिआई ॥ ३६ ॥ खातारखेरीबक्करिबखानक्क।
भालतोरुभारैलोमानक्क ॥ काकुरनीकूंडीरुखा
नपुर। रामपुदियआसन्यआनिउर ॥ ३७ ॥
साहसिकरवंडेरलदिन्नीजब। बिन्नतिनृपकर
जोरिकरीतब ॥ कूरमनृपजयसिंहहरामिय।
पैसेवकभंगीलसजामिय ॥ ३८ ॥ तातेंलिं
हिंसंबंधअरजयह। आजमदोसआहिजरव
सीतह ॥ जोआलसातिहिंढिगलोजाऊं। सेव
कताअपमानसजाऊं ॥ ३९ ॥ सुनियहअ

रजसाहकछुअकवैं।तवसंबंधमहरहमरकवैं
॥पुरआमेरसुतोफिरिपावहु।अबतवसंगसैं
लैंढिगआवहु॥ ४० ॥यहसुनिनृपकूरम
ढिगआयो।अदरघायसिकृतवहपायो॥
तीरएकनुजसव्यलग्योतस।जाजवरनइक
कंठलहनजस॥ ४१ ॥सोजसभयोबुद्धसरना
गत।छकिकूरमपायेकेवलछत॥तिनसिकृ
तजायरुनृपतक्यो।करिमनुहारिमोदहियछ
क्यो॥ ४२ ॥कहीबहुरिनृपनेहकहाई।आ
जमबसिआमेरबिहाई॥आलमसेबाअब
हिअराधहु।स्वस्पजोरदुल्लभसुखसाधहु॥
॥ ४३ ॥डेराअबआलमदलमंडहु।रक्षिक
छुदिननबिपतिदुखखंडहु॥कूरमकोंलेसं
गयहेकहि।चाहुदानंनिजदलआयोचहि॥
४४ ॥अप्पनढिगकछवाहउतारे।सालक

जासिप बिनसुसम्हारे ॥ बिधिइहिंकदनरु
पूरनकिन्यो । जाजवरनकुन्ननृप जिन्यो ॥
४५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूउत्तरायणे द
क्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे षोडशो
१६ मयूखः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
षट्प० ॥ भरतसाहअवसांमअसंडियरट्ठो
रन । अलनसाहअवनीसमूढतससुतप्रमा
दमन । इहिंअंतरयह पिक्खिआनि बंभन
अगारसन ॥ पट्टतरवत जोधपुर नृपहिं रकव
कुनिसंकमन । यह मिसलअट्ठउपजायउर
द्विजगृहतैंतबआनि दुत । नृपअजितसिंह
रक्ष्योतरवतसबन तत्थजसवंतसुत ॥ १
॥ दो० ॥ इतआलमहि बिजयगरु प्रभुप
नसत्थप्रमानि ॥ मृतजरवामिलआजमभट

न। नृपनहरामीजानि ॥ २ ॥ इहिंअंतरमरु
धररववरि। पहुंचीबिबिधपुकारि। रट्ठोर
नजसवंतसुव। दयोतरवतवैगारि ॥ ३ ॥
ष० प० ॥ यहसुनिआलमसाहकहरहिंदुन
परकुप्यो। प्रलयरुद्रजिमप्रबललज्जधीर
जसबलुप्यो। दियआयसलिहिंवेरनगर
आमेररुनरउर ॥ कोटापत्तनबक्कुरिपुरीदति
यारुजोधपुर। आमेरआदिचउराज्ययेआ
जमदोरवउतारिलिय। रट्ठोरहुकमबाहिरर
हतधन्वसीसअमररवधकिय ॥ ४ ॥समर
जित्तियहसाहरहियचउमासभुसावर। इसद
समीअवदालअनरिवमारवधरउप्पर। पीर
नजारतिकरनबुज्झिअजमेरबहानौं ॥करि
फोजनदरकुंचआयआमेररहानौं ॥ बुधसिं
हहितुजयसिंहतबकहियएहपारनयसमय

।इतसाहसंगअनवधिगमनबहिनिभईइत उछितबय ॥ ५ ॥ दो॰ ॥ साहजेरकरिजोधपुर। करिहैंदाकिवनजेर ॥ वेगनपुनिआवनबनैं। व्याहनकीयहबेर ॥ ६ ॥ लग्गीहम्मीरखालसे। रजधानीरनरोस ॥ अंतहपुरसामोदग्ह। रक्ख्योभटनभरोस ॥ ७ ॥ तातैंद्वैदिनसिक्खले। बहिनीलेकुबिबाहि ॥ संगहिअैहैं साहहिग। चितबकुरिभुवचाहि ॥ ८ ॥बुंदियपतियहसुनिकहिय।सुनकुअरजममसाह ॥ मुलतानजुसंबंधभो। जानतज्यानपनाह ॥ ९ ॥ कूरमनृपयातैंकहत। सहरनिकट सामोद ॥ द्वैदिनअंतरलगनहे। बिरचकुब्याहबिनोद ॥ १० ॥ तातैंजोआयसलहौंआऊंकरिउदबाह ॥ द्वैदिनकीयहसुनिमुदित। सिक्खदईतबसाह ॥ ११ ॥ संभरकूरमसि

कवलै। आयेदुकूंसामोद॥ बनिदुल्लहबुध
सिंहनृप।सझ्झिलगनसबिनोद॥ १२ ॥जासि
बडीजयसिंहकी। अमरकुमरिअभिधान॥
कुंदियपति हिय हितबिरचि।ब्याही बिहित
बिधान॥ १३ ॥ इतआलमअजमेरपुर।प
हुंच्योगजबगरूर॥कुंदियपतिआमेरपति
।आयेबहुरिहजूर॥ १४ ॥छ॰प॰॥इम
आलमअजमेरआयपूजनपीरनकरि।र
च्चिमारुनपरीसहल्योदरकुंचअलसहरि।
अजितसिंहसुनिएहलभितमरुदेसनरेसुर
॥बेगआयकरबंधिपर्योपायनअल्हनपुर
।इमसाहधन्यकियनिजअमलसत्थरविरज
सवंतसुव।उप्परिउफानसागरउपम दक्खि
नपरगज्ज्योगरुव॥ १५ ॥रहिकछुदिनअ
जमेरसज्जिसंभरसेनापति।दक्खिनपरदर

कुंभगन्ध धरि चलिय जनकगति।
जोरहेठ दस उरमिलान दिय ॥ यह
समनाति मनुहारि पठाविय। हिंदवान सीसमि
लमकुंकुम तामें कुलरानन दयो। जा
दपि निकसत निकट मनाति इव्य पठवन प
ख्यो॥ १६ ॥ दो० ॥ अमरसान अप्पन अ
ज। तरवलसिंह अभिधान ॥ देवसिंह
अरय। कुलपठये सालिदान ॥ १७ ॥ इक्क
तैकप चारिहय। साहकाज दियसंग।
बाजि कुबान हित। इमपठवाय अभंग ॥
१८ ॥ षट्०प० ॥ अट्ठ बाजि गज इक्क भेट
मेरस पठाये। तरवलसिंह अरु देवले रू स
रदुन आये। बाजि च्यारि बुधसिंह हेत न
लिन दिय॥ मंडि विविध मनुहारि जानि
मिप मोदि जिय। पुनि कहिय साह। हलरी

मभुहय हत्थियपठये हुलसि। मिलवायहमहिं
यहभेट अब विदित निबिदक्कसमय बसि॥१९
॥दो०॥ सुनिसंभरतिन्हसंगलै। जवनईस
ढिगजाय॥ मिलवायेदससत्तरमित। क्रमसल
लामकरवाय॥ २०॥ सीसोदनअकबीस
बहिं। सुनिन्हुकहाईरान॥ आलमअंगीका
रकिय। सुनिसंभटसनिदान॥ २१॥ बुंदिय
पतिकरिसिक्खतब। लैतिन्हडेरनआय॥
नृपकूरमरठौरहू। लिन्हेंअभयबुलाय॥२२
॥ अजितसिंहजयसिंहकों। इकसंभरअव
लंब॥ पुच्छियमंत्रनरेसप्रति। कहिकहिहिंनि
तिकदंब॥ २३॥ष०प०॥ बदहु बन्न बुंदी
सआयरुक्कतहमआतुर। लियउकुप्पिअव
नेसछिन्निआमेरजोधपुर। नहिंनिबाहिंअ
बसकतबिभवगजबाजिबिमनअति॥सो

तस्फरजिमसाह ॥
।सुनियहनरेसग्राकिवयउचितवासरकछु
थीरजबहुरु।सेवनबढायकछु
महीसुनिज्ञनिजगहुरु॥ २४ ॥
कोकुकमसाहदलमाँहिंसवनसिर।सीसो
दनयहपिक्खिजानिजामिपजगजाहिर।
सुभटराउत्तदेवसिंहहबेघमपति॥सभर
प्रतिकरजोरिविहितग्राकिवययह।
।करिनेहगेहपावनकरहुमंजुबिबाहकुं
मम।सुनियहनरेसस्वीकारकियसिक्ख
मंगियसाहसम॥ २५ ॥दो०॥दस
रकीसिक्खदिय।साहबिहितसनमान॥
ग्राजितसिंहजयसिंहसौं।तबग्र।
कुवान॥ २६ ॥बेघमब्याहनजातहम।
तुमरहिसाहसमीप॥मननगिनहु

महर। उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥ ष० प०
॥ सुनि कूरम ह्वोरदुहुन अक्खिवय सनेह सधि
। साह कितक के संग अब हु जैहैं रेवा बधि । इहिं
अंतर कछु होय तत्तो रहिहैं संगति सर ॥ नाहि
तो ऐहैं मुररि आप्प करियो कछु उप्पर। यह सु
नि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुम कों
अबहि । जोलौं न हिं आऊँ सजव तोलौं सु
निरक्खहु हित तहि ॥ २८ ॥ दो० ॥ इम प्रबोधि
बुंदिय अधिप । मनजय जुब्बन मत्त ॥ दस उर
तैंदर कुंच करि । पुर बेधम हुत पत्त ॥ २९ ॥ पुत्री
अनुपमसिंह की । फूलकुमरि अभिधान । ह्व
भ्रात सबिनय दई । कुट्टहिं बिहित बिधान ॥
३० ॥ बान तक्क मुनि इंद्द १७६५ सक्क । पु
स्सि म माधव मास ॥ चुंडावति ब्याही चतुर । बुंदि
यपति सबिलास ॥ ३१ ॥ इति श्री वंशभास्करे

महानंदपूर्णस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुध
सिंहचरित्रेसप्तदशो १७ मयूखः ॥ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ ७ ७ ॥ चौहनगहजबसाहदयेजाजवरन
जितात। कोटाहूतिनमाहिंन्दृपहिंदिन्नोंआरि
बितात। जयउद्धतचकुवाननाहिंसमखिसभा
न्यारयो। आलनप्रुदलरिलैनप्रथमदलउतहि
हकारयो। कम्गरपठायलिखिअप्पकरबेअस
सनबुंदियनगर। करिलेहुप्रथमकोटाअमल
भटअंतियसम्भालिसमर ॥ १० ॥ यहकग्गरद्भुत
तंहिसिंगमंडियइतबुंदिय। जोधराजपरधानव
निकलयछत्रप्रपंचिय। थावरगंगारामसुरजु
मदनहकालकारि। कोटाउप्परकटकवेगमंडि
यवीरनभरि। सुकम्मबंसकनकेससुतजोगी

रामहिंमुख्यकिय। यहवीरधीरहडुसुउमँगि
चलिसम्हारिचतुरंगिनिय॥ २ ॥ दो० ॥को
टापतिजाजवमस्यो।तासतनयनृपभीम ॥
देसतरुनलैएहबल।सोनतजतनिजसीम॥
३ ॥ बालकृष्णनिजव्यासअरुफलेचंदकाय
त्थ॥ बुंदियपठयेभीमनृप।करनसामनथक
त्थ॥ ४ ॥ आयहुँकुँनकिन्नीअरज।कोटाद्द
कानलेहु॥ सुलकअोरसबहीनजरि।निजगि
निथरकुसनेहु॥ ५ ॥ नाथाउतिनृपमालतब
।अरजनमन्नीएह ॥ हिंदुनकेदिनपल्लरे।
उपजतलोभअछेह॥ ६ ॥ तमकितत्थदो
ऊसचिव।पच्छेनिजपुरपत्त ॥ भकवीअृप
तिभीमसौं।रनमंडकुअनुरत्त॥ ७ ॥ इतबुं
दियतैंउमँडिदल।चम्मलिउत्तरिचंड ॥गजन
जोगियरामगो।भिरतअब्भभुजदंड॥ ८ ॥

मुक्तादाम ॥ सज्योउतभीममहादलसूर।
सज्योइतजोगियरामगरूर ॥ कचौंदियरवे
टमिलेदुवम्माय।दयेदलदोउनबाजिउठाय
॥ ९ ॥ बजीरनरीठमचीधमचक्क।चलक्ष
लक्षोनियलग्गिलचक्क ॥ खटक्कियहट्ठु
नहड्डुनखग्ग।मच्चक्कियपक्खयलेडमामग्ग
॥ १० ॥ बडेबलभीमकरीहतवाह।कटे
बहुबुंदियसेनसिपाह ॥ तिलत्तिलतुट्टि
गस्वामियकाम।परयोकनकाउतजुग्गिय
राम ॥ ११ ॥ रयोसबबुंदियसेनबिगारि।
जयोनृपभीमहजारनमारि ॥ उतैंसुकबध
कंपूरमनत्थ।गयेदुवमेकलजालगसत्थ॥
॥ १२ ॥ तथापिनसाहभयोअनुरत्त।इत्थ
दरकूंचनजातउमत्त ॥ बहैसरितानबसाह
उतारि।फिरेदुवभूपतिडेरनजारि॥ १३ ॥

उदेपुर ह्वै दरकुंचनफत्त। मिल्यो नृपरानइहां अनुरत्त ॥ इतैंडुलहीनृपबेधमच्याहि। चल्यो जवनाधिपसेवनचाहि ॥ १४ ॥ लयैं अयरानिनसंभरसंग। मिल्यो जवनेसहिंधारिउमंग ॥ गयो दरकुंचनदक्खिनसाह। सजे दलसब्बलसूरसिपाह ॥ १५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे अष्टादशो १८ मयूख:

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ

दो० ॥ कामबरवस निजभ्रातहो। दक्खिनधररखवार ॥ भागनगरबीजापुरप हुव तिहिं सिरकुसियार ॥ १ ॥ बिक्रमनृपपरमारभो। उज्जइनीपुरईस ॥ ताधिच्छैं नृपभोजभो। धारानगरअधीस ॥ २ ॥ इनल

गहिंदुलअहूरयो।छाहिंउचितरनछोभ॥
हूनपिछौंनयधरमतजि।लग्गोकेवलला
भ॥ ३ ॥पृथ्वीराजचुहाननृप।जयचंद
हरद्दोर॥इनलगहकछुअनुसरी।हिंदुन
धरमहिलोर॥ ४ ॥तिनपिछौंतुरकान
कुल।निजनयधरमनिधान॥ पीढिनकछु
अंतरपरत।छंडीतिनकुरान॥ ५ ॥हू
लहुंदियपतिअहूरिय।कोटाउप्परकोप॥
हूतआलमरनअंकुरयो।लाजधरमकरिलो
प॥ ६ ॥कामबखससआलमअनुज।अ
नौंतिहिंअवसंग॥भागनगरबीजापुरह।सू
बाहियहितसंग॥ ७ ॥षट्०प०॥तुरक
नदिनविपरीतआयआलमलिहिंउप्पर।
धरदक्खिनधमचक्कसजियबीजापुरसगर
।कुथसिंहहिंबलईसबिरचिअलिकोपब

ढारयो॥ कामबरवसकौंपकरि मुद्धआगसहि

नुमारयो। वपकेदयेछलकरिकुबिधिलिय

लीजापुरआगपुर। सुबासआरिसज्जियअ

मलआलमअनयउभंगिउर॥ ८ ॥ छलकू

रमर हौरआयबिरहितअतिआतुर। मेक

लनासनासुररिउरारिदुवपत्तउदैपुर। दहला

री दिसहछकुतेलकुराजुबिनायक॥ आयरा

नआमेससतत्थभिंट्योसल्लनछक। लीनाहि

नेरसकेकानलजिमनप्रसन्नबत्थनमिले। रा

नहिं निहारिमृपनइकुनरभूबियहियपंकज

खिले॥ ९ ॥ दो० ॥ अयौंरानमतामसेअ

येअरातिनर्भि ॥ आयमलूनहिअद्दरयो।

साहनकोजिनसीम॥ १० ॥ साहसिकंदर

जुलिकन। अरुगज्जनगोरीस ॥ आयौंहिं

दुनजिरौं। नयेप[illegible]ईस॥ ११ ॥

तिनतैँ अबलग नहित कह्यो। सीसोदन
साह॥ यह कुल राउल बप्पको। रक्खै हिंदुन
राह॥ १२ ॥ पुर आमेर रु जोधपुर।
भट सरसाय॥ आलम तैं अब तोरि कैं। उभ
उदैपुर आय॥ १३ ॥ अमररान ...
दकारि। सिंह्यो सन मुख आय॥ कू
यसिंह कछु। चरनन हत्थ चलाय॥ १४ ॥
एकारि हत्थ हिय लाय तब। कहिय रान ...
स॥ ... भयो। ...
सेस॥ १५ ॥ षट्० प० ॥ इम मिलाप करि
न आय तिन सहित उदैपुर। महलन
दमांहि उभय हुल्ले अवनीसुर। बाहिर ५
लंघि रान सम्मुह पुनि आयो॥ करि जुहार
सीस रक्खि बहु मोद बढायो।
निज संग कारि कुल सिरवास परिसद

उमगव बुल्लि निज्जनिजउचितकरनमंतराक
त्तकिय ॥ १६ ॥ वहिनीबुल्लहिंब्याहिहूत।
देवसिंह तरवलेस ॥ बेघमतैंहुत आयकें। भिं
ड्योराननरेस ॥ १७ ॥ दिलखुसालभासा
दके। गोखमध्यपगधारि ॥ बैठेभूपति लीन
हीचोरोगहरडारि ॥ १८ ॥ मध्यरानअम
रेसअरु। कूरमनृपदिसबाम ॥ दक्खिनदि
सरठ्ठोरनृप। इमरहिसज्जिगसाम ॥ १९ ॥
छप्पई ॥ कूरमपतिकरजोरिकहियसीसोद
नृपतिप्रति। तुरकनको नहितोरभयोसव
जोरमंदगति। राजाकुलतुमरोसुहद्दहिंदुनइक
रकैवें ॥ जोरवादिल्लियजारप्रबल आनन
तुमपकवैं। साहसोंतोरिहमआयइतराज
धरमसाहसपरखि। हिंदुनहकारि हिंदुन
अवनिहिंदुनपतिभुगझुहरषि ॥ २० ॥

॥दो०॥ इन बुझ्यो रन्होर नृप। हमरालरेसु
महं॥ सुभ कुआर्यावर्त्त भुव। लहिहि दिल्लि
यपुरपहु ॥ २१ ॥ मुक्तादाम ॥ यहै सुनि
रानकही अमरेस। नमैं पुर दिल्लिय जो अव
नेरस॥ सुनैं हम दिल्लिय को दसतूर। रहे
सब सांजलि सा हहजूर॥ २२॥ सबै सत
सासु थकै छकि आम। लजैं सब बाहिर बार
सलाम॥ जहां बिनु आयस बुल्लि सकैं न।
नमैं इकटक्क निहारत नैंन॥ २३॥ जहां
नहिं बैठ सकै उर थक्कि। तरज्जत तंडिन
कौ बन नक्कि॥ चलैं सब पैदल आनन अ
गा। सु नित्त मनक्कि पलोटत पग्ग॥ २४॥
पढ़ावत नारिन कौं न परोज। उढ़ावत पक्ख
न कौं हित ओज॥ बनावत बंबन गावत
नार। सजावत पुनि न आहि सिंगार॥ २५

॥ सुनैंयहसाहनकोदसत्तर । हल्लैंसबहिं
दुलपुज्जिहत्तर ॥ सम्मुप्पनमिन्छनभौनप
हिल्लह । लिख्योविधिहिंदुनगोधिनलेह
॥ २६ ॥ कक्कोउक्कैंइमहिंदुवराज । मिलैं
तबजातिअसुयनभाज ॥ हल्लैंतसमातन
दिल्लियहौंस । दहैंयरक्खनहीनिसयौंस
॥ २७ ॥ रुप्योदृढ़देउलकोमलराह । मिलैं
तबदिल्लियहीयहमोह ॥ रुप्लुसाहउप्प
पनराज । उदैपुरहीतबदिल्लियआजौं ॥ २८
पुरानृपकूरसमानजुकिल्ल । पधारिसुभा
रिसहैतुमलिल्ल ॥ अलैंदृढ़अप्पनज्यौंज
सहोय । जंथाकरियेवलकालहिंजोय ॥
॥ २९ ॥ बद्योपुनिकूरमभूपबलंत । भलो
सबहीकरिहैभगवंत ॥ अवैंकरिहिंदुन
इक्कतअत्थ । सजैंपुनिआलमपैंनिजसत्थ

स्य ॥ ३० ॥ दो॰ ॥ हिंदुवनाकररानके। इक्क
परेतुयेंहुंश्मोर ॥ आलमतैंहमतोरिकैं। लि
यउरावरोमोर ॥ ३१ ॥ देसदुहुनकेरवाल
से। श्मोरनलेनउपाय ॥ लोहमजिनतैंमुल
कनिजं जोदलदेहुसहाय ॥ ३२ ॥ जिनि
मुलकपुनिकटकसजि। हैदुवरानहजूर ॥
दक्खिनपरदरकुंचकरि। जित्तहिंसाहजरू
र ॥ ३३ ॥ रानकहियकछुदिनउभय। रह
हुश्मल्पस्हमानि ॥ पुनिजोजोभवितव्य
है। लेहैंसबहिश्माानि ॥ ३४ ॥ यादिनडे
रनसिरवदिय। दोउनलैंकहिराह ॥ इक
इकगजहैहैश्मरब। दोउनश्मप्पिसनेह ॥
३५ ॥ श्मतरपानपुनिबुल्लिकैं। इमादिग
रवरेरान ॥ तबदेउनकरश्मोडिकहि। दे
हुश्मप्पकरदान ॥ ३६ ॥ रानतथापिन

पानदिय। पानदानगहिहत्थ॥ जिहिंअंतरक
रघुकुलके। संग्रहिधरियसमत्थ॥ ३७ ॥दोऊ
नृपइमपानलै। निजनिजडेरनआय॥दूजे
दिनकियगोठिलव।रानअमररसभाय॥
॥ ३८ ॥दोऊनृपवुल्लियबहुरि। पतिपरियच
हुंओर॥ करियअरजतंहंरानप्रति।पुनिकूर
मरठोर॥ ३९ ॥इकथालविचअप्पनों।हम
सहभोजनहोय॥ अबतैंसंततएकता।कर
हुनसंसयकोय॥ ४० ॥सुनिबुल्ल्योभटरान
को।हृदमनगंगादास॥सगताउतपुरबानसी
पतिकछुरोसप्रकास॥ ४१ ॥कूरमपतियह
रावरे।पुरुरवनअग्गैंकीन॥ तोहूकुलउज्जल
यहे।मोनहिधरमविहीन॥ ४२ ॥ष॰प॰॥
अग्गैंअकबरसाहलैनगुजरातलुआये।भगव
तसिंहरुमानपितासुतउभयपठाये।।दरकुंचन

कूलदोरिजोर जिल्लीगुज्जरधर ॥ पलटेपुनिसु
तजनककिजल पंचककेअंतर । भगवंतसिंह
आयोप्रथम दिल्लियजावलरानधर । जिनदि
ननछत्रराना उदयधारतहिंदुनधर्मधर ॥४३
॥ नृपभगवंतहिँरानजायसम्मुहयहलायो । उ
तक्कभोजनकरनरानजुतप्रसमरचायो । दियउ
तारतबरानदेततुरकनतुमपुत्रिय ॥ हम । ०कुल
अकलंकधरम छुट्टैंनजातजिय । तसमातसुन
कुलैउनअसलहूक्कथालनाँहिनउचित । यह
सुनिनरेसभगवंततव पृथक जिम्मि बुल्ल्यो वि
दित ॥ ४४ ॥ पद्धतिका ॥ नृपसुनहुपंचवा
सरविहाय । सुलमानहूतोंऐहैंसुभाय ॥ का
सोंनरेसहैंहठअसत्त । सुल्लकुनपुल्लिऐसोकु
चत्त ॥ ४५ ॥ यहकहिनरेसभगवंतवत्ताद
रखेंनदिल्लियनगरपत्त ॥ दिनपंचकअंत

रकुमरमान। भिंट्योपुनिसम्मुहजायरान॥
४६॥सिलिलासबिरचिप्रतिमानुहारि।पुनि
रानरख्यपृह्लिनजुतपधारि॥रचिगोठिबिबि
धब्यंजनरसाल।बैठाय्योमानहिंपृथकथा
ल॥ ४७ ॥रहिरानदिट्ठिपरुसनलगाय
।तबकुमरमानबुल्योहिताय॥तुमकोंहु
उचितबैठननृपाल।भुज्जैंदुवभुज्जनइक
थाल॥ ४८ ॥तबकहियरानराजाधिरा
ज।एकासनकृतमैंकरियआज॥कूरत्त
थापिबुल्योनिहोरि।सागतनहोतअलद्द
कछोरि॥ ४९ ॥हमरोकुवआगमसमय
पाय।हैंइकथालभोजनहिताय॥तुमअस
भपुंजमानहिंनिहारि।पटुरानउदयबुल्यो
प्रचारि॥ ५० ॥तुमलोभधारिलियजवन
रीति।हमरेघरहिंदुनधर्मनीति॥तुमअध

मजा मिदुहिता कलत्र। तुरकन समप्पि कुव सचिवलत्र ॥ ५१ ॥ अकलंक यहै इकलिंग औंन। तस माल संग भोजन बनैंन ॥ यह सुनत मान कुप्यो कराल। बुल्यो सु उट्टि झकि छोरि थाल ॥ ५२ ॥ तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग। कछु दिनन अंत रेहैं व संग ॥ यह कहि हुत दिल्लिय मान जाय। अकबर हिं आतप आखौं कुपाय ॥ ५३ ॥ बकुबर सर हिय चित्तोर जंग। रानन तथापि लंध्यो स्वर ग ॥ बिनु बल लहिय बरसन छिपत्ति। छिति हितल धापि कंपीन कत्ति ॥ ५४ ॥ यह कुल वहै हि निजन यत्थ्यत। दुहिता दिल्लु मसु तुरकान देत ॥ इक थाल असन नातैं बनैंन। मरहम निसंक मिथ्या भनैंन ॥ ५५ ॥ यह सुनि कलंय कच्छवा हराय। स्वसिन समय जानि रोस

नदिखाय ॥ करजोरिकहियडुवनृपनफेरि
। हिंदुनरेसतुमधर्महेरि ॥ ५६ ॥ हमकि
यअधर्मगिनिबिभवहानि । मरजीसुकरहु
भटहमहिमानि ॥ अमरेसरानयहसुनिउ
दार । बुल्ल्योसुव्यावहारिकबिचार ॥ ५७ ॥
ममगेहओरनहिंतुमहिंदेय । इकबत्तसुन
हुदुवनृपअजेय ॥ सौंपहुजोनिजकरलि
खितसत्य । अबतैंनदैंहितुरकनअपत्य ॥
५८ ॥ तोदुवसुतासुदेउनबिबाहि । देसहु
लेदेहैंअरिनदाहि ॥ सहभोजनतौनहिंउचि
तआहि । पत्रावलिजिम्मतहमसदाहिं ॥
५९ ॥ तुमडारिरजतबिष्टरबिसाल । नगज
टितमध्यधरिकनकथाल ॥ इमभुञ्जततु
रकनराधमान । इत्यादिहेतुसहअसनह्या
न ॥ ६० ॥ करिलिखितदेहुजोकथितवा

हिं। तोदैंहिंसिक्खपुत्रिनबिबाहि ॥ इक्क
पनयहैसुनिव्यसनकिन्न। रानसुपक्कसाधन
रहियभिन्न ॥ ६१ ॥ नृपदुवजिमायइम
सिक्खआपि। डेरनइनआयरुमंत्रथापि ॥
यहैंउभयसाहसौंतोरिआय। करिलिखित
दैंनइतइनकहाय ॥ ६२ ॥ अबकरहिंसा
हकुमहरअजेय। तसमातरानकथितहिबि
धेय ॥ यहसोधिलिखियनयदुहुंनआदि।
तुरकननदैंहिंअबतैंसुतादि ॥ ६३ ॥ क
हिहैंजुरानधरिहैंसुसीस। इमलिखतदा
निदुवभुवअधीस ॥ यहलिखितरानकर
दियउआय। प्रभुरानसुनतबिस्वासपाय॥
६४ ॥ दुहितादुहुंनब्याहनबिचारि। बिर
चियबिबाहिउच्छवबढारि ॥ कूरमनरेस
यहसमयपाय। अन्तःपुरानप्रतिकथकहा

य ॥ ६५ ॥ संग्रामसिंहपट्टपकुमार। सुहिता
सजामिदेहोउदार ॥ सुनिरानबहुरिपच्छीक
हाय। इक लिखितओरअप्पकु लिखाय ॥
॥ ६६ ॥ याकेजुपुत्र जगदीसदैँहिं। वहमुख्य
राज आमेरलैँहिं ॥ आमेरईससुनियहउ
पाय। लिखिस्वकरपत्र दिन्नौँपठाय ॥ ६७ ॥
दुहितास्वकीयजनिहैसुपुत्त। आमेरपट्टल
हिहैं अयुत्त ॥ यह लिखितरानबंचिरु बिचारि। नि
जपुत्तिउचितकूरमनिहारि ॥ ६८ ॥ दो० ॥
निजपुत्तियसंबंधलब। कूरमसनकियरान
॥ जिनकाकासुतपुत्रिका। दियरट्ठोरहिंदा
न ॥ ६९ ॥ चंद्रकुमरिकूरमलहिय। कृष्णा
कुमरिरट्ठोर ॥ इमबिबाहिदुवभुवअधिप
। जच्चियसिक्खइनजोर ॥ ७० ॥ हाटक
दोलाजंत्रतब। दुहुँनरानन्रपदिन्न। इकूँ

नतुल्यसायज अरपि। कुसलसिक्खतब
किन्न ॥ ७१ ॥ सत्तसहँस निजदलसबल।
करिदुवभूपनसंग ॥ रान सिक्खदेसन दई।
अवनीलेन अभंग ॥ ७२ ॥ तबदुवभूपति
सिक्खकरि। बढ्ढिचल्लियबरजोर ॥ छोनी
दक्खतसाहकी। उमँडियसंभरओर ॥ ७३ ॥
दुवन्नपक्रमदरकुंचकरि। संभरउप्परजात
॥ नारनोलसय्यदसुनी। रुमाबिलुट्टनबा
त ॥ ७४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूके
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
ऊनविंशो १९ मयूखः ॥ ❁ ॥ ❁
॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁
॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁
प्रा०पृ० ॥ जाजवसंगार जिन्तिसाहआलम
बुसन्हारयो। संभर पिक्खिवसहायधराजि

त्तनमनधार्यो ॥ हुसनअलीसय्यदनबाब
आदिकसम्मतकरि। जित्तिसजवजोधपुर
धायदक्खिनसाहसधरि। कूरमकबंधअव
नीपइतअमररानपुत्रिनपरनि। पृतनाप्रचा
रिलुट्टनप्रथमपत्तेलगिसंभरसरनि॥ १ ॥
दो० ॥ नारनोलपुरसेनपति। हुसनअली
केभ्रात॥ घिंसीखानरुनूरदी। तहँपत्तीयह
बात ॥ २ ॥ ष०प० ॥ हुसनअलीसय्यदन
बाबसुभटनअग्रेसर। नारनोलकेफोजदा
रताकेसोदरभर। घिंसीखानरुनूरदीनतिन
बत्तसुनीयह ॥ लुट्टनसंभरनगरसुपहुकूर
मकबंधसह। सजितबहिसेनद्वादससहँ
सरुमानगररक्खनचलिय। इतनृपनलुट्टि
संभरसहरकहरकालबेहालकिय ॥ ३ ॥ दो०
॥ पुरहिंलुट्टिदुवनृपकढत। सय्यदपत्तेश्र

य ॥ भटकूरमरट्ठौरके । जुट्टे तिन बिहसाय ॥
४ ॥ हरवैंसउतहं किये । आतपकरतउफेल
॥ श्रमजलहत्थपसीजिहैं । मुट्ठिनपैहैमेल ॥
५ ॥ सुनतलहहसय्यदभटन । दियउत्तरत्थ
तिआय ॥ छोहानलविच्चिढ्ढिसि द्वौं । नट्ठेद
सतनिदाघ ॥ ६ ॥ इमकहिबाजिनबग्गले
। तुट्टेहिंदुनसीस ॥ दलदोउनधमचक्कव
लि । त्यौंफिटमजगदीस ॥ ७ ॥ छ॰प॰ ॥
सिलिहिंदुवपुगालानथिट्टुरलरिट्टुरमापुरि ।
लिसिमदनल्लमयनप्पयनचंचलजिमपातु
रि । लुत्थिनलुत्थिअक्कुहिलुत्थिलुत्थिनभट
कट्टिय ॥ हूलनदलमरलनकिंदुसुंडनमुखप
ट्टिय डाकिनिलड ढ़िहिमदुअकिनविभैरव
डैनदिय । जिमजिनजवारदडाढ़रलझम
चौसट्टुजग्गजदिय ॥ ८ ॥ दो॰ ॥ पिसी

खानरुन्नूरदी। लुवसव्यदलियमारि ॥सह
ससूरहुकुंग्घोरके।फंसियघोरखगझारि॥ ९ ॥
इमकूरमखोरनृप। पुरसंभरजयपाय॥ दि
लीगहिलेउनदई। लहंगेग्रंदरलाय॥ १०॥
सोरठा॥ निजनिजदेसनग्राय। हुवनृप
संभरलुहिलैं॥ थांनादियेउठाय। ग्रालम
केकीरकरिग्रमल॥ ११ ॥ दो० ॥ इतको
टापतिभीमदिय। ठुंदियकटककिगारि॥
जुज्झोजुम्मियरामहद। मारिमरदलरखा
रि॥ १२ ॥ धालरगंभारामपुनि।सेनानाथ
कहोय॥ कोटाउप्परउप्परयो। उत्तारिन्नम्म
लितोय॥ १३ ॥ कायथ्थघासीरामकिय।
पंचोलियपरधान॥ मंत्रिबनिकहरिरा
मकिय। गुज्जरकुमतिगुमान॥ १४ ॥ ग्र
लीखानग्रभिधानइक। जवनरुहिल्लाल

ल्हि ॥ पंच सहस्सपतिरक्खयो । रवमगपता
कनरखुल्हि ॥ १५ ॥ यहसुनिकग्गरभीमनृ
प । धावस्मतिप्रठवाय ॥ बाबाधावरहमकु
कों । रक्खहिंबूंदियराय ॥ १६ ॥ जान्योंधा
वरनीतिजड । गुज्जरगहलगमार ॥ बाबा
कहिकहिंलिरवत । भिरैंनसोरनभार
॥ १७ ॥ दैंमिलानबकुदिनरह्यो । लबधाव
रनयहिन्न ॥ आलियरवानकोहकचढ्यो ।
दोयसासदिनलिन्न ॥ १८ ॥ पद्धतिका ॥
लहिसमयभीमतबकियउपाय । बकुबिन्न
रहिल्लहितपठाय ॥ आकिवयधावप्रति
बदकुबैन । हकदेकुनलोमबहमलरैन ॥
१९ ॥ धावरहिंकहियथहआलियरवान ।
जबकियकुसंगगुज्जरअजान ॥ बुंदियस
टखुल्हिकहियउकु । लिलिसबहिजवन

हककबिन्नदेकु ॥ २० ॥ जोबिन्नननौ हथ्थ
करभटारि । सबयाहिदेकुभरनौंबरारि ॥ सु
नियहकुमंत्रुदुर्मनसिपाह । चढिचढिसम
स्तलगिघरनराह ॥ २१ ॥ तुरकननदियधा
वरकेदघत्ति । यहखबरिदेसदक्खिनकु
पत्ति ॥ सुनिन्नपतिबुद्दआयसपठाय । न
हिलेकुमुद्दधावरकुराय ॥ २२ ॥ बहुदिन
तबधावरकैदलिन्न । हरिरामसाहपुनिअ
रजदिन्न ॥ तबहुकमपायजवननचुकाय
। हरिरामलियउधावरबुलाय ॥ २३ ॥ को
टानेरसइमरवग्गझारि । हैबेरकटकदिन्न
बिगारि ॥ इलकाम्मबरवससोदराहिंभारि ।
निजअमलदेसदक्खिनबिथारि ॥ २४ ॥
दरकुंचउतरिरेवादुरंत । उज्जेनिआयकरि
आतअंत ॥ गिरिबरमुकुंददरमध्यहोय ।

पुरपट्टनिचम्मलिलंघितोय ॥ २५ ॥ ल
क्खेरिय गिरिंदरकढ्ढि सुभाय । अजमेरपीर
मिटन चलाय ॥ सकस्तत्तक्कमुनिइक्क ।
१७६७ मान अजमेर आय दिन्नों मिलान
॥ २६ ॥ लबबुद्ध सिंहमलिकहिय साह । कू
रमकबंधकिन्नोंगुनाह ॥ संभरहिंलुट्टिलिय
सबदेस । तसमातजंगमंडकुनरेस ॥ २७ ॥
कहिभूपजियत अवरंगसाह । हिंदूनकि
यउसासननिबाह ॥ यहआहिमुलकहिं
दुनअसेस । बिनुनीतिअमल करनोंनबे
स ॥ २८ ॥ फरमानदैरु दोउनबुलाय । अ
बहीनहिंरु क्कहुकुंनआय ॥ अवरंकुअ
मायकियभुम्मिभाज । तिनसबनसमप्प
हुरुखराज ॥ २९ ॥ यहकहिपठाय फर
मानतास । संभरहु लिखियदुवनृपनपत्त ॥

हमकहिगुनाहसबकियउदूर। आवहुनिसंक तुमअबहजूर॥ ३० ॥ यहसुनिकबंधकूरमच लाय। अजमेरसाहभिंट्योसुआय॥ तबकहि यसाहगिनिअप्पतोर। संभरदुहूनलुहियस्व जोर॥ ३१ ॥ कूरमकबंधलबकहियएह। निज स्वामिनिमकरक्खोसनेह॥ आज्ञाअधीनअब उभयआँहिं। जहँस्वामिकामतँहँलखनजाहिं॥ ३२ ॥ आलमसिराहितबदुवनरेस। दोउनखि लाय दियस्वस्वदेस॥ दतियादिराजअवरहु लिखाय। सहदेससबनदिल्लेबुलाय॥ ३३ ॥इ म हिंदुनृपनविस्वासिसाह। गहिनीतिसबन अप्पियगुनाह॥ दिनकछुबितायअजमेरठाँ। आबआयतखतदिल्लियउमंग॥ ३४ ॥ इति श्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्त्वदयेदक्षिणायनेनव मराशौबुधसिंहचरित्रेविंशो २० मयूख: ॥

कट अजीम ॥ ११ ॥ बिनुबिक्रमअरुनीतिबि
नु । रहत पिक्खि दिल्लीस ॥ दक्खिनकाबल
दोउ दिस । सीमा दबियसरीस ॥ १२ ॥ इतआ
लमतें सिक्खलै । चित इच्छत घरचाव ॥ चलि
यमनोहर दंगतें । बुंदिय दिस बुधराव ॥ १३ ॥
ष॰ प॰ ॥ इक्ककनफटा नित्यनाथ कउलन
आचारिज । हरिहरधरसहटाय करत अधम
नमतकारिज । छात्र बकुल तससंग सुभट हय
गय सिक्खासह ॥ जावत दक्खिन देस नृप
हिंमगमांहिं मिल्यो वह । गजमुखह पुरोहित
नृपतिको कउलमग्ग सेवत रहत । तिहिं जाय
नाथ भिंट्यो त्वरित परिय पाय किन्निय कहत
॥ १४ ॥ दो॰ ॥ नित्यनाथकों गुरुवनमि ।
गजमुखनृपहिं गआय ॥ सिद्धसन्निगोरक्ख
सम । महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥ यांतें स

सकतिप्रसन्नअति। याहिसकतिबरदिद्ध। दैन
नबंछितयहकरत। सिस्यहुकोंसमसिद्ध॥१६॥
अनुष्ठानजपहोमअरु। मंत्रजंत्रमतिमंत॥
कहैंजाहिप्रसमहुकरैं। कहैंजाहिमुवकंत॥१७
॥ कियनृपगजमुखकथितसुनि। नाथनिकेत
प्रयान॥ बुंदियकोबिगरनसमय॥ अरुभावी
बलवान॥ १८ ॥ नित्यनाथढिगजायनृप।
पयपरिकरियप्रनाम॥ कहियसिस्यमोकोंक
रहु। धरहुभेटधनधाम॥ १९ ॥ लक्खरुपय्य
नकरसुलभ। ऐसेग्रामअनूप॥ गहहुदच्छि
नाउत्तगिनि। रहहुइहाँगुरुरूप॥ २०॥ नित्य
नाथयहसुनिकह्यो। हमदच्छिनबसवान॥
गुरुमृतसुनिद्रुतजातहैं। नरहैंलासनिदान॥
२१॥ हमभवदीयपुरोहितहिं। मुख्यमंत्रदे
जात॥ यातैंसिच्छालहुतुम। देहुयाहिबसु

आत ॥ २२ ॥ यहकहिमनुगजमुखहिंदै। गयोकनफटादेस ॥ छतबुंदियढिगकुंचकरि। आयोकुद्धनरेस ॥ २३ ॥ जबकाबलनृपछुट्ट हो। तबनिजसोदरजोध ॥ चढितरंडगुनगोरिदिन। कियजलकेलिकुबोध ॥ २४ ॥ सुभट सचिवअनुचरसकल। बैठेपोतनतत्थ ॥ नचिगावतपातुरिनिकर। श्रुतिस्वरतारनसत्थ ॥ २५ ॥ गजइककलिंगप्रसादइक। इहिंअंतरसयसत्त ॥ निजदायजआयोहुतो। उदयनैरसौंअत्त ॥ २६ ॥ वहबारनअतिदानवक। जलपीवनतँहँआय ॥ तालपिकिवपोतनातिरत। कुपिचल्योअतिकाय ॥ २७ ॥ सत्थसकलआपनथित। किन्नोकछुनउपाय ॥ निजपोतहिपकरीनिठुर। एतेमैंगजआय ॥ २८ ॥ धाइआतनिजसंगहो। तासभयोइक

वार ॥ एतेबिचउलटायइभ। बोरीनावसुबा
र ॥ २९ ॥ नियतिजोगसबलिरिकढिय। अ
सुबसुल्वरितअवेरि ॥ धाइभ्रातअरुअप्प
दुव। रवस्वतनिकासेहेरि ॥ ३० ॥ निकसन
खिनगुज्जरमरिय। असुनिजकछुअवसेस ॥
सोचउत्थितसमानसो। पत्तोमृतपरदेस ॥
३१ ॥ अनुजरानजयसिंहको। भीमसुतायह
तास ॥ जोधनारिसहगमनकरि। पत्तीदिव
पतिपास ॥ ३२ ॥ यातैंपुरप्रविसतअबहु।
सोदरसुचनसमाय ॥ सनितयापिसंबोधिम
न। दूमपुरदिगनृपआय ॥ ३३ ॥ सुनियपाहिं
आवतसुभट। सनिर्बूंसमुपेत ॥ बुंदियपुर
सननिकसिसब। सम्मुहआयसहेत ॥ ३४ ॥
नगरजैलगढलाललट। रहिनृपअंत्यमिला
न ॥ भ्रातपुरहिंप्रविसतमकटि। गृहगृहमंग

लगान ॥ ३५ ॥ कोटारन निजभट मरयो । जु
ग्गियराम निसंक ॥ ताको सुत सालम लयो ।
गजा रूढ नृप अंक ॥ ३६ ॥ इम आलम केपे
सरहिं पद्ध हब रस बिहाय ॥ हयरवद सन्नह
१७६७ मइसित । प्रबिस्यो बुंदिय आय ॥ ३७ ॥ बुं
दिय पुर प्रबिसत समय । सउन किह्व मग रुद्ध
॥ तिय बाला लरजस्वला । पिक्खी सम्मुह क्रुद्ध ॥
३८ ॥ इत्यादिक असउन बिबिध । मन मन्नेन
हितन्न ॥ प्रबिस्यो उत्तर द्वार पुर । जाज क जय
उनमन्न ॥ ३९ ॥ इतिश्री वंशभास्करे महाचं
पूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंह
चरित्रे एकविंशो २१ मयूख: ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ५०५० ॥ बुंदियगद्दिय बैठि बुद्धिगज सुरव

हपुरोहित ।मन्त्रिगुरुवसुनिमंत्रकउलमारग
चाह्योचित ॥लक्खरुपैयनमुलकहत्थिसिवि
काहयअप्पिय ॥ गद्दियलकअधिकारबरव
सिगजसुखगुरुथप्पिय । आचारअधमअद्द
रिहिय पंचमकारनमुदितमन ।बुंदीसबुद्धि
बिगरीबिबिधकउलकम्मलग्गोकरन ॥१॥
जबकालबलबुंदीसकुतोआलमअनुगामी।
तबहिरानजयसिंहगयोपरलोकसुनामी ॥
तासनरवतअमरेसरह्योरानोंकछुबच्छर ।
पत्तोवहपरलोकसुनीबुंदिययहसंभर ।ले
सिक्खतबहिपटरागिनीरानाउतपीहरग
ई ।उम्मेदकुमरितत्थहिंअचिरभावीबसि
असुबिहुमई ॥ २ ॥दो० ॥ पटरागिनिपंच
त्वइम ।लयोउदैपुरजाय ॥ अरिलक्खमु
द्रामित ।रह्योतहाँतसराय ॥ ३ ॥इहिँअ

लरखुंदीसप्रति। सगपन हितसरसाय॥ पुरभ
नायसद्वेरके। नारिकेलद्रुतत्र्प्राय॥ ४॥ सो
सगपनस्वीकारकरि। नारिकेललियफेलि॥
मनपरंतुलगिकउलमत। प्राथित बेदमतपे
लि॥ ५॥ रहतचक्रपूजानुरत। बिधिनय
धरम बिसारि॥ त्र्प्रालसमद्यप्रमादकरि। बि
गरिराजसम्हारि॥ ६॥ इहिंत्र्प्रंतरलाहोर
तैं। दिल्लियत्र्प्रायपुकार॥ सूबाबिचदलबं
मिलव। सिखमिलिकरतबिगार॥ ७॥
नानकमतत्र्प्रनुग मिसिख। त्र्प्रजित सिंहतै
नईस॥ सोमंडलत्र्प्रपनत्र्प्रमल। सूबाखंडि
सरीस॥ ८॥ षट्पदः॥ सुनतसाह दिल्लीसन
हकदिनकटकत्र्प्रगंजित। सजिचाल्लियद्रु
तसाहसाहउद्धुलजयरंजित। सबहिपुत्रनि
जसंगकुरम बेगमसबहाजरि। तीनलक्ख

तुरुकवारभारसतपंचतोपभरि। संक्रमितसाह
आलमसबलक्रमप्रबेसलाहोरकरि। बहुअ
जितसिंहसबसिखनहनिदंडिखाडलिन्नोंप
करि॥ ९ ॥ दो॰॥ त्रासितकरिसबसिखन
तैं। नानकपंथछुराय॥ मुंडितडड्ढीमुच्छकरि
। दंडिदयेनिकसाय॥ १०॥ सालमारउपवन
निकट। रह्योकछुकदिनसाह॥ अबअभाग
तुरकानको। उलटीकरतइलाह॥ ११॥ ष॰प॰
॥ कलिजुगभूपनकुमतिनिलयनारिनभरिर
क्खैं। रहैंइकअनुरत्तअवरजारनतबचक्खैं।
यौंहीआलमसंगनिकरनारिनअंतहपुर॥ ति
नमैंबेगमइक्कलज्जलंघियकामातुर। सहँस
नसिपाहजामिकरहतरुक्कततोहुनकामरय।
निसदीहजारइच्छतनिलजसरमाजिमसारद
समय॥ १२॥ दो॰॥ गायकआवतगानगृह।

सिखवनसारिनगान ॥ तिनबिचपिकज्योंरूप
वर । गायकइश्कजवान ॥ १३ ॥ बनैंताहिक
हाईकैं । रक्ख्यो विकलदुराय ॥ प्रतिसीरापल
टायपुनि । लिन्नोंरत्तिबुलाय ॥ १४ ॥ दिनर
कैंमंजूसधरि । रत्तिनिकारैंताहि ॥ यौंबेगम
दिल्लीसकी । विषीकलावतचाहि ॥ १५ ॥
पिक्खिवसफनिनइश्कौंनितमक्कवीआलमम्बगा ॥
सुनतप्रमादीसाहथक्कि । लयोतासप्रहमग्ग
॥ १६ ॥ साहागमबेगमसुनत । बन्नैंसंगलगा
य ॥ जायसउच्चसंकानिलय । आईताहिदुरा
य ॥ १७ ॥ पादाकुलकम् ॥ ढूंढ़िंमंतरआल
मतहँआयो । तियसुवनतसकरनाहिंपायो ॥
तबतिन्चायसोतिनहमताम । सबचोगनदिइलैं
नहसारा ॥ १८ ॥ सुलरिवसाहअमितियबेगमा
सन । मैंबिरकालदअग्रन्निकलमन । यातसुनि

गायकमिच्चु बिचास्थो। रवंजरदोरिसाहहियमा

रयो ॥ १९ ॥ रीढककफारिपारदहफुद्दो। छिनअंत

रआलम असुकुद्दो ॥ नियतिजोगइमलेकु नि

हारें। दिल्लीसहिंगायक्कइनिडारें ॥ २० ॥ गायक

कुनारिनगहिमास्यो। साहकुविधिमरिसुजसबि

गास्यो ॥ अंतहपुरतवजिगअचालक। इतउत

रुदनरागउरआनक ॥ २१ ॥ ष॰ प॰ ॥ कुरमहार

श्रृंगारतोरिस्त्ररततोबाकीरे। झारिझारिवंगारिनप्र

तलुट्टतउक्कतपरि ॥ मोजदीनपहपकुमारयहसु

निढुलथायो॥ सुत्तोकुमरअजीममुहुताकंहंहनि

आयो। लघुभ्रातदोयतिनसिरनिलजपिल्योद

लहलकारिकैं। दोउनमरायगद्दियलईआजम

अनयबिचारिकैं ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ आलसमरन

अपुब्बकुव। फुट्टीदिस दिसबत्त ॥ मोजदीनअय

भ्रातहनि। बैठोतखतप्रमत्त ॥ २३ ॥ ष॰ प॰ ॥

आलमभूतसुनिअजितसिंहमरुदेशनरेसुर।करिफौजनदरकुंचआयअजमेरनिडरउर।लिन्नौबिनुलिदुग्गसाहथांनौहनिसंगर॥सू बादक्खिसजोरभयोबिनुसंकगब्बमर।इततक्कि छिद्रदक्खिनअवनिमरहट्टनबलमंडयो।जित तितउठायदिल्लियअमलढ्ढ्लिकातरपनढ्ढं डयो॥२४॥दो०॥मतिप्रमादआलममर त।दिल्लीतियबरजोर॥तक्कीमारिकटाच्छ दृग।सहरसिताराओर॥२५॥षं०प०॥दे देसदेसमधिदंगवंगभूखनचमकाये।पुरपुर थाटिअपालपयनघुंघरघमकाये।अलसअे सअन्यायहावभावनबिस्तारत॥आसवपान अपारमारआतुरदृगमारत।गनिकानबिभव अधिकारगलचंडातकगुम्मररचिय।दिल्लिय नवोढदुलहनिबनियसहरसिताराबरनप्रिय

॥ २६ ॥दो०॥मोजदीनइतभ्रातहनिबैठि
तखतबनिबीर॥ निलजदूरकिन्नौंअनखि
।आलमसाहवजीर॥ २७ ॥ष०प०॥कुसन्नअ
लीआलमवजीरकरिदूरकुसिकवन।जुलफ
कारखांनामअवरथप्योलखिढ्ढकवन।तजि
पत्तनलाहोररचियदरकुंचगेहरुख॥अतिज
वदिल्लियआयपट्टपायोसुपरमसुख।आसव
बिपानअनुरत्तअतिहठप्रमत्तनयभ्रातहनि
।गनिकानसंगगीदररहतदिल्लियपादपदीम
बनि॥ २८ ॥ दो०॥नायकलाडकपूरकुल।
गायकगहिरगुमान॥तासलालबीबीबहि
नि।अधिकरूपगुनआन॥ २९ ॥ पट्टकुस्मत
कौंकरी।मोजदीनबसहोय॥गलबाहीं छिन
छोरिकैं।कन्नसुनैंननहिकोय॥ ३० ॥ पादाकुल
कम्॥नारिनसंगफिरतकांतारन।नारिनही

औरहल निकारन ॥ इकदिनबाग रीअसवा
री । नाजरसंगलथ्थासबनारी ॥ ३१ ॥ पानकापि
सा[illegible] आति किन्नौं । सामचदनसासनपुनिदि
न्नौं ॥ [illegible]लाबसिकेलिबिहाई । अपरअरू
संक्षा अवआई । ३२ ॥ मोजदीनअतिपान
बि[illegible]नो । रहसिलालबीबीअनुरत्तो ॥ सोधि
तासिबिकाबिचसोयो । जाव[illegible]दिनकाहू
नहिंजोयो ॥ ३३ ॥ असवारीकेसमयअपान
क । इलउतबजेचढनकेआनक ॥ कहिकहित्वि
रादरोलानकिन्नी । सलकुरमनसिबिकाकसिदि
न्नी ॥ ३४ ॥ लैंलैचलेकहारनृजानन । जोपतपि
रतसाहकोंसबजन ॥ मदनलालबीबियहिगि
भास्यो । खोजनतबतेंहंजायनिकास्यो ॥ ३५ ॥
खोलिबंधसिबिकाइकनाजर । आन्योंसाह
मदनकेअंतर ॥ आतिअचेतसिबिकाबिच

ढार्‌यो। बुड्ढुहिँराजसमस्तबिचार्‌यो॥३६॥ग्याड्डि
तबदिल्लियअसवारी। मनजितसाह२ हड्डुम
मारी॥ दैअधिकारबिभवसुखदायक। गुरुमं
त्रीकिन्नेंसबनायक॥ ३७ ॥दो०॥ इतदिल्लियहुअ
मचिअनय। इतबुंदियअवनीस॥ साहबहा
दुरमिहुमुनि। सोचिदधुन्योंसीस॥ ३८ ॥
इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूसकलपदसिणाय
नेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेद्वाविंशो २२ म
यूखः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
॥ दो०॥ सलिलिप्रिगारम्भनिबामसल। सद्गि
लिधिरहितसम ॥ आल.सपर-प्रासिकम
थों। राजकाजतजिराज॥ १॥ ष०प०॥ कु
सनअर्लीसच्चदनवाबइकमंचरिययहत।
मोजं नकोंमत्तजानिथिवितियप्रपंचहित।

पूरबपुरपतनौंसुसाहफूरुकञजीमसुत्र ॥ त
बपत्रन मिलिताहिभिरतआन्यौंदिल्लीभुव ।
रनभेजदीनतासलबिरचिभजिदिल्लियअंद
रगये । लगिमिट्ठिसाहफूरुकसजवआयता
हिहनिअंकुर्यो ॥ २ ॥ दो० ॥ सकनवरवट
सत्त १७६९ समयविक्रमहयनबद्द ॥ मोज
दीनकौंमारिकैं । बैठोफूरुकपट्ट ॥ ३ ॥ जुलफ
कारखांसचिवतस । हन्योंसोकुहसगीर ॥ स
य्यदफूरुकसाहकिय । हुसनअलीसुवजीर ॥
४ ॥ पलटीगहियतीनकुम । बरसइककेमां
हिं ॥ आलमपिच्छैंमोजदी । अबयहफूरुक
आंहिं ॥ ५ ॥ बुधनृपकेयाहीबरस । प्यौकु
मरकुलभान ॥ कछवाहीरानीउदर । देवसिंह
अभिधान ॥ ६ ॥ होतजनमदिसदिसदये ।
लक्खनद्रम्मलुटाय ॥ जातकरमअरुदानजय

।सबबिधिपुब्बसधाय ॥ ७ ॥कुमरजनमश्रा
मेरपुर।सुनिजयसिंहनरिंद॥ पठयेकुलपहि
राबनी।दसहयदेयकरिं ॥ ८ ॥मासतीन
रहिकुमरवह।छोरिगयोनिजदेह॥ बिगरिवा
ममगबु ध्यमति।श्रालसगहिय ॥ ९ ॥
अैसेसोश्रालसअवरगत।सुन्यौंनपिक्ख्योर
च॥सातोंप्रकृतिसम्हारिनहिं।बिगरतस
बहिप्रपंच ॥ १० ॥पुरमनायसंबंधभो।तिहिं
परलगनलिखाय॥रट्ठोरनकौंखबरिदिय।
आवतबुंदियराय ॥ ११ ॥बिप्रपुरोहितनि
जबिबुध।नामभवानीदास।मड्डकेसोदा
सपुनि।कुलचारनमतिकास ॥ १२ ॥येदुव
भूपतयारकरि।पठयेनगरमनाय॥लगनबे
रहमश्रायहैं।दिल्लीशहकहाय ॥ १३ ॥हिं
जचारनदुवजायकैं।भाखिलगनरहिततत्थ॥

द्भुतनृपकौं आलस अधिक। उपजत बिबि

धअनत्थ ॥ १३ ॥ बहैलगननृपचुक्किकैं।

दू . लगन दिखाय ॥ लगनपंचइमचुक्कयो

। ब्याहनग मनाय ॥ १४ ॥ द्विजचारनम

ति कहियतब। पतिमनायकरिरीस ॥ अब

तुमसिरकन्याहनों। कैआनहुबुंदीस ॥ १५ ॥

तबचारनतत्थहि रह्यो। द्विजआयोनृपपा

स ॥ कह्योअबसरिहोंनतो। ब्याहकुआल

सबास ॥ १६ ॥ यहसुनिद्विजसंकोचकरि।

गोनृपनगरमनाय ॥ परनिसुतारहोरकी।

बिबिधत्यागबटाय ॥ १७ ॥ बुंदियदिम्मपु

निकुंचकिय। अतिआलसअलसात ॥

आलआतमगमांहिरुकि। बहुमुकामरहि

जात ॥ १८ ॥ चलतरुकतरुकिचलतइम।

नगर ।लपुरआय ॥ तँहँतड़ागअंतरउत

रि। कटकमुकामकराय॥ १९ ॥ब्याह्योमासल
पस्यबिच। साह्योग्रलसमुगाढ ॥रहतमालपु
रतालबिच। ग्रायोसिरग्राषाढ॥ २० ॥ष०प०
गरज्जिमेघघनघोरग्रोरउत्तरसनग्राये। ग्रधि
कमंडिग्रासारबिहितसंभरबरसाये। ग्रायोज
लजबताललबहिस्यदनमगायद्दक॥ तिहिं
उप्परथितहोयरह्योबहुदीहग्रालसिक। मा
लपुरसचिवयहसोधिमनकूरमपतिप्रतिपत्र
दिय। उनकहियनीरपरिवाहमगकहुहुतयथह
इनकरिय॥ २१॥ गीर्वाणभाषा॥ उपजातिः॥
इत्थंसवस्रोढयसेकपीटे। रयस्थितोमालपु
रेतडागे॥बहून्यहानिह्यवसत्प्रमत्तःश्रिरि
यो बिन्दुमतीक्षितीशः॥ २२॥ ग्रनुष्टुप्॥
तत्रैवफूरदेशाहे। जातेभटसहस्रभृत्॥ स्वा
मिदर्शनसाकांक्षी। जैत्रसिंहःसमागतः॥

।।२३।। वंशस्थ: ।। ततो नृप: श्रावणिके समागते। बुन्दीं समागत्य विभ्रमबुद्धिभृत्।। आलभ्य [illegible] त्विरक्रियेश्वरो। वसद्यथा पूर्वमवस्थित:पु[illegible]: ।। २४ ।। मा० मि० ।। दो० ।। इतमरु नृप अजमेर लिय। तब बिग्रह कुंवरांक।। रूपनगर रठ्ठोर नृप। राजसिंह कियटेक।। २५ ।। मरु भूपति सौं नहिं मिल्यो। हठ पूरब हमगीर।। साहहिं गिनि भाने जसुत। भो वह दिल्लिय भीर।। २६ ।। याके अरु मरुईस के। बनी नहिं जब बत्त।। तब रजधानी संग ले। दिल्लिय पुर वह पत्त।। २७ ।। बुंदिय हूं तब आयव है। राजसिंह रठ्ठोर।। नहिं किन्नों सतकार तस। बुद्ध अलस बरजोर।। २८ ।। राजसिंह निज पुत्रि का। सगपन हित कहि बत्त।। सो हू नृप मंनी नहीं। अलस नारि अनुरत्त।। २९ ।। पाव

अनादरतबगयो । कोटापुररट्ठोर ॥ कन्याभी
महिंब्याहिकैं । जुरिमंड्योइकजोर ॥ ३० ॥
रूपनगरपतिरीतिइंहिं । भीमहिंतुकरिसं
न्न ॥ निजरजधानी । दिल्लियगयउत्स
तंन्न ॥ ३१ ॥ मरुनृपके बनिबनिपिसुन ।
अनयसाहसौं आखि ॥ साहलगतभाने
जसुतयातैंअहरराखि ॥ ३२ ॥ पद्धति० ॥
इतबैठिपहफर्रुखसिताब । करि सचिवसु
रव्यसय्यदनबाब ॥ फरमानदेसदेसनपठा
य । सतकारपुब्बसबनृपबुलाय ॥ ३३ ॥ बु
धसिंहपासनतिसाहिलब्ब । निजहत्थमंडि
पठयोसुपत्र ॥ द्रुतसदलआयसत्रुन विदारि
।चाढ़ावरचकुममघरम्भारि । ३४ ॥ सोहि
नपत्रमन्यौंनरेस । विधिजोगराजकुल वि
सेस ॥ कियछगमहलदिल्लसततबास ॥ अ

बहुमदमैंमिलिकैंबसन ... रास ॥ ३५ ॥ दो० ॥
चारनकेसोदाससौं । इकदिनअक्खियबुद्ध ॥
मरुनृपजोअप्पनमिलैं । जुरैंसाहसौंजुद्ध ॥
३६ ॥ तुंदिखतजिउतहमचलहिं । वेअव
हिंसुतलोग ॥ ततोउभयमगमांहिंमिलि । ध
रदलहिं हिलोग ॥ ३७ ॥ महडकेसोदासत
बयहसुनियोअजमेर ॥ मरुनृपसोंमिलिकैं
कह्यो । अवनहिंकरहुअवेर ॥ ३८ ॥ हेरत
हैंमरुनृपयहांहि । कोऊमिलहिंसहाय ॥ या
तैंहुतदरकूंचकरि । तुंदियतरफचलाय ॥ ३९
कूंचनकोमरुनृपकरिय । चढ्योतथापिनबु
द्ध ॥ तबआलसअन्तेतगिनि । फिर्योकबं
धक्रुद्ध ॥ ४० ॥ दिल्लीपतिफरमानइत ।
नहिंमलैंतुंदीस ॥ यातैंअनखविचारिउर ।
रचीसाहहरीस ॥ ४१ ॥ रूपनगरपुरभूपको

तबहीलग्गोदाव ॥ संभरकोमरुपतिसहित ।
घरच्चोपिसुनचवाव ॥ ४१ ॥ष॰प॰॥रूपन
गरपतिकहियसुनहुममबत्तसाहमुत ।मरु
पतिअरुबुंदीसजुरतमिलिउभ ।मनजुल
।कोटपुरपतिभरदवाहिजुल्लहुकोरिम्बहर
।।दैतिहिंबुंदियदेसप्रबलपिल्लहुतिनउम्म
र ।कूरमनरेसजयसिंहकंहंबदलिखायहि
यप्रीतिबकि ।उज्जेननगरसूबाअरपिलख्य
पठावहुनीतितकि ॥ ४२ ॥सुनतशाहदि
ल्लीसपत्रलिखिभीमबुलायो ।मराबक्क
हिमिलिरुबकृतसतकारबढायो ।दैतिहिंबुं
दियदेससाहपिल्यौदोउनपर ।।तहितजक्क
सआयसेनसज्जियहितसंगर ।इतसाहभे
जिआमेरदलजयसिंहहिंहुमहुकमदिय ।
सूबासम्हारिउज्जेनपुरकरहुजाहमम्हर

क्खिय ॥ ५३ ॥ दो० ॥ सुनिहूरमउजैनदिसि
। करिदरकुंभस्थलाय ॥ सूरसबल नासहि
त । बुंदियनिकस्योआय ॥ ५४ ॥ सम्भरसम्भ
ह नायकैं । आन्यौंपुराहिं रि ॥ रक्ख्यो
कुदिनप्रीतिरस । मंडि बिबिधमनुहारि ॥ ५५ ॥
अंतेउरकछवाहको । अले रलिन आय ॥ मि
लिनंदमाउजमुदित । रह्यौहृदयहरखाय ॥
५६ ॥ उपालंभहूरमदये बुद्धनरेसहिंतत्थ ॥
मत्तेनहिंफरमानतुम किन्नौं अकुलअनत्थ ॥
॥ ५७ ॥ कोटापुरपतिभीमअब । बुंदियलि
न्नलिखाय ॥ तुमअमनावहु छिन्नतौ । कोरि
हैं बिघ्नहआय ॥ ५८ ॥ यतें ममम्नलआ
प । सकुभातहुबसाम ॥ अखिलसत्थमैं
तौनपरि । रहे होतनिकाम ॥ ५९ ॥ तबअ
मनानूपह छिंद्रफिरि । रह्यो हकीरारि ॥ घु

रहीमैं हम समुझिहैं। लिन्नी बिबिध बिचारि॥
५०॥ सक अंबर रिखि सत्त ससि १७७० फग्गु
न द्वादसि स्याम॥ कछवाही उर कुमर कुव भा
वतसिंह स नाम॥ ५१॥ भागिनेय हित हर
ख करि। करिय कुंच कछवाह॥ पर्हुंचावन बुंदी
सह। चल्यो तुरग हित चाह॥ ५२॥ चढत बा
जि प्रासाद सिर बुल्यो बिकट उलूक॥ काक
न कंकन कुक्कुरन। किय फेरंडन कूक॥ ५३॥
यह असकुन चिंतेन चित। चल्यो चढि चकु
वान॥ कूरम कों पर्हुंचायकैं। मुरथ्यो अलस
अमान॥ ५४॥ नाथाउत नगराज को। गु
ढा नाम इक गाम॥ मातुल कुल चकुवान को
। किन्नैं तत्थ मुकाम॥ ५५॥ सक अंबर रि
खि सत्त इक १७७० फग्गुन मेचक भूत॥ को
टापति लै दल कढ्यो। बुंदी पर मजबूत॥ ५६

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरूपेदक्षिणा
यनेनवमराशौवुधसिंहचरित्रेत्रयोविंशाति
तमो२३मयूख:॥ ❀ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀

षट्पदी॰॥ पोतनचक्खलिछायघायवज्जि
गनिसानघन। पक्खरघंटधमंकिवेगहल्लि
यहयवारन। साधानीसबसगभिरनअवर
कुअनेकभट॥सहँसबीसहयसज्जिभीमआ
यउवटउब्बट। निसघटियदोयरहतैंनिड
रलरनघेरिवुंदियलई। प्रातहिपुकारबुंदीस
प्रतिभयविहालहाजरिभई॥१॥सुनतए
हबुंदीसचलियचढिबाजिषुड्डमन।खबरि
इलैविचआयघेरिलिन्नोंअरिपत्तन।तब
लिषूपटरिवामलंघिअसलोलीभूधर।आ
असुरथपुरकरियरत्तदंतादरसनबर।गज

मुखवहपुरोहित कहियतबमैंतोजावतलरन रन। भीमसोंभिंटि दिखरायभुज नगरद्वाररक्खिहोंमरन ॥ २ ॥ यहकहिगजमुखआय प्रबिसिपच्छिमपुरतोरन। दक्खिनतोरननिजनिकेततहँजायरच्योरन। भरिभरिबाहलतुपकपिक्खि नृपभीमकहाई। दोउनकैंतुमवंघमिलहुकारिबंधलराई। गजमुखहुपायतबलोभगतिमंदजायभीमहिंमिल्यो। पकरायतबहिलिन्नोंनिपुनगुरुतामदतबद्विजगिल्यो ॥ ३ ॥ दो॰ ॥ गजमुखकोंपकरायइम। तोरनअररनफारि ॥ आयतरवतकोटसआरि। हुंदिय अमल बिथारि ॥ ४ ॥ इलनृपसोंसालमकह्यो। मरनउचितइहिंजुद्ध ॥ जोनरुचततोलरहिंहम। हमहिंसिक्खअबसुद्ध ॥ ५ ॥ यह कहिसज्ज्योजायगढ। निजधरकरउरनाम

।। नृपसुसुरथपुरतैंमुररि । गोमेवारनगाम ।।
६ ।। मेवारहिंपुनिदाहिनैं । कीरिगोमालवदेस
।। सालकभिंट्योजायतेंहं । पुरश्रामेरनरेस ।।
७ ।। इहिंश्रंतरउनियारपति । नरुवबंससंग्रा
म ।। नैंननगरकेगामकति । दब्बेतकतकुकाम
।। ८ ।। कारातैंगजमुरक्कुकढि । गोमालवनृ
पपास ।। तबहिंश्रनादरतरजिनृप । श्रंतरभो
जुउदास ।। ९ ।। छिनिश्रखिलश्रधिकारत
स । द्विजसिवदासहिंदिद्ध ।। कउलमग्गगुरु
सिरकहर । कोपबिगरिश्रबकिद्द ।। १० ।। को
टापतिबुंदियमुलक । इलसमस्तश्रपनाय ।।
श्रानायत्तकरउरसमुझि । घेर्‌यो सालमजाय
।। ११ ।। बुंदियपुरश्रवरोधतैं । रानियबिपति
तिरत्त ।। इकबेधमश्रामैरइक । पुरभनायइक
पत्त ।। १२ ।। श्रवरलोकश्रवरोधके । बिभव

सचिवतिहिँवार ॥सबबेघमपुरसंन्चरे।देव
सिंहकेद्वार॥ १३ ॥रवरन्चरुपय्येग्रह्रुसत।
ग्ररपिनित्यतिन्हएव॥इकहायनबुंदियबि
भव।दुभरनिबाह्योदेव ॥ १४ ॥इतन्नृपमाल
वजायकैं।लिन्नैंतुरगग्रनाय॥बेघमपतिप्र
तिमोलकी।कुंडियदिन्नृपठाय॥ १५ ॥देव
सिंहवहबन्दिदल।गिनिसगपनव्यवहार॥
दिन्नीहयसोदागरन।मुद्रातीसहजार॥ १६ ॥
बिपतिबीचइमबंदगी।चुंडाउतकियचाहि
॥ग्रप्पनसिरस्त्रनकियग्रधिक।बुंदियबि
भवनिबाहि॥ १७ ॥इतकरउरपुरभीमन्नृप
।रह्योबिंटिरनरत्त॥ग्रट्ठारहग्रहग्रंकुरयो।
मुरयोनसालमसत्त॥ १८ ॥पलपलबिच्चगो
लनपरिग।प्राकारनबिचपंथ॥सबकरउरतो
पनसिलगि।कुवग्राष्ट्रकहरिमंथ॥ १९ ॥मुक्कु

कमकुलउमराल इक। सुख सिंह हच क्कुवान।
सुनहिं दै घर विभव पद। कियकसायपरिधान
॥ २० ॥ चहि आनि च्छ बिचरत फिरत। कोटा
दलविन्व आय ॥ मिलि गढ्ढियत जिभीम नृप
दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥ कह्यो भीम करजो
रितब। मो सिर करहु निदेस ॥ सुखसिंह कुयह
सुनिकह्यो। चढ़ि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥ तब
हिकहें सुखसिंहकें। वह चढि बुंदियआय ॥
नलो कितोकरउरनगर। लेतो छुतहि छुराय।
२३ ॥ पादाकुलकम् ॥ कोटापति सुखसिंह
कथितकिय। जान्यें लोकन सालम जित्तिय
॥ सूरसपति इतमंत्र बिचास्यो। जामिप बुंदिय
हीन लिहास्यो ॥ २४ ॥ अमररान के पट्ट उदेपु
र। लम्तराज संग्रामसधर मधुर ॥ तिहिं प्रतिद
लजम सिंह पठायो। स्वकर मंडि सत कार सिवा

यो॥ २५॥हेनृपतुमभीमहिंसमुझावहु।बुद्ध
हिंबुंदियदेसदिवावहु॥यहमोसिरऐसानक
रहुअब।तुमरोहुकमभीमस्वीकृतसब॥२६॥
तबहिरानयहपत्रबिचार्यो।कूरमपतिसंको
चसम्हार्यो॥निजकाकातरवतेसबुलायो।बुं
दियभीमसमीपपठायो॥ २७॥तबहिआय
तरवतेसभीमप्रति।आक्खियबिबिधरानकी
बिन्नति॥बुंदियतजिनिजगेहपधारहु।मोसिर
यहऐसानबिचारहु॥ २८॥यहसुनिभीमक
ह्योधरिगबहिं।बुधनृपतेंबुंदियनहिदबहिं॥
जमीसमस्तसाहकीजानों।तजिहोंलोहहेतुर
कानों॥ २९॥यहकहिसिक्खदईतरवतेसहिं
।तजतभीमनहिंबुंदियदेसहिं॥ तबदेसहिं
सालमलमिलुट्टन।कोटापतिथानानकरिकुट्ट
न॥ ३०॥दो०॥मेवावतसामंतहर।इनहहु

नमाहिलेस ।। बुंदियढिगपुरजैतगढ । लुट्टिय
आयसदेस ।। ३१ ।। तिनपरपठयोभीमनृप । धा
इआतभगवान ।। वानैंजायधनावपुरकिन्नौंहद
घमसान ।। ३२ ।। सेवावतसामंतहर । मरेबहुत
करिजंग ।। धाइआतभगवानकैं । घायबिलको
अंग ।। ३३ ।। इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्व
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
चतुर्विंशो २४ मयूखः ।। ❀ ।। ❀
।। ❀ ।। ❀ ।। ❀ ।। ❀

पज्झटिका ।। संग्रामराननसादरकहाय । सोभी
मनौंहिंमन्नियसुभाय ।। तकसीरतासमेटन
विचारि । कोटेसउदयपल्लनपधारि ।। १ ।। सी
सोदीमिंदिसंग्रामरान । दियभीमतत्थकछुदि
नमिलान ।। अहालसीसइकदीहआय । बैठ
दुकूणपरिखदल्लनाय ।। २ ।। प्रासादतासके

हेद्वपास। इकनदियआयकिन्नोंतमास॥कोटे
सकुजसकरिफाहिक्कुबत्त। बुल्लियसालमजस
चढ़िबरत्त॥ ३ ॥ सोसुनतभीमकरसुच्छध
ल्लि। लैसिक्कवआयदुंदियउफल्लि॥रद्वोरसुभ
टजयसिंहनाम। सालमसिरपिल्ल्योजयसका
म॥ ४ ॥दलसँहंसबीसलैतदुरूह। जयसिं
हबिबिधसजितोपजूह॥करउरसुजायबिंदि
यसजोर। इकमासरहियघमसानघोर॥ ५ ॥
करउरसुजपूतनइमउपेत। सरपूरसरधिजिम
सोभदेत॥जयसिंहपुरसुलुट्टनजानि। मन
सोधिश्रेयसामहिंप्रमानि॥ ६ ॥सालमसमी
पलिखिदलपठाय। अबसामहमहिंतुममि
लहुआय॥ अरुतुमरेसुतसोंहअजेय। ममदु
हितासगपनहैबिधेय॥ ७ ॥मालमकहाय
तबइनअनीक। परतोरनअंदरमिलनठीक॥

सन्नौयहैकुरद्वारलत्थ।पुरद्वारगयोलैतुच्छस
त्थ॥ ८ ॥उत्तलैंचढिसालमसदलआयारद्वो
रलियउअंदरबुलाय॥सालमसुमिल्योजा
लमजलून।कुवघटियआइबैठकदुहून॥ ९ ॥
दो०॥बीसमेंहुंसदलतैंबचे।ऐसोकरउरहोन
॥यहैनजालेंकूंमिल्यो।भीरुकबंधमिस्योन॥
१० ॥सालमसुतपरतापसौं।स्वीयसुतासंबं
ध॥करिबुंदियगोकुच्चकरि।सुजयसिंहहत
संध॥ ११ ॥जायोजुगियरामको।अंकुरिकु
रउराम॥जेरनदोहूबेरमो।भावीमिटैंसुकैम॥ १२
इतकूरमकहिंसंभरहिं।उज्जयिनीहमजाल॥
जोलौंतुमअत्थहिरहहु।हमकारिहैंभुवहाल॥
१३ ॥यहकहिवहउज्जैनगो।सूबापतिसरसा
य॥आमनामकायत्थिया।रह्योसुबुंदियराय
॥ १४ ॥ छ०प० छुत्तमरुपतिनिजभटनपुच्छिलखि

समयमंत्रकिय। मिलिअप्पनकूरमनअप। संभरपुरलुट्टिय। अबकूरमपतिफुट्टिभयोसब्बसिरस्वामी॥ राकाकीअप्पनाहिरहेदिल्लीसहगामी। अवरनउपायसुक्कतअबहिंउचितआहिदिल्लियगमन। सुंदरबिबाहिसाहहिंसुतारहैंसदासिरकूरमन॥ २५ ॥ दो०॥ असरलिखाईउदयपुर। मेटिरीतिवहमुद्द॥ पुत्रिनसैंदैपदुमिपुनि। लग्गोरक्खनलुद्द॥ २६ ॥ निजतनयातबसंगलै। यहकुमंत्रउपजाय॥ अजितसिंहदिल्लियगयो। पस्योसाहकेपाय॥ २७॥ तबहिंदुनजितनतासकी। सुताबिबाहीसाह॥ अजितसिंहकोंइक्कठै। किन्नेमाफगुनाह॥ २८ ॥ साहबनायोसय्यदन। यातैंवेहमगीर॥ हुसनअलीइब्बिलकरैं। कहिबेमात्रवजीर॥ ॥ २९ ॥ तिनसौंसाहहुदाबिरहत। सय्युदराज

तनसत्थ ॥ हुसनअलीकेहुकमकोँ। मिट्टनको
नसमत्थ ॥ २० ॥ हुसनअलीकहिमुक्कल्यो।
यहमरुभूपतिपास ॥ संभरपुरभाईहनैं। बैरबि
भंगोंतास ॥ २१ ॥ यहसुनितबमरुपतिगयो।
हुसनअलीकेगेह ॥ करनजोरिअरुसपथकरि।
अकरवीतिहिंप्रतिएह ॥ २२ ॥ मैंकूरमबरज्यो।
बहुत। साहसतदपिसम्हारि ॥ जयसिंहहिंपु
रलुट्टिगो। आतरावेरमारि ॥ २३ ॥ सपथवृथा
करिइमसिल्यो। सय्यदसौंमरुमोर ॥ सय्यदत
बसागसगिन्यौं। जयसिंहहिबरजोर ॥ २४ ॥
जयसिंहहुयहसबसुन्यौं। मरुपतिसय्यदमेल
॥ तबउज्जइनीनीतितकि। अंकुरिरहियअठे
ल ॥ २५ ॥ इहिंबिचदक्खिनदेसकी। पत्तीआ
निपुकार ॥ मरहट्ठेलुट्टतमुलक। करिकरिबि
दिधबिगार ॥ २६ ॥ व०प० ॥ हुसनअलीस

य्यदनबाबदक्खिनपुकारलहि।पुरअवरंगा
बादचल्योदरकुंचबिजयचढि।सारधलक्ख
तुरंगसंगसतदोयतोपसजि॥आवतघनजि
मउमडिबबनिकरंबतनितबजि।उज्जैननिक
टआयोजबहिकूरमपतिइकनीतिकरि।पैंती
सकोसदरकुंचलौंदुलहनिब्याहनब्याजदरि॥
२७॥दो०॥सरत्रिकोसउज्जैनतैं।इकचकुला
ननगाम॥तिनतनयासगपनकियउ।कूरम
सोंसहसाम॥ २८ ॥वहसगपनमनचिंति
अरु।सय्यदगिनिबरजोर॥बिनुहिलगन
ब्याहनगयो।कूरमकुलसिरमोर॥ २९ ॥
गीर्वाणभाषा॥वंशस्थः॥लग्नंविनोद्वाहचि
कीर्षयागतो।नीतिस्थआमेरपुरस्यभूपतिः
तत्तस्यपत्नीरवलुचाकुवाणजा।पलङ्कपाथा
बलयान्यधारयत्॥३०॥मा०मि०॥दो०॥

कूरमकों पहरि नायहुम । सय्यद सक्खिनपन्न ॥
नव बरतब उज्जैनपुर । आयेपर निउमन्न ॥३१॥
ष०प० ॥ नवबरआय अवंतिजानि सय्यद द
क्खिनगल । लिखि बिन्नति मुक्कलिय साहफ
रुकहजूरत्तल । बूंदीपति आयत्तखामिआय
सलुध्धे किन ॥ आलसके अतिसोक नांहिं फर
मानलखे हुन । बूंदिय लिखाय बरखस कुहन
हिंसिरसब हुकमन्नकायहै । फरमानदेउ बुल्ल
कुबुध हिंअब हजूरदुलआयहै ॥ ३२ ॥ दो०
॥ यह सुनि साह नबाद हुक । नाम दलावरखान
॥ लिखितपरा जुतमुक्कल्यो । कूरमअरजप्र
मान ॥ ३३ ॥ आयदलावरखान तब । कूरमस
न्निवसमेत ॥ बुंदीलै हुलभीमसों । अप्पीइन
हिंसहेत ॥ ३४ ॥ प्रथमसाह कियखालसे ।
लुद्द हिंन दनुसमप्पि ॥ कोटाके उठवायकैं । था

नोंनिजइनथप्पि ॥ ३५ ॥ सुलाभनायअधी
सकी। रानीजोरद्वोरि ॥ सुतानामसूरजकुमरि
। कुवताकैगुनगोरि ॥ ३६ ॥ सकअंबरहयसत्त
इक १७७० । अमारुफग्गुनमास ॥ कोटापति
बुंदियलई । गिल्योसुदुज्जरग्रास ॥ ३७ ॥ स
कजालेमेंहयसत्तइक १७७२ । अगहनद्वाद
सिस्याम ॥ आईपुनिबुंदीसकैं । बसुधाकुलटा
बाम ॥ ३८ ॥ बुल्लिसच्चिवबुंदीसके । फेरिबु
द्धनृपआन ॥ दैबुंदीदिल्लियगयो । जवनदला
वरखान ॥ ३९ ॥ अदरदेसबुंदीसकैं । आयो
सबहिबहोरि ॥ भीमनगरबारांमऊ । द्वैधरग
नोंनछोरि ॥ ४० ॥ तदनंतरफरमानपुनि । पठ
येसाहजरूर ॥ बुद्धसिंहजयसिंहनृप । बुल्लेउ
भयहजूर ॥ ४१ ॥ ष०प० ॥ फरमानानहुल्लके
लिसज्योकूरमनरेसजब । बुंदीसाहिंबुलवाय

कह्यो आइहतउ भयअब॥ ए पिक्खहु फरमान चल
हु दिल्ली हमसत्थैं ॥ लैहैं साह रिझाय मुकुट है हैं
अपारि मत्थैं । कूरमनेरस यह कहि चढ्यो बुंदीप
ति तदपि न चढत । आलस अचेत मति मंद
अति पल पल प्रति चलि हैं पढत ॥ ४२ ॥ सुन
त राह जयसिंह आसु बुंदिय दल आयो । जालि
पहुहिं कहिय साल साजि मोद सिवायो । अब
नृजान आरुहहु चलहिं धरि रखंध भृत्य हम ॥
निज असुसपथ दिवाय राह अक्किय नृप कूरम
। संकोच तास चहुवान तब चढि तुरंग तिन सं
गहुव । इहिं रीति छोरि मालव अवनि दिल्लि
य ल्लिय भूप हुव ॥ ४३ ॥ दो० ॥ कढि मुकुंद
दस उअरे । चम्मलि पट्टन ओर ॥ लक्कैरि धागि
रि लाइयैं । आयग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥ कु
छु दिन तत्थ मुकाम करि । चरमुक्कालि हित

चौं... मर निजउमरावसब। देदल
लिन बुलाय॥ ४५ ॥ प्रथमइंदूसल्लोल
भटनगरदुग्गहनाह ॥ मेघसुवनछिल्लर
मरद। आयो अधिकउछाह॥ ४६ ॥ छिल्ल
रसौंजयसिंहनृप। मिल्योनबत्थनघल्लि।
दूनअकबरीतुमआमई। हममिलिहैंअब
हल्लि॥ ४७ ॥ इमकहिकूरमसौंमिल्यो।
दैपग्गगट्टियसीस॥ इकसूरपनअनुस
स्यो। अनरिवइन्द्रगढईस॥ ४८ ॥ करउ
रपतिआयोतदनु। मिल्योउररउद्योत॥
सालमजुग्गीरामसुव। भटमुक्कमसिंहो
त॥ ४९ ॥ रनकरउरपत्तिपचिरह्यो। सु
नृपभीमहतसंध॥ यातैंदोउनअहस्यो।
सालमघ्घपालिरवंध॥ ५० ॥ सुभटवै
रिसल्लोतसजि। नगरथत्नोधीनाह॥ जै

नसिंहजाजवजयी। आयोसरस।सपाह
।। ५१ ।।बैरिसल्लकुलउद्धरनहद्दारनह
मीर।।बलवनपतिआयोबहुरि।अभ
यसिंहअतिबीर।। ५२ ।।पुररवातोली
पतिप्रबल।अमरसिंहअभिधान।।इंद्र
सल्लकुलउद्धरन।चाय मिल्योचहुवान।।
५३ ।। मिल्योआनिउद्धतगुमर।चंडसमर
चहुवान।।सेरसिंहसामंतहर।भज्जनैरीपु
रभान।। ५४ ।।नाथाउतनगराजहू।नग
रगुढाकोनाह।।पुनिदूजोनिम्मानपति।
आयोमिलनउछाह।। ५५ ।।दो०।।सब
लमिलेउमरावसब।स्वस्वामीढिगआ
य।।सबहिंसिराहेसूरपन।जयसिंहकुज
सगाय।। ५६ ।।सबनकह्योदिल्लीसदि
य।।कुंदिचलिखितलिखवाय।।नेकग्गरपि

कैंवहमद्द।नवइनदिन्नदिखाय॥ ५७॥
पिक्खिपटासबहिनकह्यो।कूरमनृपहिँसि
राहि॥मऊनगरबारांमुलक।रानपटाबि
चआहि॥ ५८॥कूरमतबमुसिकायक
हि।दुवहमदिल्लियजात॥अबलैहैंकाहि
साहसों।इनमुलकबसुआत॥ ५९॥इ
मकहिअवरनसिक्खदे।चलेउभयनृप
तत्थ॥सालमसिंहरुजैतसी।सुभटलये
दुवसत्थ॥ ६०॥इमदुवनृपआमेरपुर।द
रकुंचनचलिआय॥जामिपसालकप्री
तिजुत।रहेकछुकदिनराय॥ ६१॥तहँ
करउररनरीझलकि।सालमहितबरसी
स॥नैंननगरकोपरगनों।सबदिन्नोंबुंदी
स॥ ६२॥सालमकेइक्कतभई।पहुमिद
म्मनवलक्ख॥कातिकनतबयोंहूकह्यो।

बनिहैंकबद्धबिपक्ख ॥ ६२ ॥ मुक्तादाम
॥ करीइमसालमकौंबरबसीस। गयेपुनि
दिल्लियहैंअवनीस ॥ उभैहितसंगगयेपु
निआम। रजीनृपदेउनसाहसलाम ॥
६३ ॥ अनामयदेउनकोजवनेस। मिला
यरपुच्छियप्रीतिबिसेस। उभैनृपअप्पन
अप्पनओक। सिराहहिंपायखरेहितसो
क ॥ ६४ ॥ उभैभटसालमजैतसमत्थ।
बुलायउहुसभाबिच्चतत्थ ॥ नकीबनकी
कृतमामउजल्ल। परीलकरीइकसालमद
ल्ल ॥ ६५ ॥ दईपुनिसाहसमस्तनसिक्ख
रहीनृपकूरमकीअतितिक्ख। रहैइम
दिल्लियहैंनरनाह ॥ सदारिखिलिब्बलबुला
वतसाह ॥ ६६ ॥ लयोनृपकूरमसाहहि
नाथ। मसनंदपैहैंसुकरैंहितपाथ। सुसा

हबसालमकौंकरिमुद्द।पठायउबुंदियपै
तबबुद्द॥६७॥सभादिनइक्कबडीरचिसा
ह।बुलायउआमसबैनरनाह॥गयोजय
सिंहहकूरसईस।गयोबुधहड्डनवंसअधी
स॥६८॥गरब्बलसाहनकेसरसत्त।गयो
मरुईसअजित्तकुलत्त॥गयोनृपसंभरभी
मसदंध।गयोपुनिरूपपुरेसकबंध॥६९
॥गयेइमहिंदुवमिच्छअसेस।गयोपहि
लैंतहँबुद्धनरेस॥सलामकरीकसिपट्टिस
ढल्ल।लईनृपबुंदियपट्टमिसल्ल॥७०॥
गयेतदनंतरसर्वहिआम।सजोहितपूर्
बनम्रसलाम॥बिलंबकछूकरिआयउ
भीम।नकोहितहेतरचीतसलीम॥
७१॥सिरैंलरिबुद्धहिंमुद्दरिसाय।जासो
मनमाँहिंसुक्योंमिटिजाय।दईउदिसा

हसमसलनसिक्ख। रहीतँहँबुद्धबलापति
तिक्ख॥ ७२ ॥ अथप्राकृतभाषा॥ मालि
नी॥ (१) इयउअयउराओतत्थसङ्गामरण
। णरवइजयसीहंपेसिअंणेहपत्तम्॥
जयिकुणइपसाअंफरुखोतुअधीए। व
सइणणुतदोमेपट्टणंचित्तऊडम्॥७३॥
(२) णयमयजयसीहोतंखुदट्ठूणपत्तं। समय
बलबिवेगीणीइरक्खुद्धुद्धिम्। दडकड
ढिगायोसोसाहअभासिकुम्मो। कहिउज
वणाणहंफरुखंराणवत्तम्॥ ७४ ॥ प्रा०
पि० ॥ छ० प० ॥ अगोंअकबरसाहलि
यउचित्तोरदुग्गबर। पत्तोअप्पियबद्ध

(१) इत: उदयपुरात् तत्र सङ्ग्रामराणा नरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्नेह
पत्रम्॥ यदि करोति प्रसादं फर्रुखः तव कन्यायां वसति ननु तदा पत्त
नं चित्रकूटस्य॥७३॥ (२) नयमयजयसिंह: तत्खलु दृष्ट्वा पत्रं समयबलविवेकी नीत्या
रक्षः दुर्द्धिम्॥ शीघ्रं गतो सौ शाह कामे कूर्म कथयितुं यवनमाथं फर्रुखं राणवार्त्ताम्॥७४

रिरह्योतबतैंवह उज्जर। साहहुकमबिन्नुरा
नजायस्वच्छंदबसैं किम॥ यातैंपठईअ
त्थअरजसंग्रामसिंहइम। अप्पहु निदेस
बसवायअब चित्रकूटहेहेंभरहैं। सतपञ्च
सुभटपरवरैतमम कथितकहोतेंहँ निब्बहैं
७५॥ दो०॥ नजरिद्रव्य करिहै किती। यहै
कहीजबसाह॥ तबहिंसम्भ्रमयलक्खमि
त। अक्खेकूरमनाह॥ ७६॥ छ०प०॥ सु
निसुरानमुक्कलियनजरिहुंडी त्रयलक्ख
न। कूरमकिन्नीनजरिसाह पिक्खीसुमोद
मन। लियउपटा लिखवायरहीमहुरहुअ
वसेसह॥ अरजइक्कपुनिकरियनगरअं
मेरनरेसह। बुधसिंहभीम बिग्रहबिरचि
च्छिज्जहिंलरिलरिपरसपर। दोउनमि
लायअबअप्पहुतभेटिबइरमंडहुमह

र ॥ ७७ ॥ दो० ॥ सुनतराहकोदेससौं दि
लीसाहजहाय ॥ करहुमेलबुंदीससन ।
जयसिंहहिगजाय ॥ ७८ ॥ जोतुमवि
ग्रौंकुकनलहि । सोसबपछोदेहु ॥ रघ
पातरफतजुरि । सुनयसामकोलेहु
॥ ७९ ॥ हरिगीतम् ॥ लरजोरक्षायसमा
हकोसुनिमीसभीसुतथीभई । जयसिंह
केघनरूपड़ेरनजायलिक्खतिमेंदई ॥ कछ
वाहकहिवारोंमजब्बछोरिइनलिरिव
दीजिये । बुंदीससौंमिलिसामकेइकथा
लोनजलकीजिये ॥ ८० ॥ तवसाहको
कहिवाहहैमनमेंनइकतजानिकैं । कोटे
सजीवहदेसदीनौलेखकागदानिकैं
॥ फरिमसनइकाहि थालको भूपाल
नायहि विरचयो नृपभीमउग्रस्पोर ।

ओमनमाँहिंदोरवभर्यो जरयो ॥ ८१ ॥ सक
तीन हय रिखि इंदु १७७३ मैंयह बत्ततीनन
केंभई । इहिं बीच जट्टनकी पुकार अपार दि
ल्लिय उव्वई ॥ इक नेर थूह निईसजट्टसुनाम
चूडामनि रहैं । धनजोर ओमनजोर जोर नजो
र फोजनानि ग्रहैं ॥ ८२ ॥ तब साहजट्टपुका
र पैंक छवाहभूपति पिल्लयो । बुंदीस बिनु
सबसंगनृप करि सेनसंचय ठिल्लयो ॥ इन
जाय तोपनमालकेंर चिजालथूहनि बिढई
। इत साह बुंदियनाह बुल्लिरु रान बन्न रु उ
च्छई ॥ ८३ ॥ बुधसिंह रान पठाय विन्न
ति चित्रकूट बसावहीं । कियभेट दस्सन्निल
कवओ अपनों निदेस उठावहीं ॥ नयमंद
हड्डु नरिंद यों सुनि कुम्मका निकुनां करी ।
जयसिंह उक्क पंच जानत ह्यहे कथ्थ उच्चरी ।

॥ ८४ ॥ वहदुर्ग्ग अकबरसाहरन करि अ
च्छ द्वादसमैं लयो। हम आदि बकृतनरान
तजित बसी स साहनकौंनयो ॥ वह चित्र
कूट बसायकैं पुनि रान फैल प्रचारिहैं। अव
नीप हिंदुनको रिअं कुरि साह नाह बिसारि
हैं ॥ ८५ ॥ यह राह फूरुकसाह सुनि वह प
अभीत बिचारयो। जयसिंह पैं इत भीम घूह
नि जंगसोंह प्रसारयो ॥ करजोरि कहि मग्ग
ह पुत्रिय आप उपयन कीजिये। कछवाह त
बजयसीह कहि कछु दीह अंतर दीजिये॥
८६ ॥ नृप बुद्ध सोदर की सुता हमपुब्ब सगप
न कैं बरी। वह ब्याह करि दुलरावरे छह बन्नउप
नय अद्दरी ॥ जयसिंह यह कहि भीमसौं बुध
सिंह प्रति दल पिल्लयो। तुम ब्याह मंडहु बेग
मैं पुनि भीमको बच झिल्लयो ॥ ८७ ॥ बुध

सिंहयहसुनिसाहसौंलहि सिंकव ष्टूहनिसं
क्रम्यौं। जलघोरसिंधु हिलोरज्यौं दलजोरज
ट्टनपैंजम्यौं॥ लिखि पत्र बुंदिय जोधसोदर
कीसुता नृप बुल्लई। उम्मेदकुमरिसु नामजोप
रिनायकूरमकोंदई॥ ८८ ॥ कोटेसभीमहु
अप्पनी तनया सु तत्थ बुलायकैं। बरजोरकू
रमभेरकोंदियप्रीति सहपरिनायकैं॥ मरु
आगिहयरिखिइंदु १७७३ हायन जेठ षहनि
जंगमैं। कछवाहइमद्दुवब्याह कीनेबीरसुव्वि
रसरंगमैं॥ ८९ ॥ करिब्याह कूरमनाहयोंपु
नितावजट्टनपैंदयो। हरिसिंथप्रांष्टूकराजज्यौं
तरकावतोपनकोभयो॥ उडिकोट अट्टनध
ट्टयोंगढबट्टजट्टनकैंपरे। कढि बेग बगरि
तेगवेसबसेनसम्मुहह्वैमरे॥ ९०॥ जयसिं
ह ष्टूहनितोरिकैं इमजट्टचूडामनिहन्यौं। अरु

सद्दन सिंहहिं रक्खि सरनैं अप्प जय छक उप्फ
न्यौं ॥ जिहिं दनसिंह निकेत सूरजमल्ल नट्ट
सुपुत्र भो । जर बंटिकैं सिर संटिले भुव फोज ल
रवन जुत्त भो ॥ ९१ ॥ है कोटि आमद मुलक
दक्खिरु ताव साहन पैं दयो । धरि बीस कोटिस
कीय कोस सरोस सत्रुन कौं जयो । लरि आग
रा लहि मारि दिल्लिय साह कोसन लुट्टिकैं ।
किय भरतपुर निज राजधानी जंग मिच्छन जु
ट्टिकैं ॥ ९२ ॥ गढ भरतपुर कुम्मेर डिग्घरु
वैरयेन्चउ निम्मये । आसान सिर आमेर को अ
छ्योन जो कुइ ते भये ॥ वाके जवाहरमल्ल पुत्र
सहाय स्त्र रक्खि जाहिले । वैगसु मरु पति बिजय
सिंहकु इक्क गहिय ताहिले ॥ ९३ ॥ जिहिं पु
त्र नाति यए भये तिहिं सरन कूरम स्वीकर्यो ।
गढ फोरि धूह नितोरि सब नृप जोरि दिल्लिय

संचस्यो ॥ रसराहसैंरुधिराहसौं मिलि साहसौं
जय अप्पयो । सिरमोरभूपसमस्तमैंबरजोर
कूरमयोंभयो ॥ ९४ ॥ कछवाहसाहउभैहि
इकगिनिब्याजभीमबिचारयो । जामातपर
रचिघातजडनृपसस्त्रमंत्रसम्हारयो ॥ पुररू
पनगरनरेसअरुमरुदेसपतिदुवबुल्लिकैं ।
मिलिइक्कसम्मतिमंत्रमंडियभूपतीननखु
ल्लिकैं ॥ ९५ ॥ लिखिपत्रसय्यदपैंनतक्खि
नदेसदक्खिनमुक्कल्यो । इतसाहकीहित
चाहसौंकछवाहभूपतिउम्कल्यो ॥ जयसीह
यह कछुदीहमैंअधिकारअप्पनपा हे । ब
निकैंवजीरसमस्तमस्तकचंडघातचलायहै ॥
९६ ॥ रहनोंतुम्हैंजुवजीरह्वैअरुबंधुवैरनि
वेरनौं । तोबेगआवहुतेगमंडिघुमंडिकूरमघे
रनौं ॥ छुतपिक्खियहछदसज्जिसय्यदसेन

सम्मदउप्पन्यौ। तजिअप्पनोपन मग्गकोप
जलज्जालोपनसंचर्यौ ॥ ५७ ॥ उज्जैनआ
यरुसाहकों तमंडिकूतनअप्पये। हमआनि
पूरबदेससौंतुमपट्टदिल्लियथप्पये ॥ जय
सिंहनृपममआतमारकताहि निजहियला
यकैं, ममतुल्यअदरअदर्यौसुदयेंअप्प
भुलायकैं ॥ ५८ ॥ कछुत्रासनहिंबिसवा
सहैअब नासआयरुआकिवहौं। रनत्रायआ
यनपासमैं निजबंधुबैरनराकिवहौं ॥ सुनिसा
हयह निजमातसौंसब बातसय्यदकीकही।
तबबातआकिवघातयह जयसिंहउप्पर
हैसही ॥ ५९ ॥ तिहिंदेकुसादरसिक्खसौं
आमेरनेरपठायकैं। तबकूंकअप्प मांहिं
नांहिंलरैंजु सय्यदआयकैं ॥ सुनिसाहयह
कछुवाहसौं हिलचाहआकिवयसर्वही। तुम

जाकु देसहिं सिक्खलेअतिफैलसय्यदकोम
ही ॥ १०० ॥ जयसिंह आकिवयमोकों अनुमे
जुदीनहिं मारिकैं लेहैं सु आवलबेरयेसब ओर
त्र उत्तारिकैं ॥ तसमातसज्जहु सेनसम्मुहस
नुसय्यदमारिहैं । सब हिंदु पायन लायहिंदु म
यान आलबिसारिहैं ॥ १०१ ॥ कहिसाहतुम
हहाकु जो अतिजोरसय्यदजानिहैं । पुनितुम
हिं दुन्नि प्रपंच करि तिहिं मारिखैरप्रमानिहैं ॥
तबकहियकूरमरानहित फरमानजो वह निर्म
यो । चीतारदुग्गबसायबे हितसोसबकु ल
भयो ॥ १०२ ॥ बुंदीसबैननचिंतितबयहसाह
नाँहिंनस्वीकरी । कछु ओरमंगहु रानहितदैहैं
सुयहपुनिउच्चरी ॥ आमेरपतितबराह आकिव
यरामपुरलिखदीजिये । फरमानभूपतिरानस
र्वसमान कीजिये ॥ १०३ ॥ दो० ॥ मालव

धर अंतर मुलक। नगर रामपुर नामु ॥ चंद्रावत रहिते हत तँहँ। स्वामि नाम संग्राम ॥ याके पुरुखन अग्ग अति सेये दिल्लियसाह ॥ किये सुभट तब राव कहि। राज बरुख सिहित राह ॥ १०५ ॥ तब तैं बुंदिय जोधपुर। पुर आमेर समान ॥ नमानि तसि सो दहु। सेवत रहि सुलतान ॥ १०६ ॥ निकुल यह संग्राम नृप। रह्यो सुररिल हि काल ॥ छिद्र यहै ताकि गहन छिति। कहि कूरम भूपाल ॥ १०७ ॥ ष० प० ॥ कहि कूरम कर जोरि सुनहु मम बत्त सा स्वत। रामपुर पसंग्राम रहिय अब सुररि जोर जुत॥ जनपद लेहु उतारि रहैं सु रैन दिन कानाँ। रानहिं देहु लिखाय रचाहिं सेवन यह रनाँ। सुनि यह लिखाय फरमान दिय। करि समुद्र जयसिंह कर। रानतुम दक्खिगढरा मपुर सज्जहु सेन सुभटबर ॥ १०८ ॥ दो० ॥

रामपुरी लिखवायइम। रान अरथहि तराह॥ सजव सिक्ख करि साहसों। नीति चतुर कछवाह ॥ १०९ ॥ जमि पदें रन आय कहि। चलकु करि सिक्ख ॥ इहां समय कछु औरभो। रहैं नरा जस लिक्ख ॥ ११० ॥ ष० प० ॥ सुनत रह बुंदीस दिग्गसु कूरम्म तिउत्तर। तुम आयबल हि सिक्ख सजव सज्जित पद्धतिपर। हमहिं सिक्ख अबहं कछु अंतर परिजैहैं॥ चलकु अप्प तसमात सिक्ख लक्खत हम ऐहैं। जयसिंह सुसुनि आमेर पुर आय कटक बकु सज्ज किय। इन सदल आनंदि क्रिय उमंडि कुसन अली अन खात हिय॥ १११ ॥ असुर साह को सूक अजित अभिधान धव्व पति। रूपनगर रट्ठौर जन कमान लबि मंदमति। याही को जामात भीम कोटेस राम सुत॥ बंधु बगग अय जानि बीच डारिय बिसास जुत।

कहि साह साम सय्यद बिरचि राज काज निबद्ध कुसकल। नदियउडारि सय्यद श्रवन उनस बफोरिय संबल॥ ११२॥ एतील हि श्रव नीपलच्छि गअति मुम्मिलु भाये। बदलि साहसें छत्रअग्ग सय्यद बिचआये। साहहिं दैबिस बास इक्क ब सरजु रिइक्कत। बैठकम्न रहस्य स ह पंचमकौ सम्मत। तबसाह तीनभूपन पकरि बंधि जाहिकी पग्ग धरि। मरवत्तूल पासि गलनारिकैं मारि गिरायउगारिलरि॥ ११३॥ हरिगीतम्॥ सक बेद हय रिषि इंदु १७७४ हायन मास फग्गुन गोरमैं। हनि साह अयन रनाह सय्यद चाह हुब अति जोरमैं। परिकूक दिस दिसहूरमस खानननारि तोब हउच्चरैं॥ आतंक सय्यद कौ अतीबसु द्धयगोपनहू करैं॥ ११४॥ लैसबनकुसनहू यग्ग धरस थीरहमैं धस्यो। मरुईस सुनि

बसुजुत्तपुत्तियबुल्लिलोभहिअदस्यो। सन्नि
त्तमुक्कालिधन्वदियतनयासुयोंमरुईसनैं। अ
रुभीमसय्यदसोंकहीबुधसिंहबेरच्चैंघनैं ॥
११५ ॥जयसिंहजामिपहैयहैतुमसोंकछल
करितोरिहै। तसमातमारकुयाहिसबमिलि
जोरछलयहजोरिहै ॥सुनिएहसय्यदफेरिफो
जनबहबुंदियबंधयो॥अवनीनतीननअप्प
लेबुधसिंहडेरनपैंगयो ॥ ११६ ॥बुंदीसयह
सुनिसेनसज्जिरुसेनसम्मुहसंक्रम्यौं। तबजै
तअकिवयघोरयहअतिजोरसय्यदकोजम्यौं
।लाहोरतोरनहोयनृपतुमजाकुकूरमदेससैं। ह
मधीरग्गनहमग्गिरजुज्झहिंबीरजारठबेसमैं॥११७
॥यहकहतआतुरआयखलदलजानिबद्दल
लुंबये।बजिबीरआनकयोंअचानकराग सिंधु
वलग्गये।बजिडैरुडिंडिमडक्कओबहरकाअब

फारकाई। अहिभोगलेतलचकओधरनीसुध कनधकाई॥ ११८॥ परिओरओरनरोरदिल्लिय जोरजालमजंगभो। हटनारिहट्टनलग्गिपट्टन अंगरंगबिरंगभो॥ अजरातजातबजारबीथिन सौंअलातसुउज्झरे। जिमभासबाकुलदरसपै नेहासकासकौंजरे॥ ११९॥ आकासधूमहधू लिधुंधरिभानभासनलुप्पयो। बजिकंकगिद्ध सिवानपक्खतिरारिसय्यदरुपय्यो॥ अनिरुद्ध सुतलबतेगआरतभीरमारतनिक्कल्यो॥ कुलबे रिसल्लजजैतसिंहसुसेनसम्मुहउज्झल्यो॥१२०॥ पुनिजोधराजप्रधानऊरुजआयरारनअंकुरे। ल हिरोककोकनसोकमेपुरलोकओकनमेंदुरे॥ क मनैतफौजनमेंपरचोभटजैतहुहकारिकैं। रननैर दिल्लियकीरहीतियजालरंध्रनिहारिकैं॥ १२१॥ लखिनागिनजैतकीबिसमोहसत्रुनकोंदयो।

दलजुद्धजाव प्रबुद्ध ह्वै नृप ताव तोरन लंघयो।
निकसाय स्वामिय संक रैं बनि ओट तोरन पैं अस्यो।
।बजिहक्क रन धमचक्क यों बिनु मत्य जैत लस्यो
पस्यो ।। १२२ ।। परि बीर सत्रह संग के दल जाम
इक सुरुक्कयो। लरि कोध कैं परि जोध ऊरु जसम्बा
मिरुन सबन चुकयो।। लाहोर पद्धति भूप कछि क
छवाह जन पद संक्रम्यौं। इत जीति संगर घोर स
य्यद जोर दिल्लियमैं जम्यौं ।। १२३ ।। किय साहना
मर फील दोला मास छह बिच सो मस्यो। तब और
किय दुवमास बिच तजि सो कु संचर संचस्यो।।त
ब किय मुकुम्मद साह साह सुचाह सय्यद को भई
।यह यों छहायन मैं छ साहन थापि दिल्लिय सुग
ई ।। १२४ ।।ष॰प॰ ।। सक बसु रव द हय इंदु
१७६९ मरिग आलम ओरंग सुव । सुन इत्तरि
[illegible]

सुताहिहनिसकचउहत्तरि ॥ पच्चहत्तरियहमर
तअवर कियसोऊगयोमरि । सय्यदवजीरपुनि
मंत्रसजिआलमनातीजानिजिय । तक्कुतरफी
लकदरहतनयसाहमुहम्मदसाहकिय ॥ १२५
॥ दो० ॥ सकसरहयसत्रह १७७५ समय । सय्य
दथप्पिसुलाह ॥ पुरदिल्लीकेपट्टपर । धरयोमुह
म्मदसाह ॥ १२६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा
चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेपंचविंशोमयूख: ॥ २५ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
प० ॥ इतकूरमसुहआयसेनसय्यदडरस
ज्जिय । लिखिलरामपुरपत्ररानअंतिकमुक्क
लिदिय । मुलकरामपुरदक्षिअमलमंडऊहुत
अप्पन ॥ दलपुनिसज्जऊदुरंतमंतबलवंतथ
प्पिमन । हमसौसघातसय्यदतकतआतता

यिदलदर्प्पअति।जोपरहिंकामतोइतसज्जव
पिञ्छकुदलच्चित्तोरपति॥ १ ॥दो० ॥यहकहा
यसजिदलअतुल।इतकूरममतिमान॥गाम
सुटोडाभीमकैं।दिन्नंआनिमिलान॥ २ ॥इहिं
अंतरकूरमसुन्यौं।दिल्लियजामिपजंग॥लंघि
पहररवटआसनलिय।पुनिसुनिकुसलप्रसंग
॥३॥दिल्लीतैंइहिंबिच्चनिकसि।रनकरिबुंदि
यनाह॥मिलियआनिजयसिंहसौं।टोडाअ
धिकउछाह॥ ४ ॥कोटापतिअग्गैंलियउ।
सोपुरमुलककछुराय॥इंद्रसिंहसोपुरअधिप।
निकस्योप्रानबचाय॥ ५ ॥गोरबंसअरलं
सयह।सोपुरपुरअधिराज॥आयोमिलिबुंदी
ससौं।कूरमदिगभुवकाज॥ ६ ॥उद्धुरः ॥
इतउदयपुरपतिएस।संग्रामसिंहनरेस।पुर
रामपुरलहिपच्छ।सजिसेनपिल्लियतच्छ॥७॥

तिनरामपुरलियघेरि। कियरारिखग्गानरेवेरि॥
तबरामपुरनरनाह। संग्रामसिंहसचाह॥ ८॥
करबंधिनेरबिहाय। पयरानलग्गियआय॥
तबरानलखिनतएस। दियमंडिअद्भुदेस॥
९॥लहिअद्भुभुवतबराव। कुवरानकोउमराव
॥भुवअद्भिछिन्नियरान। थितच्यारिपुरजुतथा
न॥१०॥ जिकोदजीरनढंग। सजिकुकुटेश्वर
संग॥ लियनैरसीसचिनाम। कियतत्थसेनमु
काम॥११॥भुवअद्भलैइमरानदियफेरिअ
प्पनआन॥भुवअद्भपतितिहिंरक्खि। लिय
बंदगीरसचक्खि॥१२॥खटसत्तहयइक
१७७६मान। लियरामपुरइमरान॥इतजोर
सय्यदकिन्न। गहिहत्थदिल्लियलिन्न॥१३॥
दिल्लपतिमुहम्मदसाह। ताकीनकछुजियचाह
॥कोटेसअरुमरुनाह। कियदोउबल्लिसुल।ह॥

।।१४।। तुम जाय निज निज देस। सज्जहु अनीक
बिसेस।। खग भार धार नरबेरि। लैहैं बकूरस घेरि।।
१५।। दुव साल जामिय मारि। आमेर बुंदिय धारि।
रहिहैं निरंकुस होय। पिक्खैं न कंटक कोय ।। १६ ।।
मरुईस सुनिय हबत्त। मरुदेस आय उमत्त।। लगि
सेन सज्जन अंध। कटवाह सीस कबंध।। १७ ।।इ
त भीम भुम्मि उमंग। ब्रज आय गोकुल ढंग।। गुरु
गोकुलस्थ बिचारि। लिय मंत्र बल्लभ धारि।। १८।।
दो०।। बल्लभ मत चहि मंत्र लहि। रजत तुला कि
य दान।। हुव सेवक ब्रजनाथ को। कोटापति चहु
वान।। १९।। पादाकुलकम्।। कृष्णदास निज न
म कहायो। नंदगाम कोटा लिखवायो।। सेरगढ़ सु
थप्पिय बरसानौं। इन नामन ब्यवहार चलानौं।।
।।२०।। कोटकोट अंतर कोटापुर। किय ब्रजनाथ
निवेदित आतुर।। दानरु द्विज भोजन बहु किन्नौं।

न्यिकनमांहिंरहनौंपुनि लिन्नौं ॥ २१ ॥ दुरयोकि
लबडेरनकेअंदर । बाहिरनायोपंद्रहबासर ॥ रोग
रोगकाहिमृत्युउडायो । कोटापुरसुनिसोकअधा
यो ॥ २२ ॥ माधानीमिलिचाहिज्जुदुच्चित । सावधा
नकोटाकियसज्जित ॥ द्वारनअररलगायथीरध्रु
व । बुरजबुरजसिरमरनमंडिध्रुव ॥ २३ ॥ जान्यों
मलभीमाहिंसुनिअैहैं । बुंदियकटकछिन्निगढ
लैहैं ॥ सोहिमईसालमसुनिधायो । लुट्टनकोटामु
लकलगायो ॥ २४ ॥ दिल्लीतैंनृपसालबिहन्नरि ।
सालमपठयोमुख्यसचिवकरि ॥ इहिंतबअसे
राजअवेरयो । फिरयोसमुझिबिनुफेरयोफेरयो ॥
२५ ॥ अबयैंहंसालछहन्नरिअंतर । मलमलसु
निभीमहिंबालिसबर ॥ बुंदियतैंचढिबेगकुबुद्धी ।
रुपिसालमकोटाधररुद्धी ॥ २६ ॥ बिनुनृपआय
सकोहुबहायो । मारलूटकरि फैलमचायो ॥ सुसु

निभीमगोकुलसनचल्यो। गिनिसागसमुच्चलनक
रघल्यो॥ २७ ॥ कोटापुरपत्तोनिसबेला। द्वारअा
यसुभटन दियहेला॥ खुल्लहु अररजियत हमअा
ये। प्रातरुकहिकरिहैंमनभाये॥ २८ ॥ यहसुनि
अजबसिंहप्रधानी। प्रेमसुवनबानीपहिचानी
॥हसितबअायउद्धारकल्हहर। अररखुल्लिभूप
हिंलियअंदर॥ २९ ॥ बंदियघरतबकुसलबधा
ई। इमसुभीमवहरत्तिबिताई॥ प्रातहिकटकप्र
चानकसज्यो। गहिगुमानसालमसिरगज्ज्यो॥
३०॥ पुरअाटोनिकुतोवहसालम। पकुंच्योभीम
जोरिदलजालम॥ सालमदलहिंपिक्खिबित्थर
सह। सबनसुनायभीमअक्खीयह॥ ३१ ॥ भुवंग
मम्॥ सालमदलबकुसज्जिमुलकनिजमारयो। अा
प्पनअबइहिंखेतलरनललकारयो॥ वुड्ढनिय
तिबलवानजतोहम जिनिहैं। कोटापतिसकुटुंब

नतोयँहँबिन्तिहैं ॥ ३२ ॥ दो० ॥ अर्जुननातीहडु
हो। पुरखंडोदपतिपास ॥ तिहिंअकवीनृपभीम
सौं। उलटीयहकिमआस ॥ ३३ ॥ भीमकहियजि
नैंबिनौं। अप्पनजियलरहैंन ॥ अप्पनबिनुयहडु
अहु। लेहैंबुंदियऐंन ॥ ३४ ॥ यहकहिबाजिनब
ध्याले। परयोभीमपबिपात ॥ स्वरकोननमनुचुगत
रिदन। घल्लीसेलनघात ॥ ३५ ॥ मरुभाषा ॥ डिंग
लभाषेत्यर्क ॥ असत्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीलन
मकंमरुदेशीयंछंदः ॥ गीतिश्चापिसुपक्षोगीतः ॥ अस्मी
लागेलुभाणौंडाणौंसंपातिरूपराभडौंल्लतौंलाणौं
बागैंरूपरालर्घ्यौलीह अधायोरवागेंरेलीसमागरे
ऊपराआयोसालमेसनागेरैधूपराअसीहघटा
बीजघटकीडतोलिखागाँबीरघाँचैरदातेबाटकी
बायाँघोलेनागाँराडिदैकावोराम्मरैछटाविहंग
सटकीडोलफटासेना। लिरुलेकाटकीफाडिफा

ड्डि ॥ डाँणाँ ओक ओक जाँगीजैतरारुडायाडाकी तोकचंचाँकेबाणाँ । छुडायाबीरतालपाँणाँझोकसं भरी असंखाँकेउडाया प्राणाँ बाँणाँसोकपंरवाँकेउडा याबूंदीवालकाटीपूंछफंडाले किसोरदूजेदाटी को पिसेनाफदाफाटीमेकदारपंजाँसाजि बैनतेयभी भरीसत्रपाटीतेरा आगैंबचेभोगी जोगीरामरोत्रपाटी गयेभाजि ॥ २६ ॥ प्रा० मि० ॥ दो० ॥ अहिसाल मइसभ ज्झिगो । फोजफटाखुफटाय ॥ ब्याधिस हतक्रमिबेरकी । अतिजवबुंदियआय ॥ २७ ॥ कोटेसक्रुद्धलपिट्ठिलगि । लिन्नीबुंदियघेरि ॥ सठ सालमइकदीहलरि । गोभजिआसुधगेरि ॥ २८ जायोजुगियरामको । आयोनगरझलाय ॥ कोटापतिइललुट्टकरि । बुंदियदिन्नजराय ॥ ३९ ॥ फग्गुनबिसदचउत्थिसक । रसहयसत्र ह १७७६ मान ॥ बक्करिभीमबुंदियलई । इमफे

री निज आन ॥ ४० ॥ सब हि देस बुंदीस को। उडर भीम अपनाय ॥ लूट माँहि बहु द्रव्य लै ।इम पुनि कोटा आय॥ ४१ ॥ पादाकुलकम् ॥ अवर हु भीम देस बहु छिन्नें। चउदह सहँस गाँम निज किन्नें ॥ अग्गैं लिखित कूर महिं आयो। सो सब लुप्पि लोभ हिय घप्पो ॥ ४२ ॥ कुलसि एह आक्खिय सुभटन हित। अब ब्रजना थकरहिं सब ह्न्छित ॥ रनजयसिंह बुद्ध लरिआ रहिं। बसु भलि आन असोध बिचारहिं ॥ ४३ ॥ इक पुत्रहिं बुंदिय गढ अप्पहिं। थिर इक्कहिं कोटागढ थप्पहिं ॥ इक्क सुतहिं सो पुरगढ देहैं। हमउ जैन राज अबलेहैं ॥ ४४ ॥ तदनंतर सय्यद अमि तिक म्गार। पठयो दुत लिखि भीम अप्पकर ॥ इत दल सज बसाज्जि हम आवत। उत तुम आव हु कढ़ कुम आवत ॥ ४५ ॥ पकरि बुद्ध जयसिं

ह॰। बिपक्खन। लैहैं पक्कुभिमारिभटलक्खन॥ य
ह॰ लिखिसंगरभीमउमाह्यो। चमुसजिसँहँसबी
सजयचाह्यो॥ ४६ ॥ दो॰॥ इतसय्यदसोंअसि
क्खलहि। अजितसिंहमरुआय॥ जँहँसुभट
नएकत्तजुरि। अक्खियमंत्रउपाय॥ ४७ ॥
ष॰प॰॥ मिसलअट्ठउमरावजबहिरट्ठोरइक्क
जुरि। अजितसिंहप्रतिअक्खिअनय किन्नौं
तुमअंकुरि। कूरमपतिसोंनोरिअप्पसय्यदन्ब
ह्योउर॥ अज्जगईआमेरकल्हिजैहैंसुजोधपुर
स्वामिकोंमारिसय्यदसबलकानिनरक्खहिंअ
प्पनी। तसमातजोरिजयसिंहसोंधन्वपक्कुभिर
क्खहुधनी॥ ४८ ॥ दो॰॥ कूरमसोंसगपनवि
रचि। मरुधरकुल्लकुताहि॥ रुचिरसुताअबरा
वरी। बिधिजुतदेहुबिबाहि॥ ४९ ॥ मरुपति
सोंयहमंत्रकरि। पठयोसुभटनपत्त॥ न्हपकूरम

आवहु निडर। मैंहैं ब्याहन अनुरत्त॥ ५०॥ कूरम
सुनि पत्री कहिय। धरा अलप तुम थाम। रक्ख
हु पुत्रि न जतन रचि। परहिं साह सों काम॥ ५१॥
यह सुनि दुहुन पत्री लिखिय। हम तुम भक्खि हरि
आहि॥ आवहु अप्पन दुहुँ कहैं। जावहु सम्मुख
विनाहि॥ ५२॥ सु सुनि कुंच जयसिंह किय।
सजि दल सबल सिपाह॥ बुंदीसे पुर नृप उभय
। चलिय संग हिलचाह॥ ५३॥ पादाकुलकम्
॥ रस हित विनय पर सपर रत्ते। तब नृपतीन जो
धपुर पत्ते॥ रट्ठोरनं अक्खिय कूरम सन। लगन बे
र अब चलहु विवाहन॥ ५४॥ मरुपति सों तब
सन नसमकवी। कूरमपति सुभटन यह अक्खी
॥ हम नृपपरनि पधारहिं जो लौं। हम विचरहु थ
लपति तो लौं॥ ५५॥ अजितसिंह यह भक्खि
रह्योयहैं। कूरमपति गोतव ब्याहन कैं है॥ रनजि

म सज्जिकवचधारनकरि। बरदुलहनिरट्ठोरि
लईबरि ॥ ५६ ॥ दो० ॥ इक्कनबाबकलीजखं
।छहिंअंतरलहिकाल ॥ दक्खिनसनआयोदु
सह। दिल्लीपरदिजाल ॥ ५७ ॥ ष०प० ॥ कु
सलअली सय्यदवजीरसुनिएहबंटिजर। नाम
दलावरखानजुगलपिक्ख्योतिहिंअप्पर। नरउ
रपालियगजसिंहसंगसहसेनदयोसाजि॥ कोट
पतिप्रतिपत्रत्वरितलिखवायगब्बतजि। मार
क्कुकलीजखानहिंमरदखान दलावरसंगराहि
जायसिंहजरपिक्खैंकरहिंयहकरिजेरकलीज
आहि ॥ ५८ ॥ दो० ॥ सुसुनिभीमसिरधुन्नि
कैं। दियदलअधिकजुराय ॥ जान्यौंतपजय
सिंहके। अंतअप्पनौंआय ॥ ५९ ॥ जुट्टेबीर
नसंगले। तबयहमरनविचारि ॥ सम्मुहखान
कलीजसौं। रच्चनचल्योअजरारि ॥ ६० ॥ रख

नदलावरभीमअम्मरु। नरउरपतिकछवाह॥
दरकुंदनचालिभिंटये। सत्रुनसबलसिपाह॥
६१॥ सेकुलजाकेपारइक। तटिनीकोदांनाम
॥तीननरखानकलीजसौं। सजियतत्थसंग्राम
॥६२॥छ०प०॥ सल्लीजुरिदुल्लसेनह्रुलसिज्जु
झनबढिहल्ली। कादंबिनिचल्लीकिबाढ्रूपम
कतघनवल्ली। दिट्ठिजुरतहयदपटिमिलिरन
रसिकमहाभट॥ लटवज्जिगलरवारिभीरुभ
ज्जिगबटउब्बट। गिद्धनिसिचानसंकुलिगगन
रविमयूखअवरोधाकिय। खुरतारमारजवधार
खुदिदिसदिसपुहबिदरारदिय॥६३॥लग्गे
जिमजिमलोहछोहतिमतिमउरछायो। धायो
जिमजिमधीरबीरतिमतिमप्रकटायो। जिम
खादितजैपालमथतअंत्रनद्भुतदुज्जर॥इम
कलीजदलअतुलमच्योसायुधसयसंगर।

हैदराबादभटबहुलहनि। चिरअच्छरिरसच्च
ग्रुवयो। भूपालभीमकोटेसमसिर रुद्रमालननर
ग्रुवयो॥ ६४॥ हत्थीभज्जतहइ नंचल्यो हयबर
रथचंचल। हयकहलपयचारग्रव्योंरवयकारम
हाबल। तोमरतुट्टततेगतेगतुट्टतकरिकत्तिय॥
कत्तियफट्टतकरदधीरघत्तियग्ररिघत्तिय। दे
ख्योकलीजजीवनकुलमिलतभीमअहवमुद
र। जिमजिमस्वसीसरजरजरच्चिय तिमतिमधु
न्नियसंभुसिर॥ ६५॥ दो०॥ मुनिहयसस्तरु
द्रक १७७७ सक। जेठसुपुसिमदीह॥ पस्योद
लावरखानरन। सहितभीमगजसीह॥ ६६॥
नरउरपतिजाजवभज्यो। पस्योइहांतजिमान॥
मारिहजारनभीमजिम। पस्योभीमचहुवान॥ ६७
॥ ष० प०॥ सुनिकोटापुरभयउभीतमरताहिनि
जमूपति। थाइभ्रातभगवानहुतोबुंदीसुजानि

हति। बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिरवाय सो धि
उर॥ अप्पन सब थानां उठाय आयउ कोटा पुर
। सुनि खबरि एह मति मंद सठ सालम आय फला
यसन। जनि सब्बिबसुरब्ब बुंदिय बकुरि राजका
जल गोकरन॥ ६८॥ दो०॥ रानय लीन नृप
भीम कैं। जेठो अर्ज्जुन नाम॥ अमर रान भानेज
यह। तब भूपति कुवताम॥ ६९॥ स्याम सिंह
मध्यम सुवन। लघु सुत दुरजन साल॥ राज
लोभ निसदीह रखि। कहत एह कोल॥ ७०॥
प०प०॥ कुसन अली दूत सज्जि छोह क्रूरमसि
रधायो। साहसुफ्फदर कोंसदाय आमेर चलायो
। सय्यद अति बरजोर साह दुस्सन इहिं कारन॥
चिंतत रहत उपाय मन्त्रि लिह चौलि हिंसारन। त
दनां मसुफ्फदर खान इक लूरानी तक्कयो प्रबल। र
न्जि पंन साहता सौं रहसि मा यो सय्यद हैदि छल

॥७१॥दो॰॥तबपच्छेदरकुंअकरि।हुसनअ
लीकोंमारि॥बनिस्वतंत्रइमसाहहू।पुरदिल्लिय
पगधारि॥७२॥बरसतीननृपकैंबच्यो।भाव
तसिंहकुमार॥छुंडाउतिउरप्रथमभो।पद्मसिंह
सुखकार॥७३॥कुमरबधाईजोधपुर।पत्तीस
मरपास॥जयसिंहहुतत्थहिसुन्यों।सथ्थद
सत्रुबिनास॥७४॥सुनतकुंअजयसिंहकि
य।बिनस्योसथ्थदबैर॥सोपुरबुंदियनृपन
सह।आयेपुरआमेर॥७५॥संभरकिय
ढुंढाहरहि।बसवानिबसथबास॥अनाहू
तजयसिंहगो।साहमुहम्मदपास॥७६॥
अट्ठसत्तहयइक्क १७७८ सक।चित्तमहर
करिचाह॥अकबरपुरसूबादियउ।कूरमप
तिकोंसाह॥७७॥पद्धतिका॥पुनिकहिय
साहकछ्वाहराय।क्योंनाहिंअत्रबुंदीसआ

य ॥ जयसिंह कहिय सालत्त नरेस । आवादर
खल पुनि तहिं आरेस ॥ ७८ ॥ कोटेस भीम
करि जोर दाय । मारौं मऊ सुलिन्नेछुराय ॥ विनु
खरचनौंहि निबहत प्रवास । जरकोस सब
हि कुवनदु जास ॥ ७९ ॥ सत पंच सुभट सादी
सुमंत । सब संग दियसु हाजिर रहंत ॥ सुनि
साह दयो अपसर खलि वारि । ऐसी अनेक दिय
कुमदारि ॥ ८० ॥ चूडा सनि सुत सुकुव सज
ह । इन दिन न बक्कुरि लग्गो कुबह ॥ करि लूट
मुलक सिर थप्पि छत्त । भरई ससर नम रुदेस
पत्त ॥ ८१ ॥ जयसिंह बदन जहिं सहेत ।
बहु भुव दिवाय थ्रहनि समेत ॥ कै साह हिंदु
सुकुकमह राम । यातैं पलाय गय धन्य धाम ॥
८२ ॥ तब साह कहा इहिं नरेस । आतुर याहि
भेज कुजहरास ॥ मच्योन कुकमय हमरुमहो

स। रच्चिसाह्ह मुहुम्मद सुनतरीस ॥ ८३॥ इत
लहि प्रमाद आलस अनंत। बुंदीस गाम बस
वा बसंत ॥ तँहँ किय अनीति लोकन अपार।
दब्बिय अनेक परकीय दार ॥ ८४॥ ताडन रु लू
ट तर्ज्जन बिधाय। पत्तन प्रजासु किय दुखित
भाय ॥ पुरजन सब लहि तब दुख अपार। कू
रम प्रति दिल्ली किय पुकार ॥ ८५॥ सुनि क
हिय भूप कूरम हसंत। बसवा सु गाम अब बहु
बसंत ॥ कहि पुनि वेजा मिप अस्मदीय। सह
नों समस्त दुक्ख हु गरीय ॥ ८६॥ तुम माँहिं
अब हु जो परहि त्रास। तो कहहु जाय बुंदीस
पास ॥ मम ढिग जो ऐहो बहुरि भज्जि। देहौं
निकासि तो ताडि तज्जि ॥ ८७॥ यह कहि
पुरवासिन सिक्ख दिन्न। कूरम इम जामि प हि
तहि किन्न ॥ मन्न्यो न कछु कमइ तम रु नरेस। बल

सजियसाहतितिहिं सिरविसेस ॥ ८८ ॥ मरुपि
खिलकादुरखानमीर। पिक्ख्योपुनिकूरमपति
प्रवीर। इमकुवचलायमरुदेसअप्रमान। मरु
पकुसुनिसम्मुहकियप्रयान ॥ ८९ ॥ सयरूरप्रु
रवानिसरूमहीप। सजिआयमनोहरपुरसमी
प। इतलैंससेनमारनउपाय। जयसिंहवहा
दुरखानआय ॥ ९० ॥ मरुईसअतुललरिसाह
सैन। भजियोतजिडेरनअप्पऐैन ॥ सकअंं
कसतत्यरूक्ष १७९८ कीन। रनछोरिलगाई
गालितीन ॥ ९१ ॥ सुनिसाहकटकअप्रति
जवचलाय। रविरबिसवलियलुहिआय ॥
समरविनुकूलतकसुन्योंन। भजिसजिगो
संगरकोरिभौंन ॥ ९२ ॥ अगैंजबआलमगो
चलाय। अलवनपुरलग्गोपयनआय। ॥ पुनि
अप्परानकरलिखितदिन्न। सोमेटिसाहजा

मात किन्न ॥ ९३ ॥ अरु बङ्कुरि सय्यदन मिलि अ
धर्म्म। जामात साहहनि किय कुकर्म ॥ पुनि अबल्
तीयरन समय पाय। पृतनार्तजिकातर गोपलाय ॥
॥ ९४ ॥ जयसिंह बहादुर लगिय पिट्ठि। इन राच्चिय
मंत्र गृह जाय निट्ठि ॥ रघुनाथ सच्चिवरठ्ठोरसर्व। मि
लि कहिय राज गय अप्प गर्व ॥ ९५ ॥ करबंधि पर
कुम्भ बसाह पाय। जोय हन देकु कुमरहिं पठाय ॥
भट सच्चिव मंत्र इम तब्ब विचारि। जयसिंह नरे
सहिं वीच डारि ॥ ९६ ॥ सुत अभयसिंह पहुप
समत्थ। पठयो पुर दिल्लिय कुम्भ सत्थ ॥ रघुना
थ सच्चिद दिय संगताम। लहि साह जाय अल्ल किय
सलाम ॥ ९७ ॥ गृह जाकु कुमर सह कहिय साह
। आवत हम भड कुरन उछाह ॥ तब कुम्भ कहिय अ
यह गिनत आन। यह कोन दोस जनक हि अमा
न ॥ ९८ ॥ पुनि कहिय साह जोय ह अपन्न। तोज

नरहरिकृतनहम प्रसन्न ॥ यहसुनिउबाच्चक
स्याहईस । कैहैंजुकुकमधरिहैंसुसीस ॥ ९९
॥ प्रह्लादएहलुसहरिप्रमान । सरुपलिहिरन्य
कसिपुवसमान ॥ यहसीखसाहसेवनबढंत ।
पितजनककहिंयालैंचहंत ॥ १०० ॥ प्रह्लाद
बलखुरमसुनाय । इमअभयसिंहहितसिउ
डाय ॥ कहिसाहहमहिंजोगिनतईस । सुतते
अपकल्यानकुजनकसीस ॥ १०१ ॥ रघुनाथस
त्रिवकियअग्रजतत्थ । सलकरहिंपायआयस
समत्थ ॥ डेरनबहोरिलियसिक्खआय । दल
अभयसिंहपठयोलिखाय ॥ १०२ ॥ निजअ
नुजभ्रातबखतेसनाम । लिहिंप्रतिउदंतसब
लिखियतास ॥ यहलिख्खजनकसिरकुपितअ
ज । लैहैंउतारियुवबयन्वराज ॥ १०३ ॥ लहिरा
जभेमजोचहतलाल । तोप्यालहनकुजनकहैं

उताल ॥ दैहौं तब तोकहँ अद्ध देस । नागोरपुर
पकरिहौं नरेस ॥ १०४ ॥ बखतेस मुद्दय यह पत्र
पाय । जनकसु निज मार्यो सुस्रजाय ॥ हाकारजो
धपुर नगर होय । रनवास अन्धानक उठियरोय ॥
॥ १०५ ॥ सुनि मिसल अद्ध उमराव राह । गहि
तेग कुमर किंध्यो सगेह ॥ बखतेस भीत तब
नति बिधाय । दिय अभय सिंह कग्गर दिखाय
॥ १०६ ॥ गिनि तब समस्त यह मंत्र गूढ । अब
किय नरेस चितिका अरूढ ॥ नाजरन सहित
सुहांत नारि । चिति अग्गि भस्म हुव अप्सिय
न्यारि ॥ १०७ ॥ सक्क गगन मृग हृद [illegible]
साल । यह खबरि भई दिल्लिय उताल ॥ सुनि री
झि सरा तब बखतेस साह । किय अभय सिंह मरुदे
स नाह ॥ १०८ ॥ अरु कहिय राज्य जमवाय जा
य । पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥ मरुपति जबा

नरनाथपत्थ।नागोरदेतमैंअनुजअत्थ॥
१०९।सोसुभटमोहिनाहिंदैनदेत।करिलि
खितआपपट्टक्कनिकेत॥राजाधिराजपद
नाहिंदक्कु।अप्पहुनिदेसकरिमहररक्कु॥११०
॥इमअभयसिंहकहिपत्रआय।पुनिदियउ
लाहुलिलिखितसुपठाय॥राजाधिराजउपपदस
मेत।नागोरलेहुबखतेसहेत॥१११॥यहसुनि
रट्ठोरनलजियटेक।कहियदिनमरुपतिमरुकि
तेक॥हनिअजितसिंहपितुद्रुहहीन।इमब
खतसिंहनागोरलीन॥११२॥पहुपकुमारगज
सिंहजाम।कुवअमरावीरअमरेसनाम॥नृपहूँ
इसिंहलीनीजुतास।सोकरतपहुनागोरवास॥
॥११३॥नृपअभयसिंहताकहँनिकारि।नागोर
दईअनुजहिंविचारि॥इतकुम्भसाहसेवनवि
श्राम।तहिंसिकरमेहकुम्भमेरआय॥११४॥

आमेरहुतोबुंदीनरेस।पुनिकियउभूपकूरम्म
प्रवेस॥ मिलितबहिसालजामिपसमोद।बि
रचियदुहूनकतिदिनबिमोद॥ ११५॥दो॰॥
सकससिबसुसम्रह१७८१समय।कहिकुहहिं
कछबाह॥ बिरचहुराज्यप्रबंधतुम।वाहुमरच्छ
हिंसुलाह॥ ११६॥ बिनुप्रबंधआलसबहुल
।रहतनसुरपुरराज॥कहतहोतबुंदियकुनय।
अहप्रतिमहतअकाज॥११७॥बुंदीपतिअ
क्खियतबहि।अच्छीकरहुबिचारि।पठवहु
कोऊनीतिपटु।सबजोकरहिंसम्हारि॥११८॥
नाथाउतनगराजतब।नृपमातुलकुलजानि
॥पठयोवहकूरमसुपहु।बुंदीबिबिधबखानि
॥११९॥ आयलंघिरक्ख्योनृपति।हिगुनरख
रचनिजसत्थ॥ सबमेट्योनगराजसो।अहि
परिवज्योअमअत्थ॥१२०॥कछवाहीसेवनक

रत। श्रीहरिमूर्त्तिसुमंत ॥ कउलभूपवरजतकुद्ध
ल। तदपिनटेकतजंत॥ १२१ ॥ पतिपतनीकैया
हिमर। बनैंनहितकीबत्त॥ हड्डुनलोपैंतियक्रुक
म। तदपिकउलमतरत्त ॥ १२२ ॥ अग्गैंनवहय
सत्तइक १७७९। कछवाहीयहकिद्ध ॥ लेसाल
मसौंसच्चिवपन। निजअनुचरकौंदिद्ध ॥१२३
॥ रामनामनिजदासइक। सोकरिसच्चिवसुभाय
॥ इमरानीपतिक्रुकमबिनु। रहींराज्यअपनाय
॥ १२४ ॥ अद्धरवरचकद्दतलग्यो। नाथाउतलि
खरूप॥ रानीप्रतितबप्रीतिरत्ति। भारदीबुंदि
यभूप॥ १२५ ॥ निजअनुचरप्रीतिलिखकुतुम
रनकरिरक्खहुगेहु॥ नाथाउतनगराजकौं।
इंगनप्रबिसनदेहु॥ १२६॥ रानीइमसुनितब
हि। लुकाहिंमोरनिदेस॥ सोकरिहैंनगराजजो।
काहिहैंकुम्भनरेस॥ १२७ ॥ यातैंअनुचररामप्र

ति। दियलिखिपत्रपठाय।। ननसौंपक्कुनगराज
कूँ। अप्पनगृहव्ययआय।। १२८ ।। तबबुंदिय
नगराजतिन। दिन्नौंप्रबिसननाँहिं।। मक्कुरछाप
हैंहिंनकह्यो। अधिपनिदेसनआँहिं।। १२९।।
तिनहिंहिठिल्लि नगराजतब। प्रबिस्योबुंदियआ
य।। राजकाजलग्गोकरन। नूतनछापघराय।।
१३०।। आयरखरचसबलिखिलियउ। खंधावा
रसम्हारि।। स्वामिसमुज्झिबुधसिंहकों। बिगरत
लिन्नसुधारि।। १३१।। द्विगुनरखरचमेटतकिय
उंमातुलपरनृपरोस।। अच्छीमेंउलटीसमुझि।
दियकूरमसिरदोस।। १३२।। इतछुतजामिपरा
ज्यको। करिप्रबंधकछवाह। दरकुंचनदिल्लिय
गयो। सबिनयभिंट्योसाह।। १३३।। तदनंतर
मरुईसहू। जयनयराज्यजमाय।। दिल्लियभिं
ट्योमुगलद्दुल। साहमुहम्मदआय।। १३४।। कूर

अनीतिमरूपतिकहिय।असमटअतिअरूर॥
जानसेतनहिंराज्यदुरि।करकुअभयअरूर॥
१३५॥परद्योकूरमजोधपुर।तबनिजकटकउता
ल॥रहौरनसहुआयरहि।कह्योतेंहँकुकाल॥
१३६॥कुतअभूपजयसिंहसैं।सुतासोयभुतदोय॥
सुनकुरालभूपनामतिन्ह।सावधानरतिहोय॥
१३७॥ज्येठोसुतसिवसिंहजो।मारयोजनकप्र
मत्त।अनुजईश्वरीसिंहतस।तातकथितकर
तत्त॥१३८॥सुताविचित्रकुमारिइक।दूजी
कृष्णाकुमारि॥सुपहुरालसंग्रामकी।जामेयोनि
रधारि॥१३९॥भयोविचित्रकुमारिको।बयड
पंयमअनुसार॥जानिजनकजयसिंहजब।रचि
रव्याहव्यवहार॥१४०॥अभयसिंहमरुईस
सौं।करिसगापनकछवाह॥सामग्रीकियउचि
तसव।नयपटुजैपुरनाह॥१४१॥सिकवतद

हिलहिं साहसों। दुवनृपमथुराआय॥ अंतहपु
रआमेरतें। लिन्नों सकलबुलाय॥ १४२॥ सक
ससिबसुसत्तह १७८१ असित। अष्टमिमह बि
चारि॥ तनया ब्याहीमरुपतिहिं। कुम्भ विचि
त्रकुमारि॥ १४३॥ मातानृपसंग्रामकी। रान
अमरकलत्र॥ चाहुवानपुरबेदलापतिकीत
नयातत्र॥ १४४॥ सस्सूबहजयसिंहकी। गंगा
न्हावनआय॥ सुरतमग्गमथुरामिली। ली
नीकुम्भबधाय॥ १४५॥ चाहुवानिपिकब्यो
रुचिर। बिदीतनयाब्याह॥ बरनिबिचित्रकु
मारिनवनवदुल्लहमरुनाह॥ १४६॥ ष०प०
सस्सूकीजयसिंहकानि किंकरजिमकिन्नी॥ इ
कदिनगोकुलजातरवंधसिविकातसलिन्नी॥
इकबंसगहिंअप्पंमरुपकरइक्कगहायो॥ मा
तासोंगिनिमहतबिहितसतकारबढायो॥ अ

पनौंगिनकूमेकौंअनुगयहैं तीरथहरिअव
तरिय। तुमदेकुंवैटिहाटकतुलाकरनजोरिह्म
आजकिय॥ १४७ ॥ दो॰॥ यहसुनिमहिषी
अमरकी। बोलीनयमयबैन॥ दुहिताके बसु
तैंतुला। हमकोउचितसहैन॥ १४८ ॥ रानम
तजातातप्रति। सुनिआश्विवअचितप्रेय॥
पुलकालिंदीसरितपर। बंधौंसुगमबिधेय॥
॥ १४९ ॥ इनतबलिखिदिल्लीससौं। लिन्नौं
कुकमसंगाय॥ सहितिसहैंसकुबारवरचि। इनपु
लदियबंधाय॥ १५० ॥ कुमररानसंग्रामकैं।
जगतसिंहअभिधान॥ ताहूकैतिहिंदिनतन
य। भोप्रतापकुलभान॥ १५१॥ सुतसुतसुल
कीमधुपुरहि। सुनीखबरिचकुवानि॥ दियहा
टकलकबनद्विजन। मोदतबधाईमानि॥ १५२
भूपतिपठयोलकु। अंतहपुरआमेर॥

इतपत्तीन्चकुवानिह्न। निजउदयादिकनैर।१५३
॥ अभयसिंहजयसिंहए। दुवपुनिदिल्लिय
आय॥ हजूरिसाहहजूरकुव। लाहबिनयहि
तलाय॥१५३॥ सकहृगवसुसत्रह१७८२समयासे
यरिझायेसाह॥ सोहिकरतदिल्लीससब। क
हतजोंहिकछवाह॥१५४॥ सूबादुवजयसिं
हकैं। आगराउज्जैन॥ अबसूबाअजमेरको।
बकुरिदयोहितबैन॥१५५॥ मतिमैंनयमैंसं
त्रमैं। सबमैंकूरमसेर॥ बिदुवजीरदबैबहत।
जवनहिंदुसबजेर॥१५६॥ष॰प॰॥ अभय
सिंहमरुईससुन्ये। निजदेसदवरदुख। सिकव
साहसौंमंगिरचियदरकुंचगेहरुख। संगदिय
जयसिंहसेनवसुसैंहँसकुलबर॥ राजामलनि
जसचिवकेरसिवदाससहोदर। कहिआयराज्य
मरुईसकोसजवजमावकुजोरसन। समुझाय

सब लिखोर सठपारकुतुब मरुपतिपयन ॥
१५७ ॥ दो० ॥ आयो मरुपति गेह इम । सत्थस
चिवसिवदास ॥ इतमेच्यो कूरमअधिप । तँहँ
इकहिंदुनभास ॥ १५८ ॥ दिल्लीमैं यह दुसहदु
ख । साहिसबकहतकाल ॥ गहिगहिहिंदुनब
रसप्रति । करसंगलचंडाल ॥ १५९ ॥ बीसंदम्म
बहुमानसौं । इक्कअबसुसौं लेत ॥ जनप्रति
देरतस्वपचजर । दिनप्रतियौंदुखदेत ॥ १६० ॥
पादाकुलकम् ॥ दिवा किन्ति तिनमैं इक्कनायक
। स्वपचऔरनसकथितकौंसब ॥ दिनप्रतिक
रिहिंदुनहरवस्ती । स्वपचकहैस्वामिहिंजुरिस
स्ती ॥ १६१ ॥ हसरीयहहेयतहेनायक । आईहा
सिलदैनह्हाँअब ॥ तबवहअकिवस्वामिजि
मधन्तर । कथितरीतिसबहिंलुगहैंकर ॥ १६२ ॥
करगाहिलिखिदैदलकंठन । यहलखिस्वपच

तजैंइक हायन ॥ दूजे बरस बक्कुरि गहि लावैं । अ्च
हप्रति दंद मदंध उपावैं ॥ १६३ ॥ हिंदुन हेरत फिर
त हीन दल । करत रोहि दिन प्रति कोलाहल ॥ स्व
प्चन प्रनति करहिं हिन्दू सब । तदपि दंड अप्पहिं
छुट्टहिं तब ॥ १६४ ॥ दिल्लिय यह दिन प्रति दुस्स
ह दुख । सब करदयैं बिना न लहैं सुख ॥ कूरम नृप
यह माफ करायो । लिखित लिखाय साह सन ला
यो ॥ १६५ ॥ छापवजीर करैं नहिं उद्धत । बक्कु लबे
र सु निटारि गयो लब ॥ द्विज इक दयाबहादुर नाग
र । सो जावल दक्खिन सूबा पर ॥ १६६ ॥ जाकों म
न सुबस च हजारी । तीन अयुत भट संग सुखारी ॥
तासों मिलि कूरम यह अक्खी । रहैं कानि हिंदुन
त ब रक्खी ॥ १६७ ॥ कहि द्विज सिक्ख करन ह
म जैहैं । तब छपाय बल करि दल लैहैं ॥ जो अ्जी
र सम्मुह पिल्लैं दल । तो तुम करहु सहाय खंडि ख

ल॥ १६८ ॥ यहकहिबिप्रतासगृहपत्तो।संग सबहिसुभटनअनुरत्तो॥ वहवजीरबरखालसु कुम्मद।कुसनअलीसुहन्यौंजिहिंसम्मद॥१६९ ॥सुभटसंगसंहँसनतूरानी।कुमबरजोररहैंअ भिमानी॥ यहद्विजबीरगयोतसआलय।रोकेम दसुरकेनबडेरय॥ १७०॥दैपयखानमुहम्मद गाढिय।इहिंदलछापकरकुयहबढ्ढिय॥लखी वजीरछापयहलैहैं।जोरकौंअतिबलहनिजे हैं॥ १७१॥ इमबिचारिपत्रसुछप्योउन।इतिम लोतबतौंकुरवहिंकुन॥सकयुनअदृसत्तइक २७८३अंतर।कियबरजोरसमुद्रसुकग्गर॥१७२ ॥यहजयसिंहअपूरबकिन्नौ।नागरकित्तिबंदि कुललिन्नौ॥बकुअैसीकिन्नीकूरमबर।कविसा हहिंसिटवायगयाकर॥१७३॥ष॰प॰॥कौटि कन्यकादविकदूव्य बिक्रयहिगर्यारैं।अनुक

मअप्पनअवलिक्रियनिजनिजवित्थारैं।सोजू
साहहिंअक्खिवप्रबलमेटीकूरमपति।।इमकरि
किन्तिअनेकसाहसेयेनयसम्मति।।लहिधर
ममग्गमनुमतसमुझिश्रुतिनिदेसकछुअनुसारि
य।पटुबुद्धिभयोइहिंसमयपैकहिहैंदसअनुचि
तकरिय।।१७४।।इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपू
स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
षष्ठविंशोमयूखः।।२६।। ❀ ।। ❀ ।।
।। ❀ ।। ❀ ।। ❀ ।। ❀ ।।
।। ❀ ।। ❀ ।। ❀ ।। ❀

दो०।।इतकोटाअर्जुननृपति।पायोनिजरस्व
प्रान।।स्यामरुदुज्जनसल्लकैं।भोमूहितथम
सान।।१।।अग्रजस्यामहिंमारिकैं।भोनृपदुज्ज
नसल्ल।।बुंदीपरदावाबिरच्चि।हल्लिसुलिन्नारस
हल्ल।।२।।इतदिल्लियकूरमअधिप।साहन्निह

थलसेय ॥ सकचउबसुसत्रह १७८४ समय ।
आयोनिलयअजेय ॥ ३ ॥ करिअमात्यनगरा
जदियबुंदियकुम्भपठाय ॥ बुंदीपतिइहिंपरबि
मन । एकवतबिरससरिसाय ॥ ४ ॥ कछवाहीम
तिनृपकहिय । अनुजप्रबोधकुआज ॥ राजलु
म्हैंजोरहनौं । तोरकवकुनगराज ॥ ५ ॥ आतहिं
कूमरानीभनत । कह्योलसाकिकछवाह ॥ भगिनी
तुमरीअुम्मिकी । चित्तनरक्खलचाह ॥ ६ ॥ जामि
पअमलसम्पसादजुत । अरुतुमरीमतिएह ॥ गेहहि
भूपनबिगरले । बिगर्योइक्कहिगेह ॥ ७ ॥ हम
जान्यौंबिगरतबिभव । लैहैंअबकुसुधारि ॥ तुम
रीमतिअसमौंहिंतो । हमकुदयोहितटारि ॥ ८ ॥
यहकहिनृपजयसिंहतब । लियनगराजबुला
य ॥ रंचसिरोहीरानिनी । इहिंपरबुंदियराय ॥ ९ ॥
जुडउलिउरजोभयो । कुमरपदमअभिधान ॥

आमय बसि तिहिं दुन दिनल। किन्न महाप्रस्थान॥ॆं नाथा उतकूरम नृपति। बुल्यो बिबिधरिसाय॥राज काज लग्गो करन। बुंदियसाल मआय॥ ११॥ कछवाही सन याहिपर। कछुप्रसन्न बुंदीस॥ चुंडाउति रट्टोरि सिर। यह हिर हीबनि ईस॥१२ दिल्ली सन बुंदीस जब। ढुंढाहर धर आय। चुंडाउतिरट्टोरि तब। लिन्नी हीबुलवाय॥ १३॥ कछवाहीकेउर दुकुंन। रक्खि निवाई नेर॥ पतरानीकेब चन बसि। अप्पर हिय आमेर॥ १४॥ षट्प॰॥ बुंदी लोकन बकु अनीति आमेर मम्भ किय। सर नाजर किसतूर नगर कुतवाल... पकरि पकरि पर दार जार बकु तन... मच वाय नगर लज्जा सब नक्खी। सुनि सुनि... नीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस प्रति। जि मजिम सही सुति मति...

रनश्राति ॥ १५ ॥ दो॰ ॥ दिन दिंन अब कूरम दुमन । कह्यो रहू कुन जाय ॥ अंधुछांह जिम कछु अनख । रख्खी हृदय समाय ॥ १६ ॥ पटरानी नित प्रति करैं । सेवा श्रीगोबिन्द ॥ अन्तर रहत उदास अब । तातैं कछु नरिंद ॥ १७ ॥ चुंडाउत पर प्रीति अति । रा खत गुमनरेस ॥ हित अन हित छुपि नहिं रहत । प्रकटत अंत असेस ॥ १८ ॥ कछवाही निज मात के । भरत रहत नित कान ॥ कर्म निरखि नृप बुद्ध के । कूरम करत प्रमान ॥ १९ ॥ तातैं नृप जयसिंह कहू । रचि बिजा मिप परीस ॥ हृदय बिचारत अ न्तर मैं । करि हौं कोउ बुंदीस ॥ २० ॥ ष॰ प॰ ॥ याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो । सिन्ध हस्य द्वादसिय मकर रबि लग्न मिलायो ॥ सिल्प तंत्र अनुसार सदहि व्यवहार सधाये ॥ बारह कोस लिख्यार बिबिध प्राकार बधाये । रचि जुकति द

म्मकोटिनरवरत्रिपुरभ्रपुब्बकिन्नौंप्रकट।हिंदु
वसथानदुज्जोनहिनसहरप्रातिबिंबकसुघट॥
२१॥ गीर्वाणभाषा ॥ भुजंगप्रयातम् ॥ विधा
येवसम्बस्पुरकूर्मराजः।श्रुतीर्धीरभ्रासेव्यलब्ध्वा
स्मृतीश्च ॥ द्विजेन्द्रान्समादृत्यधर्मानुगस्तत्सव
र्षश्रसश्रेयभ्र्याविश्वकार ॥ २२॥ विधायाग्नि
होत्राऽध्वराद्येकयज्वा। नियम्याप्यधर्मंहृषीकेश
भक्तः॥ सितारेश दिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रः छतीपु
ण्यभूमोबभूवाग्र्यनामा॥२३॥ छतोधीसरव
रवानदौराभिधेन।प्रणत्यैवदिल्लीन्द्रसेनाधिपेन
॥महात्मासविश्वात्मजः कूर्म्मराजोरराजा खिलै
श्वर्य्यमेकोयथाह्नि॥२४॥ कामक्रीडा॥ तंत्राव
योपेतंस्कन्धावारंसर्वोच्चीकुर्वन्।वभ्राजश्री वि
ष्णुत्रातोनीत्यादिल्लीशोन्मुख्यम् ॥ आन्वीक्षि
क्याधर्मार्थ्यर्थिन्विरराज्यङ्कुर्व्वाणिः भोजान्वारंभे

नेपूर्न्युस्थाशीर्भ्रजिङ्गूसर्त्ता ॥ २५ ॥ नर्कुटकम् ।
मतिरुडुदाराउत्लाणकुनीति मिश्रहरि: । समिद
तलस्त्रुगर्वविलङ्घनएकतरि: ॥ जयनयधार्य
कार्य्यमलनार्य्यउदग्रगति । भुविय्शसाररराजजय
सिंह इलाधिपति: ॥ २६ ॥ आ० मि० ॥ ष० प० ॥
इमकूरमजयसिंह हिंदु मिच्छन उप्परहुवं । जाप
धरमस्त्रुतिजजलभूरिअध्वर बित्थरिभुव । निंद
तनिगमपिछानिजोर लुरकानप्रजारन ॥ सहर
सितारधीससंनिबुल्यो तिनमारन । साहूनरेस
लहितबसमयदिल्लीपतिउप्परदुसह । संधिया
बहुरि हुलकर सुभट पिल्लेदुवदल अमितमह ॥
॥ २७ ॥ दो० ॥ नृपसाहूनवलक्खदल । सहरसि
ताराईस ॥ पिल्लेहुलकरसिंधिया । दच्छनभुव
दिल्लीस ॥ २८ ॥ इनअवरंगबादलरि । पहि
लैंअमलप्रचारि । वह नागरसूबाअधिपदया

बहादुरमारि ॥ २९ ॥ इतगुज्जरधरजवनइक । सर
बिलंदसप्रसाद ॥ सूबापतिवहसाहको । नगरअ्र
हमदाबाद ॥ ३० ॥ सुबसुग्रामसत्तरिसँहँस । अ्रा
यसजासअ्रधीन ॥ मरहट्टनसोंजु मिल्यो । लिखि
पत्रनअ्रघलीन ॥ ३१ ॥ उज्जयिनीअ्रकबरनगर
। अ्ररुपत्तनअ्रजमेर ॥ सूबाज्ययजयसिंहकौं । सो
बुल्लतबलसेर ॥ ३२ ॥ इतरवटक्रत दिल्लीउदर
। साहमुहम्मदसूल ॥ कंटकअ्ररिकाजीनकौं । अ्र
नयअ्रैसअ्रनुकूल ॥ ३३ ॥ मंदनपुंसकरतमुदि
त । योंहीपुनिअ्रनुचार ॥ रत्तकामिसायनरह
त । सचिवकुमंदसमार ॥ ३४ ॥ मोजदीनतेंइ
क्कसे । भयेपंचदिल्लीस ॥ दिनदिनबोरिकुरा
नदिय । रचिवनबीपररीस ॥ ३५ ॥ इलबुंदिय
पति बिनयकरि । रच्चिसालकसनसाम ॥ बिद्दी
क्षितजयसिंहजुरि । आरंभिय्रउपयाम ॥ ३६ ॥

नगरनिवाईहिंतुलिय।रानीउभयबुलाय॥सु
ज्जकुमरिजयसिंहकों।प्रथितदईपरिनाय॥३७॥
संगानेरसमीपयह।बुंदीपतिकियब्याह॥दायज्ज
बसुनयलक्खदिय।अधिकदिखायउछाह॥
३८॥सकच्वउबसुसत्रह१७८४समय।तिथित
पस्थसिलआदि॥कूरमइमजामातकिय।पतिच
हुवानप्रसादि॥३९॥इतिश्रीवंशभास्करेमहा
चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
त्रेसप्तविंशो२७मयूख:॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नाराच:॥इतैंअरीनजावदारव्यनेरराजकोहन्यों
।सुनीअवाजकूर्मराजसज्जभीरकोंबन्यों॥मनं
किभौंरभौंरकेठनंकिअंदुगेगुरे।कुदारनैनन्दार
केतुरवारसज्जसंजुरे॥१॥चमूहजारअब्ब

नलैकृपानभानकी। रिसायकुम्मरायर्यों चल्योस
हायरानकी॥ बुलैंनकीबदोयसे झुलैं हरोलहौंकैं
।रुकैंभटालिभीरत्यौंरुकैंसमीरसोंकौरें॥ २॥
बजैं निसान नादसो दिसादिसान बित्थरैं।मक्
कदंदसूककीफटाहजारफुंकरैं॥मवासबासम्म
सपासजासत्रासकंपये।चकारचीसकैंपुरीसादि
करीसच्चंपये॥ ३॥ चले मतंगअद्रिअंगस्या
मरंगसज्जके।कुरंगफांदकेचलेतुरंगजंगकज्जके
॥चलेदुबाहकेसिपाहस्वामिधर्मसीसले।चली
सुतोपसट्ठित्यौंचटक्किबक्रचीसलै॥ ४॥मिले
प्रवीरपत्रवाहपत्रबाहवेधते।कमानपत्थकेक
मानपत्थकीनिसेधते॥ सिरंभुवालभुम्मियांसु
भागधेयभेटले।कहौंनओजउन्दयोजुतासफोज
फेटले॥ ५॥फरक्किकेतुगैंनयौं बिजैयबैंनबि
त्थरी।सहायदैंनकुम्मसैंनरानऔंनसंचरी॥

सुनीसुरानकालत्यों प्रयानसम्मुहोकियो। हिले मिलदुहूँनरेसहेतकुल्लस्योहियो॥ ६॥ ष०प०

॥ सिन्धुरनधाटिप्रपातरानजनपदजावदसुनि। पूतनासँहँसपचासचंडकोधनजोधनचुनि। आ मेरोनरनाहपत्तहितचाहउदैपुर॥ दहबारील गसाल आयसम्मुहमुदआतुर। महिपालउभय हियसायमिलिसुखसहपत्तनसंचरिग। करिदल मिलानकूरमरहियसुपकुरानमहलनसरिग॥

॥ ७॥ दो०॥ सककसरबसुसत्रह १७८ पसम। लहिकूरमनिजभीर॥ अतिआदररानाँकियउ हैमणमनहमगीर॥ ८॥ इकजाभिपपुनिद लअतुल। बहुरिबढ्योलहिकाल॥ यातेंतेंहँ मतिनभअति। भयउरानभूपाल॥ ९॥ इकया लकिन्नोंअसन। पुष्ठरीतिसबपेलि॥ कछुअंत तरहितमैंनकिय। हियतबहिंदुनहेलि॥ १०॥

कूरमकूकरजोरिकहि।प्रतिनतिकरिपलराव॥
मन्नकुअप्पनसुभटमुहिं।जिमसोलहउभराव
॥ ११॥मैंइनहूसोंअनुगत।ममहितनहिंमर
जाद॥बिधिसबकेहोंबंदगी।पैहोंरानप्रसाद
॥१२॥यहकहिकूरमचमरगहि।कियउरान
सिरउद्धि॥रचिअंजलितबरानकू।बरजेनि
द्धिहितबुद्धि॥ १३ ॥इत्यादिककियअनुगप
न।कूरमहितनिकरंब॥आमिषबिन्दुरानकुज
प्यो।अवरनममआलंब॥ १४॥ष०प०॥कू
रमप्रतिदिनइक्ककहियसीसोदजोरिकर।रा
मपुरपसंग्रामबदलिअबरहतटेकबर।नैंकन
करतनिदेसभुम्मिअईपुनिभुगात॥सुनि
अकिवियजयसिंहवाहिहनिहोंरनउद्धत।
रामपुरदेकुमोकहेंनृपतिमैंसेवनकरिहोंमुदित
।कहियहसलामजयसिंहकियमुलकलैनल

रवनप्रमित ॥ १५ ॥ महासुंदरी ॥ सुनियौं मनरानौं खिसानौं महा अहिग्रस्त छुछुंदरि कैलौं परयो । दुवधेर कही हमरो ही कुतो तव दम्भ त्रिलकस्व दै लैनौं परयो ॥ सुनियौं ह्वै सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकौं नैनौं परयो । लियसाहकौं लेख जो रामपुरा सु हुती कछवाहकौं दैनौं परयो ॥ १६ ॥ दो॰ ॥ नीतिनिपुन अब लोभ लगि । इम कूरम तैं हं आय ॥ लियउ रामपुर रानसौं । करि नुति लिखित कराय ॥ १७ ॥ रान सचिव कायस्थ तैंहं । कग्गर छाप करीन ॥ तब कूरम गृह जाय तस । पाई नीति प्रबीन ॥ १८ ॥ यदु प्रपंच इम रामपुर । लियउ नीति लगि लाह ॥ ब कुसिरान सनअनुग चानि । कियर हस्थ कछवाह ॥ १९ ॥ षट्प॰ ॥ कहिय मंत्र कछवाह दइव हिं दुनसुमदायक । मिटत जानियत मिच्छ निगम

निंदकभुवनायक। कबहुनसुनतकुराननहिंन
कलमौं निमाजनत॥ काजिनउप्परकुद्धमुद्धन
नजातमहज्जत। रतपानकापिसायलरहलमा
सूकनजानतमहल। बिधिथप्पिसंडमोहनबह
तच्चितप्रपंचकछुकुनचहत॥ २०॥ अलबित्त
रिलमरह मंत्रिकुल्लतमरहट्टन। सजिअपंचति
नसंगबेरितुरकानहिंदुबन। हेलपहिंदुनहेलि
अप्पहककञ्जरहकुअब॥ मुग्गक्रीदिल्लियभुम्मि
सच्चिवहमकरहिंजेरसब। मरहट्टपारमंडहिंअ
मलअप्पनचम्मलिबारहूत। यहअक्किवब्बुरि
कूरमअधिपबिन्नतिकतिमहिय आमित॥
२१॥ दो०॥ कछुदिनरहिकौतुककरत। नृपकूर
मतिहिंनेर॥ पायरानसनसिकवपुनि। आयेपु
रआमेर॥ २२॥ गोकूरमजबरानगृह। कछुतज
हिबुंदीस॥ सहकुटुंबआमेरस्न। रक्खियअप्प

नसरीस ॥ २३ ॥ द्विजबरगुरुजयसिंहको।रत
नाकरअभिधान ॥ कानीखोहसुगामतस।दि
नेतत्थमिलान ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ जिहिंरतनाक
रबिप्रसुगुनजयसिंहसिखायो।स्मृतिरुनिगम
खटसत्थबिबिधनृपधर्मबतायो।चउदहपुनि
च्यउसट्ठिकलाबिद्यापटुकिन्नौं ॥जयसिंहगदा
रिहूजोगभूसुरजिहिंभिन्नौं।धारलरायसब
कुलधरमकलिभूपनसिरमोरकिय।जिमजिम
मलापकूरमजग्यो।आचारिजतिमअद्दरिय ॥
॥ २५ ॥ बिनुत्रिसंध्यजलपानजग्यपंचकबि
नुभोजन।बिनुस्मृतीनब्यवहारख्यातनयबिनु
बसुखोजन।द्विजसुपात्रबिनुदानध्यानहरिहर
बिनुधारन ॥ बिनुबिधिकालब्यवायमंत्रनय
बिनुअरिमारन।बिनुन्हाननिगमपाठनबहुरि
बिनुप्रपंचसंगरबिकट।इहिंद्विजप्रसादकूर

मइते ननरकवेनिजभुवनिकट ॥ २६ ॥ जबकूर
मजोधपुरचल्यो ब्याहन नयचातुर । तबसय्यद
डरतकिपुब्बपठयोअंतहपुर । नगरकरौलीनाह
भूपजदुबंसजासभुव ॥ द्रुगबहादुरदुग्गधीरर
क्ख्योसुतत्थध्रुव । अवरोधसंगहे द्विजथहकुति
हिंतहंदिल्लीदेहतजि । तबकुम्भनासजेंगननथ
भूसुरगंगारामभजि ॥ २७ ॥ गंगारामकुअमिलम
ति । भो द्विजराजसुभाय ॥ बकुमरवनृपकिजास
बल । दलिजैपुरबसवाय ॥ २८ ॥ निवसप्रका
नीखोहनसं । रहियआवदुर्रत ॥ कछवाहीं
आमेररहि । रचतस्वामिपरीस ॥ २९ ॥ ष०प०
॥ इतकूरमगृहआयकालकोबिदप्रपंचकिय ।
मरहट्ठनछन्नमिलिदईअरजीपुनिदिल्लिय ।
रचतदोरमरहट्ठलूटमंडतन्वआलिलग । जोमे
जकुबलबिनाप्रबलहमलराहिंमंछिपग । सुनि

साहशुद्धिसचिवनसबनउचितमंत्रयहैंउच्चर
हु।कथतालखानदेरोंकहियकहतकुम्भजिम
तिमकरहु॥३०॥इतिश्रीवंशभास्करेमहाचं
पूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
तेऽष्टाविंशो२८मयूख:॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दो०॥इलकोटापतिनृपउमेंडि।संभरदुज्जन
सल्ल॥धायोकुम्भनुरामपुर।हर्डिलुट्ट्योरनह
ल्ल॥१॥पा०कु०॥पंचअष्टमुनिससि१७८५
साखितसक।इकलिख्यहकोटाकुंवअॉनक
॥सेवाउतहडुाभटछिल्ल।प्रबलसिपाहबल्ले
छकउप्पर॥२॥महारावभटयहैअत्तम
न।घंटीपतिराउत्तगह्नथन॥कछुकबत्तउप्प
रवहकोप्यो।तज्जरुसामिधरमसबलोप्यो॥

॥ ३ ॥ करउर अग्गलरुयो जोरनकरि । तिहिं कबंध जयसिंह हिं संहरि ॥ रत्तिनिकसि हड्डा सुबेडरय । रामपुरप संग्राम सरनगय ॥ ४ ॥ कोटापति सुनि गहकहाई । सरननरकरनक्कुन्चोरसहाई ॥ चंद्राउल तु सुनी न धरी चित । तब धकि दुज्जन सल्ल चढ्यो तित ॥ ५ ॥ हरिगीतम् ॥ करि हल्ल दुरजनसल्ल नृपतब रामपुर पर उप्परयो । बजि नद्द मद्दल हद्द सद्दल भद्द बद्दल ज्यों भरयो ॥ उडि केतु दंतिन पंति पंतिन सिंधु तंतिन लगये । नरवाल चालन बाजि जालन ज्वाल नालन जग्गये ॥ ६ ॥ ठननंकि घंटन घोरत्यों रननंकि कोचन कीकरी । सननंकि सन्निन लसास झनंकि पक्खर झल्लरी ॥ किलदैत बीर पटैल कड्क मनैत सज्जित संकमे रन सैन लखि लगि लैन के गल गैन गिद्धन के भ्रमे ॥ ७ ॥ डगम

गिरिआछेनछूटतछूटतसेतुसागरलुप्पयो। दरदि
द्दिदेभुवपिद्दिकच्छपनिद्दिनिद्दिनरुप्पयो ॥
नउबत्तिनादनबीरवादनछोनिछादनबित्थरयो
। जिमभद्दसंबरधूलिडंबरएसअंबरउच्छरयो ॥
॥ ८ ॥ फनकारिकुंडिनमत्तगैनभचत्तपच्छि
नकेकरैं। जिनमानपच्छयआनगच्छयदाननि
ज्झरनिज्झरैं ॥ असवारतोकितुरवारकेमच्चक्र
चारफिरावहीं। अबलोंसुसिक्खतपौंनपेवह
गौंलरंचनआवहीं ॥ ९ ॥ जिनधारमारभयार
मारहजारभोगपज्झयो। खुरतारअग्रनभु
म्मिफुट्टतज्यौंउदुंबरपक्कयो ॥ १० ॥ खुरलीसु
खिल्हतबीरकेमुरलीसुसिंधुवउच्चरैं। किलका
रिजुग्गिनिसंगछैहलकारिभैरवकुंकरैं ॥ ११ ॥
भटभीमलों निजसीमतैंसुतभीमयोंचढिसंच
रयो। लियघेरिदुग्गसुरामपुरदलफेरिसंगर

वित्थरयो।। लगिअग्गि तोपन कालकोपननैर लोपन मंडयो। खगिगोरखजालन सौधसालनदुग्ग गोलन खंडयो।। १२।।जरि हट्टपट्टनबट्टलट्टन धूमधोरनिधुंधरे।दुरिओक ओकनसोककैंपुरलोक संसयमैं परे।। प्राकारगिरि गिरिजातकंकुछिकि बप्र कपि सिरउच्छटैं।कंकुंफुट्टि रवोमन तोमगिरिपरिखान पूरिसुउप्पटैं।। १३।।दगिदाव तुट्टिलदाव मंडपआव गिद्धनिज्यौं चढैं।प्रासाद पत्थरसोरसत्थरह्वैथरत्थरकेकढैं।। छकिछिन्न तोपनछूटकेपरिकूटगोपुरतें गिरैं।फुल्लिंग फालनअग्गिज्वालन चित्रसालनकेकिरैं।। १४।। छहरातगोलनधमकेथहरात अग्गिन छुट्टिकैं। छिकिजात छप्परछज्जकोटिकिजात टप्परतुट्टिकैं।। अंगारछारअगारद्वारबजार बीथिनउच्छरैं।नरहैंनिवानन छिज्जिनीर समीर औरदसलोसरैं

रैं॥ १५ ॥जोरिजालपर परिजात गिद्धनिडोरितुट्ट
लसंगज्यौं।औरिजालरुंडनदंडकेगिरिजातकेकि
यसंगज्यौं॥धरिकिधामधामनधुम्मतैंपुररामबि
कालदुक्कयो।इतहल्लदुरजनसल्लकरिहरवल्ल
कल्लनशुक्कयो॥ १६ ॥दैदैनिसैनिनबीरकेहम
मीरम्महनपैंचढे।केदोरिअरनतोरिअग्गल
पोरिअग्गलगेबढे॥वहहुइछित्वरआयचत्वर
थीरधारनसैंधस्यो।करिजंगकछुबिधिफारिख
लासुफारिफोजहिंनिकस्यो॥ १७॥ संग्रामनृ
पयहकामसुनितलरासपुरतजिभज्जयो।इत
जितिदुरजनसल्लहत्तनलुट्टिपत्तनगज्जयो॥
लरजोरक्रूरमसोरकोंगिनिभीतिमानससोंगिरी
।जयसिंहलियवहरानसोंइमआनअप्पनलों
किरी॥ १८ ॥ दो० ॥कोटापतिनहिंअमलकि
य।क्रूरमनृपमयभार॥लुट्टिरामपुरजामलग।

आयउ अप्प अगार ॥ १९ ॥ ष० प० ॥ चंद्रावत
सीसोद नृपति संग्राम सिंह इत । पुर बिंमोली आ
यरह्यो चिंतत प्रपंच चित ॥ मातुल हो पर मारनाम
विक्रम बिंमोली ॥ इहिं कारन तँहँ आय रजूजम
ज्जत करि खोली । धन कुमरि नाम जननी कुलस
ही पीहर इम तत्थ रहि । दिन कछु बिहाय दिल्लिय
गयो साह मुकुन्द सरन गहि ॥ २० ॥ दो० ॥
कछु बसु ढुंढी नजरि करि । लिय निज भुम्मि लिखा
य ॥ दिय कोटा आमेर दुव । बनि बनि पिसुन बता
ताय ॥ २१ ॥ कछु दिन रहि निज पुर अम्यो । पटा
मुलक सब पाय ॥ सरनि अध्य जयसिंह सो । नाखे
चूक कराय ॥ २२ ॥ ष० प० ॥ तदनंतर सक बान
अट्ठ सत्रह १७८५ संवच्छर । आसा अहमनि
पोस भयउ पुनि सुत कूरमधर । रानी उतिनाठ
रज नाम माधव नृप नंदन ॥ सुनत रवचारिज्य

सिंहधुलिमंडियउच्छवधन। दियद्विजनदान
छप्पयअद्भुतकथितरीतिजपजग्यकरि।सुतप्र
सवकर्मसद्विय सकलआम्नायअनुसारसरि॥
॥ २३॥ ष०प०॥ तदनुईश्वरीसिंहसुपकुजय
सिंहपट्टसुत ।लालकुमरजगतेसखुलाव्याह्यो
हितसंजुत।सत्रहसुसत्रह १७८५ सालमाघ
सितलग्गनमिलायो॥जबहिउदैपुरजायउचित
उपयमकरिआयो। इतदक्षिसुलकमालवकिय
उमरहहुलगड्डूआल।आजलौंद्वरसुनतेइन
हिंअलिसनअबलगोप्रबल॥ २४॥ दो०॥
रनअवरंगाबादरचि।पहिलैंकटकसंचारि॥
दयाबहादुरविप्रवहसूबापतिलियमारि॥
२५॥ ष०प०॥ इहिंद्विजदिल्लियअग्गमेटि
हिंदुनदुखदिन्नौं।साहहुकमपुनिपायकुंवद
किसनासिरकिन्नौं।तीनअयुततुरक्कवारसुभट

निजसंगसिधारैं। कोटानरेस भलिपत्र लिखि दु
र्ज्जनसल्लहु संगदिय। इन जावसरितातैं वा उतरि
कछुदिन पार सु काम किय॥ २६॥ कोटापति ओ
कपट तत्थ कछु काल बिहायो। छिन छिग निज
दलरक्खि अप्प कोटा चलि आयो। उत अमरं
गाबादलुहि पर हट्ट चलाये॥ छिन निबेर दल पि
छि पिछिरं स्वकरहराये। अतिजोर बढिय मरह
ट्ट अरि लब छिजस मुहजिक्षये। पासक कछुपान
चोपरिमथित खेल प्रान पनरिबल्लये॥ २७॥
दयाबहादुर बीरबिप्र नागर सूबापति। सूबजा
रिन रक्खि मारि बहु सत्तु महामति। तिलतिलते
कन तुहिबिरचि अच्छरिगल बाँहीं॥ गंजि आ
नकरि गरद मरदपत्तो दिव माँहीं। जिम जिम प्रम
द मिच्छन जगिय भोगन जिम जिम भुल्लये। तिम
तिम कटाच्छ तिरछे बिरंचि दिल्ली जारन झुल्लये॥

सैंसतवीसमुनिसाहकंदकअरदिलगायें। आदि १

॥ २८ ॥ दो० ॥ मारि छिलहिं मंडल अमल । रेवा लंघि रिसाय ॥ मरहट्ठन मालव लयो । उज्जयिनी लग आय ॥ २९ ॥ लेमंडू दस उरलियउ । निज निज थानां रक्खि ॥ सूबा पति गुजरात को । सो हु मिल्यो हित सक्खि ॥ ३० ॥ तब के आवत दक्खिनी । सुलदक्षत बरजोर ॥ अब कूरम कहि मुकल्यो । तजकुराम पुर मोर ॥ ३१ ॥ जानि इनहु जयसिंह को । रामपुरसु दिय छोरि ॥ अवर देस उज्जैन लग । बढिबा हि लिन्न बहोरि ॥ ३२ ॥ कूरम तब मुकलि कटक । अमल रामपुर किन्न ॥ मरहट्ठन सन छल मिलि । दिल्ली सिर पर दिन्न ॥ ३३ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपू स्वरूपे दक्षिणायने नवम राशौ बुधसिंह चरित्रे कृत त्रिंशो २९ मयूख: ॥

॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿

॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥

दो॰ ॥ अभयसिंह मरुईसइत । मरुधरराजअमाय ।
स्वामिधरमबहि साहको । अलिजव दिल्लीआय ॥
१ ॥ इत नृपकानीखेोहरहि । चुंडाउति परनेह ॥ स
करसअब्बसुमुनिइंदु १७८६ मित । कुवउदंत अबएह
॥ २ ॥ ष॰प॰ ॥ असित पक्ख अ्राषाढ मासशनि
बारचउद्दसि । चुंडाउतिउर कुमरभयोदहमासज
ठरबसि । धात्रेयीनृप निकटउत्वसहित छिगहि
आन्यौं । इहुन धरयहरीतितबहि निजसुतपहि
चान्यौं । करिजातकर्मकुलबेदबिधिगणकन
बहुबसुब्रातदिय । बहुद्विजनधेनु हाटकतुरग
मणिपटसहितप्रदानकिय ॥ ३ ॥ बहुरिनृपति
बुधसिंहकुम्भनृपसोंकुकहाई । सतमतरुप्पन
सब्बनदईजयसिंहबधाई । पुनिकहिपठईएह
छांडिममस्वसाधर्मरत ॥ चुंडाउति संगबसिरु
पुत्रउतपन्नकरियतत । अबचहहुराज्यबुंदियक

स्नलो मम कथित प्रमान करि । यह मयउ पुत्र अ
धकु हमहिं चुंडाउत्तिसनर हहु सीरि ॥ ४ ॥ अरु
हमरहु वहिं गोद लाहि निजसुत करि मानहु ॥ मम
भगिनी संगर हहु याहि निज हित करि जानहु ॥
संगहि दिय इक सचिव नाम ताको हीरामल ॥ ति
हिं संगिय यहत नय देहु कुम्भहिं चाहहु भल ।
अकिलय रिसाय लुंदिय अधिप पुत्र हुकें हुं मंगे
मिलत । बरजोर लेहु हो तुम सकल हमर न इच्छ
नरवगहत ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहियह सुतउत्सव
करिय ॥ धरिय नाम उम्मेद ॥ सो सुनि नृप जयसिं
हके । भयउ अमित चितखेद ॥ ६ ॥ छ० प० ॥
सुनत एह जयसिंह यक्लिकर मुच्छारिसायो । पन्न
गपय दह्यो कि रुधितसहूल रिझायो । तसकि
अनत काल सचिव राजामल बुल्ल्यो ॥ कह्यो क
हाकरतब्य रिविज्झि अकउल बल खुल्ल्यो । करि

उचितलेहुखत्रीकहियगृहवासिनइनहनहुन
न। इच्छितहिंराजबुंदियअरपिमथितनिबाह
हुअप्पपन॥ ७ ॥ दो०॥तबछित्वरप्रतिइंद्रगढ
।कुम्मलिखीयहचाहि।देवसिंहभेजहुकुमर।बुं
दीअप्पहिंताहि॥ ८ ॥ प्रथमराजतुमकोंमिल
त।जोयहतुमहिंरुचैन॥तोहमअवरहिंअप्पि
हैं।बदहुनपिच्छेंबैन॥ ९ ॥ छित्वरसिंहहुतब
हिलिखि।पठईकूरमगेह॥हमकिंकरबुंदीसके।
अनुचितकरहिंनएह॥ १० ॥ अबरहुगोपी
नाथकुल।नस्योअनुक्रमपाय॥बुंदीलेंकूरम
तबहि।सालमसिंहबुलाय॥ ११॥ कह्योअप
हुतुमरोकुमर।बुंदीगद्दियबीर॥थप्पैंनहिंसंश
यधरहु।हमसहायहमगीर॥ १२ ॥ सठसालम
यहलोभसुनि।बुल्योकुमरप्रताप॥नयबिचा
रिसोहूनस्यो।उच्चरिदुस्तिअमाप॥ १३ ॥

जइसालमबुल्ल्योजबहि। मध्यमकुमरदलेल ॥करउरतैंआयोकुटिल॥मनइच्छितलहि मेल॥ १४ ॥अभयसिंहइतमरुअधिप। ब रवसिसाहबसुब्रात॥सरबुलंदसिरमुकल्यो॥ देसूबागुजरात ॥ १५ ॥ दिल्लीतैंमारवनृपकु। आयोजैपुरअत्थ॥बररवनलगजैपुरबस्यो। होजयसिंहकुतत्थ॥ १६ ॥तबदरकुंचनआ यतेंहं। मरुपतिदिन्नमिलान॥इहिंसुनिकानी खोहतैं। चढिआयोचकुवान॥ १७ ॥मरुप तिसोंअतिहेतमिलि। कहिसबकुम्मकुकाम॥ जयनिवासउपबननिकट। कियबुंदीसमुका म॥ १८ ॥ मुक्तादाम ॥ मिलेमरुभूपरुबुद्धवि नोद। परस्परडेरनआयप्रमोद॥सुद्वैकरिगो ठिनजिम्मनसाजि। दयेलियदोउनबारनबा जि॥ १९ ॥ मरुप्रभुडेरनकुम्मकुआय। सुता

पतिजानिमिल्योसरसाय ॥ कह्योकरिपावन
जैपुरजेब । ममालयभोजनकैंचलियेब ॥ २० ॥
कह्योमरुभूपक्रुयोंसुनितत्थ । चलैंहमबुद्धव
लापतिसत्थ ॥ ठगेइनकौंतुमजानिप्रमत्त । हमैं
इनतैंहितहेयनअन्त ॥ २१ ॥ यहैसुनिकूरमअ
क्खियराह । तुक्योमिलिजामिपतैंयहदेह ॥ य
हैकहिलेमरुभूपहिंजाय । दईबिनुजामिपगोठि
जिमाय ॥ २२ ॥ चल्योलहिकूरमसिक्खकबंध
। बद्योनृपबुद्धहिंफेरिप्रबंध ॥ रह्योतुमकूरमकौ
यहजानि । कछूकरिहैभ्रमपमद्रुप्रमानि ॥ २३ ॥
सुतोसबगोतुमरीकथसंग । अबैंननरक्खकछु
राज्यउमंग ॥ चलोममसत्थहिजोचहुथान ।
ततोइन्हठिल्लहिलैतुमथान ॥ २४ ॥ यहैकुर
मन्नियबुंदियईस । रचीमरुभूपनिहूककुशीस ॥
क्रम्योंकरिकुंचनधन्वकबंध । रच्योअरगुज्जर

लैनप्रबंध ॥ २५ ॥ इतैंसठसंभरमोहअरोह। कर्‍यौंनिजडेरनकानियरवोह ॥ दईपुनिकुंडहिं कुम्भकहाय। भयोसुतऔरससोंपकुभाय ॥२६ ॥ रुलैसुलसालमअंकदलेल। मनौंइहिंपुन्नगि लौंलहिमेल ॥ नमान्नियफेरिकुबुंदियनाह ॥ कुप्यो।गहिमुक्कुतबैकछवाह ॥ २७ ॥ दलेल्ल बुलावउसालसनंद। मिल्योनृपकूरमप्रीति अनंद ॥ लरक्खरगड्ढियपैंजइढारि। कह्योतुमबुं दियभूपहकारि ॥ २८ ॥ अबैंतुमकोंदुहिताह सअप्पि। थिरानिजभुग्गनभेजहिथप्पि ॥ बिराजकुबुंदियगड्ढियजाय। सबैहमरानस मेतसहाय ॥ २९ ॥ रह्योअभिषेकसुतोल हिकाल। अबैसधिहैपुनिसत्रुनसाल ॥ बहै कहिंसालमसिंहबुलाय। प्रबोधितबुंदियदि लपठाय ॥ ३० ॥ कह्योबुधसिंहहिंआनन्दे

कुसबैतसराज्यरज्जूकरिलेड॥सज्योतबसालम
बुंदियसीस।हरामतजीनयधर्महदीस॥३१॥दो०
॥यहसुनिकानीरखोहतैं।बुद्धनेरसहिंछोरि।सु
रिसुरिसालभमैंमिले।बहुभटसन्दिवबहोरि॥
३२॥पज्झटिका॥इकबनिकनामबानांध्म
धर्म।कियसुख्यसच्चिवजोरतकुकर्म॥यहजो
धराजजासिजअनीति।एलट्योसठसालममैं
सप्रीति॥३३॥सुखरामनामकायत्थस्थान।
भरिलोभचोधरीउदयभान॥नागरइकद्विजज
गदीसनाम।हड्डापुनिरिंतुबकुबहराम॥३४॥
भटअनयपुंजहड्डाप्रबान।थितनैरडुगारीजासथा
न॥पुनिधाइभ्रातसुभरामपाय।सुरिकियउदुष
सालममिलाप॥३५॥अरुसठअलोदपुरपति
अमान।मातुलसुमहारामाभिधान॥इत्थादि
सचिवभटसठअनेक।दरिदरिसालममिलेप॥

टेक॥ ३६ ॥इतकियप्रपंचकछवाहराय।दिल्ली
सुअरजपठईलिखाय।बुंदीसबुद्धआलसब
हंत।चितअबनसाहसेवनचहंत॥३७॥नहिं
पुत्रआहिइनकेनिकेत।तसमातभ्रातजहिंरा
ज्यदेत॥सुकुकम्मबंससालमअठेल।बरकुमर
तासमध्यमदलेल॥ ३८ ॥अतिगुनप्रपंचरनप
टुउदार।बिक्रांतसुभगबरमतिबिचार॥बुंदीस
राज्यअबदेततांहि।अरुमरुपरानहममतिकु
आहि॥ ३९ ॥तसक्षातपटामुद्रितकराय।मम
निकटदेहुहजरतपठाय॥सुनिसाहमुकुम्मद
अरजएह।लिखवायपटापठयेसनेह॥ ४०॥
बुंदियदलेलसिंहहिंसमप्पि।बुधसिंहपदइ
हिंदेहुथप्पि॥तुमजाहुकुम्ममालवसुदेस।
आवतगिनीमरोकहुअसेस॥ ४१॥पठये
कमरुप्पयनिससिलक्ख।इनबलअनीकबि

चरक्कुअपकव॥उज्जैनवारआवननदेक्कु।लग्गिप
ट्ठिसमस्तनमारिलेक्कु॥ ४२ ॥कूरमनरेसतवभुज
भरोस हैंहमनिच्चिंतअतिमुदितहोस ॥इमलि
खिपठायफरमानसाह।कछ्वाहबंच्चिमंडियउछा
ह॥ ४३ ॥ ष॰प॰ ॥बंचिसाहफरमानहररिवजय
सिंहमहीपति।रुप्पयतेरहलक्खपायमंडिगद
लदुम्मति।मनतैंमिलिदक्खिनिनआक्खिवउ
प्परसाहायस॥ कियमालवपरकुंचबुल्यिआ
मिरवजिमबायस।संगहिदलेलसालमसुवन
लेमंडिगदक्खिनचलन।बुंदीसइतसुविगस्यो
बिबिधमन्निनउग्गनअत्थमन॥ ४४ ॥किय
बुंदीसबिचारज्ञानमालवसालकजिय।बिजय
सिंहजिनअनुजकुम्भकारागृहरुक्किय।जाहि
कड्डिबरजोरथिरहिजैपुरनृपथप्पहिं॥करि
फौजनएकत्तयाहिदारिदअबअप्पहिं।यह

कियप्रपंचबुधसिंह इत मोसब नृप जयसिंह सु
नि। वह बिजयसिंह सोदर अनुज पठयो हनिक
रिअप्रनयपुनि॥ ४५॥ घरमधार जयसिंह कर
म अनुचित यह किन्नो। बिजयसिंह हनि अनु
जभेजि जालिप ढिग दिन्नौं। कहि पठई पुनि कु
अजालि आलरु तव सालक॥ आयउ यह म
अईस प्रथित दुंढाहर पालक। इहिं बिधि कहा
य वह निज अनुज कटक बुढ ढिग दग्ध किय।
पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहिं प्रति सालमय
हसंच प्रिय॥ ४६॥ दो०॥ हम जावत मालव
पढ़ुमि। मिलि ठक्कन मर हट्ठ। बुंदिय धर तुम
जतन बल। कीरि रक्खहु नाहिं कट्ठ॥ ४७॥ सा
हमुहम्मद तुम हिं स.. ब। बुंदिय धर दिय धीर॥
स.. कछु हिं देहु न ध्यसन। हमु नपति हम गीर॥
४८॥ सालम प्रतियह लिखि सबल। लै निज

संगदलेल ॥ मालवउप्परउघ्घस्यो। मरहट्टनहि यमेल ॥ ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रिंशो ३० मयूख: ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

दो० ॥ सकरदटबसुसत्रह १७८६ समय। उज्जमासअवदात ॥ कूरममालवकुंवकिय। मनसिजतिथिउमहात ॥ १ ॥ सुताअनायअधीसकी। बुंदियपतिलघुबाम ॥ चुंडाउतितेहितनैअनरिव। रहिकरिपृथकमुकाम ॥ २ ॥ सासूयहजयसिंहकी। सुजकुमारिमसूति ॥ पलटाईकूरमनृपति। अबनवीनरचिऊति ॥ ३ ॥ पज्झटिका ॥ रद्दौरिनिकटजयसिंहराय। पहुदियदलेलसिंहहिंपठाय ॥ कहियहसुपुत्र

तुमरे कुमार। इहिं गिलहु राज्य धंमनउदार॥ ४॥ सुनियह दलेल सलअ्रतिकसूर। कहि पुन मिली रहौ रि कूर॥ इम कूरम संगानेर आय। सरसूपल टाई छलसहाय॥ ५॥ इम दुव दलेल कूरम अमान। मिलि नैर निवाई दिय मिलान॥ बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि। सालम तुमसं डकुधर सम्हारि॥ ६॥ हम मिलन प्रथम आवहु हजूर। पुनि दुग्ग कुबुंदिय कटक पूर॥ सुनियह सठ सालम अनय साम। कूरम ढिग आयउ मिलन काम॥ ७॥ मिलि उभय गाम कुडवा मिलान। दिय कुम्भ सालमहिं रुतख दान॥ कहि जाव कुबुंदिय तुम निसंक। अब तब कुमार सिर पट्ट अंक॥ ८॥ इहिं ले हम मालव जात आज। सूवा प्रलंति रक्खन समाज॥ सालम तुम जावहु गढ़ हसधीर। कुहिं नन मत्किसन देहु बीर॥ ९॥ यह अ्

किविसालमहिंसिकवअप्पि। मालवचलिकूरमकुं

चसप्पि।।दलभरनभुम्मिफुट्टतदरारि। चंचलभलं

गहल्लियचिकारि।। १०।।बहिसजवतरारनले

तबाजि। उद्धतभटमंडनकपटआजि।।रच्चिइम

दरकुंचनकूर्मराज। कोटाधरसंकप्रिअथितकाज

।।११।।नदिकुसकतीरपरिदलअनंत।दिसदिस

नकुहिगय्ययहुउदंत।।कोटानृपदुज्जनसल्लकूर

।हितसचिवदोयपठयेहजूर।।१२।।नागरद्विज

बेणीरामनाम।रनचतुरव्यासदोलत्तराम।।इ

मदुवपठायकूरमअनीक। कोटेसरच्चियअनीति

यकितीक।।१३।।ष०प०।।कुसकछोरिपुनि

कुंचरच्चियअग्गैनृपकूरम।सिंधुसरितनिवस

थबडोदकियतँहँमुकामक्रम।उज्जयिनीके

अनुगगौडउम्मटसंभरगन।।अरुकबंधकछ

वाहसुपकुरिवाच्चियपुनिसेवन।सूबाधिनाथ

कुम्भहिं सम्मुजि नृपयेसब आयउ निकट। सजि
सजि मिलापजयसिंहसन कियसासन मृगि सि
रकट ॥ १४ ॥ दो० ॥ निजगढसोपुरगोड नृप
उम्मदपहनिईस ॥ कोटापतिचंडासिकुल। सं
मरबारबलीस ॥ १५ ॥ गढराघवबजरंगगढ।
येरिवच्छियचक्कवान ॥ नरउरपतिकछवाहनृप
। सुतगजसिंहसयान ॥ १६ ॥ पतिईडररतला
मपति। दुवरक्षारदलेस ॥ इत्यादिकउज्जैनकें।
आयेअनुगअसेस ॥ १७ ॥ पादाकुलकम् ॥
सूजानुगनृपसमयसयाने। मिलिजयसिंहस
नाहिसनमाने ॥ अरुकोटेसपटालयआयो।
भीमजनकभवसोकभुलायो ॥ १८ ॥ जान्यौंह
ईदलेलहिंबुंदिय। होयथहेइनकेंरदीछलहि
य ॥ इमबिच्चारिकोटाअपनायउ। बकुसुदडेर
नजायबढायउ ॥ १९ ॥ जयहरिलैइमसबन

बंडजव। मंडुवपुरप्रबिस्योधरमालव। प्रकटदि
खातसाहकिंकरपन। मिल्योकितवअंतरमरह
ट्टन॥ २० ॥ कछुदिनसमरब्याजतैंहंकड्ढे। ब
ढुलपिक्खिदक्खिनदलबड्ढे ॥ लुब्धिकटकअ
प्पनलुटवायो। मरहट्टनकैंहंबिजयमिलायो॥
२१॥ कछुधनबसननिवेदनकिन्ने। लोभलल्ल
टिल्लकबचलिन्ने॥ छेकूरमइमसाहहरामी। कि
यमरहट्टमिलभुवकामी॥ २२ ॥दो॰॥ तदनंत
रकीरसिक्खगो। कोटापुरकोटेस॥ अवररह
हभारिअरिबल। नरउरआदिनरेस॥ २३ ॥
इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणाय
नेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेएकत्रिंशो ३१
मयूख:॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
ष॰प॰॥ इतबुंदियअदनीसचाहिकुट्टहनृप

चल्लिय।कानीरवोहमुकाम छोरिबुंदिय दिस
चल्लिय।रसजसुसन्नह १७८६ सरतपायअग
हनसित पंचमि॥ कियस्वदेसपरकुंचमुल्लिय्यो
मृगथलजलभ्रमि। चहुसू निवाईमग्गचलि
मगवतगढ़ भोरोरहिय।इतसुनिउदंतसाल
मयहसु बुंदियतजिसम्मुहबहिय॥ १ ॥
उग्रबथिककछवाहसम्मथसरथिरुसरसाहस।
इलगुनसाहनिदेसचापचतुरंगरंगरस।बन
हडो।तिय बिकटस्वान सालम दलेल सह॥ कु
बर बागुरा लग्गि गाहसतकउलफंदग्रह।
सुदुपन अलस लहि सोहसन बुद्धसु मंत्रबिबे
कबिन।उनमत्तपानसंभरअधिपइच्छतजल
बुंदियइरिन॥ २ ॥दो॰॥ सुनिइतआवतसं
भरहिं।बनिसालमबुंदीस॥ लैदलसम्मुहउ
लट्यो।खासिहरामसरीस ॥ ३ ॥लहिसीस॥

बुंदियमुलक।अद्वोठड्डोआय॥यहसुनिसठबु
दियअधिप।बामसुर्योबिहसाय॥ ४ ॥जैतसि
हजाजवजयी।दिल्लियरनअसुदिन्न॥तासदेव
सिंहहतनय।भक्तिस्वामिरसभिन्न॥ ५ ॥नग
रपलोधीधामनिज।बैरिसल्लभवबंस।कुसथल
पंचोलासपुनि।येदुवपुरउत्तंस॥ ६ ॥साहसम
प्पेसंभरहिं।चोवनगढगहिबाँहिं॥कुसथलपं
चोलासए।उभयइजाफामाँहिं॥ ७ ॥तवसंभ
रदियजैतहित।कुसंथलपंचोलास॥सय्यद
सनदिल्लियसमर।किंन्च्योजिहिंदिवबास॥
॥८॥तासदेवसिंहहतनय।स्वामिधरमरतसूर
॥ताकेपुरकुसथललबहि।आयउकुदुजरूर॥
॥९॥बिष्णुसिंहतनयाबकुंरि।अनुपमतल
यात्राय॥येसंगहिरानीउभय।पतिप्रसन्नग
तिपाय॥ १० ॥पुरबाहिरपृतनापरिग।घन

जिमडेरनधेर ॥ देवसिंहमहिमानिदिय । बुद्धहिं
गोटिडिबेर ॥ ११ ॥ परिडेरनलगणामरे । धाम
लीयपथराय ॥ निजसरबस्वनिवेदयो । देव
सिंहहिलदाय ॥ १२ ॥ यहसुनिपुरबलवनश्र
धिप । अभयसिंहअतिधीर ॥ निजदलसजि
आयउनिडर । बुंदियपतिढिगबीर ॥ १३ ॥
अथदेवयेभटउभय । बैरिसल्लभवबंस ॥ स
अलिकुवबुंदीसकैं । देहअरपिसजिदंस ॥ १४
॥ यहउदंतसुनिइंद्रगढ । सुभटइंद्रसल्लोत ॥ दे
वसिंहछितरसुवन । आयउदलउद्योत ॥ १५ ॥
कछुकिसोरबयबसिकछुक । क्रूरमसत्तलहि
क्रूर ॥ देवपृथक्डेरादये । दलसमरतजिक्रूर ॥
१६ ॥ इतसठसालयपिट्ठिपरि । कतधन चिंति
कुकाम ॥ पत्तनफंचोलासढिग । किन्नेलरनसु
काम ॥ १७ ॥ कुलवधवसुकुकम्मके । मिलि

सब्बसालममाहिं ॥ पद्दोलीपुरपति प्रथित । मि
ल्योजवानसुनाँहिं ॥ १८ ॥ तोपन इक्कंबूस
त । द्वैसतसजिबंदूक ॥ मिल्यो आनि बुधसिंह
मैं । अनुचरथरसअचूक ॥ १९ ॥ त्यौंहीइक्कनग
राजतँहं । सुकुकमवंसवतंस ॥ सालमभैं नामि
ल्योसुभट । पटु बिख्यातप्रसंस ॥ २० ॥ छ०प०
॥ सुनि इतरनजयसिंहभीरसालमदलभेजिय
। तीनसैंहंसतुरकबारपंचउमरावमुख्यमिय । ई
सरदापुरईस नामकोजुवनिसंकनर ॥ सारसोप
पुरस्वामि बिदितफतमल्लबीरवर । साँवलसुह
डपुरपति सबलप्रबलअचल नानेडिपति ।
बहादुरसिंहकूरम बकुरि बुह्लानीपुरपतिविर
ति ॥ २१ ॥ सो० ॥ अजमुलक्खासीसुभटवलि । नि
रुपवंसककवाह ॥ नामधेयसिरदार निज ।
सोदियसंगसियाह ॥ २२ ॥ पृथ्वीसिंहरुकरन

पुनि। उभय नरुवअवतंस॥ घासीरामरसोर
पति। बलिभटकूरमबंस॥ २३॥ सेरसिंह रवि र
क्खिय सबल। पुनिज द्दवपरताप॥ हीरितोंवरझल्ला
कुकम। मारवकरनमिलाप॥ २४॥ उदयसिंह
पुनिरूपअरु। जोधसुरतभटजत्थ॥ सालमहि
तकूरमसजे। सोलंखीचउसत्थ॥ २५॥ अासे
रूपपठयेइते। लरिह्नुंदियभुवलैन॥ बियहबक्कु
रिप्रवासबसि। सज्जरक्खिय ढिगसैंन॥ २६॥
नरउरपति गजसिंहसुव। जयसिंहहिं तंहंजंपि
॥ सअरमपंची ममसचिव। चाहतजयअरिचंपि
॥ २७॥ भेजहुतिंहिंइनसंगभल। कूरमतबसु
खिकाय॥ संगहिदियनरउरसचिव। नामसुखं
डेराय॥ २८॥ षं॰ पं॰॥ सुभटमानसिंहोत्तक
लह इम पंचमुख्य किय। अवरहुसुभटअनेकसे
नाम्म लिक्खुतसज्जिय। कोरियहदलदरकुंचमुल

कमालवत जिमंडुव ॥ जुरिआयउजंथालभीर
सालमकुसथलभुव। करिदल मिलानसालमक
टकहहुनपतिढिग मिलनहित। इनपंचभटनआ
यरुकहिय। कुहश्रवनधारहु बिदित ॥ २९ ॥ दो॰
॥ अभयसिंह बलवनअधिप। पहनिभज्जिगएह
॥ भीमहिंतु अतिभज्जिभय। कुल्लभमन्नतदेह ॥ ३०
जाकेबलजयसिंहतैं। अबरनरचहुन एहु ॥ दिन
प्रतिरुप्पयदोयसत। रहिहुंदाबनलेहु ॥ ३१ ॥ न
हिबुल्ल्योबुंदियनृपति। कमसबसहियकुबैन ॥
राजाउत पंचनसरिस। निठुर दिखाये नैंन ॥ ३२ ॥
ष॰प॰ ॥ कूरमपतिभटकुबच्चप्रकटसुनिसुनिम
लवनपति। अभयसिंह अतिबीरभयउधकिप्र
लयरुद्रभति। कररिवमुच्छडसिअधर निरखि
पंचनरुफनायो ॥ पन्नग पय-चंप्योकिभत्तमृगरा
जरिवजायो। कुल्लयोबिदितभुजबेगकिबलचा

सवजतगीदरहौं।बुधसिंहआनकूरमबलहिं केहरिहमगडुरिकौं॥ ३३॥ दो०॥आतनआमीं हसमजत।गहहरनअनुचितगाय॥अवरनतेर नआकुरत।पछ्यहहुनपाय॥ ३४॥ इमहकारि बलवनआधिप।मुरिअद्विगगहिमुच्छ॥फपदो पसंडिगपनडुं।पक्कगदयलपुच्छ॥ ३५॥तबकूर मसुभटनतमकि।सजियजायनिजसैन॥जुत सालमसणइक्कजुरि।लगिदलबंधियलैन॥ ३६॥देवसिंहछित्तरसुवन।इंद्रगढपसुनिएह ॥भिरुसत्विजयसिंहमय।गथोसपरिकरगेह॥३७ ॥हृदयनरायनहरियकुल।येकंथवउमराव॥किर नभिरबुंदीसकी।कुलआयेरनदाव॥ ३८॥ इहु मेवसासतहर।मायवहरमटमोर॥कुलवक्खन आउनाथकुल।येचालुकनृपओर॥ ३९॥ सुद्धमाकृतभाषा॥आर्या॥ बिद्दहुआरो

(१)ह्रीं लागी अणुअं बुंदीसपट्ट वेपिक्ख ॥सालमअत्त
पआवे।जिट्ठे।मिलिओबुहेणभूवइणा ॥ ४० ॥आ०
भि० ॥दो० ॥राजसिंहअन्वयरतन।बंधव निज
नरबीर ॥ दोलतिसिंहकुसज्जिदल।भटआयउ
नृपभीर ॥ ४१ ॥ हाजरिभट प्रथमहिकुते।महासिं
हकुलभोर ॥आसितपक्खकेइंदु जिम।लग्यो
घटनदलओर ॥ ४२ ॥दसहजारपृतनाबदलि
।सबकुवसालमसंग ॥दस हजार नृपनिकट द
ल।रहियस्वावनरंग ॥ ४३ ॥उभयपक्खअरि
मित्रतजि।समयजोरदरसाव ॥रहियइंद्रगढ
आदिबकु।उदासीनउमराव ॥ ४४ ॥सालमहि
गतेरहसँईंस।नृपहिगदसनिरधार॥इतकुप्यो
बलवनअधिप।भुजधरिबुंदियभार॥ ४५ ॥

(१) विविधानेहा चिंतकी अनुजम्बुन्दीश पट्टपस्प्रेक्ष्य ॥ सालिमपुत्र:
प्रताप: ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥ ४ ॥

बुद्ध नृपति बरजत रह्यो। दोउन सपथ दिवाय ॥ ह
ढ्ढप्पज्जन नाँ सुनैं। लग्गी अंदर लाय ॥ ४६ ॥ अभ
यसिंह अरु देवइत। अरु कछु संभर सैंन ॥ जिहिं
किय जेमट सज्ज किय। बरनत तिन्ह कवि बैंन ॥
४७ ॥ महाराम मातुल कुलज। मुख्यो जुस लम
मल ॥ वाको सुत संग्रामइत। सो कुसज्ज्यो गहि से
ल ॥ ४८ ॥ भमसिंह सज्ज्यो प्रथित। नाधाउत र
नसूर ॥ अरदतसिंह जगभानु बलि। सजे हुडु अति
सूर ॥ ४९ ॥ साँवलदास सजोर सजि। गोरबंस
उजिआर ॥ जोराउर कछवाह जुरि। परसुराम भरि
हार ॥ ५० ॥ बरजत नृप बुंदीस कैं। सहट्ठ दिखाव
त सौंहैं ॥ अभयदेव संग हि इते। भटन तनां किय
मोंहैं ॥ ५१ ॥ देवसिंह अभमल्ल दुव। दुल्लह ललि
त उदार ॥ अच्छारि दुलह निअद्दीरिय। जन्यइ ते जु
झार ॥ ५२ ॥ अवर भटन पिकथ्यो समय। सालम अ

युतअयुतअनीक ॥ छोरकुनृपहिनइक्कछिन। कोजानैंबकितीक ॥ ५३ ॥ जोभूपकुसिरघातजड। कूरमयल्लहिंकूर ॥ तोसबस्वामिसमीपही। सत्रुनजंगहिंसूर ॥ ५४ ॥ स्वामिदयेनलरनसपथ। बलिनृपतजननबेस ॥ नयबिचारिइमइननिकट। सकलरहेसुभटेस ॥ ५५ ॥ बीरजितेपहिलैंबदिय। तिननननमन्नियसौंहँ ॥ अभयसिंहसंगहिउठिय। भयदफुरावतभौंहँ ॥ ५६ ॥ कहिकुबैनडोरकूरमन। निजदलपिल्लियजाय ॥ यहसहीनबलवनअधिप। लागियसोरदिवलाय ॥ ५७ ॥ अभयसिंहआदेवडुत। कुप्पिचलियजिमकाल ॥ सिरचरसतअजलोकसौं। पयपरसतपाताल ॥ ५८ ॥ सालमअरुकूरमसुभट। जुरिइतप्रबलजरूर ॥ बुंदियदलसिरबगालै। सकललेबढिसूर ॥ ५९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा

चंद्रस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
ओद्धात्रिंशो ३२ मयूख: ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ सकहयबसुसम्रह १७८६ समय । माघ
वदरससिलाप ॥ घटियरुद्दरबिकेचढत । उल
टिसपुद्दनआप ॥ १ ॥ दुर्म्मिला ॥ दुवसेनउद
ग्गनरवग्गसमग्गनअग्गतुरग्गनबग्गलई । स
चिरंगउलंगनदंगमतंगनसज्झिरनंगनजंगजई
॥ लगिकंपलजाकनभीरुभजाकनबाकककजाक
नहाकबढी । जिममेहससंबरयोंलगिअंबरचंड
अडंबरखेहचढी ॥ २ ॥ फहरक्किदिसानदिसा
नबडेबहरक्किनिसानउडेंबिथुरें । ससनाअहि
नायककीनिकसेंकिपराग़लहोरियकीप्रसरें ॥
गजथट्टठनंकियभेरिभनंकियरंगरनंकियकोच

करी। परखरानझनंकियबानसनंकियचापस्तनं
कियतापपरी॥ ३ ॥धमचक्करचक्कनलगि
लन्चक्कनकोलमचक्कनतोलकढ्यो। परखराल
नभारखुमीखुरतालनव्यालकपालनसालब
ढ्यो॥डगमगिसिलोच्चय़शृंगडुलेझगमग्गि
कृपाननअग्गिझरी। बजिखल्लतबल्लनहल्ल
उझल्लनभुम्मिहमल्लनघुम्मिभरी॥ ४ ॥मचि
घोरनदोरदुश्रोरसमीरनजोरउमीरनधोरज
म्यों। अभमल्लउछाहनहुडुहठीकछवाहनगाह
नचाहक्रम्यों॥सुकजैतइतैंभटदेवसही करि
स्वामिमहीहितसंगसज्यो। दुकुंश्रोरकुलाह
कतोपदगीलगिसद्दबलाहकनद्दलज्यो॥५॥
उततैंकछवाहनउग्रउछाहनबेगसुबाहनबग्ग
लई। बनिबुंदियबालमजंगसुजालमसंगहि
सालमदोरदई॥ परिरिट्ठिकृपाननचंडचुहान

नगिद्धिउडाननगूदगहैं।गनधीरगुमाननपीर

प्रमाननबीरकमाननतीरबहैं॥ ६ ॥बढिवु

त्थिनवुत्थिछईवसुधालगिलुत्थिनलुत्थिप

रैंमजरैं।घटसेलघमाकनरंगरमाकनहड्डसुहा

कनहोसहरैं॥लखिरवग्गउदग्गनमग्गलगी

जुरिअच्छरिजठ्ठप्रजापतिज्यौं।गलबांहैंक

रैंकरिबीरबरैंगमनैंगनगैवरकीगतिज्यौं॥७॥

छननंकिउडाननबानछयेठननंकिगथंदन

घंटघुरे।फननंकिदुबाहनटोपफटेरननंकि

सिपाहनकोचरुरे॥डुलिभैरवडैरुवसैंडहकीड

रिडाकिनिसाकिनिचौंकिचली।नचिनारदनच्च

बिसारदज्यौंबिबिवारदभांतिमिलेखुरली॥८॥

कटिखग्गकलापरुदंतकढैंफदिकुंभमउल्लिन

मेहफुरैंतरितातनुतेगलहांतरकैंघनगज्जमतं

गजगज्जघुरैं॥बकपंतियदंतियदंतबढेचडुंओ

रअचानकअब्भ बढि । कटिकैंउडिचातकघंट कढेप्रतिपक्खवरभेकअनेकपढे ॥ ९ ॥ यहआ निसुमाकरभैंबरखाबढिमाधवमासअमाबिथु रयो । लखिनायकसूरनहूरनहूरनअंगनअंग अलगकुरयो ॥ इतसूरनचंदनअस्त्रचढ्येरसकैं इतहूरनरागरचे । उमहेइतसिंधुनकीध्वनितैंस मुहेउतसिंजितसद्दमचे ॥ १० ॥ इतडाकिनिदू तिकजाकिनिओइतसाकिनिनाकिनियास सखी । सबहूरसुहागिनिइक्कअभागिनिबुद्ध बिभागिनिसोबिलखी ॥ द्रुतहारसिंगारविगा रिदयेधुपिअंजनरोदनबारिबह्यो । करकंकन फोरिभरोरिकलापहिंछोरिअलापहिंतापस ह्यो ॥ ११ ॥ यहआइयडाकिनिकीसिखईधव हीनभईअबछोहछई । अतिआरतिअच्छरि कीलखिकैंहसिडाकिनिडिंडिमडक्कदई ॥ सह

नाहथसुंडिनकीकरिकैंगनबावनगावनमैंग हकैं। कटिमुंडरुरुंडकिरैंइतकौंचउसद्दिनझुंड नचैंनहकैं॥ १२ ॥ परवालतुरंगनधूरकिते नरवालकुरंगनफालनचैं। भटवारकटारन फारकैंअजिझारअँगारनभारमचैं ॥ फटका रिमतंगजसुंडिफिरैंकटकारिचुहाननझुंडझमैं ।हलकारिचुरैलिनिहोसहरैंललकारिभयंक रभूलभ्रमैं ॥ १३ ॥ खगधारनधाररिवैंखटकैं पलचारनझुंडझटैंझपटैं। खुरतारनभारखुदैंप हमीअसवारनवारदटैंदपटैं ॥उपकारनका रकितेउमहेसिवधारनकाजगहैंसिरकौं।दल भारनभारमिलेदुवघाँसदबारनबारचलेचिरकौं ॥ १४ ॥ यमसाननबानउडाननलैअरिमान नपीवतकालअही।चहुवाननकेकरकौउथ लापवमाननमानसहाँनिबही॥करवालनवं

डउडी खिनगीभटजालनभीरभिरैंभुरसैं। बढि
ज्वालकरालनलोकबरैंदिकपालकपालनसा
लबसैं॥ १५ ॥ गजराजनढालढहैंढरकैंरत्तभ्रा
जनघायभरैंभभकैं। लगिलाजनसूरलरैंलट
कैंछुटकैंभुवकाजनलोहछकैं॥ कटिकालिक
पीहकिरैंकलिमैंफटिमस्तकखंडउडैंफबिकैं।
जिमसैलनश्रृंगखिरैंखिरवैंप्रतिमल्लपुरंदरके
पबिकैं॥ १६ ॥ मथिमंथनिमत्थगहैंगलिसोंग
नगिड्डनिगोदगिलैंगहकैं। मनुग्वालिनिमट्टद
हीमथिकैंनवनीतनिकारनबारनकैं॥ चहिमार
दुधारचलैंचमकैंअसवारतुरखारकटैंउलटैं॥
फटिमड्डनऊरुफटैंउछटैंकटिबाकुलबाकुल
बाकुकटैं॥ १७ ॥ दो॰ ॥ इहिंरनबिच्चबलवनअ
धिप। अभयसिंहअतिबीर॥ फतमल्लहिंखोज
नफिरत। फुलसिंहहुहमगीर॥ १८ ॥ जबहिंपं

चजयसिंहके। येक्रूरमउमराव॥बुंदीपतिअग्गैं

बिदित। बुल्लेकुवचबढाव॥ १९ ॥इनहूमेंफत

मल्लयहँ। सारसोपपतिसूर॥कहिकातरअ

भमलकों। गह्योबकुतमगरूर॥ २० ॥इहिंका

रनअभमल्लअब। तिहिंहेरतगाहितेग। कुस्यो

कहाँक्रूरसदीर। बीरबतावकुवेग॥ २१ ॥ष॰प॰

॥जिमनागहिंखगराजमृगहिंमृगराजमहाबन

।जंभहिंजिमजंभारिमधुहिंमानहुँमधुसूदन।

पानीजिमपावकहिंतूलहिंपावकजिमतक्कत

॥सजवकपोतहिंसेनहननहेरनजिमहक्कत।

आखुहिंबिडालतिमिरहिंअरुननरसंकहिं

हरिहूनिम। फतमल्लरूपपोमिनिफिरितइम

हेरियअभमल्लहम॥ २२ ॥दो॰॥ समुरवपि

खिफतमल्लसों। इमआखियअभमल्ल॥गी

दरगालबजायकें। अबकिनकरतउकल्ल॥२३॥

इमहकारिबलवनअधिप। मंडतबाननमेह॥
उफनावतआयोउमंडि। दंसनमावतदेह॥ २४
॥ ष० प० ॥ पयदछतअहिपुच्छमुच्छअैंचत
मयंदजिम। सोरमनकुंसावातअगिलगात
प्रचंडक्रम। हेलिमखावहजारजेठदुपहरजनु
जागिय। मलयउग्रजिमप्रथितलायअंखि
नअतिलग्गिय। काननप्रमानबाननकरखि
कूरमदेहसुसेहकिय। मदमत्तलरवक्कुहहुमरद
ाहुपदअंगदगातिय॥ २५ ॥मुक्तादाम॥
जुरयोअमभल्लइतैंरूपिजुद्ध। अरयोफलमल्लउ
तैंकलिकुद्ध॥ उभेनिजस्वामिनकीमुवआस।
तकावतअक्कोहिंचक्कतआस॥ २६॥ उभेरन
दच्छबडेउमराव। उभेउमंडेरसबीरउगाव॥ उभे
जयसाध्यनहारिउथप्पि। उभेउफनायकुबेनन
अप्पि॥ २७ ॥ ...लदुल्लहसज्जितअंग।

उभैभरश्रौंचतमुच्छश्रभंग ॥ उभैश्रनुरूपरि
झावतरंग । उभैरनश्रंगनकेजयखंभ ॥ २८ ॥
उभैसिवदारिदसिद्दनहार । उभैपलचारनकेउ
पकार ॥ उभैझमकावतखग्गउदग्ग । उभैचलि
मेतहलावतश्रग्ग ॥ २९ ॥ उभैभवतैंतजिसो
कृश्रलुद्द । उभैश्रनछलिलगावतउद्द ॥ उभै
लुभवाहकुवाहकुश्रक्खि । उभैकरिसूरजकों
निजसक्खि ॥ ३० ॥ उभैकनकाचलपायन
बंधि । उभैदमउद्धतसंहरिसंधि ॥ उभैतुलसी
धरिमल्लकश्राय । उभैजलगंगउमंगश्रन्हाय
॥ ३१ ॥ उभैछरवजानिजुरेइकधेनु । उभैकरि
राजकिइक्ककरेनु ॥ उभैइकसिंहनिज्योंवनई
स । जुरेइमक्रूरमहद्दुजयीस ॥ ३२ ॥ मिलेपहि
लैंदुवतीरनमार । करैसरदोउनभेदिकरार ॥
चढ्ढहिंचंडप्रतंचनचाप । उडैंसलश्राजिमरे

यच्अमाप ॥ ३३ ॥ जहाँ करि बानन यौं रन जोर। मि
लेपुनि सेल्लन ह्वै भट मोर ॥ सु कंकट भेदि कढै घट
सारि। किधोतरु तेज नअग्ग कुदारि ॥ ३४ ॥ च
लीअभमल्ल बरच्छिय अच्छ। पस्यो छिदि कूरम
बाजिदुपच्छ ॥ वहाँ हय और चढ्यो कछवाह। रु
प्यो अभमल्लकृ पच्चयराह ॥ ३५ ॥ बरच्छिन जं
ग अपुब्ब बिधाय। लई अब खापन तैं हि मला
य ॥ किधौं घननैं कढि विज्जु कराल। किधौं बि
लतैं किलकुंडलि काल ॥ ३६ ॥ किधौं नभतैं
ससि ह्वै जकलाकि। कढी यमके मुखतैं दसना
कि ॥ हली किकुतालन तैं कढि हेलि। मयूखन
भोमनि नैं अथवेति ॥ ३७ ॥ कढी ध्वनि ब्याल कु
लीनं किसकास। कढे मतगातम तैं किसमास।
कटाच्छकिधौं कुलटादृग कुञ्ज। पयोभवकोरक
तैं अलिपुंज ॥ ३८ ॥ कलिंदकतैं निकसी जमु

नाकि। प्रजापतितैंपरिपूरप्रजाकि॥ गुनत्रयतैं किंचलेमहदादि। महानटकीजटतैं भ्रम थारि ॥ ३९ ॥ हिमालयतैं जिम गंगहिलोर। कटीश्वरकेमुखदंतुलिकोर॥ अनंतकआननतैं जिमजीह। सटाधुनिथंभहितैं नरसीह ॥ ४० ॥ नवोढनकेउरतैं कि उरोज। उदैगिरितैं कि दिवाकरओज॥ किअंजनिकेउरतैं हनुमान। परासरनंदनतैं कि पुरान॥ ४१ ॥ सुराधिपकेकरतैं जिम संब। कढेधनु गांडिवतैं कि कलंब॥ सहीकपिलाननतैंजनुसाप। लयायनगायनतैं कि अलाप॥ ४२ ॥ धपीजनु नीरदतैं जलधार। महाबलमाधवतैं मनुमार॥ त्रिलोचनकेकरतैं कि त्रिसूल। मउत्तियसुत्तियतैं किअमूल॥ ४३ ॥ कढेइमदोउन खापतखग्ग। मिले मलयानल हैरन मग्ग॥ उभेकरलाघवदाब

दिखात। परस्परदेत प्रहार निपात॥ ४४॥उभै
फिरिमंडलटारतवार।मचावतमार दुधारनमा
र॥दई्यपिसंभरदाहिनअंस।परयोकटिकू
रमरव्यातप्रसंस॥ ४५ ॥दो०॥ हठिकूरमफ
तमल्लहनि।अभयसिंहचहुवान॥कूरमको
जुवरामकों। पिक्खतगाहकमान॥ ४६॥ई
सरदापुरपतिअतुल।वहकोजुवकछवाह॥
अप्पहिंखोजतइकिवैकें।अभिमुखरचिगउ
छाह॥ ४७॥मिलिदोउनकिन्नीमुदित।ना
गफेनमनुहारि॥अकबीपुनिअभमल्लइम।
कूरमसुनकुहकारि॥ ४८ ॥सबतुमसिलिह
मेरेसुनत।भूपहिंडारीभीति॥तुमहूमैंफतम
ल्लतैंहैं।अकबीअधिकअनीति॥ ४९॥का
कोदरहिंकुपायकें।कोउनजियतसकोप॥फ
ननहन्योंफतमल्लकों।अबतवसिरआटोप

॥ ५० ॥ फबत बान फत मल्लके। छत्तिअभय
छतछेक ॥ जनु बानन जय अरु अजय। बन्यों
तितजस बिबेक ॥ ५१ ॥ यातैं कोजुव राम अव
। मिलि जुट्ट्यो रन माँहि ॥ जिनके बानन तुम कि
दे। तिन तैं गब्ब कुनाँहि ॥ ५२ ॥ ष० प० ॥ यहै
सुनत अभमल्ल खग्ग कोजुव सिर झारिय। सजि
कोजुव इत संगि हड्डुउर तक्कि प्रहारिय। याके ख
ग्ग उदग्ग काहि जा कुलकर कढ्यो ॥ वाकी संगि
अपुब्ब चक्कि वहियरीढ कच्चढ्यो। अरितब
सिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारिय मत्थ
पर। कटि टोप सीस कढियस कल मनकुबिबं
धव बंदिघर ॥ ५३ ॥ दो० ॥ कोजुव राम सुसि
रकटत। बेग बसन सन बंधि ॥ करइ काहि अ
सिबर कररिव। सिर झारि गजय संधि ॥ ५४ ॥
कोजुव कोइ कि दिनकरसु। इम कढ्यो अभमल्ल

॥ यातैंगहिकरबामअसि। झारीबहुरिउझल्ल
॥ ५५ ॥ टोए कट्टितिरछीतरकि। तुट्टिपरियतर
वारि ॥ अकिवयतबअमसल्लइम। बाहकुनें
कबिचारि ॥ ५६ ॥ जिहिंकरतेंअसिबरजुर
त। तिरछीलरकततुट्टि ॥ जनितांकोंहररवें
जनानि। क्यों बहुधालनकुट्टि ॥ ५७ ॥ काहि
इमकोजुवरामपर। असिझारियअमसल्ल ॥
सिवगहिलिन्नोंउडतसिर। ढरयोयहकुरनढ
ल्ल ॥ ५८ ॥ ईसरदाकेपतिहिंइम। बलवनपति
हनिबेग ॥ सांवलदाससुहाडपति। तहंक्यो
झारततेग ॥ ५९ ॥ मुक्तादाम ॥ च्चवीयहदृ
तनभूतनचास। सुनीसबकूरमसांवलदास
॥ उदायुधउग्रदिवाकरअस। रहैंइतनीस
हिक्योंरघुबंस ॥ ६० ॥ मिल्योकमसल्लहु
ऊतमान। धपावतधारहिंदेबलिदान ॥ ध

थोकु बलाम्थ किधुंधुहिंधारि। किधौंरनराव नरासहकारि॥ ६१॥ किधौंनलपैंबलवास वकुद्ध। जटासुरपैंकिवृकोदरजुद्ध॥ कुअत्थ भमावत हत्थकृपान। दिखावतसंकरकोअति दान॥ ६२॥ सुहाडपहृइततेंगहिसंगि। मिल्योअसमल्लहिंमल्लउमंगि॥ नच्चीतेंहंत लिनचोसठिनारि। रचीइमहड्डुरुक्करमरारि॥ ६३॥ जहांतंहँआवहिआवहिंजाप। जहांतं हंखूटतखग्गनखाप॥ जहांतंहँप्रेतडका रलजोर। जहांतंहँघायलधायनघोर॥ ६४॥ जहांतंहँनारदकोअतिनच्च। जहांतंहँस्रन न्हूरलसच्च॥ जहांतंहँभूतनभूखमकास। जहां तंहँगिद्धनिगूदबिलास॥ ६५॥ जहांतंहँडा किनिडिंडिमडक्क। जहांतंहँधारनकीधमच क्क॥ जहांतंहँहत्थिनचंडचिकार। जहांतंहँ

फेर त्रिकान फिकार ॥ ६६ ॥ जहाँ तँहँ फुट्टत भू
अतिजोर । जहाँ तँहँ त्रंबक तंडव तोर ॥ जहाँ
तँहँ दिग्गज कातर गज्ज । जहाँ तँहँ सोहत सूर
न सज्ज ॥ ६७ ॥ जहाँ तँहँ कातर कूकत कूक ।
जहाँ तँहँ चाहत चंचल चूक ॥ जहाँ तँहँ फुट्ट
त फील न मत्थ । जहाँ तँहँ सूरन हूरन हत्थ ॥
६८ ॥ जहाँ तँहँ खग्गन खंड खिरंत । जहाँ तहँ
गैवर गंज गिरंत ॥ जहाँ तँहँ जुग्गिनि को जय
कार । जहाँ तँहँ रुंडन मुंडन मार ॥ ६९ ॥ जहाँ
तँहँ साकिनि सोर सुनाव । जहाँ तँहँ पंडित जं
ग प्रभाव ॥ जहाँ तँहँ हत्थिन बत्थन जुट्टि । ज
हाँ तँहँ तेमत रक्कल तुट्टि ॥ ७० ॥ जहाँ तँहँ
सोनित सों बढि साद । जहाँ तँहँ प्रेतन भ
च्छ प्रमाद ॥ जहाँ तँहँ चाल चुरैलिनि चोंकि ।
जहाँ तँहँ भैरव भज्जत भोंकि ॥ ७१ ॥ जहाँ तँ

हँ हङ्कुन जालम जोर। इतैं जँ हँ दुस्सह कूरम ओ
र॥ सुहाड प कूरम साँवलदास। मिल्यो भ्रम म
ल्लहिँ पुंज प्रकास॥७२॥ कहैं दुव बाहक बा
हक कत्थ। स्वैं रन त्यों रबिरु क्कतरत्थ॥सरैं
जल जंत्रकि धायन सोन। जुरैं इन दोउ न तैं तं
हँ जोन॥७३॥ लरैं भ्रम मल्ल सुबुंदिय लाज।
करैं उत कूरम जैपुर काज॥ कहैं भ्रसि बान बर
च्छिन ब्रात। परैं मनु भद्दव बिज्जुव पात॥७४॥
थेइ त्थेइ इन च्छक बंधन थूल। बनें तँ हँ कातर प
त्तबबूल॥ मलंगत भैरव सो नित मत्त। छलंग
लगि द्दुवलैं सिर छत्त॥७५॥ नचैं निकसे हि
य पैं कढि नैन। सरोज किसोल सिलीमुख सै
न॥ कढैं फटि बुक्कन दुक्क बिकास। मनों सुम
किंसुक माधव मास॥७६॥ उडैं सिर अंबर
पच्छिन पेलि। करैं जनु कालिय कंदुक केलि॥

॥उच्छट्टहिंढालनमैंकढिअंत।भुजंगटिपारनमैं
किअमंत॥७७॥रुरैंसिरअद्धफट्ट्योइहिरा
रि।दयोजनुजुग्गिनिखप्परडारि॥सिखा
कटिसूरनकीफहरात।किधौंजयकेतुप्रभं
जनपात॥७८॥गिरैंफटिटोपनतैंकखवा
ल।फटाबिनुलेतभुजंगकिफाल॥सुहाव
तकेगरिनकुसमूल।फबैंइसमासमनौंति
लफूल॥७९॥लगैंअसिओठगरैंकटि
लाल।पकेजनुबिंबकिपुंजप्रबाल॥उडैंक
टिदंतनओघअखंड।खिरैंफटिहीरनके
जिमखंड॥८०॥गिरैंसहमुत्तिमहारनु
कान।बनैंसहमुत्तिसुजुत्तिबिधान॥जहाँ
गरिहत्थगिरैंअतिजुद्ध।किधौंफनपंचक
केअहिक्रुद्ध॥८१॥तिरैंबहुखेदकसोनि
तताल।मनौंकिसरस्सतिकच्छपमाल॥

रुकैंबद्धसूरफटक्कनभार। गिरैंजिमआसव
मत्तगभार॥ ८२॥डरावतडाकिनि दंतदि
खाय।जरावत साकिनि लावत लाय॥ति
न्हैंभटनाटकवेनटतोर। गिनैंरसअद्भुतही
नहिंघोर॥ ८३ ॥गिरैंकक्कुंभञ्जतभीरुन
सीस।उठावत पूर्ब बिहावतईस॥ गिलैंति
नकोननगृद्धगिद्ध। बुरेइमजेकिमेरभय
सिद्ध ॥ ८४ ॥ मिलेदुवयागतिकेरनमांहिं
।जन्हैंजुरनौंतहँनांहिंसुनांहिं॥लगीगर
बुंदियजेपुरलाज।करैंनहिंअग्घसरैंनहिं
काज ॥ ८५ ॥भयोबलसांवलकोबलभा
व।दयोअभमल्लपुरंदरदाव॥चलीपबिकी
छबितैंअसिचंड।खुल्यो सिर सांवलज्यों
गिरिखंड॥ ८६ ॥ष॰ प॰ ॥अभयसिंह
सुतअत्थप्रबलसुगतेसरुपूरन॥दासी

औरसदुवहिचलेचाहतअरिचूरन।सार सोपंकेसुभटबड्डि पक्कुंचेसुहाडबल॥भटसाँवलकेभंजिदब्बिनाँनेडिलयोदल।इन्हह नतपिक्खिकूरमअचलदोउनक्षुग्गनक्कर दिय।उभपुत्रमरतअभमल्लअबलरिअच लेससमीपलिय॥ ८७ ॥अचलसिंहत रवारिपरियअभमल्लबाजिपर।झरतरवंध हयझुकियइनकुझारियइहिंअवसर।सूर अचलकोसीसतरकितुट्यो असिउच्छ ट॥लियउझेलिलगिलाहनञ्चबक्कुमंडिम हानट।अचलहिंबिदारिअभमल्लइम सुतनबैरकढ्यौसकलबिनुबाजिजाय गंज्योबलियबुद्धानीपुरपतिप्रबल॥८८ ॥दो॰॥बीरबहादुरसिंहतब।बुद्धानी पुरनाह॥अश्वरहितअभमल्लकों।इकल

तरन्दिगउछाह ॥ ८९ ॥ बेगहयहिँ झपटा
यबलि । सम्मुह आरियसंगि ॥ अभमल्लहिँ
यहलगियइस । अगसिरपाबिकिउभंगि ॥
९० ॥ ष० प० ॥ लग्गत संगि अभमल्ल छ
त्तिफुट्टतनन छोहिउ । बिरन्चिबपाबरवसी
सडंकिकूरमदलडोहिउ । लिनी तुरगहठबं
धितुमुलकोऊनहिँतक्कत ॥ यह अग्निज
सहिसंगि वक्यो सम्मुह जयबक्कत । जिम
तुलादंडखंभहिँ जुरतउरमबिद्धअभमल्ल
तम । कुझानिनगरईसहिँसबिधितुल्लिपट
क्कियअवनितिस ॥ ९१ ॥ दो० ॥ परयो
बहादुरसिंहइत । इतसुपरयो अभमल्ल ॥
कूमकूरभट पंच अरि । हनिसुत्तो हरवल्ल ॥
९२ ॥ पज्झटिका ॥ चक्कवानदेवसिंहहिँ
बिचारि । सिरदारकूमनायक सम्हारि ॥

नाथ। उत चालुक प्रेम नाम। किय आहव
नर उर सञ्चिव काम॥ ९३॥ संग्राम नाम
चालुक्य संग। जुरि करनसिंह कछवाह जंग
॥ परिहार परसु धर बल प्रचंड। दिय जोधचा
लुक हिंदु सह दंड॥ ९४॥ गंजन अरिसां
वलदास गोर। उडि रूपसिंह चालुक्य ओ
र॥ जोरावर नारव कुम्भ जत्थ। सुरतेस बीर
चालुक्य सत्थ॥ ९५॥ बखतेस हड्ड असि
करत बाह। चलि उदयसिंह चालुक्य चाह
॥ जगभानु हड्ड अति चित्र जंग। सजि कूर
म पृथ्वीसिंह संग॥ ९६॥ दो०॥ इम बुंदि
य आमैर भट। रचिय परस्पर रारि॥ जुद्ध मि
ले जल दुइ जिम। अच्छन अग्ग उपारि॥ ९७॥
मुक्तादाम॥ सज्यो इत देवक नैंसिरदार।
परे सिर कोप्प चंड प्रहार॥ ... सी आसि बान

बर छिन चोट। लगे कति लेत कबुत्तर लो
ट॥ ९८ ॥ उलट्टिय सत्त समुद्रन आप।
अकट्टिय कूरम को यँह पाप॥ थरक्किय त्यौं
अतलादिक थान। लरक्किय सेस फटाल
न कान॥ ९९ ॥ तरक्किय कच्छप पिट्ठि
सत्रास। बनैं जनु अंड कटाह बिनास॥ टि
क्यो किरि तुंड हिं दंतु लिटारि। चिक्यो दिक
कुंजर पुंज चिकारि॥ १०० ॥ छुटैं सर छत्ति
न छल्लि न छेकि। कढैं बन तैं जिम कुक्कत
केकि॥ करक्काहिं कोचन कों असि काट्टि
। फरक्काहिं बिज्जु कज्यौं घन फट्टि॥ १०१॥
खरक्काहिं ढालन के कटि खंड। दरक्काहिं
तालन से ध्वजदंड॥ छरक्काहिं छोनिय छिं
छिन रत्त। बरक्काहिं बाकुल टोप बिघत्त॥
१०२॥ जरक्काहिं इक्काहिं इक्का टक्कोथ

रक्कहिंरुंडलरक्कहिंथक्कि ॥ गरक्कहिंखं
जरपंजरगोदि । जरक्कहिंजोरमहाभटमो
दि ॥ १०३ ॥ प्लवंगन प्रोथसनंकियस्वास
। भनंकियभेरिबलाहकभास ॥ रनंकिय
कोचनरोचनरुंड । रुनंकियअक्खरप
क्खरुंड ॥ १०४ ॥ खनंकियहड्डुनहड्डु
नखग्ग । फनंकियफेनिलसेससमग्ग ॥
छनंकियबानउडाननछूट । ठनंकियघंट
करीकटिकूट ॥ १०५ ॥ इतैंतहँदेवउतैं
सिरदार । हमल्लनभल्लनदेतप्रहार ॥ उभै
रुपटावतसत्तिनसूर । उभैअधिबीरमहा
मगरूर ॥ १०६ ॥ दो० ॥ महाचंडअरु
चंडमनु । दोऊभटजमदास ॥ असुदलगा
हकअंकुरे । रनमारीभवदास ॥ १०७ ॥
छ० प० ॥ देवसिंहकेसुभटहनियसिर

दार सिंहखट। नारव केरन रुप्पि देवस
ङ्किय द्वादसभट। द्विगुन ओरलरि वद्दु तहि
आक्क पहिलैं तिन्ह अहरि॥ अरु मंडलभि
र वाय प्रथम पठयेस्वधर्म परि। डाकिनि
पिसाच्च यह कूक दिय सुसुनि सोर नारव
सुभट। दस मान उग्ग अड्डेकु सह बक्करि
आनि ठड्डे विकट॥ १०८॥ दो॰॥ सुभ
ट अट्ठ निज संटिकैं। देवसिंह हुत दाय॥
नारवके ते दस निगलि। नार दलिय निय
राय॥ १०९॥ ब॰प॰॥ अब उन्नतत
अम्मसउ पर दिन कर आरोहत। चिग्गजं
न दिय वच्चु मुदित सारधि सह मोहत।
देवसिंह सिर दार जय रुराबेय मिले जहँ
॥ विरचत दुव बल बंधितु पुलथलर गजं
ऊँ तहँ। सल्लन खलीन खंच्चिय अरुन। चु

क्किसकतिफनिपतिचकिय। झुक्जाम अधिकसंजोगसुखतदिनचक्कचक्किन तकिय॥ ११०॥ जिमद्रोणाचललेनउ ठ्यो अंजनिसुतलासक। अचवनजिम अंभोधिबिहित आतापिबिनासक। चं डीजिमचंडपरखानमुष्टिकसंकरखन॥ पन्नगपरकिसुपर्णगरबितमहिमकरग्रा सन। इमबैरिसल्लकुलउद्धरनलरिसमीप नारव लियउ। मानौंकिभीमहृदपयसुरारि दुस्सासनउप्परदियउ॥ १११॥ भुजंगप्र यातम्॥ मिलेबन्हिंकेभानुकेबंसमज्झी। दु हूंफोजमैंओजतैंसोजदज्झी॥ दुहूंतोरके जोरतैंभुम्मिदब्बी। इतैंसोमुखामेरिबज्जीअ रब्बी॥ ११२॥ भयोसेसरंकेसकेबंसभिन्नौं। किटीदंतुलीटारिकैंतुंडदिन्नौं॥ कढ्योबा

ल पाताल आतानकोऊ। सर्यो बब्बु बीभ ब्बूद्वैलेय सोऊ ॥ ११३ ॥ इंडीजूटतैं मेरु केकूट इल्ले। चद्वंकोद्द सप्तोद्द केश्रोतचल्ले ॥ भजेलोक स्वर्गादि लोके सभौंनैं। लगोई सकैं लीसके लाभलौंनैं ॥ ११४ ॥ मथेरा गतिं भूतके लागभिन्ने। लखी जुग्गिनी ताल केताल दिन्ने ॥ खिवैं हड्डु पैं खग्गबुल्लैं अखंडैं। मनों फग्ग मैं चच्चरी दंड मंडैं ॥ ११५ ॥ उभै मंडली धावला जोउडावैं। उभै बार की मारमें नां हिंगावैं ॥ इतैं लज्ज बुंदीसकी रोकि दिल्लैं। उतैं ख्याल जे सिंहके जोर खिल्लैं ॥ ११६ ॥ उभैं जेठ के मानके मान डस्से। पैं फौजके ओजके अंस फुग्गे ॥ बकी डाकिनी डक्क डैरैं बजावे। चले भेदके भेद भैद्दों अघावे ॥ ११७ ॥ फिरैं फेकरो चंड फेरंड फु

ल्ले। भिरैंभूतकेरत्तभैंमत्तगुल्ले॥ भ्रमैंगिद्ध
नीचिल्हनीमदभक्खैं। रमैंपंकमैंकंकनौं
संकरक्खैं॥ ११८ ॥ तपैंरंगबाजीनकेतं
गतुट्टैं। छपैंभीरुबिद्रावकैंचावछुट्टैं॥ उल
हीनदीलौंगिरैंकोउछुट्टैं। फिरैंरीसकैंई
सकेसीसफुट्टैं॥ ११९ ॥ कटीकेपताका
उडीअब्भकट्टैं। चमूमेघकेजोरज्योंमोरच
ट्टैं॥ झुकैंझंडबेतंडपैंबातझंपैं। किधौंसैल
केसृंगरव्वज्जूरिकंपैं॥ १२० ॥ छक्यौंसंकु
लीसत्थलेबत्थवाहीं। निध्योपौनपैंछू
सदाहौंनजाहीं॥ गहैंकोदकेहारकेपार
मोदैं। खुरौंबाजिकेघुम्मिकैंभुम्मिखोदैं
॥ १२१ ॥ फिरैंकेगदामारिगैमत्थफोरैं। नि
रैंकैंअमत्तीनकौंरंकचोरैं॥ कटैंहत्थिहो
दनकेउद्दकच्छी। मुरैंतारकीलग्ग...

रमच्छी ॥ १२२ ॥ किते कुप्पि होदेन मैं
भरकुद्दैं । भरोरै निसादीन के कंठ मुद्दैं ॥ भिदै
त्यों गजाजीव के जीव मुल्लै । बढै मोह मैं के
पदथ्थ स्स लुल्लैं ॥ १२३ ॥ नदैं भंभ की कुहि
भेरी नगारे । बढै के बिदारे हहा हाय हारे ॥
चली आगि जंगी त्रिनंगी चमंकी । सिकी
सार संसार की बुद्धि संकी ॥ १२४ ॥ तपैं प
क्खरी बाजि दज्जै तरक्कै । जपै राम के घु
म्मिकै घुम्मि जक्कै ॥ खिरैं हड्ड के रुंड के खं
डखंडी । मनो बुट्टि ओरेन की मेघ मंडी ॥
१२५ ॥ चलैं रोपत्यौं चापजीवा चटक्कैं । न
चै खेचरी भूचरी प्रान नक्कैं ॥ बहैं बेगतें ते
गासन्न हक्कैं । किधौं सक्र को पात मैं ताति
कक्कैं ॥ १२६ ॥ झरैं सुंडि हत्थीन के रुंड रु
कैं । कटैं ग्रीव बाजीन के कंकलु कैं ॥ भ

ईरुंधिनैलोकयकोंधुंधिभारी।छईस्वर्ग
कीसीमलोंभीमछारी॥१२७॥तकैंबीर
कायासश्रायासतंद्रा।छदीरातिसोपे
श्रमानष्टचंद्रा॥सजीदेवत्रैजामकेपु
लसंझा।बनेंभानुकैंबिष्फुरीचंद्रबंझा॥१२८
सबैसंकुलीध्वांतसंग्रामसीमा।भचक्री
फिरीझारश्रंगारभीमा॥दिपैंह्वांकटारी
उडीश्रभ्रदीसी।सुहीचंद्रकोंमोहिनी
रेह्निनीसी॥१२९॥जरैंगैनगिड्डीनके
नैंननक्की।सुहीम्रग्गकीतीनताराथर
क्की।उडैंहीरजोकालिनीइक्कउग्गो।
श्रभाजासश्रंधारपैंमारपुग्गो॥१३०॥
कसैंगैनकेमल्लज्याजोरकड्डे।ग्रहाकारि
श्रादित्यजेच्यारिचड्डे॥छुट्योकाहिसे
सूलउड्डीनछोहैं।सुहीतीनतारीनतेंपु

यसोहैं ॥ १३१ ॥ छुटैं चक्क है बक्क आया
स छाजैं । मूलं भी भजो पंच तारे न भ्राजैं ॥
महाकारिकै पन्च अंगार उड्डैं । मघा जो मनों
लंकि आई हड्डैं ॥ १३२ ॥ जरं ते उडैं का
लिका पालिका पै । तिपुब्बोत्तरा फग्गुनी
रिच्छ वैहै ॥ उडैं ओ जरैं हत्थ लग्गी अं
गारी । अपंचाल जो हस्त नक्षत्र भारी ॥
१३३ ॥ चढैं अब्ब सुत्ती बनैं इक्क चित्रा ।
अबाला चढैं स्वाति इक्कै पवित्रा ॥ धकं
ली कबी अब्बतें अब्भ धावैं । बिसाखा
चो रिच्छ कारवा बनावैं ॥ १३४ ॥ उडैं
त्यों तितेमान केके अंगारे । तिज्यों मित्र
म रिच्छ के आरि तारे ॥ चली कानतें कुंड
ली ओम वीनों । सुनासीर के रिच्छ केते
भलीनों ॥ १३५ ॥ इली बक्क पैं रुद्र संरच्छ

अंगारे। तिज्यों सिंह लंगूलत्यों मूलतारे॥
जरैं अग्गेदंत दो ओर सोंजो। दिपैं पुच्छ आ
लाकसो रिच्छ हैको॥ १३६॥ अंगारी उभै ऋ
क्ष लाहूऊकारी॥ कहेउत्तरा द्वै भपच्चाऊका
री॥ इते में उडैं अख्ब ओरैं अंगारे। जिकोंण
अंजेते भिजित्तील तारे॥ १३७॥ भगो बिंद
कोज्यों कढ्यो भगात्यों भो। मृदंगों लखो जो
धनिष्टा भज्यों भो॥ उडैं चर्मसो चंद्रमाला
अरोहो। सुही छुत्त बारीसकौ रिच्छ सोहो
॥ १३८॥ महारत्ति अर्केन्दुके संगमज्जे।
कुतारेर है छत्तिका अंतछज्जे॥ जिमाप
हिं पुच्छ भई योचिन्नामा। परीपै विलीने स्व
स्मउड्डू दधामा॥ १३९॥ हरी बीर जेसिंह
के धूकढुक्के। कुढूसाल मीसूपें उडुकूक्के।
फिरैं अंगुली अंगुली सिंहफुक्के। भूमी पेम

लासेन भालेन भुल्ले॥ १५०॥ भन्योवैरिस ल्लोलस्स्तेसभायो।जग्योदेवक्कव्यादद्जो ऽतजायो॥नरूजातसैं गातयौंलीलिलि न्नौं।नहीं ईसजञ्चोसुपैसीसदिन्नौं॥१५१ ॥दो॰॥गिरतगिरतनारवगजब।क्रुतभंडि गसिरदार॥देवसिंहकियछकितदेख्यसि उपबीतउतार॥१५२॥ग्रबसुदेवहनि नारवहिं।खायइक्कतसरवग्ग॥धक्योम बलहरवल्लधुर।फिरतमचावतफग्ग॥१५३ ॥ष॰प॰॥ग्रगौंतच्छकउरगवक्करिपयपु च्छबिद्दलिय।ग्रगौंबरबारूदक्कोहिपाव कतिरक्कलिय।ग्रगौंदिनकरग्रसहसुर रिउनरमगलिद्धो॥ग्रगौंछुधितमयदल हरिबिच्छियग्रलविद्धो।ग्रगौंसुदेवग्रा हवग्रडरग्ररुनारवग्रतिउप्फन्यो।जयसिं

हमानभंजकसजवबेतालननरंजकबन्यों ॥
१५४ ॥ निःशाणी ॥ नारदकौंदेवानिगलि
अगैंउफनाया। इतनरउरनृपकेसचिव
चालुकचंपाया॥ प्रेमसिंहहूदेपलटद्दुलदा
वदिखाया। झल्लरिलोंफननंकतेतेगातर
काया ॥ १५५ ॥ सूरोंहूरोंसत्यहैगलबत्थ
मिलाया। खंडेरायखिलारहूरनफग्गरचा
या॥ पातगदाकेपुट्टलीफटकारफबाया।
घायहबक्कैंरंगकेजलजंत्रचलाया॥ १५६॥
खेहगरद्दीमेहलोंअबीरउडाया। फूलकले
जेफिप्फरेफबिफाँकफुलाया॥ गोलीगोट
गुलालकेचकुअरचढाया। डेरोंडिंडिम
डाकिनीडफडक्कबजाया ॥ १५७ ॥ गनि
काज्यौंचिनंजुग्गिनीथेईथरकाया। भैरों
गायकभायकैंआलापउठाया ॥ नाथाउ

तमेमकुनिडररवगरदल्हरिदल्हाया। दोऊ
फत्ताउदयामैं इमकोतुकच्छाया॥ १४८॥
छोदैंतीरन छनियोंबीरनबिरमाया। सेल
घमाकोंसंकुलछाकोंकिछकाया॥ दोऊ
भारतदावजे घनघावघुमाया। जरउरमंत्री
प्रेमकाबकुंवारबचाया॥ १४९॥ खंडेखं
डेराके कुतप्रेमदबाया। चंचलचंडचखं
किकैश्रीबागरकाया॥ सिवकोंदैसिरप्रेम
कागतप्रानगिराया। चालुककौंनरउर
सन्धिवहनियोंरुहकाया॥ १५०॥ देखि
निरंकुसदेवइहिंसाज्झितसमुहाय॥ धर
दोउनघमचक्कदैफलमालफिराया॥ हुहु
नमंसनिहारहींहड्डाहठच्छाया। जिमलगौं
तिमलेचलौंखगपानपचाया॥ १५१॥ कं
कटटोपौंकहिंकैकढिजातच्छचाया। ज्यों

सबनीयरसहुसैंचहितंत्रचलाया ।। योंक्र
सिउन्चलदेवकीरतनिजरचासा रखंडेराय
खिल्हारकौंखग्गोबुलाया ।। १५२ ।।
दो॰ ।। नरउरपालिकोसकिलयहनि । खंडेरा
यकुनाम ।। ठक्कुरिदेवसिंहहुवळ्यो । क्रूरसद
लजयकाम ।। १५३ ।। छ॰प॰ ।। महारामनृ
पभ्रातमूलपहिलैंकृप्रत्त हुयो । कुलतोकेसं
श्रामसिंहक्रूरसदलफळो । फतसिंहबब्ब
वाहचाहितितहिंत्रसचलायो ।। पानीमान
ढुंमससरदचिसमानअप्पनायो । रसका
तरलब्धकातरजपति जाचि द्रमति सम्मुह
वळयो । त्रयतीरनिरखिवप्यरयतदिनाप्प
पयप्रीतिजयजयवळ्यो ।। १५४ ।। इतसं
श्रामअसंकबरनकूरनउतउद्धत । इतहुं
दियजयआसउतसुजैपुरजयइच्छत ।

दोऊजुरिजमदाव घाव रवगघाव धुमाये॥
छकु बिमान अच्छरिन लुब्धि आयासलु
भाये। बीररुद्र उद्दबीभच्छ बलि अति अप्रचि
ज्ञरस उप्पज्यो। नच्चत अनेक रुंडन निर
खि आलच्छ तत्छिन भज्यो॥ १५५ ॥ करभ
न औघा करत उनहिं बेताल उठावत। अंत
तंत्र आरोप बीन लय लीन बजावत। मनु
जन मुंड मृदंग ढोल बज्जत हय ठठ्ठर॥ गो
मुख गति गज सुंडि मच्चत संगीत मनोहर।
गावत पिसाच जुग्गिनि गह कि अहकि सु
सिर आनद्ध तत। करिताल खंड सीसक
किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत॥ १५६
॥ दो० ॥ रन दोऊ या बिधि रचत। साजि
करन रु संग्राम॥ आजि नरु के लै अडर
ताजिन वग्ग तमाम॥ १५७ ॥ कुप्पि हनि

यकूरमकरन। सोलंखबीउरसंगि।। प्रतिभट परप्रतिभटयहक्क। इततैंबढियउसंगि।। १५८।।झारियखगचालुकझपटि।चलह यदपटिअचूक।। कियसिरकूरमकरनको। टोपसहितद्वैटूक।। १५९ ।।हनियाहिल फल्लाकुकम।खिंचियसेरखपाय।।लिय अबगामरसोरपति।घासीरामनिराय।। १६०।।कूरमघासीरामतब।सिरझारिय समसेर।।कहतखिनवहसिरकियउ।सि वनिजमालसुमेर।। १६१।।समरपल्योसं ग्रामकों।देवसिंहहुतदेखि।।कूरमघा सीरामकों।पूगोसम्मुहपेखि।। १६२।। देवसिंहकेउरहुसह।हुलकूरमखगदीन ।।पैठोकटिनागोदपुनि।लरकिपंसुलीतीन।। १६३।।इहिंअंतरदेवकुअतुल।त

ससिरभारियतेग ॥ हनिरसोरपतिकोंकु
लसि। बढ्योबकुरिअतिबेग ॥ १६४ ॥ हरि
यसिंहतौंवरहनी। पुनिजद्दवपरताप ॥ कर
नसिंहबठोरकुल। येअरिपिक्खिअमा
प ॥ लिखितइन्हैंमानकुंलिखे। खगसि
चानरवरकोन ॥ १६५ ॥ आयोदेवसुउ
प्परहि। मलयमांहिंजिमपोन ॥ १६६ ॥
तबहिदेवकेखंधतकि। तौंवरभारियते
ग ॥ तीननइनहनिकैंतऊ। दीरनमोहतबे
ग ॥ १६७ ॥ जैतसुवनकेइमजबर। तीनल
रियलरवारि ॥ अरुखटभटआमेरके। भ
रहलयेरनमारि ॥ १६८ ॥ अबसुदेवअ
तिलोहछकि। पर्योमूरछितप्रान ॥ हूरन
कौंहौंसहिरही। यहंआयुहिबलवान ॥
१६९ ॥ सालमहलसायरमथ्यो। अभय

देवअतिलाग ॥ तोउनलद्धोजयरतन।यॅं हुंबुंदीसअभाग ॥ १७० ॥ सठसालमह करवालबिच। दुस्योरहोभयदाव ॥ बुंदिय दलसछुहबढे। आमेरेउमराव ॥ १७१ ॥ छ० प० ॥ परसुरामपरिहारजोधचालुक अतिजुट्टिय। सॉंवलगोरसजोरसूपचा लुक्यअकुट्टिय। जोरावरनरुबंसलरि यचालुक्यसुरतसह ॥ बलिहड्डाबरवलेस उदयचालुकलियअग्गह। जगमालुह डुउद्धतजुरयो कूरमपथ्वीसिंहसन। सजि मॉंहिंमॉंहिंदुवदलसुभटलग्गोइमरव गानलरन ॥ १७२ ॥ नि:शाणी ॥ दो ऊअोरदुबाहयौंअसिबाहअलक्कैं। डैरूँ डाहलडिंडिमीडक्कॉंडकडक्कैं ॥ सेलभचक्कैं संकुलेअतिघायउबक्कैं। सीसकपाली

संग्रहैं कालीसु किलक्कैं ॥ १७३ ॥ खूब
बजाई खग्गनैं धाराधमच्चक्कैं । कुक्कैं को
डकराहि कैंकमठेसमच्चक्कैं ॥ नीसासा
नासानुगी आसागजतक्कैं । भोगीभोगन
झिलिसक्कैं भुम्मी अकबक्कैं ॥ १७४ ॥
चोहीं दिसरोहीं रुके छोहीं भटछक्कैं । ज
डुजंजीरनजरे बडुगजबक्कैं ॥ ताजीतंगन
तोरिकैं फालोंफररक्कैं । मेह अडंबरमंडती
रज अंबरढक्कैं ॥ १७५ ॥ केसरनधक्कैं
कलह के हरनलक्कैं । गातनसाबैं गिद्धनी
गिलिगृद्दगजक्कैं ॥ केधायकपायककटैं
सायकसकसक्कैं । खंधेरदत्त्हरिवल्हारके
भटसेलभचक्कैं ॥ १७६ ॥ खंडन्तूटक्कैं
खुप्परीलगिलुत्थिललटक्कैं । सेलोंसारसु
मारहै असवारउचक्कैं ॥ धुकिहत्थीधीर

नथरैंजंजीरनजक्कैं।लक्कलक्कैंबरछीलग
तल्लिघायछक्कैं॥ १७७ ॥रीखबदक्कैं
आंगकेकसीसपटक्कैं।केकंकटसंकटकटैं
केतेगतरक्कैं॥सिरफहैंघरउल्लटैंकढिनैं
नफदक्कैं।हयहहैंपयउच्छटैंरथमगगड्क्कैं
॥ १७८ ॥लोहीबूढनिलालकीधाराधक
धक्कैं।कडाकिनिखप्परभरैंकेसाकिनि
छक्कैं॥चंडछपानीचंचलाचढिअब्बाच
मक्कैं।योंअंबरआयुधउडैंजिमनागलट
क्कैं॥ १७९ ॥बीरोंबीरबरब्बरीतरवारि
तरक्कैं।दोहत्थनझारैंदपटिकेबत्थनक
क्कैं॥केन्नंबकूबककलजेंकेढालढमक्कैं।
केजंबुकमंडैंकवलकेकंककिलक्कैं॥
१८०॥केबदीबुल्लैंबिरुदरसबीरउबक्कैं
सूरढरक्कैंसम्मुहीनमहूरथरक्कैं॥तीरट

सम्रों निकवसौं रनधीररटक्कैं ।। केमातरमा
तर कहैं केकातर चक्कैं ।। १८१ ।। सोरस
लक्कैं संकुलीतपिघोरतुपक्कैं । केकंकटग्र
टोपकेकेटोपमन्चक्कैं ।। धायेबद्दलधूमके
छायेछितिढक्कैं । झंपिफरक्कैकेतुकेपयक्क
पिलरक्कैं ।। १८२ ।। यायहबक्कैकेहकैंह
त्थीनहलक्कैं । गीतअलापोंजुग्गिनीलेजा
तलतक्कैं ।। आमसुपेगंधारमैंतीरवेस्वर
तक्कैं । ज्योंनरत्यों हैवरउडैं । ज्योंगेवरजक्कैं
१८३ ।। धाताजगनिम्मानकेअभिमानअ
सक्कैं । पानीखुल्लिपताललौंजिमथालथर
क्कैं ।। अधेअधेहोकुयों बैंडेभटबक्कैं । त्यों
त्योंपयपच्छेलगेंछत्तीधकथक्कैं ।। १८४ ।।
समयघोरसंहारकोइहिंरीतिउवक्कैं । कों
नपिताकोपुत्रयोंनातेसबथक्कैं ।। उब्बीरबे

भैंइक्कसेमनभीतसुरक्कैं। जिमतिमप्यारे
जीवकौंतजनौंननतक्कैं॥ १८५ ॥ कलव
ल्ली बानी कढैंभ्रमिभीरुभटक्कैं। पायभ्भटक्कैं
पग्गाडौंलरिलुत्थिलटक्कैं॥ अंतउलज्झै
आंतसो जिमफंदजरक्कैं। इक्कनटक्कैंइक्क
कौंपरवैरतपट्टक्कैं॥ १८६ ॥ केते होदनकैं
गुरौंखुरतालरदनक्कैं। कंपिकलेजेककढैं
केठड्डरढक्कैं॥ पिट्टिमचक्कैंपसुलीरीढक्
बरक्कैं। केते तूलकृपानकी बातूलबबक्कैं
॥ १८७ ॥ फटैंमुंडनफांकज्यौं दारिमदरर
क्कैं। कंधरफाणीकरकटैं करकोन्चकरक्कैं॥
कट्टे किरतनितंबके जिमकच्छपजक्कैं। क
टिजंघासत्थीकटैं। हत्थी हनिहक्कैं॥ १८८
व्यंजनप्रेतबनातकेगहकातगटक्कैं। केते
ढेणकटाहकैंपयलोहितपक्कैं॥ ढंबीसिंव

ऐंगुलीबहुसेकिबटक्कैं। खाजेपूपीखल्ल
केलाजेकरितक्कैं॥ १८९ ॥खुरमाखंडी
खुप्परीचक्कैंधव्वचक्कैं। भेजाभातभराइ
कैंगिलिजातमाजक्कैं। फैलेघेउरपिष्फ
रनझेलबनिछक्कैं। बुक्काओरबनायकैं
बुक्काभरिहक्कैं॥ १९० ॥ भोजनऐसेसम्
तमानकरिकैतकिलक्कैं। जिहिंदेलासंके
जुरतकेअवक्कैं॥ पाटिबकन्तरदि
क्खैरकैटोपचटक्कैं। फीलछटक्कैंफांदते
खगाहडुरवटक्कैं॥ १९१ ॥ मुल्लेंकेमगामें
दरीपगपंकखुचक्कैं। धुम्मेंखेतरपालले
घनरत्तघुटक्कैं॥ चाहेरत्तचढक्केंकैंवउस
द्विचहक्कैं। कायरक्कैकैकटैंमरिपायमम
॥ १९२ ॥ लगोंअंबरलायसीकेघावुटप
क्कैं। केबटकेबटकेकटैंमटकेनमसक्कैं॥

नाचन चुक्कैंडक्किनीलैडाचडन्नक्कैं। ज्वाल
झरक्कैंकेजरीगजढालढरक्कैं॥ १९३ ॥ बीर
ढढ़न्तरपारकेतीरतसक्कैं। दंतदसक्कैंहीर
लौं छिनगीकिन्चमक्कैं॥ सत्तलोकउप्पर
रिकैंधरसत्तथसक्कैं। परिघ्घहौं दिक्पाल
केकप्पालकसक्कैं॥ १९४ ॥ केतुक्कैं गाफि
लकढेलागिनैनपलक्कैं। सिसकरक्कैं सकु
लीफनपंतिफरक्कैं॥ घायनसत्थैंस्वासके
रीफैनभमक्कैं। छोहगरूरी झोरिकेसिर
फोरिसक्कैं॥ १९५ ॥ मुलिमटक्कैंकेमिर
कलिरवानकटक्कैं। सहिलापयमंजीर
लौंहिंजीरठमक्कैं॥ बंदठहक्कैंजीरपैकलं
दनहक्कैं। पिट्ठिकसक्कैंकच्छपीथरधुजि
थसक्कैं॥ १९६ ॥ बेदंतुलिवाराहकीब
कुबारबरक्कैं। लैकेघायललककलकीस

। दिनि द्विसर क्कें ॥ करजपूतों बल कढ्ढें धूतों परिय क्कें । पत्तस्वर क्कें जुगिनी किरत्तछ्छर क्कें ॥ १९७ ॥ तक्क्यो जिन तैसो तुमुल तें फेरिनु लक्कें । तद्दिन पंचोलास पैं नर नासन थक्कें ॥ यें बुंदी आमेर की अति लाज अटक्कें । हड्डु कूरम हल्लसों हर वल्लन हक्कें ॥ १९८ ॥

दो॰ ॥ इहिं अंतर अवसेस अब । दुवनी दिवसेस ॥ बुंदी भट छिज्जत बढ्यो । विजय कूरमन बेस ॥ १९९ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दाक्षिणायनेन वमराशौ बुधसिंहचरित्रे त्रयस्त्रिंशो ३२ मयूख: ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दो॰ ॥ नृप के दरजत जे निडर । अभयदेव जिम आय ॥ तिलतिल बुंदिय वीर ते । तु

हैं असिन अघाय॥ १॥ तिनमैं इक जैत
हतनय। देवालरन उदार॥ मिंद्धुन तउम्म
रखिभरद। सुत्तो त्रिअसिसमार॥ २॥
ष॰ प॰॥ परयो अभय हरि प्रथम पारि पंच
हिराजाउत। पुनि निजसंग हि परिग लु
गतध्रन देउसुत। हडु देव पुनि हनिय
नरुवसिर दारख तंत्री॥ रिवजि पुनि रव
डेराय मारि नरउर पतिमंत्री। हनि पुनि र
सोर पति वहकुलसि क्रूरमधासीराम कलि
। जहवककबंध तौं वरजुरे बहुंते अरि लीन
बलि॥ ३॥ दो॰॥ रवग्गन द्रुमउमराव
रवट। मारि देव बसि सोह॥ रिपु रुंड नखं
चकरसिक। लरि सुत्तो छकि लोह॥ ४॥
करन कुकम अरुसेर इन। तीनन हनि ब
लतेग॥ नाथाउत सग्रामनर। बिनुसिरन

च्छोरिग ॥ ५ ॥ बद्दलैंहूयहबप्पके। नामी
उदल्यो नाँहिं ॥ सीसच्यरथबुधसिंहकेँ।
देपन्तो दिवमाँहिं ॥ ६ ॥ ष०प० ॥ परसु
रामपरिहार पर्यो चालुकजोधहिं हनि। चा
लुकरूपहिं चक्रिवपर्यो सांवलगोरनम
नि। जोरावरनरुजातसुरत चालुकहनिसु
न्यो। उदयसिंहहनिपरिगहडुबरवतेसधि
रुत्ती। जगभानु हड्डुजुक्कतहन्यो कूरमपृ
थ्वीसिंह कँहँ। लगि माँहिं माँहिं छिज्जे
लरत तोऽन कोपससालतँहँ ॥ ७ ॥ दो०
॥ बुंदीपति कोभट्टबलि। नामसुजन्द्धोराय
॥ ऋातिउद्धत हनि पंचच्यरि। लुद्यो च्यसि
नच्यघाय ॥ ८ ॥ बारहसैइत्यादिबहि।
दुवदिसलरिगुबाह ॥ भटहजार घायल
भये। निडर देवतिननाह ॥ ९ ॥ ष०प०

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंग भयंकर। जुर
मभ्भद्दि ढिग चपल हंकि पहुंचत रबि हैवर।
बिखम रारि हुव बन्ध बुत्थि पत्थरि बट उछ्छट
॥ दुव घोंसोंल रवि दान खेत खोज न भंजे भट
। कुणपन कसानु चिति होम करि लाये डेरन
घायलन। जयपुर नरेस जयसिंह जय बुंदी
पति अनजय बिमन॥ १०॥ दो०॥ बि
त्तो इम आहव बिकट। जित्तो सालम जोर
॥ सो धत अब घायल सुभट। आगम निस
दुहुं ओर॥ ११॥ त्रि असि घायजैत हल
नय। देख्यो घुम्मत देव॥ निज सिविका
पठवाय नृप। आन्यो वह ढिग एव॥ १२॥
सुनत पराजय खग्ग सजि। खिजि तंहहूं भो
परखवास॥ पास वान रघु दुहुंन पुनि। बिर
च्यो लरि दिब बास॥ १३॥ दरजत हृति

लातिल बढ्यो। कहिं अरिन अतिकोप॥
स्वामि हारि सहि नाहि सक्यो। भलभलनापि
तओप॥ २४॥ कछु अनीक बुंदीसको।
अभय संग इम लग्गि॥ यहरनकरि अब
छोरि गिनि। पलट्यो झोहनपग्गि॥ २५॥
समय घोर पर खेसुभट। बद्दले सब नयवाय
॥ धायकु सेके धायलन। सालमद्दल बि
चसोय॥ २६॥ रहे मनुज बुंदीसढिग।
क कसहंस अनुकूल॥ सालमद्दल बिच
नवसहंस। सुखो बहुरि अघमूल॥ २७॥
तहिं अंतर अंधार अति। कुछु निस आ
गनकीन॥ बुंदोपति मति मंद बुध। नौंती
बिमति लवलीन॥ २८॥ ष०प०॥ जिहिं बु
ंदिय हित देवसिंह सैंन नरन मारिय। जि
हिं बुंदिय हित अमरसिंह बर दुर्ग बिथारि

य। जिहिं हित सूरजमल्ल रतन रानौं खिजि
खद्धो॥ जिहिं हित भोज सजेत्र लरि रु स्फूर्ति
जय लद्धो। जिहिं हित जयीस समरस ता
साह जिहां कौं सीस दिय। बुधधव हिं छोरि
जार न विरखय तहिन वह बुंदिय तकिय॥
१९॥ दो०॥ बुंदीपति बहु बिधि बिचारि।
ऐसो भयउ असत्त॥ अर्चविनु हल जिम
अंध की। बरनी जायन बत्त॥ २०॥ कूरम
दल इत बिजय करि। सालम सहित सहा
स॥ अमल किन्न आंमेर को। कुसथल पं
चोलास॥ २१॥ इम कुसथल आनि रु छ
सुव। पाय अनादर उच्च॥ बिलनार न्हिंबि
तायकैं। कोटा कौं किय कुच्च॥ २२॥ सांभ
रदेव सुजेत सुव। आसि न्नय ध्याय लग्ग॥
छुट्टी जानि सु चकीय छिति। सिविका चढि

कुवसंग ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ चढिचल्लियच
कुवान छोरिबुंदियछत्राधम। कोटानिबस
थमंगरोलकियतँहँमुकामक्रम। हीदुव
रानियसंगपुरसुकोटापठवाई ॥ पठयोसा
लकपासकुमरनिजरुयहकहाई। तुमदेव
सिंहजिहिंतिहिंतरहयाहिजिवावकुछ
कभ्भव। जयसिंहजोरपिक्वकुजबरगुमर
तोरमंडलगजब ॥ २४ ॥ दो० ॥ सेवासु
हरीग्रामको। गुज्जरगेदागोत ॥ जिहिंनि
जधावरधाइजुत। पलनोंलियधरिपो
त ॥ २५ ॥ चुंडाउतसीसोदभट। भारत
नामसुभाय ॥ कढतछन्ननृपकुमरके।
सोदियसंगसहाय ॥ २६ ॥ पादाकुल
कम् ॥ धावरभारतसिंहपिधाये। चम्मलि
उत्तीरसजवचलाये ॥ डभ्भियनामबिन्दु

मतिश्रामह । आयउ हाँ बिरञ्चियविश्रामह
॥ २७ ॥ जँहँ दलसिंह हड्डु भोजाउत । जत
नानरक्खेगेह निनयजुत ॥ कुमरउमेदरत्ति
तँहँ कद्वी । प्रातलगियबेधम्ममगपद्दी ॥ २८
॥ गिरिवरघंटियलंघिबेगगति । पकुंच्यो
बालनैरबेधम्मप्रति ॥ देवसिंहसातुलस
सुहद्धुत । जायबधायलयो उच्छवजुत ॥
२९ ॥ इतसालमलगि पिट्ठि उडायउ ।
मंगरोलबुद्धहिं पकुंचायउ ॥ पच्छोमुरि
आयउ बुंदियप्रति । अमलस्वकीयकियउ जय उन्नति ॥ ३० ॥ दिन्नोमुलकदले
लदुहाई । सबकों नृपता अधिकसुहाई
॥ छत्रमहल बिचरहि छत्रधम । कियउ
राजधानी भुगनक्रम ॥ ३१ ॥ खुल्लिगुन
हइम अैसभुलायो । मनकुं राजपीह्निनैं

पायो॥ रुक्खतकरदासिनफकोरनाक
नकफनुनकनकहिंडोरन॥ ३२॥मंगरो
ललैंइतअतिमुद्धह। बिनुसुधिचल्यो
करअजिमनुद्धह॥ स्यंदनसतबारन
बत्तीसह। बहलदलडेराइकबीसह॥ ३३॥
पुनिसतसत्तरिसकटप्रमानह। रुचिर
पालकीतरवतरवानह॥ इत्यादिकब
हुरवतसुहाये। रवरचहीनतत्थाहिर
हवाये॥ ३४॥ अप्पचल्योजितमुद्ह
तितऐसैं। पैनबिचारकोनगृहपैसैं॥
गहनलंघितारजगिरिथंटिय। भूरजन
भंजिबलहिंजरबिंटिय॥ ३५॥राजाइ
मफुंचोप्रमादरह। ग्रामप्रेमपुरहूंमथु
करगढ॥ कछुदिनतत्थरह्योकउलेस
ह। देरवनचह्योरानकोदेसह॥ ३६॥

दो० ॥ असिलजेठतेरसिदिवससिद्धि
योगरबिवार ॥ मधुकरगढलैबुद्धनृप।
मुरिचल्योमेवार ॥ ३७ ॥ कुसलसिंह
भटरानको। भैंसरोरगढधाम॥ तत्थचंम
नीसरिततट। किन्नेजायमुकाम॥ ३८ ॥
पादाकुलकम् ॥ सगताउतभट भैंसरो
रपति। बकुमजकुसलसिंहरचिबिनति
॥ सम्मुहआयनजारिहयकिन्नों। अरुति
हिंनृपकुबाजिइकदिन्नों॥ ३९ ॥ रनि
इक्कपिच्छैंबेधमरहि। चाकुवानगोउद
यनैरचहि ॥ आयरानसंग्रामभनिसुह
। मोहिलानगरीलगसम्मुह॥ ४० ॥ मिल
तहिमुदबुंदीसबढायो। चारनरानप्रतिह
त्थचलायो॥ रानसुहत्थपकरिअनुरत्तो।
मुसकिलायछत्तियभयमत्तो॥ ४१ ॥

इहिं बिधि प्रकट कियो अति अद्दर। अ
रु बिसना कूरम सहित अंतर ॥ प्रबिस्यो पु
नि बुद्ध हिंले पत्तन । महिमा नीप ठई सं
कोचन ॥ ४२ ॥ इति श्री वंशभास्करे
महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमरा
शौ बुधसिंहचरित्रे चतुस्त्रिंशो ३४ मयू
ख: ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ इत कूरम मालव अवनि । सुनि
कुसथल संग्राम ॥ कदन मन्नि निज भटन
को । कुप्पि फिस्यो जय काम ॥ १ ॥ पाद
कुलकम् ॥ मन कुं बांध बिच्छिय चटका
यो । जानि प्रलयभूतेस जगायो ॥ कुअ
कलह जयसिंह मानि किय । कोटा सीस
मुकाम आनि किय ॥ २ ॥ होद लेलस

गहि सालम सुत। चढ्यो राज जिहिं स्वामिध
रम च्युत॥ वा जुत नृ. कूरम उफनाये। स्रम
हुत सरित कुसक तट आये॥ ३ ॥ कुस
कहिगये मिलन कोटापाते। बिरचिय
समय जानि अति बिन्नति॥ हयगज व
सन नजरि करि हडु। तजि नृपथ्थ रम खु
च्यो अधरवडु ॥ ४ ॥ पाज्झटिका ॥
पुनि तिहिं मुकाम कूरम प्रवीन। कमजुत
दलेल अभिषेक कीन॥ कोटेस हत्थ प
हिलै कराय। बलि तिलक हत्थ अपन
बिधाय॥ ५ ॥ करि बहुरि आप करति
लक कुम्भ। सिरधरिय छत्र नगलोलित
लुम्भ॥ पुनि ढोरिय चामर अप्प पानि।
बुंदीस राव राजा बखानि॥ ६ ॥ अरु
कोटापति सौं कहि अठेल। बुंदीस गिनहु

अबयहद्दलेल ॥ जोआवहिं बुंदियसुभ
टछुट्टि । तौताहिनरकवकुलेकुलुट्टि ॥
७ ॥ इयअद्दसमइकं १७८७ अब्दमा
न । बनिबिसदजेठतेरसिबिधान ॥ इम
करिदलेलअभिसेकअंक । समयानुकू
लयकूरमनिसंक ॥ ८ ॥ निजकृष्णकु
मरितनयासुनाम । लांगलिफिलायता
केललाम ॥ मन्त्रिसुदलेलजामातस्वी
य । गजइकअरोहिदोऊगरीय ॥ ९ ॥
कोटेसपटालयकियप्रयान । थिरकुवन्न
थइकाहितरवतथान ॥ सिरुपावबाजि
दुवदुवनवीन । कोटेसदुकुलकीनजोरि
दीन ॥ १० ॥ तदनंतरकूरमतोरतिक्ख
। कोटेसहिंकोदाबिउसिक्ख ॥ उज्जैन
अनुगअवरुअरेस । दैसिक्खरूपठ

येस्वस्वदेस्स॥ ११ ॥ कूरमदलेलज्जुतबि
रचिकुच्च। आयउसुन कुसथलयुमरउअच्च॥
संग्रामभुल्लितहँ लरिबिसमस्त। आलीय
भटन बंटियअत्तरस्त॥ १२ ॥ दो॰ ॥ ह
ढुअभय पहिलैं हरिय। सारसोपपतिस्वा
स ॥ वाकेसुतरतनहिँदियउ। पत्तन पं
चोलास॥ १३ ॥ अजितसिंहकोसुबत
नय। ईसरदापुरईस॥ कुसथलपुरताकौं
दयो। हठि जयसिंहमहीस॥ १४ ॥ साँ
वलदाससुहाडपति। सुतसोभागसना
म॥ वाहि पलोधीपुरदियउ। कूरमनृपज
यकाम॥ १५ ॥ नाहनगरनानेडिकौ।
आहवमृतअचलेस॥ सुवनतास ॥
हरिसिंहकौं वसुग्रामकदियलेस॥ १६ ॥
सुवनबहादुरसिंहकौ। पुरबुन्नानी

॥ दसग्रामकतिहिं हितदये। ढुंढाहरगि
निढाल॥ १७ ॥ घासीरामरसोरपति
। पुनहिं ग्रामकपंच॥ दियभूपतिजयसिं
हसुत। पकुरन्हिनीतिप्रपंच॥ १८ ॥अ
थयसिंहआत्मजप्रथम। नाथूरामहना
म ॥ पलट्योसठरनकेप्रथम। सालमसौं
करिसाम॥ १९ ॥ यातैं नहिं बलबनलि
खउ। मिल्योजानिइनमाँहिं ॥ नाथूरा
महिंमन्त्रिनिज। विश्वास्योगहिबाँहिं॥
२०॥ देवसिंहकीमेदिनी। इमबूंदीक
छवाह॥ देवकुगिनिबुद्धहिंअधन। को
टागयउसचाह॥ २१ ॥ पुनितजिपंचो
लासकौं। कियजयसिंहप्रयान॥ प्रवि
स्योजैपुरनिजनयर। उद्धतविजयअमा
न॥ २२ ॥ सोरठा ॥ स्वीयजननिकेस

त्थ। उदयनेर हीजो अब हि॥ तनया अहि
य तत्थ। कारन ब्याह दलेल के॥ २३॥ दो०
॥ सुत समेत जयसिंह सौं। रानाउतिसु रि
साय॥ बररव छिंयासी माघ बिच। पत्तीपी
हर जाय॥ २४॥ ही तब लैं तत्थहि सुन्यो
। अब तनया आह्वान॥ सालम सुत के
ब्याह कौं। यातैं पठई स्वान॥ २५॥ कूर
म पुनि कहि मुक्कलिय। नहियह सालम
नंद॥ है अब यह बुंदीस सुव। अधिप द
लेल अमंद॥ २६॥ हुकम साह लिख
वायहम। दियइहिं राज्य दिवाय॥ जिहि
र कवन हमरान जुत। सब कछवाह सहा
य॥ २७॥ यातैं कछु न बिचार अब। इहि
ललाट नृप अंक॥ तनयादेहु पठाय तुम
। सोक बिहाय निसंक॥ २८॥ निजरा

नीप्रतिपत्रइम। पठयोकूरमपाल॥ पैकु
मरिलछुरोगमगि। आयसकीनहिहाल॥
२९॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरू
पेदक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रे पंचत्रिंशो ३५ मयूख:॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

दो०॥ इतनृपप्रविस्योउदयपुर। स्वसुर
हवेलीपास॥ औंधेजनकेमहल। उ
तर्योतत्थउदास॥ १॥ मोदकफलभा
जनअमित। पुनिरुप्पयसतपंच॥ मोहि
मानीइमसुक्कलिय। रानविरच्चिहितसंच
॥ २॥ दिणतिअतीवविचारिकैं। इक्क
तकारिउमराव॥ कहियरानबुधसिंहकैं
कुतघरआवनदाव॥ ३॥ पंचनकहि

तवरानमति। विधिकोटेस बुलाय॥
संगरच्चक्कु नृपतीन मिलि। पक्कुमीलेलइ
पाय॥ ४ ॥ पादाकुलकम्॥ पक्कुबिचा
रि इमरानमंत्रपन। कोटापति बुल्लियइ
हिंकारन॥ पुनि गिनि बुड्ढ हिं जनकजा
मिपति। अंतहपुर बुल्लियमंडियमति
॥ ५ ॥ रीतिसुसुनिकूरमपतिरानी। रा
नसहोदरजामिरिसानी॥ जनकजामि
ममभुवाजियतनन। अंतहपुर बुल्लक्कु
जिहिंकारन॥ ६ ॥ बिनुकारन बुल्लहु
नन बुड्ढहिं। कछु मन्नकु कूरमपति कुड्ढहिं
॥ जामि बच्चन सुनि रान सोचि जिय। बुड्ढ
हिं निज अवरोधन बुल्लिय॥ ७ ॥ इहिं
अवरोधगमन अवरोधक्कु। सुनि रुगमन
निंबये। बिनसोधक्कु॥ विषु सिंह पुरबं

सबहाला। भगिनीतासपुनरूपसमाला
८ ॥नामसुभानकुमरिसुभलच्छन। बकुरिसी
लगुन बिनय बिचच्छन॥बच्छरदुवके
पुछ्छबिधाई। संभरपतिसोंतास सगाई॥
॥ ९ ॥संपति बिनपुनि ब्याह सुहायो।
पत्तदूतकुलअग्गापठायो॥मंगियसिक्ख
रानप्रतिसुद्दह। बरजियतदपिरानन्रूप
बुद्दह॥ १० ॥ पकुमीनिजहितमंत्रप्र
चारन। कोटापतिबुल्लियतुमकारन॥
अरुहमभदकु घरनतजिआये। अप्पन
हितहममंत्रउपाये॥ ११ ॥तुमकोंरुचत
आनवसरउपनय। मन्नहुतोंइकबच्चननी
तिमय॥ मसमसालियपानिग्रहमंडकु।
संभुनकोंओरकुतनयाबकु॥ १२ ॥जोसि
यरूचहिंब्याहितिहिंअत्थहि। सज्जकु

भुमिउद्धमहमसत्थहि ॥ संभरकहियहपु
हसमाई । बलिहौरैननहोतबडाई ॥ १३ ॥
हरिहठिरानबरजिपुनिराख्यो । बुद्धयुद्धनय
तउनबिच्चारयो ॥ पुनिकहिरानआलको
टापति । आयेतुमघरहमहिंलज्जअति
॥ १४ ॥ यातैंकछुकल्चलउपायअब । तुम
हतजातकोनकरिहैतब ॥ यहजोरहृद
व्याहिरुद्धुतआवहु । जोबरसच्चिवरक्खि
तिहिंजावहु ॥ १५ ॥ मयारामलअप्प
पुरोहित । अवनिउपायकाजराक्खियह
त ॥ अप्पबिवाहतरखउफनायो । बहि
दिसदक्खिनहुतहिंबलायो ॥ १६ ॥
करहिंनव्याहबिपतिबिचकोऊ । संभर
पतिअच्छोगिनिसोऊ ॥ महीसरित
उत्तारेभमतामन । पठुनियदसदहाल

पराल ॥ १७ ॥ सावन असित सत्त बसु संवत । सद्धिलगन एकादसि संगत ॥ ब्याहिय विष्णुसिंह भगिनी बत । राउल अज बसुतार मनीरत ॥ १८ ॥ बहुविधि राउल हरख बधाये । स्वागत सबन अपुब्ब सधाये । रुन्दि बरात अास्थिल लगि राक्खिय । अरु पुनि हय गज बकुलन अक्खिय ॥ १९ ॥ धरिय बनितत्थहि आधानह । यातें तंहँ रक्खिय रच्छुबानह ॥ अभय सिंह मरुधर नरेस हूत । रहि दिल्ली सनि देस करन क्षित ॥ २० ॥ सूबापति गुज्जर धरस्वामी । आमसहस सत्तरि अनुगामी ॥ अबलख अहमदाबाद नगर पति । सरबु लंद जित्तन करि सम्मति ॥ २१ ॥ सक मुनि बसु अत्थ शशि १७८७ मास सहस कुत

हंकियगुज्जरातपकुमिदिस॥ बिदित
बिजयदसमीसनिबासर। बिंटिग्रहम्मदा
दादलयोबर॥ २२ ॥ जंगकछुकतोपनर
चिजाहिर। बुल्ल्योबकुरिडाकदेबाहिर॥
लखिग्रावतरझोरलरनहित। चाहिरन
सबहंकियप्रसन्नचित॥ २३॥ ऊदाउत
चंपाउतउद्धत। मेरतियाकुंपाउतदृढम
त॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला
उतकरनोतजोरजुत। ॥ २४ ॥ पाताउत
रुकलाउतप्रतिभट। बढिधुहडरानाउत
रनबट॥ भट्टाउतरुमहेचेबिनुभय। रूपा
उतरुसताउतग्रतिरय॥ २५ ॥ गोगाउ
तरुकरमसीउतजँहँ। देवराजरनधीरबं
सितँहँ॥ चाहडदेवउतरुपोकरनाँ खंदा
उतकुमंडिदृढमरनाँ॥ २६ ॥ जोधेरतन

पराल ॥ १७ ॥ सावनअसितसत्तबसु
संवत। सद्धिलगनएकादसिसंगत ॥ ब्या
हियक्षिप्रसिंहभगिनीबत। राउलअज
बसुतारमनीरत ॥ १८ ॥ बहुबिधिराउ
लहररवबधाये। लागलसबनअप्पुह्न
सधाये ॥ रुक्मिबरातआश्विललगिरक्खि
य। अरुपुनिहूजाबहुजनअक्खिय ॥
१९ ॥ धरियबरनितत्थहिआधानहु।
यातैंतइँरक्खियचहुवानहु ॥ अभय
सिंहमरुधरनेरसइत। चहिदिल्लीसनि
देसकरनचित ॥ २० ॥ सूबापतिगुज्जर
धरस्वामी। ग्रामसहसहसतअनुगामी
॥ पवलअहमदाबादनगरपति। सरबु
लंदजिनकरिसम्प्राति ॥ २१ ॥ सकमु
निबसुअरुलहि १७८७ मासऊस ऋुत

हंकियगुज्जरालपद्धुमिदिस॥ बिदित
बिजयदसमीसनिबासर। किंदिअहम्मद
वादलयोबर॥ २२ ॥जंगकछुकतेपनर
चिजाहिर।तुल्योबद्धुरिडाकदैबाहिर॥
लरिबेआवतदौरलरनहित।चाहिरन
सबहंकियप्रसन्नचित॥ २३॥ऊदाउत
चंपाउतउद्धत।मेरतियाकुंपाउतदृढम
त॥जैताउतपुनिजैतमालउत।बल्हा
उतकरनोतजोरजुत।॥ २४ ॥पाताउत
रुकलाउतप्रतिभट।बढिधूहडरालाउत
रनबट॥भद्राउतरुमहेचेबिनुभय।रूपा
उतरुसताउतअतिरय॥ २५ ॥गोगाउ
तरुकरमसीउतजंहं।देवराजरनधीरबं
सितंहं॥चाहडदेवउतरुपोकरनांचंदा
वतद्धमंडिहृढमरनां॥ २६ ॥जोधेरतन

केसरीकुलभव। धंधलअरुसिंघलअरि
वन्दव॥भूपतिउतरतनोत बडेभर। मंड
नउतचुंडाउतअसिकर॥ २७ ॥बरसिं
होतनराउतअतिबल। सोहडरायपा
लउतभटनल॥रनमल्लोतमंडलेरतरत
।मुदितभारमल्लोतलरनमत॥ २८ ॥ब
ङ्करिचंद्रसेनोतमहाबल। इत्यादिकसंजु
रिन्वितउज्जल॥नृपअभमल्लहिंहत्यादि
रवावत। लगेलरनमुच्छनकरलावत॥
२९ ॥सरबुलंदसूरजकरसकिवय। निड
रमिच्छउतर्तेंहयनकिवय॥श्राकुलभो
गसहंसअकुलौंनें। डगमगिपब्बयढ्ढं
लौंनें॥ ३० ॥घनेघुमंड्डवगाइचिजोरन।
सारिमनिमिमिच्छनरक्षोरन॥ किलकपे
तङ्गकिनिमनकिन्नी। लास्यध्वनितेपर

सद्विनलिनी ॥ ३१ ॥ डिगिबांचिनसिंधुन
जलडोह्यो । अरुनअक्षसमकुंअवरोह्यो ॥
कटिकंकट निकसतअपुकेसें । जिम्गगन
कंचुकतजिजेसें ॥ ३२ ॥ कटिकटिकुंभति
रतसोनितकिम । जलअगाधघटउडुप
पृथुलजिम ॥ अलीइमामहोतउतआ
रव । इतहरिअच्युतभूतनाथभव ॥ ३३ ॥
भूत किलकिकुंहयभरकावत । गोकिंचो
रलरिखिवालचलावत ॥ कुंभटचरनन
काबनउरमत । मूढविविसभोगनजिमभ्रम
त ॥ ३४ ॥ फट्टितकेतुडुभनफहरावत ।
रंभातरुकिआँढ्लहरावत ॥ गुटिकाअ
मतरीतियहरकिवय । मनहुंकुहसरथा
सियमक्रिवय ॥ ३५ ॥ निकसतगोदकं
पालहितुडम । मंजुमदनमधुजालहित

जिम ॥ बढ्ढुआयुधआयुधपर बज्जत । लखि रुक्खरिदेवालयलज्जत ॥ ३६ ॥ इमरनकोरि रद्धोरबढेअति । मिच्छन हनतधन्वपति सम्मति ॥ सरबुलंदलखिप्रबलभज्योसठ । हास्योतजिगुजरातसहितसठ ॥ ३७ ॥ बलिदिल्लीपतिअमल बढायो । इमम रु नृपजितिरनआयो ॥ मुदितभयोसुनि साहप्रकुम्माद । सरबुलंददकिवनगयदु म्माद ॥ ३८ ॥ बुंदियपतिइतस्वसुरगेहर हि । दुलहहनि तत्थहि रकिवगमनचहि ॥ कत्तियमासकुछ्छअप्पुनकिय । दायज बसुबकुबिधिराउलदिय ॥ ३९ ॥ दंति य गड्डू रावसुदत्तह । मासरहतबारहमयु मत्तह । नृपकेइमपालनवहनायो । अप्रै चतनिगडजोरउ कनायो ॥ ४० ॥ यह

सुनिरानलयोवहहत्थी।सहंसभैजिरुप्प
यंदरसत्थी॥इतकोटेसउदैपुरआयउ।अ
धिपरानसहमंत्रउपायउ॥ ४१॥मथाराम
विप्राधमतत्थहि।बुल्ल्योकुबच्चकुनयअ
घसत्थहि॥कहारानपुच्छतकोटेसहिं।
दव्योइनपहिलैंनृपदेसहिं॥ ४२ ॥इ
नकीलखिअवरनमनचल्ल्यो।तबकृइ
ननसुच्छकरघल्ल्यो॥कुगरलिरिदजय
सिंहकथितकिय।इनाहिंपुब्बिलैहोदि
मबुंदिय॥ ४३ ॥यहसुनिमहारावधरि
उक्क्यो।रानकुदिअधमपररुक्क्यो॥इम
नृपकाजबिगारिबिप्रयहँ।पकुच्योम
गहिमध्यसभरपहँ॥ ४४॥इमपुनिबु
द्धउदैपुरआयो।बिपतिजोरसबगुभर
बिहायो।सम्मुहआयरानहितसज्जिय

।लैं भ्रबिस्यो पत्तन चहि लज्जिय ॥ ४५ ॥
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूस्वरूपे दक्षि
णायने नवमराशौ कुम्भसिंहचरित्रे षट्त्रिं
शो मयूखः ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀
॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
म०प० ॥ रानन गार बिच्चरहिय हड्डु भूपति
इक हायन। सरसत रुभ्भय नित्य सान पकुंभ।
तसान मन। सभा समय सम्भर कुजात प कुसल
निकट जब ॥ अदद रकि वक्ख ति अग्ग घत
रवत तजि हेल रानत व। लै जात भ्रायस
मुहसर लइक्को सन बैठत उभय। समर
हिं भ्रन्नि पाकुल समुद बिन्नु बुंदिय गार
त बिनय ॥ १ ॥ पादाकुलकम् ॥ कुंभ पु
रोहित सन्न ब्रिभास्यो। नृपति रान हित तर

पिनटारहै॥अरुकितयपुनिबुंदियजनजे
हैं।तुमहिंसुपजावनननबदेहैं॥ २ ॥अब
निदेनकूरमप्रतिअक्खहिं।रानॉपनकोरा
छनरक्खहिं॥जबस्वाधीनराज्यनिजओर
हिं।मुरवसहनिंदहमकुलबसोवहिं॥ ३ ॥
तोलों रवरचस्वकीयमानतत।छिनप्रतिद
सपंचसत पहुंचत॥कहिनृपकुम्मरबुश
मदिकेहो।लगि हमरेहितबुंदियलैहो॥
४॥अनयरावरेतैंकूरमपति।समसुवजोदे
हैंनटेकमति॥तोरनकरिलैहो कितताछि
न।प्रीतितथाकरिहोपरपाछिन॥ ५ ॥
सुनियहरानसुजाननीतिसम।कहियअ
जदिल्लीकरकूरम॥अकबरपुरअजमेर
अवंतिय।सूबातीनअधीनसाहकिय
॥ ६ ॥ मित्रखानदौराजिहिंमन्नत।सिन।

नीजुजवनपतिसम्मत॥ साहकुजासक
थितसिरधारत। बलिअवरनजिहिंसम
नबिन्धारत॥ ७ ॥सुनिजिनबनिबनि
रखसुरसालप्रिय। अकबरतैंअबलौंधन
संचिय॥ अरुबहुमुलकअप्पननऐ
सो।जाससचिवराजामल्लजैसो॥ ८॥
रायरूपारामकुवकीलरत।जासकथित
जवनेसनउप्पत॥ गृहजाकेदिल्लियउ
मीरान।पहुंचतकरजोरतकिंकरपन॥
॥९॥ जिनकोअरजसाहप्रतिजंपत।
वसुअधिकारमिलततिनकोंवत॥ द्वैद्वै
सतसिविकाजिहिंद्वारह।वढिपंतिनढ
किजातबजारह ॥१०॥ बैठकजाहिरव
सखिलबनिय।रमतसाहसतरंजकुलासि
हिय॥ जिनकेघरऐसेवकीलजन।धिरन

उथप्पिस्वामिजयथप्पन॥ ११॥जंगबिर
चितिनतैंकोजित्तहिं। बिनुहितकाहि
दिगारहिदित्तहिं॥इहिंकारनतिनतैंरन
उच्चितन। अवरउपायरचहिंबकुअप्पन
॥ १२ ॥ सेदउपायकेकुनहिंसंभव।लगैं
नहिंबिनुसमयजासलव॥यातैंसामदा
नअनुसरिहैं।कूरमसैंतुमसौंहितकरि
हैं॥ १३ ॥ बिनुनयसमयहोतनहिंचाही
।समरटेकनाहकतुमसाही॥निजहठजो
ममराज्यनसैहो।असतुमकुकोफलतब
लैहो॥ १४ ॥ सञ्चकहतनृपमुक्करिसाथे
।चलनहुकमसत्थहिंपकुंचायो॥हेसब
अनुगमूछहथजोरे।नचलकुइमकाहू
ननिहोरे॥ १५ ॥सकबिक्रमअप्टदृढब
सुसत्रह१७८८ ।बाकुलमासबुधाक

रिबिग्रह ॥ अनरिचिचल्यो संभर अज्ञानी
। करजात रह्यो रानहित बानी ॥ १६ ॥ जद
पिसुन्यो नरान तउ सज्जन। गजभू खनसि
रूपाव बाजिगन ॥ पठये मित दस तूर बुद्ध
आलि । इतआ कियहम करज दार अलि ॥
१७ ॥ इनके दम्भ पठावकु याते । लनिकल
देहमकरज लियाते ॥ तिनकी तीस सहंस
मुद्रा तब । जानि जिपत्ति रान पठई जब ॥
१८ ॥ करज भारि तिन करिकउ लेसह । बु
द्धदलियपसुमतिनर बेसह ॥ द्रुतबाकुलमे
चकचउत्थि दिन । आयउ चलि श्री द्वार
कहुइन ॥ १९ ॥ इकरुत दम्भ भेट हरिअपि
य । थांवलगामसुकामसुथप्पिय ॥ बसित
त्तरुदुवमास बिताये । लंघन पुनि चालीस
लगाये ॥ २० ॥ अधिक अफीम बढ्यो नृ

पञ्रगौं। पैसेत्रिमिल नित्य हितपगौं। एनि
तिम मद्यश्रवद्यकुपीवहिं। जड बिनु भूख
आयुबल जीवहिं॥ २१॥ असनलेतसत्त
मश्रट्ठम दिन। तुच्छबकुत सो पैद पंचौतिन
॥ इहिंबिधिश्रन्नश्ररुचिपरश्राये। लंघन
तबचालीस लगाये॥ २२॥ तबहिश्रफीम
सद्यकुवत्यागे। लैपुनिपत्थ्यलोभमुद लागे॥
बिरचिकुच्छवहग्रामबिहायो। लुहनरानां
मुलकलगायो॥ २३॥ सठनृपनहिंपरि
करसमुझायो। बकुबकुलूटप्रपंचबनायो॥
रानकुसुनिगिनिसुद्धरिसानों। बुद्धकुकुड
लनहत्यलिकानों॥ २४॥ दुर्बसिलान
कुंपासणिकिन्ने। दुवनयपुरगंधेरकुदिन्ने
पथइहिंरुक्कतचलतप्रमत्तो। पुरबेयम
ससुरालयपत्तो॥ २५॥ बकुवसुसनाह

कलितसंवत १७८८। गउर च्चउत्थिस
हरणमासगत ॥ मंजुगिन्यो न जुद्धकरिमर
नौं। ससुर च्चन्नजोदनलियसरनौं ॥ २६॥
परदुख सदय हृदय देवकु पुनि। सालक
लिखबुद्धहिं आवत सुनि॥ अभिमुखजा
यमिलाल यच्चानैं। बिनय प्रीति करजोरि
बखानैं॥ २७॥ बुद्धमुकख्य महलनब
सवाये। अप्पलाल बारिय कढि आये॥
रावत सुराज बाग खिलराकिवय। अब
कैसैं निमिहै कुनच्च किवय॥ २८॥ लुं
डिय लोक निचार बिहीनौं। कमलुद्दन
दस्यहिं अति कीनौं॥ रावत देवा तिनहिं
लजाये। मैन रहे त बुग्गहन पठाये॥ २९
॥ सद्कुद्द कुसुनैसौ किन राकिवय। उपा
लंभ देवहि प्रति च्चा किवय॥ धरनि बिप

त्तिलोकममधारत। बलिश्रत्थहिश्रा
धारबिचारत ॥ ३० ॥ लुहनरखानदेकु
तुमसालक। क्योंमोरनपकरातकपाल
क ॥ जोसुनिदेवतबद्धकरजोरे। माफक
रकुश्रोयुनकहिमोरे ॥ ३१ ॥ श्रतिस
हनतदेवश्रबलीनों। जुद्धहितुबनिश्र
धिकश्रधीनों ॥ पंचहजारिग्रामदियपं
चक। रुप्पयश्रट्ठनित्यसुनिरंचक ॥ ३२
॥ निबहनकोंयहदेवनिवेदिय। जडसंभर
तोउनथप्पतजिय ॥ करजकुकोरिरक्खें
नहिकोऊ। समुझीतुच्छमूढनृपसोऊ ॥
३२ ॥ श्रग्गत्रिलखहजारश्रमानरहेंजुग
तेदम्मकर। जसाहिभारह ॥ बसुसतनित्य
दयेइकबच्छर। तीससंहसहयहितउबार
तर ॥ ३४ ॥ बिमदेवजिहिंकरजबिलायो।

।तोऊनम बगृहनजरिबनायो।।होसबहे
पुरु थननूप हड्डा।बिरचिय तदपि देवाहित
बड्डा ।। ३५ ।। मनोहरम् ।।बुंदीके बिनांम
तिविड्ठारिदै बैठेजे तिन्हें रारिवबड्डबेरन
बिपत्ति बिढलायोलों।याहीतें रिसायरान
श्रीनिलीनों बेधमकहायोनों हिर करवड्ड
तथापिबासतायोनों।।पाधपावलीनकी
रूपैसनकीपनद्दकिलपैमजबूतीमानिबन
पुरमायोनों।चौंडासौंसपूतबप्परा उलकेबं
सकोऊपसचुरधेरिधीरदेवासोदिखायो
लों।। ३६ ।। इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्व
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
त्रे सप्तत्रिंशो ३७ मयूख: ।। ।।
।। ० ।। ० ।। ० ।।
।। ० ।। ० ।। ० ।।

पादाकुलकम्॥ याहिबरसदुरभिच्छभ
योअति। नहितनअन्नधनीकुधरेनति॥
इकरुप्पयउपधान्यजतनइत। गुल्लकियो
हैसतटकेलसित॥ १॥ अबनृपतजि
जनजानलगेइम। तरुअपत्रअफलहिं
पच्छियतिम॥ मनहुंतालशुकैंजलम
च्छे। इमनहिंयाथेइसातकअच्छे॥ २॥
यादिगजादिरखतअबआये। मगरोल
रकरव्योसुमगायो॥ नृपकोटसतेकुपठ
योनन। खानखरचदेजाकुकह्योघन॥
३॥ इमठांठांबकुबिभवरह्योअब। सं
भरकोंनिंदतजिहानसब॥ पैअफीम
आसवतजिपक्के। छुधाबढायअस
नबकुछके॥ ४॥ अमगाहितजिकोटा
पतिआकृति। आइनिजपीहरजुंढाव

लि॥ कोटापुरहिरहीकछबाहिय। अबसु
नृपकुबेघमअवगाहिय॥ ५ ॥जेतसु
वनउतरेवजंगजय। गिनिकुद्धहिंअधन
रुकोटागय॥ तत्थहिघायअच्छकुवत
त्तो। पुनिकोटेससभावहपत्तो॥ ६ ॥म
हाराउतबकहियदर्पमत। सारधलकव
पटातुमरोगत॥ हमदुवलकवपटाअब
देहैं। अरुअच्छवतुमरेघरऐहैं॥ अब
कुंदीसनामकुनअकवकु। रीतिअदब
कुगुनौंयहँरक्खवकु॥ यहैसुनतदेवारिस
आयो। दरदीकरजिमपुच्छदजायो॥
८॥ उद्धोमटभुजको किअचानक। इत
उलपरिगसभाबिचओदक॥ अरुउत्त
रबुल्यो असंकउर। पतिकूरमअग्गैंदि
ल्लिपुर॥ ९॥ बुद्धरुभीमउभयाकियइ

क्रुत। त्रय नृप इक्क थाल जिम्मिय तल॥
हे मम जनक जैत तँहँ हाजरि। कह्यो तिन
हि क्रूरम पति हित करि॥ १०॥ सुभट जैत
तुम मिलहु भीमसेन। अब न बिरोध साम
हुव अप्पन॥ सुनि भीम अग्र यों कु र
किन्नों। हुत हि जैत उत्तर तब दिन्नों॥ ११॥
हहुन की जननी रु अय हिय। भामिनि
गिनि हुंदिय तैं भुग्गिय॥ यातें स्वामि ह
राम अधम अलि। मिलहिं तो हि किमध
रम स्वच्छमति॥ १२॥ कहि इम दिय उठ
लि ताको कर। वाके सुत हिँ कहत इम अ
कवर॥ अप्पन स्वामि तो हिन सुहावहिं।
तो न हम दिंतव आश्रय भावहिं॥ १३॥
देवन इम परिख द बिच्च दह्यो। फिरि धसि
उठत घाय इक फह्यो॥ महाराव क रजो रि

नायो। यहमन्यो न मुरारिउत्तम्भायो॥
९४॥ फटतघायम्भंतकगदफेलिय।कति
कमास बिन्चिंत्रेदिव बासकिय॥इमभट
देवधरअम्अवधार्यो। बिपति सहिरुध
नम्भलयबिडार्यो॥ ९५॥ कलिजुगका
लभयोय ह भीरवम। हैंइद जीह कहैं कोलें
दम॥ होवत कुलसुकुकल्महरामी। तिक
स्यो बैरि सल्लकुलनामी॥ १६॥बुधइत
गरभजानिनवलाल। ब्याहिजुरकिय
कुंसवहाल॥ ताकेउदरकुमरउद्भभकुव
।धरियनामजिहिंचंद्रसिंहधुव॥ ९७॥
मधुगतम्भमासनन्दबसु १७८७ संबत।सा
सुलयरहि बालयहभोबत॥इहिंम्भसु
चारियमासम्भठारहि।देधमनायसक्यो
हकवारहि॥ ९८॥बुंडाउतिरानियइ

तबेयम। गर्भधस्योसुभयोपुनिउद्गम॥
संबतमान अंकवसु सत्रह १७८९। अ
रुसितबकुलमालचंद्र अह॥ १९॥
भूरुबासर इसकुंवकुमारभव। दीपसिंह
नामकअरिदलदव॥ इतजैपुरसाह
रअधिकाई। बलिजयसिंहसुता
बुलाई॥ २०॥ इच्छाकुमारिनामअ
तिअनगाह। अभयसिंहमरुपतिसाली
यह॥ माघदबहिनिबडीलाहिमेलहिं
।दईसबिधिपरिनायदलेलहिं॥ २१॥
तबकूरमघर ब्याह अनन्तर। बसिजामा
तसुताइकबन्तर॥ अंकअष्टसत्रह
१७८९ सकआगम। सिकवपायजय
सिंहजनकसम॥ २२॥ आइआवबुं
दियकछवाही। बाहरराहियहदेकनिका

ही।। स्वसुर स्वकीय पापमति सालम। छ
ऋम महलन रहत जु छत्राधम।। २३।।जोयह
राज्य हत्थ निज जानैं। काहू कोन कथित उ
र आनैं।।सुततिय जानि रुमानि स्वसुर सु
ह। सोतिहिं बेरगो कुनहि सम्मुह।। २४।।
रू छवा हीइ हिं अनरवरिसाई। क्रूरस्वसुर प्र
तिय है कहाई।। मैं बुध सिंह तनय की नारी।
किंकर तुमम म भारिवल कारी।। २५।।स्व
सुरलखि सम्मुह सर नायउ। करजोरि नृ पुनि
विनय कहायउ।।नृप महलन रहिकैं अति
उन्नति। भुग्गत राज्य अंध बनि भूपति।।
२६।।बसहु छोरि महलन पुर बाहिर।जो सु
रवन हत हो हु कढि जाहिर।। चविइमता
हि निकारन चाही। बहुसि पाह पठगे कछ
नाही।। २७।।सुनि सालम निकस्यो अ

तिसोच्चन। निजनसहितकरजोरिअधि
कनत।।जान्योंअबहिप्रतिष्ठाजैहैं।कछु
वाहीइच्छितअबकैहैं।। २८ ।।इमबिचा
रिपुरबाहिरआयो। बलितत्थहिनिजनि
लयबनायो।।स्ववसिराज्यइमकरिहठसा
हिय। अबमहलनप्रबिसीकछुवाहिय।
२९ ।।प्रथमहिफलसालमयहपायो।अ
बनवनवपैहैंअकुलायो।।इतमरुपति
गुजरातबिजयकरि।धरमारवपुनिआ
यगरबधरि।। ३०।।बुद्धउदंतसुनिरुलि
खिकग्गर।पुरदेधमपठ्येञ्चरसत्वर।।देध
मरहेमरुपच्चरमासन।तउनजबाबलिख्यो
जड़तासन।। ३१ ।।इमदसबेरमरुपदल
आयउ।पैइकदलनबुद्धसनपायउ।।
यहसुनिभोमरुभूपउदासह।रहिइतबे

अस्तरूपकु निरासह॥ ३२ ॥ बुद्धिबिगरि
उदबेगबढ्यो अति। रहनलग्यो एकांत
अंदरपति ॥ स्त्रीयजनकु नहिनिकटसुहा
वहिं। कामपरहिं तबटेरि बुलावहिं ॥
३३ ॥ इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरू
पे दक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रेऽष्टत्रिंशो ३८ मयूख: ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
पादाकुलकम् ॥ इतजयसिंहप्रतापबढ्यो
अति। अधिलबहैं सु करें दिल्लियपति
॥ अदबकु लिखैं दिसिससाहअब। दया
रामहिं लिख्योकु जोनकब ॥ १ ॥ जंहं रा
जाधिराजउपपदजुत। लिखनराजराजें
द्रलग्योकुत ॥ तिमतिमबढ्योसबनसि

रकूरम। तहाँ अवर कोउन ढुव तासम॥ २॥ कियरुप्पयकोसनको बिनधन। सह सन गजहयन बतुरमंदुरन॥ जोनहिसाहवजीरकोरसकैं। सोजयसिंहकरैंबलसंभरि॥ ३॥ स्मृतिनसुधायन्यायबिसतारैं। बिप्रन अगधबिसेसबढारैं॥ बाहिरइमघरमा तुगदीसैं। पैसुरज्योनपिष्टकहँपीसैं॥ ४॥ जोनिजधरमरच्यो कूरमहिय। क्यों तब कर्मअधर्मइते किय॥ हन्यों प्रथम सिवसिंहस्वीयसुत। जोकुलासजननी निजतियजुत॥ ५॥ पुनिजननी निज स्वर्गपठाई। भटवर बिजयसिंह बलिभाई॥ पुनिसंग्रामरामपुरस्वामी। हन्यो दगार चिहोयहरामी॥ सत्त अट्ठ सत्रह १७८७ मितसंबत। तिरहुलनरबसाहरुप्पय तन

॥ ६ ॥ लैअसुकितवमिल्योमरहट्टन। सो
सुरत्रान अबलग अधर्म सन॥ साहतास बि
स्वास हिर कैवें। यह तउ अंनदक्खिनिन अ
केवें॥ ७ ॥ ऐसौ लखि अक्खियनिंदा
हम। अरु अनच्छी क्रुकरी बकुक्रम ॥ अबन
वबसु सत्रह मित संवत। आयो पुनि मालव
थर उद्धत॥ ८ ॥ ष०प० ॥ अबहायन
नवअट्ठ ८९ बिसद बाहुल दर्पक दिन
आयउ पुर उज्जैनि अवनि दब्बत क्रूरमइ
न। सल्लल करव साहसन व्याजरुप्पय मग्गा
यबलि ॥ मरहट्टन कियमेल कियन हिल
साह मंडिकलि। दललि रिवयरान संग्रा
मम्रति तुमकु सेन भेजकु अतुल। यह आ
यसुमिदब्बन समय लिलि मरहट्टन वलाजे
यल॥ ९ ॥ दो० ॥ सन नरान संग्रामय

ह। दलपठयोसुदराज॥ सबनसिरोमनि
निजसचिव। धाइल्यातनगराज॥ १० ॥
बिनुसादडिअरुबेदला। सर्वसुभटदियसं
ग॥ तेदसउरआयेत्वरित। अदनीलो
भउभंग ॥ ११ ॥ दसउरतैंपुनिकुंवकरि
आयउपुरउज्जैन॥ कूरमसौंहितमिल
नकरि। संगरहियसबसैन॥ १२ ॥ष॰
प॰ ॥ बुल्ल्योतबनगराजदेवसिंहकुबेघ
मपति। तबहिंदेवकरिकुंवचल्योसह्स
त्यवेगगति। तबकुमंदबुंदीसचल्योनिज
सालकसंगहि॥ सोधीयहकुम्भसनमि
लिऊलैहैंस्वकीयमहि। जयसिंहब्याहि
तनयाजुपैपहदलेलहिंथप्पिदिय। पि
क्खकुतथापिजड़बुद्धमतिलैनजातनि
जबसुमतिय॥ १३ ॥ दो॰ ॥ देवसिंह

निजजामिपहिं। आतदेखिअकुलाय॥
नगरसल्लअरिनाहप्रति। लिखिदलअग्ग
पठाय॥ १४॥ जामिपआवतसंगमम। नि
जहठअन्नतनांहिं॥ क्रूरमकोआसयलि
खहु। यातेंइमथितआंहिं॥ १५॥ सुसु
निकेसरीसिंहजब। नगरसल्लअरिनाह॥
पुच्छियपहजयसिंहप्रति। कहियकुप्पिक
छवाह॥ १६॥ तुमसुरानरानघरसुकव्व
भट। अरुछन्नैंनहिंयेकु॥ चिंतिसुबत्तर
हकुचुप। अवननसुंदनदेकु॥ १७॥ सुसु
निसल्लअरिपतिलिखिय। देवसिंहप्रतिप
त्त॥ आवनदेकुनबुंद्धयहिं। रसनहिंकुम्म
जित्त॥ १८॥ ष० प०॥ देवसिंहतबय
हवृत्तंतबुधसिंहतुनिवेदिय। तबकुअंधबुं
दीसनाहिंपच्छोप्रयानकिय। यहलिखि

देवउदारकुंचबिरचियबेधमप्रति ॥ ताहिबि
गारनलबहिमुख्योबुधसिंहहीनमति । यह
सुनतरानसंग्रामधकिदेवहिंतुबेधमलई
। सह्लतबिमूढजामीससुखसालकबिचथ
हगतिभई ॥ १९ ॥ दो० ॥ नगरफुरक्काबा
दपति । नामभुहुम्मदखिन्ह ॥ कूरमपति
वासौं कियउ । अगबइररनइन्ह ॥ २०
अबबुंदियआमेरकैं । जवनवहेलखिजु
द्ध ॥ मलकगगरभेजतभयो । बेधमपुरप्रति
बुद्ध ॥ २१ ॥ सहजरामरवत्रियसचिव । ता
कोलेदलतत्त ॥ बेधमआयरुबुद्धसौं । मि
ल्योलख्योसुप्रमत्त ॥ २२ ॥ वहतआपि
बहुदिनरह्यो । मंग्योदलसुमिल्योन ॥ है
उदासनिजगेहतब । गोरवत्रियकरिगोन ॥
२३ ॥ सकनमनवसग्रह १७९० समय । हा

दसिमाघबलन्द ॥ तजियरानसंग्रामत
नु। दाजसमयनयदन्द ॥ २४ ॥ तबहि
उदैपुरपहलहि। कुवरानौंजगतेस।बुद्ध
सुइतदेवहिँबिपति। अदयदईजडएस॥
२५ ॥ सकनवेनभसत्रहसमय१७९०।अ
चफग्गुनअवदात॥ मंगलबारचउत्थि
मिति। प्रकटतसमयप्रभात॥ २६ ॥ बुंड
उतिरानीजठर। रहिनवमासप्रमान॥ दु
हिताकुवबुंदीसके। दीपकुमरिअभिधा
न॥ २७ ॥ ॥ इतिश्रीवंशभास्करे
महाचंपूकेउत्तरायणे नवमराशौ
बुधसिंहचरित्रे एकोनचत्वारिंशो ३९
मयूख: ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

ष॰प॰॥इतयह छड्ड प्रताप सिंहसालम्म
जिहोसुव। अनुजहिं गिनिअवनीसभू
पसम्मालि कुसथल भुव। आयोतव नृपथा
हिनोंहिं अद्दरिमुहलायो॥ अगतिहिंको
टाआयरानि गति मंत्र रचायो। विसवासि
ताहि तिय कुड्डकी कछ्वाहीयह मंत्रकिय
। हमदेत स्वरचतुस जाय हठि बल दक्खिन
आनहु बलिय ॥ १ ॥ तबप्रताप हरुति
रवसित्थो दक्खिनमरहट्टन। लखिश्री
मंत अलोक अतुल आरंभ मुदितमन। बा
बा पंडितरामचंद्र संध्यारायं जिय॥ पु
ण्यपत्तिकेपास वान बलमैं पतिए किय।
इन तैं कुअधिक श्रीमंत केदल मालिक
उमरावदुव। आनंदराव पर मार अरु
कलकर मावमलार दुव॥ २ ॥ दो॰ ॥

इनच्यारिन दलमुख्य लिखि। मिलि
अतापश्रतिमोद॥ दम्म लक्ख खटदैन
किय। बुंदिय पर सबिनोद॥ ३ ॥ इतकू
रमकछु कज्ज बसि। मालवअवनि बिहा
य॥ सालमसुवन दलेलसह। जैपुर पत्तो
जाय॥ ४ ॥ सरहद्दन परताप मिलि। दे
खटलक्खसु दम्म॥ दल दुस्सह लायो ल
रन। करनल बुंदिय कम्म॥ ५॥ सकइक
नवसन्नह समय १७९१। अप्पारु माधवमा
स॥ बुंदी बिंटिय आनिकैं। गहत अरल
तमश्रास॥ ६॥ भुजंगप्रयातम्॥ जद्दे
दकिब्लीत्यों लगे नैरबुंदी। खुरीं पक्खरों
धुम्मि है धुम्मि खुंदी॥ क्रगीञ्चालिकादी
पकीमालिकासी। द्रुगीमालिकाकालि
कालालिकासी॥ ७॥ हद्यो घोनइंडेन

मैं गोनहँक्यो। बढ्योघोरअंधारसंसारहूं
क्यो॥चलैलोलगोलाफगैंअगिफारैं। दु
बाजूछिकैंकोटदैदैदरारैं॥ ८ ॥परैंगोरव
अट्टालतुट्टैपताका। उडैंछुट्टकेअट्टमैंज्यों
बलाका॥ छिकैंत्योंगिरैंथंभप्रासादछ
नी। पताकाउडैंअब्भ्रहूपतत्री॥ ९ ॥
उडैंगैनगिद्धोलगैंपच्छअग्गी। लखैंचं
गकेपुच्छज्योंरालग्गी॥ डिगैंकोलत्यों
व्यालपातालडोलैं। अकूपारकीभारसों
पिट्टिबोलैं॥ १० ॥चलैंतोपप्राकारको
लोपमंडैं। खिवैंखोमकेतोमकेखंडखंडैं
॥जरैंहट्टबाजारयोंहेतिजग्गी। मनोंरा
लकीतूलमैंअग्गिलग्गी॥ ११ ॥कहोंद
ग्धपाटीरवारीकैंवारी। भुज्जाचैककौंडारि
कैंनीरनारी॥ चिनंगीउडैंचित्रसारीनचं

हैं। मनौंथाग रवद्योत प्रद्योतमंडैं॥ १२॥ ब
देपद्दअट्टालिकापात बज्जैं। घनी बालिका
पालिका छोरिभज्जैं॥ कहौंझारसौं धेनु हंभा
रकढ्ढैं। बरैंद्वार आगार पैं छार बढ्ढैं॥१३॥ फर कैं
कहौं गोरव प्रासाद फुट्टैं। नर कैं ध्वजादंड के
रवंडलुट्टैं॥ गिरैं दोहरे तेहरे गेह गोलैं। घने
पीठ पल्ल्यंक बीथीन डोलैं॥ १४॥ धुनैं ध
गोपानसीं रवप्परालीं। उडैं मेदपैं इद्ध ज्यौं
गिद्धआली॥ कुते ज्यौं रहे त्यौं सबे लोक हा
रे। मिलीओट बुंदी परे कोटवारे॥ १५॥
इतैं दुग्गपैं बीर दै दै निसैंनी। बढे बंदरी
सेन ज्यौं लंक लैंनी॥ भज्यो सालमं जो ग
ह्यो रक्ख बेठ्यो। जनांनांलु ल्यो रारि थानैं
न रोक्यो॥ १६॥ किते बीर जे सिंहजे अ
त्तार कथ्थे। तके समुद्द्रा गपैं जानि तथ्थे॥

हरामीनहड्डुनकीहारिहोतैं। जनीअप्प
नीविष्फुरेजंगजोतैं॥ १७॥ मची मारवा
जारमैंबाढबज्ज्यो। लग्यो कंपभीरूनकों
नीरलज्ज्यो॥ मिलेदक्खिनीक्रूरभीवीर
भ्भे। कराकैंबजेहाडकीआडकत्ते॥ १८
॥ बढ्यो घत्तआरत्तवीथीबजारैं। उडैंमुं
डत्योंरुंडनच्चैंअखारैं॥ कढैनैननच्चैंगि
रैंभौंहकाला। मनों कंजकेओरपैभौंरमा
ला॥ १९॥ बढैंहत्थकेते बनैंलुत्थिबत्थी
। बनैंअच्छरीतैं घनैंलुत्थिबत्थी॥ बजी
चापटंकारझंकारभेरी। घनेदक्खिनीक्रूर
भीसेनघेरी॥ २०॥ कुढैंसत्थइंहत्थतैं
मत्थकारैं। कुलालीकिधौंचक्रभंडउतारैं
। कढैंपारलैलारआंतैंकटारी। मनोंगार
रूनागिनीहत्थमारी॥ २१॥ बहैंनारि

अच्छी किअच्छी बरच्छी। मिलैं कोंच कों फारि ज्यों बारि मच्छी॥ बजी रीठ बुंदी सु बे सार बड्डे। सजे दक्खिनी लावके घाव सड्डे २२॥ घनों चक्क कों देखनों अक्क चाह्यो। सुपै पब्बमें गाहकी राह साह्यो॥ सक्यो देखि यों नाहिं सुर्भानु सारें। नतो तद्दिनां जा सआदों निहारें॥ २३॥ कहैं मोह आरो हुकुक्कें कथा सी। बकैं बारुनी मत्त ज्यों आसवा सी॥ किते उल्लटैं फाटि छत्ती कं बारे। अनों छार भंडार ही कि उघारे॥ २४॥ भरक्के कहैं खुप्परी फुट्टि भेजे। फरक्कें कहों फिप्फरे के कलेजे॥ भिरे दक्खिनी युद्धके काज भारी। मिली जीति अम्मो कूरमी सेन भारी॥ २५॥ ष०प०॥ मिलि प्रलाप भर हड्ड जिति छुंदिय जस लिन्नों। गहि साल मनिज

जनकबंदिकुलकरबसिकिन्नो। सालमको
सरबसवस्ज्जनिजकरनसुहायो॥नगरनै
नवाजायदईनिजनामदुहाई।बुंदिय
छुरायमरहडुइतरसएकामतत्थहिरहि
य।किसदिसनवत्तफुहियद्भुतहिकौबिन
वाहदकिविनकहिय॥२६॥दो०॥सह
रलुटियसालमगहिय।फिरियबुद्धनृप
आन।अरुचउसतदुंकुंओरके।परेसुभ
टगतमान॥२७॥कछवाहीकोटानगर
।यहरुनिबुंदियआय॥दियमहिमानी
दकिविनिन।कुवदिनसेनरखाय॥२८॥
कछवाहीमह्लारकर।रक्खीबंधियरानि
॥अरुताकीतियकीअतुलकियभावज
समकानि॥२९॥तंहकुलकरमह्लार
तब।सधालियहितपगि॥बुंदियजोजे

हैंबुरि। लैहैंतोहठलगि॥ ३० ॥अव
रकुत्र्यदलकेअधिप। तिनहूकौंहितधा
रि॥ दिन्नेहयसिरुपावद्रुत। रानीसुनयवि
चारि॥ ३१ ॥कछवाहीप्रतिसिक्खकरि
। तदनंतरजयतोर॥ प्रवलवीरपच्छेप
लटि। उमडियदक्खिनओर॥ ३२ ॥
कटकसुडभियथामकढि। रहिखिंझे
लियनरैं॥ बेधमकग्गरबुद्धप्रति। लिखे
मिलनजससैन॥ ३३ ॥ष० प०॥मि
लननआयउतलकुबंचिकग्गरबुंदिय
पति। तबउप्परिमरहट्टगयेदक्खिनस
बेगगति। इतबेधमतजिमहलबुद्धआ
रामबासकिय। रानकटकतिनदिनन
आनितत्थहिमिलानदिय। हितिजानि
रानसंग्रामकोनृपकुसोकअकवनगयउ

।मिलिधाइभ्रातनगराजनमिकरनजोरि हाजरभयउ ।। ३४ ।।दुवदुवहयसिरुपाव नृपहिंनगराजनिबेदिय।आयसानमत जानिनृपतियहआकिवनाँहिंलिय।तह नुसाहपुरईसनामउम्मेदजंगजय।ता सजनकतिनदिननमरियया तैंतस्थकु गय।केसरीसिंहडेरनतदनुगिनिसलूमरिप ताहिगय।इमरानभटनसनमानिअबनृ पनिजउपबनआहिगय ।। ३५ ।। दो०।। धाइभ्रातजिमनजरिकिय।इनकुदुकुंन तिमकिन्न ।। नाँहिसुलियबुंदियनृपति। दुवतिनहितहयदिन्न ।। ३६ ।।इतबुंदि यलिन्नीसुनतकुप्पिनृपतिकछवाह।। बीससहंससचतुरगबलि।पठयेसज्जिसि पाह ।। ३७ ।।सालमसुवनप्रतापतब।

चतुरंगहिसुनिवास ॥ नैननगरतजिभ
ज्जिगो । पुनिमरहट्टनपास ॥ ३८ ॥ अरु
कछवाहीसुनतयह । आवतभ्रातअनी
क ॥ बुंदियतजिबेगमगई । रहीनटैकर
तीक ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ कछवाहीनि
जकिन्न । इकमासबुंदियअमल ॥ लरैं
बिनुहिपुनिलिन्न । इतहिआयजय-
सिंहदल ॥ ४० ॥ कूरमकोटकराय ।
याहिबरसपुरटोंकइत ॥ दोसादुग्गब
नाय । प्रथितनिवाईदुग्गपुनि ॥ ४१ ॥
हरिगीतम् ॥ इतकोंउदैपुरराननृपज
गतेसकालहिजानिकैं । ब्रजकुमरिनाम
कजाहिनिजतिहिं ब्याहजोग्यप्रमानिकैं
॥ कोटेसदुरजनसल्लकोंबरिताहिब्याह
नबुल्लयो । इनलिखिकूरमउग्रहैअब

कासउद्दहकोगयो ॥ ४२ ॥ यहजानिरा
नपदावप्रतिबन्धकुम्भजोअबकुप्यिकैं। ह
मोहब्याहनआतउमअुवलैंहिंलज्जहिं
लुपिकैं। इकलिंगआनहमैंकुलोउमसों
हिक्कैरनरोरिहैं। जोपैभुवापतिजैपुरेसत
थापितगनतोरिहैं ॥ ४३ ॥ कोटेसयहसु
निकुंचकरिपकुंच्योउदैपुरप्रीतिसों। जगते
सतिहिंनिजजामिदियपरिनायहितर
सरीतिसों ॥ यहब्याहचंद्ररुअंकसत्तरु
इक१७६१संवतमेंभयो। आसाढमेच
कृपकरवनवमियलग्नउच्छवउन्नयो ॥४४
॥कोटेसनृपइमब्याहिदुलहनिस्वीयप
त्तनसंचरयो। इकजानिरानहियाहिइत
जयसिंहजालमहैंजरयो ॥ इतरानभट
जयसिंहसगताउत्तबग्घहपुत्तहो। नि

हिंग्राम पिप्पलियाजु स्वामियकामस्यं
इनजुतहो ॥ ४५ ॥ दुवपुत्त हिंतुवकी
लउन्नअहोउदैपुर कोवहै । साहसितारा
धीसपैंजु अनीसअब्दन तेरहे ॥ तिहिं
तत्थसाहुव छत्रपति आदाब अप्रतिकारि
अहरें । बहुहारिगहिय कोनपैं काकाक
हैंरु कहीकरें ॥ ४६ ॥ संग्रामरान निपा
तसुनि तिहिं सिक्खसाहुवसों चही । ज
यसिंहसों यह जानि बाजेराय मंत्रियहू क
ही ॥ ममभालपूरव जात जातजु न्हानति
त्थविधानसों । तिहिं लेउदैपुरजाहु एह
उदंतअक्खहु रानसों ॥ ४७ ॥ तुमरान
हूरमसों कहायय है कहोवहु साहसों । मम
भालकासियजालजो देहै नकरराहि राहसों
॥ स्वच्छंद मग्गाहुभै कहोंरानकि हैनदलजुत

जायहे। पुनि फल्गु गयासिर पारि पिंडन
अध्वकृत्यित आयहे ॥ ४८ ॥ जयसिंह
कश्यच्छंदयोंसुनितासमातहिंसंगले।
आयेउदैपुर ओ मिल्यो वहरानहिंतुउम
गले ॥ करजोरिआकिवयपेसवानृपसाकु
संत्रियआहिजो। तसमातआवतरावरे
घरपुब्बतीरथचाहिजो ॥ ४९ ॥ सुनिए
हसम्भुहजायरानअतीवअद्दरअद्दरी।
महिमानिमंडिदिवायडेरनकानिमातहि
लोंकरी ॥ अवरोधमाँहिंवुलायप्रीतिबढा
यबिन्नतिअक्खई। सुनिरानबिन्नतिपा
तसंत्रियमातमोदमईभई ॥ ५० ॥ गजबा
जिवस्त्रबिसेसरानिवेदितातहिधनोंन
यो। पुनिजायडेरनसिक्खदेसंगसीयसे
नकुकोंदयो ॥ नगरीसलम्बरिनाहकेसरि

सिंह सुख्व्यसुसंगभो। जयसिंह पुनि वहब
ग्घनंदन संगउच्चउमंगभो॥ ५१॥ खुरता
रभार न भुम्मिदेत दरार दारिम पक्कज्यों।
वलक्खदलपालेमंत्रिजननीचंडसंगहि
चक्कज्यौं॥ बहर क्कदंतिबड्डेन पैंफहर
क्किफैलत सीफिरैं। झिलिफेटझंड झपेट
मैंपवमानचंचलक्कू चिरैं॥ ५२॥ श्रियमं
तमात सुखेन यों सह सैन जैपुर संचरी। क
छवाह राय कुम्भाय सम्मुह कानि रानहिलैं
करी॥ जयसिंह भीति बढाय तास दिवाय
डेरन मोदसौं। लिलि बाजि उद्दंड दुवकिय
भेटबंदि विनोदसौं॥ ५३॥ माहिमानिदे
अतिअग्घसौं अवरोधमध्यबुलायकैं।
सकुटुंब सम्मुहजाय मंदिर लाय मत्थहिना
यकैं॥ बहुधारि गहिय ताहि अप्पुन अल्प

आसनपैंरह्यो। नगबस्त्र नव्यनिवेदिकैंहस्त
दासकूरमयौंकह्यो॥ ५४ ॥ तनयासु कृष्णा
कुमारि अप्पनजो दलेलहिं अप्पई। गहि
ताहि हत्थन कुम्भयौं फिर तासअंकहि थप्प
ई। कहि मोर पुत्रिय तुंहि भूप दलेल रक्खिय
हैयहै। तस लज्ज पुत्रिसुहाग की तुमको सु
अज्ज अभैयहै॥ ५५ ॥ तिहिं लायहिय
श्रियमंतमात कुअक्खि कीलि पराय्यौं। रूप
ये पच्चीस हजार छोरिय जे नर्तुदिय कोंलगैं
॥ जब कुम्ममा लव फ्ल तन्नसुसा हल्लन्नहि
मेलकैं। निब्बे हजार लिखाय लियव हराय
दम्म दलेलकैं॥ ५६ ॥ तब दक्खिनिनृ
पसाहसौं अरजी कराय निदेसतैं। यह अं
कथप्पिय तुं दियैं कहि कोउ नां हैं बिसेस
तैं॥ तिनमांहिं सौ श्रियमंत मातन छोरि

दम्म इते दये। पुनि अकिव पुत्तियलाय
छत्तियनेहलीज बचेन्नये॥ ५७ ॥ श्रिय
मंतमातहिं रक्खियौं जयसिंह जय्य पुरमा
सलौं। पुनिसाहहिंतुलिखाय मगकरमा
फतासमबासलौं॥ बलितासडेरनजाय
कूरमराय बंदनकैं बली। सजिस्वीयसेन
कुलंगरैब हपंथपूरब मुक्कली॥ ५८ ॥ भ
टरानकेसरिसिंह श्रो जयसिंह तत्थ हिएर
हे। दलश्रोरसंगहितासदै पुनि मासजैपुर
जेरहे॥ नगरीसलक्ष्रिनाहकेसरिसिंह चु
रन्नधीरच्यौं। जयसिंह बग्घहनंदहोयह
वेरपाउकवीरलौं॥ ५९ ॥ सनमानदोउ
नकौनच्यौंकबाहडेरनजायकैं। हयहू
त्थिकूरमसौंतितैपकुंचेउदैपुर आयकैं॥
मल्लारराहपमारये करि कैदसालमकौं

हीं। तजिनेरवुंदियकुंचकैंफकुंवेतिमालव
मैंदितैं॥ ६० ॥परमार दौलतसिंहसुसेनद
ल संग हो। यह रानकों उमराव हो अरु
लि अंग हो॥ तिहिं आविसालम
सिंह मोकंहं लेकुजामिनहैअबैं। दुव ल
क्ख रुप्पय लेकुसोइन्हदेकुजावकुंमैं लवैं
॥ ६१॥ जितनेंउ देपुरमें रहों अरुरान को
जस बित्थरैं। मम पत्र लेकु लिखाय अोलि
खिदेकु तुम इनके करैं॥ इन को अमात्य कु
इ क्करुप्पयलेन संगहिलीजिये। तिहिं आम
पंचहज्जार कोहम देहिं सत्य पतीजिये॥ ६२॥
तुमकोंकुबुंदियकोपटा मिलिहैहज्जारप
चीसको। सुनिएहदौलतसिंहपत्रलिखाय
सालमहीसको। अरुआप्पराव मलारसौं
परमारसौंपरमारसौंइमअक्खईदुवलक्ख

रुप्पयदेहिंपैगृहलैहिंतोलिखिसोदई॥
॥ ६३ ॥हमसालजामिनबीचजोनहिंदैहिं
तोहमदैहैंगे।बलिरामभूपबलिष्ठजेइन
तैंनिकरिकुलैहैंगे ॥परमारयोंलिखिप
त्रजोपरमारकुलकरकोंदयो।निजसंग
कुलकरदासभट्टमहादिदेवसुपैलयो॥
६४ ॥पुनिजेउदैपुरआयदक्खिनसेन
सोंहमसिक्खवैं।सुनिरामचाहिसिराहि
दौलतसिंहकोंलघुतिक्खवैं॥लिखिप
त्रहुंडियलेलकोंदयुदम्मसालममंगये।
जलकोदलेलकुकुंवरिसिंतुकपर्ददोयकुनां
दये॥ ६५ ॥लघुभट्टदौलतसिंहजुतक
रिसिक्खसालमरामसों।चलिनैनवानि
जनेरआयउमीरजुज्झारमानसों॥निजको
सतौंकुलकररुप्पयदेसदक्खिनमुक्कले

पुनि कुम्म आयस पाय दोउन कौं हि दिन्नप
टाभले ॥ ६६ ॥ ससि अंक सत्तरु इक्क १७९१
संबत मास कत्तिय गोर मैं। कछवाह किय सब
भूप इक्कत जानि दक्खिन जोर मैं। मेवार सैं अ
गौंच नाम क ग्राम सर्व मिले तहाँ। अरजी लि
खाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहु ऐं यहाँ ॥ ६७
॥ सुनि साह सेन समस्त संजुत खान दौरह
सु ऊल्यो। यह मास अगहन कृष्ण पंचमि दिं
ढ चक्रहिं लै चल्यो। द्रुत आय मालव देस मैं
बुलवाय कूरम हूलयो। बिनु रान तब सब
भूप संजुत सो कुमालव मैं गयो ॥ ६८ ॥ तिहिं
साल बिच इत नैर बे घम पोस मास अभा
जहाँ। कछवाह रानिय देह हानिय दान कै
रु करी तहाँ ॥ इत कौंन बाबरु कुम्म मालव
मैं मिले अति प्रीति सौं। सब हिंदु भूपन स

स्थलेरनमंत्रमंडियरीतिसौं ॥ ६९ ।अभ
मल्लनृपमरुईसवीकानेरभूपतिसत्थही।
कोटेसदुरजनसल्लसोपुरभूपगोरसमत्थ
ही॥रतलामरुब्रुवकेरुईडरकेकबंधकुसं
जुरे।बुंदेलनृपदतियादिभूपभदोरभंडप
विष्फुरे॥७०॥रचिमेलबीरबघेलबंधु
वभूपसम्मलिसज्जयो।नगरीकरोलिय
भूपजद्दवसेनसंजुलसोठयो॥पुनिरूपने
रकबंधभूपजुपायलग्गियआनिकैं।पुनि
आयनेरभनायभूपतिजोरमिच्छनजानि
कैं॥७१॥बजरंगराघवदुग्गकोमहिपा
लखिज्जियहू मिल्यो।नगरीसिरोहियदेव
रानृपआनिआयसकौंझिल्यो॥रचिचक्क
टहियआयमहियनेरजेसलमेरको।ज-
लिलैरमहनिभूपउम्मटआयआतहिबेर

को ॥ ७२ ॥ कछवाहनरउरनाहमिच्छनबा
बहूकितनेकहूं। मिलिखानदौरहसूंसबैप
रितत्थरुंधिदिसाचहौं ॥ सबकौंसिराहिरु
खानदौरहसेनदक्खिनपैंसज्यो। मरहट्टसे
नहूपिक्खिकैंचहिरट्टसम्मुहहूवैगज्यो ॥
७३ ॥ रचिमंत्रपंडितरामचंद्रमल्हारआपर
मारत्यौं। राणंजिसक्खिलिसंधियावढ्ढिजंगजी
तविचारत्यौं ॥ दलमांहिसौंपरवैरतअट्ठ
हजारकढ्ढिरुयौंकही। तुमजायजैपुरदेसलु
ट्टहुत्यौंहिंमिच्छनकीमही ॥ ७४ ॥ असवार
अट्ठहजारवेतवसीमजैपुरजायकैं। टोडारु
टौंकबिगारिलुट्टियकुम्मआनउठायकैं ॥
नगरीनिवाइयलुट्टिकैंपुनिलुट्टिमालपुराल
यो। लंबारुडाभियलुट्टिपड्डलिदावढ्ढुढ्ढवैपैं
दयो ॥ ७५ ॥ तिहिंमारिजारिनरानतैरक्ख

यसा लियलुट्टई। मोजादपत्तनलुट्टिकैंहल
सरियत्तनदेलई ।। इमरारिरवगान मारिमारि
किगारिजैपुरदेसमैं। पुनिनैरसंभरआदिलु
ट्टियसाहकेअवसेसमैं।। ७६।। जिमकुम्म
मोयँहँसाहकोमरहट्ठनाहिंगिनेमिले। तिम
तेकुदाक्विनवीरमन्त्रिरुग्रामजैपुरकेगिले।।
असवार सात हजार अट्ठन लूटयोंइतमंडई
। उतरामचंद्रमलारओपरमारबग्गनकोंल
ई।। ७७।। निसमुत्तसाहअनीकपैंपबिपा
तपक्षयज्यौंपरे। बजिबंबआनकत्योंअन
नककूटिबिभ्भलएकरे।। तबज्योंकुतेति
मसाहकेउमरावभीरुकभग्गये। लच्छिकुम्म
मोरहरवानदोरहलज्जिमगाहिलग्गये।।
७८।। तकिसेनभज्जतसाहकोदरिवनीनख
मानखंडयो। उडिरेहअबरयोंछुईजिमभे

हसंबरमंडयो ॥ अचलाकुलकवनफोजकी
थमचक्कथक्कनलैंथुकी। बढिब्याधिदिग्ग
जदंततुट्टिसमाधिसंकरकीचुकी ॥७९॥
फररक्कि फीलनकेतुत्यौं थररक्कि अंबरअ
च्छरी। बररक्कि दड्डबराहभ्रदररक्कि क
च्छपभोहरी ॥ तरवारि दक्खिनसेनकी
दलमारि दिल्लियकोदयो। दृगमींचिभज्ज
तसाहकेदलराहबुंदियकोलयो ॥८०॥
लगि पिट्टि दक्खिनके अनीकनलागच
म्मलिलों करी। इतअग्गआयरु साहकी
पृतनाधुनीवहउत्तरी ॥ तजिभानपुरको
टानदीलगसेनभज्जतहीगयो। जनजु
सरुप्पयइक्ककोइकसेरतद्दिन बिक्कयो
॥८१॥ अतिहीछुधातुरसाहकोदलआ
पगाइमउत्तस्यो। पुनिआयबुंदियखात

पानद्दलेलसालमर्कैं कस्यो ।।कछवाहना
हरुखानदोरह सर्बभूपनसत्थही ।रहित
त्थमंडियमंत्र दक्खिनसेनमन्त्रिसमत्थही
।। ८२ ।।कछुदेसअज्जदयें बिनाँउनकोन
हीमनथप्पिहै ।तसमालअकब्बक्कुसाहसौं
सुनिसाहमालवअप्पिहै ।।तबखानदो
रहमंडियौंपटवायकिल्लतिसाहकौं ।लि
खिदक्कुमालवकौंनतौखलआतदिल्लि
यनाहकौं ।। ८३ ।।यहमंडिओइतसेन
दक्खिनपैंक्कुकग्गरमुक्कल्यो ।तुमलेकु
मालवसाहसौंकरिसामसंचितजोफल्यो
।।मरहठ्ठबीरनबंचिकग्गरबत्तमालवसी
करी ।जवनेसहूसुनिपत्रमालवदैनबत्त
हिअहरी ।। ८४ ।। लिखिपत्रमालवदे
नकोजवनेसहुंढियप्रेरयो ।सुनिखान

दौरह कुम्भ मोरह सो हि दक्खिन कौं दयो ॥ मरहट्ट तत्तह बंचि पत्तह ले अवंतिय खुशी भये। नदि नाँहि चम्मलि उत्तरे सुर रेति माल वहीगये ॥ ८५ ॥ मधुमास चंद्र रु अंक सत्तरु इक्क १७९१ संवतयों भई। तब खान दौरह सिक्ख भूपन देरु दिल्लिय ही लई ॥ तब चाह कै कछु नाह भूपति दुग्ग बुंदिय देखनें। दढि कैं दलेल ससेत हत्थिय इक्क सीर कुले घनें ॥ ८६ ॥ प्रबिस्यो सु उत्तर द्वार पत्तन पंति पिक्खत संचर्यो। चढि दुग्ग हत्थिय पोरि है नव ठान को कहि उत्तर्यो ॥ सठ पाप साल स आय सम्मुह जोरि हत्थन कौं नयो। इमराज मंदिर पिक्खि कैं पुनि कुम्भ पब्बय पैं गयो ॥ ८७ ॥ नरसिंह भूपति अग्गबंधिय दुग्ग जो बिगर्यो लख्यो। कपिसी

साभिलिरुखातिकाकढुंखोमतोमपस्यो लख्यो ॥ कछवाहनाहदलेलसूँनवदुग्गबं धनकीकही। सुनिसज्जमन्नि दलेलहूस्वसुरे सउक्तकियोसही ॥ ८८ ॥ रहिदोयरत्ति रुम्रक्किवयोंजयसिंहजैपुरसंचस्यो। नव दुग्गबंधिदलेलहूइतसज्जबुंदियकोक स्यो ॥ इहिंसालम्रगहनमासमैंजगलेस रानकुजानिकैं। दियनेरबेघमदेवसिंह हिंफेरिकग्गरठानिकैं ॥ ८९ ॥ दुवलक्खव रुप्पयदंडकेलियरानराउतदेवसौं। सहि दु:खदारिदविग्गस्योइमसालजामिपसेव सौं ॥ पुनिरानकामसुराजकोनगराजसौं सबछिन्नयो। लखिवृद्धकोबिदजोबिहारि यदासकायथकोंदयो ॥ ९० ॥ जिहिंम्र नादिछिन्नियजायकैंसबरानकामसुधारयो

जयसिंहकौं विरुडारिकैं लिखवाय रामपुराल
यो।।सुनिभीतपंद्रहअब्दतैं छ्रियद्वारकायथज्जो
रह्यो।अवरानबुल्लिबहोरिह्वतिहिंसुरव्यसंनि
धकैंचह्यो।। ९१ ।दुवअंकसत्रह १७९२ मानसं
वतपक्खउज्जलपोससैं।निजबंधुभूपअसा
[illegible] उपकनिदेसमैं।।[illegible] दुह्नरवं
[illegible] साहिपुर [illegible] रोर
[illegible] बनघोरतोपनपैं ह्य्यो।। ९२ ।तिन्हरा
नसम्मालिहोनकौंजयसिंहजयपुरसौं चढ्यो
।सुनिसाहसाहिपुरेसकौंअतिसोककूरमकोम
ढ्यो।।तबदंडरुप्पयलक्खसाहिपुरेसअप्पिय
[illegible]।कोरकुंउरानकुंभोउदैपुरराखिदैवधुव
मानकौं।। ९३ ।।इहिसालअब्दकमाघमैंदबिरो
धदुस्सहतैंगस्यो।निजनैनवापुरमांहिंअंधसु
मंदसालमअमस्यो।।गरुभूपदिल्लियआयइत

गुजरात जित्ति उछाह सों। अरजी करी कर जोरि बुद्धहिं देन बुंदिय साह सों॥ ९४॥ तँहँ खान दोरहु औन बाबुजबाब पेसन होन दे। जय सिंहको मलि मित्र यों अरजी सु लग्गन जोन दे॥ नव मास बुंदिय काज यों मरु भूप दिल्लिय मैं रह्यो। बरबसीसु किन्न बिसेस पै यह तोन साह करयो कह्यो॥ ९५॥ तब कुप्पि कैं बिजुसाह आय ससेन थन्व पसज्जयो। सब देस लुट्टत साह को मरुदेस गर्बित है गयो॥ दुव अंक सत्रह १७९२ सा कयों सित पक्ख फग्गुन मैं भई। इत साह दक्खि नमैं मिल्यो यह जानि कूरम कीलई॥ ९६॥ तब ही नबाब उमीरखां बुगली सु देउनकी करी। प्रभु खानदोरहु कुम्म मो रहयो हरामिय अहरी॥ मिलि सत्रुसेनन सों गये अरु लाभ दक्खिन तें लयो। दुव कोटि रुप्पय देस मालव मंडि साहु व कों दयो॥

॥९८॥ चुगली सुजानिरु कुम्भहू। पुनि एगद
कि वेन सुक्कल्यो॥ श्रियमंत अक्क चक्कु वेग ह्योंहम
दोर दिल्लियको दल्यो॥ श्रियमतहू नृपसाह मंत्रि
यव चित्त जुदे गले। दल दर्प दुड्डर बंधिकें गति
कालकीलिय तेगले॥९९॥ दोहा॥ नृपसा
हु वन वलाक्ख दल। नगरसिलारानाह॥ सज्जि
त भोताको सचिव। बाजेराय दुबाह॥१००॥
षट्पदी॥ बाबापंडित रामचंद्र कुलकर मल्हा
रहा राणंजियसंध्यारु अथित आनंदपमारह
। अबहु मुख्य करि इनहिं चढिरु श्रियमत चला
यउ॥ सालम सु वल प्रताप सोइ संग छिभ टक्क
यउ। कूरमहिं आनि आह्वान करइ लदं [illegible]
सन उप्परिय। तहिन अपार दलभार तांकि फन
पति फेनन फुंकरिय॥१०१॥ गरदगैन छित्थरि
यजरदजमजन करंगकिय। मरदमंत्रि उम्मदि

यह रद मुद्दा रह दिय। पंच अयुत पक्खरिय सहँस दंतावल सज्जिय ॥ दल पदाति दक्खि न्नियगर किदुवल खग्गर ज्जिय ॥ बक्क विधिनि सान भेरिय बज्जिय बलनकी बहु कलबढिय। पेसवा प्रथित बिप्रसुबलिय चाम रवर ओत्तर चढिय॥ १०२ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूरूह पेदक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहच रित्रे चत्वारिंशो ४० मयूख: ॥ ॥ ९ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

दोहा ॥ कटक बिप्र दर कुंचकरि। आयउ लोंना डा ॥ सुसबरा न जगते ससुनि। लगि बधा वन लाड ॥ १ ॥ जव काका निजजनक को। बुल्लित सवत अभिधान ॥ बहुरि सलमरि नाह बिय। पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥ मिलन गये श्रीमंत

सौं। तबवहसम्मुहआय ॥ मुख्यरानभटमन्नि
कौं। बिचलियअग्गबढाय ॥ ३ ॥ प्रथमलिखि
ओसंतमति जैपुरनृपबरजोर ॥ सजिमि
लापबुंदियरानसन । आनकुपुनिलहमओर ॥ ४ ॥
यातैंउप्परिपेसवा । प्रथमउदैपुरपत्त ॥ सम्मुह
आयउकोसदस । रानकहितअनुरत्त ॥ ५ ॥
…सिरनाइहिआयउ । सिरलेसोफुनरलसं
…किर्ति…रानभीति । …अप्रिय
…॥ ६ ॥ …रानकुविरचिमना…
मिल्योप्रतिमोदसूं । बाजेरायहिंलायउधाय
बिनोदसूं ॥ आहडग्रामसमीपसिबिरदल
कोकर्यो । होजहिंचंपकबागअप्पतहंउत्तर्यो
॥ ७ ॥ पुनिपरईमहिमानिरानबहुरीतिसौं ।
रुप्पयपंचहजारबसनगजबीतिसौं ॥ दूजेदि
नअप्रियमंतसभारचिबुल्लयो । बिप्रकुगोलह

बेगनेह बिचल्योनयो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबहुद्द
रअच्छन्नतक। आयउ सम्मुहरान ॥ दूजीगद्दि
यबिअहित। बिछवाई सुविधान ॥ ९ ॥ तिहिं
उठवायरुपेसवा। बिनु गद्दियगयबैठि। रच्यो
अदबयहरानको। प्रीतिअतुलहियपैठि ॥
१० ॥ गद्दियपररानाँरह्यो । सिरदुवचमरढु
राय। चमरइक्कदुव बिप्रसिर। बलिहितबच्च
बढाय ॥ ११ ॥ रानकहियनमनीयतुम। तबद्वि
जकहियसच्चाव ॥ मोहिगिनहुनृपरावरो। जि
मसोलहउमराव ॥ १२ ॥ रानतबहिजरजीम
जुतं हयनवउहत्थियराक ॥ नगजरायभूखनन
वल। बिप्रहिंदियससबिबेक ॥ १३ ॥ सहुलक्ख
इकसालप्रति। स्वीकारि दक्खिनदम्म ॥ दियउ
परगनबनहडा। तिनमैंलिखिहितकम्म ॥
१४ ॥ तालमध्यइकरानकैं। जगमंदिरप्रासाद

॥ताहि दिखावनकीकही।बासरदूजेबाद॥१५
रानपिसुनबनिकोउतब।बाजेरावहिंआखि॥
ऐजावलसारततुमहिं।रानकपटहियराखि
॥१६॥दक्खिनमंत्रियएहद्विज।हे।तथापिसु
निएह॥क्रूरखसच्चीमंत्रिकैं।कियरोखालनदे
ह॥१७॥पठईयोंकहिरानप्रति।मैंछलघात
मरौंन॥कलहिमंडसज्जहुकटक।करहिंसाम
अबकौंन॥१८॥पज्झटिका॥यहसुनतरा
नकुवसोकलीन।पठयेपुनिद्दुवभटबेप्रबीन॥
तरवतेसरुकेसरिसिंहतत्थ।जोअरुद्विजबंदि
य्रजोरिहत्त्थ॥१९॥कहिरानअधिकसनमान
कीन।अप्पुननहोहुअमररवअधीन॥किहिं
मूढकहियंयहद्रोहकत्थ।सोकहहुआपसनवि
धिसमत्थ॥२०॥जोकहहुनांहिंतसिरसहुरो
स।नाहकनदेहुअभिसापदोस॥प्रियमततक

पिमोनहि प्रसन्न। तब सत्तलक्खदियदम्म छन्न॥ २१॥ संग्रामसरानकी मात आग। चहुवानिम री निजसुगिर भग्ग॥ तबहुव त्रिलक्ख मितक नकसान। सोरानदयो दिप्रहिंसयान॥ २२॥ दलकुंच किय सु लै बिप्रदास। श्रियद्वार आय कि य प्रभु मनास॥ सात पंच सप्त कियमेद तत्थ। ब ह्मनकुल... ॥ २३॥ ... नाम... ॥ ...बिसेस॥ ...पंच अप्पि। मर हट्ठ चलिय दलकुंच जप्पि॥ २४॥ पुनि होय जाजपुर आय पास। बलकिय उकेकडियहुंग बास॥ उलतें सुनिकूरमभूप आय। चतुरंग च क हुहुर चलाय॥ २५॥ धमिनिरह... गढनि कट थाम॥ भिंदियहुवखंभोलावग्राम॥ पहुई तब कूरम राह आकिव। हमामिलहिं रान घरी

तिरक्खिव ॥ २६ ॥ पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमा
न है रानसुपहु साहू समान । जे कबहु निच्छ
अनुचर बनैं न अनुचर सदा हि तुम लोभ अैं
न ॥ २७ ॥ जिहिं हेतु मोहु को अधिक जा
नि पै मिलहिं अज्जसम लाप्रमानि । तुम जा
नत गहि दिय देउठाय पैनेंवहिं दुवइक पीठ पाय
॥ २८ ॥ हम लख्यहु दक्खिन ओर होयदेख
मतु महिं इम मिलहिं दोय । जयसिंह हुय
ह सुनि प्रबल जानि इक आसन स्वीकारि मि
लिय आनि ॥ २९ ॥ चढि उभय बकहु व
सज्ज आय तिन बीच इक पटगृह तनाय ॥
तामाहिं मिले दुव गजन छोरि बैठे इक आस
न जानु जोरि ॥ ३० ॥ द्विज कियतहँ इक
जंत्रपान लगि धुम्म कुम्म मन बिचारि सान ।
पुनि सुभ्भट मुख्य निज निज बुलाय बैठारि मि

सलन्यायतअनाय ॥ ३१ ॥ दक्खिनभट ला
जरिसकहि लत्थ इक्कनमलार आय उसमत्थ
। संथाजिहिँ बुंदियलैन लिन्न छ्जिबाजेराय
कुकचन दिन्न ॥ ३२ ॥ श्रियमंतयहाँ मिलि
पलटि पोन कछुवाह बुंदि छोर कु कह्यो न ।
सालमसुलसजुत आसु उढ्ढिइहिँ कारन कुल
कर चालियरुढ्ढि ॥ ३३ ॥ श्रियमतकुम्म ।ल
कुमसुभाय अब निज निज डेरन उभय आय
यौँ हुँ सुनिय बिप्र रुढ्ढियमलार गच्चतबहि नि
होरनप्रकटि प्यार ॥ ३४ ॥ अानिवियतल
कुलकर अत्थ आय तुम बुंदि लैन न किय
उपाय । करिसपथ लैन पुनि दिकु लैन तुमसंग
नतो अब हम चलैंन ॥ ३५ ॥ नृपसाकुस
पथलब बिप्र बुल्लि लै हौं अब बुंदिय लेगतु
ल्लि । लिक्खनैं कछु बासर जानि देकु दोउन मनों

कूरमनृपप्रभुनि मिलनकीनलहि कूर्महार्द रविमिलनलीन। उत्ततें दललक्खनतुमबनाय आवहुकूर्मजैपुर है सहाय ॥ ३७ ॥ अबही ललन अवकास अच्छ दाक्षिन अमात्य लु मनीति दच्छ। मिलिहक्करि दैंहिं मिच्छमि हाय जबकरि हललक्छ जाहु गेह जाय ॥ ३८ ॥ कूरमनाथ जेपुर अधिप रह श्रियमंत मुख्यो दच्छिनसनेह। दुवअंकसत्तइक १७९२ सकधुरलयहलअच्छमास फग्गुनउदंत ॥ ३९ ॥ दरकूंचलहुकरि द्विजप्रयान वेधमद्विगआ यरद्वियमिलान। बहँभटप्रतापहइतुअ गम्श्रियमनवरहुलैंह्कसंग ॥ ४० ॥ कूंदी सनिकटगयजनियधीरसबयहइउर्हलजपि मसधीर। कछबेरसवाईयहतलक हायमुन तैंनहुदेहमजुंदिरास ॥ ४१ ॥ अबलोहल

आये सोमठानिसैहैं पुनिबुंदियलेकुमानि
कुंदीससिलनहितकल्लकहायटारीसुबिप्रइ-
मसमलिखाय ।। ४२ ।।तदनंतरदक्खिनहि
जमअसगोहकुअतापकुसंगतत्त । इतदिल्लि
मधूरमकुजसउहि श्रियथित मिलनसुनिसा
हरहि ।। ४३ ।।लदसाइनिजामनमुलकब्बु
लि आयउनवाबसुनितेगतुल्लि । होयहकली
जखाँनामबीरगाजुद्दीखाँसुतरनगभीर ।।४४
।। वहअद्भुत दिल्लियनेरआयबलिसाहहिंतु
सिजदाबिधाय । जवनेसहिंकूरमकुपितजा
नि पुनि लिखियपत्रदक्खिनप्रमानि ।। ४५ ।।
अवसरअबआयउभुम्मिलैनश्रियमंतवे
गआवहुससेम । यहसुनतबज्जिजिततित
निसानउमडियअनीकसागरउफान ।। ४६ ।।
फहरायअडहत्थिनपरकिंभहरायभज्जि

भीरुकभरकि। सज्जतभटबाहुलकवचटो
पञ्चलिकायचरक्खनचढलतोप॥ ४७॥
खुरसानधारआयुधखलंकिपावकप्रचंडआ
स्तझनकि। दक्खिनअनीकगज्जियखुरंत
इहिंरीतिवीरसज्जियअनल॥ ४८॥संब
तत्रिअकहयइक्क १७९२ मानइसमासवि
जयदसमीउफाल। सक्कमियसितारावीलसे
नअखिमतखुक्ख्यलागेभुम्मिसेन॥ ४९॥
अतिकायबाजिफौंदलअकासमिटिजा
तदुग्गपद्धरमबास। रविलियउढंकिखुर
तारखेहमाडियकिमहइआसारमेह॥५०॥
किलकिललसंगअलियकरालखिलखिल
लमरनगनरकेपाल। जुग्गिनिजमातिजय
जयतिजापेक्खपटतझुकंतबेतालझंपि॥५१॥
दकजकलसंगाजबनप्रमत्तसदसकतगिद्ध

सिरहोत छत्त । डमरूकडक्क डाहलडमंकि ढहलाय कूर नूपुर ढमकि ॥ ५२ ॥ सजिचल्लि असंग भैरवत्रिसूलनफर कियसिचान हियअ लनफूल । आतापिओघढंकत अकासफेरं डफलंगत गिरन आस ॥ ५३ ॥ इमचलिय संगफलचर अनेक कटकट बिरावप्रेतनकि तेक । लगि अतलवितल सुतलनलचक्क सुरकलबराहदंतुलिमचक्क ॥ ५४ ॥ आवन तुरंतालन झरतआगि जिहिंरव समाधिअ- भ्रेसजागि । अकबकतसेतुसागरउमंगि भुल्लतदिसानगरमदकिभगि ॥ ५५ ॥ ललर किभुल्लिखेकल तुरवार दररा किदेतपब्बय दरार । ललनकिरादककटकरीन छननकिहो लजालनदनछीन ॥ ५६ ॥ उडिजातउप्पल दरनअनलनवाडिजाल तिमिर छूरनदिगंत।

इभराज अंदु औंचत अभंगर अ्रू किरखेत्र
फलमपनरंग ॥ ५७ ॥ बहिचलिय धातुअ-
द्रिन अनेक सलसलिय पंथ गज खान सेक।
इमहलिय सेन दक्खिन अनंत दिल्लीस मुलक
दब्बत दुरंत ॥ ५८ ॥ सुनिसाह सेन सज्जिय
सिताब बल मुख्य उभय रक्खियन बाब।
इकखानक मरदीनिज दअीर बलि संग निजा
मन मुलक बीर ॥ ६० ॥ ज्रुव चलिय सेन हा
र वल्ल हंकि घन घोर घंट पक्खर धमंकि। कु
लटाकनी निबिधितरल बाजि उड्डुतमलंगि
आगामि आजि ॥ ६१ ॥ मनके रूप वनके जे
मित्र चलतरस धावमंडत विचित्र। खंधन बि
नम्र चढ़त खलीन मरवतूल बग्गजार जिल
हजीन ॥ ६२ ॥ बिरचत निकम्मन निजेर
... हजात झंपित उसद शारखंध। दलम-

धुधुरनहुपल्लटनदिखाततिमिमच्छमन
कुंभअलिविसरात ॥ ६३ ॥ मुखकौंतिमबलनब-
न्धनभरंतकामिनिगिरतलग्गलआनिकंत । सा
दिनसुखसाधिलसहजसध्यफिरिजातछत्र
कीछाँहमध्य ॥ ६४ ॥ असवारवहतजिहिं
रूपकुच्यनछिरुदिखातसुहिरूपनव्य । रन
आजिरलज्जजिनकेरकावहररवालचढाकन
मनहिसाव ॥ ६५ ॥ इमचलियअब्बथेइन
थरकहुंकियअनेकहत्थिनहलक्क । चंच
ललदिवपच्छिनकरतचोटजिनअग्गअंकु
सकलतअगोट ॥ ६६ ॥ अतिबीतपायरो
पलअडोललगिबकुरिडाकबढिजातलो
ल । जंजीरलंबखैंचतसजोरसिररचलतसों
सगुंजारसोर ॥ ६७ ॥ आधोरनरक्खतबकु
सिरासिहंकलतयापिउद्धतकुलासि । इम

हलियसाहपृतनाअभंगदक्खिनदलसम्मु
हरचनदंग ॥ ६८ ॥सुनिइनहिंआतदक्खि-
नदलेसद्रुतबढियबिगारतसाहदेस। खटमा
सबहुआवतबितायचक्कसुअबदिल्लियसि
रचलाय ॥ ६९ ॥ग्वालेरलुट्टिबहुअरिनगं
जिअबचलियअग्गारसबीररंजि।मगचुक्कि
अग्गाकिल्लियत्थउ मिल्लुइनआनिलईदिल्लि-
यरबह्नल्ल ॥७०॥सकबेदअंकसत्रह१७९४
सुभासअष्टमिबलल्लमधुमासआय। दि
ल्लीपुरबाहिरपृथुलदोरअतिरुचिरशिल्प
निर्मितअथोरओर ॥७१॥थितइक्ककालिका
देवियानमेलातहँतद्दिनहोमहान।बहिर-
हियतत्थलक्खनबनिज्जजिन्हलखतहोत
धनदहिंअचिज्ज ॥७२॥दक्खिनदलआ
यरुखगानखंडिमेलावहलुट्टियजुलममंडि

कढ्ढिकाढितबबिब्भ्रलबनिजकारतजिइ-
ब्भ्रजियकालिंदिपार ॥७३॥ कोटिनध-
नाढिल्लियकहरकुप्पिलुट्टियमरहट्ठनका-
निलुप्पि। बकुजलजहीरमानिकबिथ्यारि
अतिमुक्तलालमरकतअपार ॥७४॥ इत
मकुरछत्ररुप्पयअनंतभूखनजरायकुंडल
लुलंत। कोटीरतिलकआपीडकेकअरुता
डमयनूपुरअनेक ॥७५॥ सिरपेचहारके
यूररत्नऊर्मिकाअवापकटिसूत्रअच्छ।
मकुमारिहट्टलुट्टियबिजाजसनसूत्रमयरु
रांकवसमाज ॥७६॥ कौसेयपग्गसाटिनकु
लापनीसारनव्यथुरमोंअमाप। अत्तारबि
पनिलुट्टियअनेककर्पूररुबीतिपुनिमद्य
केक ॥७७॥ हारबकुबदिल्लियहलहलंतद
लकादियतत्थपुरतैंदुरंत। इतरचतनूटद

क्खिनअनीकअियमंतसज्जचाहतसमीक॥ ७८ ॥ यहसुनियकमरदीरखांवजीरबलि
कहियनिजामनमुलकबीर। अप्पनमगाकु
क्किरुअग्गआयदिल्लीरवलपत्तेलैंनदाय
७९ ॥ यहअक्खिदमुरेलैदलअभंगपकुंवेअं
धारहिंजिमपतंग। उततैंदलपत्तानसोंकु-
आयइततैंलबाबकुवहयउडाय॥ ८० ॥
मरहठ्ठलहेलुट्टतप्रमत्तप्रतिमल्लमिच्छकुकुं
अोरपत्त। मच्चिसमरघोरसमसेरमारबजि
निनदबंबत्रंबकबिथार॥ ८१ ॥ धरधुक
तधुज्जेधावनधसक्कि कुंडलिकपालदरक्कि
यकसक्कि। कटिपरतभौंरदअधरकंधलि
लकिलतमुंडनछुतकबंध॥ ८२ ॥ डमरूक
मडुडाहलडमंकिघहरानढोलपरवरघमं
कि। बबकारिकरतवावनबिलार। छुत

जहँ जुगिनिकेलिरास ॥ ८३ ॥ जितति तहिं मत्थ उडि परत जत्थ तुं बाकितरल अ-वधूतहत्थ । नहिंगगनटोपचमकहिं अने कलुटिजात जात तननंकितेक ॥ ८४ ॥ सत्थ गिरतभिन्नबाकुलसमेल अहिपंचफनकिंकु कुकउथेल । जिरहनलिचकढिदृगफदकिजा हिंसानकुँ अरददासनजालिमाँहिं ॥ ८५ ॥ कटिकटि गिरंतकहुँ मुच्छ कंदरंगम्मृगनासि किलोजिच्छंद ॥ नासोदफटिकहुँकढतगत्त सोनातरलैं जिमगार्भपत्त ॥ ८६ ॥ कंकटबि दारिभविसलकटार बिलबीचपन्नगाकिसच्छ नार । खंजरकढिपंजरपारजातसोनितसन्यो सुभातिकलिसुहात ॥ ८७ ॥ मालकुँ गवाक्ष रजहिनदिरवानकरपहुंच्यिाकिजावकभु-न्नान । दिपिउरजसत्थ पारलदरारकीरकित

रवूजनमुद्दिमार ॥ ८८ ॥ चलअसिन होत
गजकुंभचीरजगदीसभन्तजुत्तकिकरीर। सो
नित तिरात धमनिनसम्मूहजलअरुनजालि
अलगर्दजूह ॥ ८९ ॥ सरघासमछुद्दलबि
सिखब्रातमधुजालछुत्तमत्यनबनात। खि
चिजातसरासनकरनकानिजमराजलपन
जलुहातजालि ॥ ९० ॥ लिलिजातकोदिल
स्तकमचक्किसुकुमारनारिलंचकिलचक्कि
। तुसीरतुट्टिउड्डुतअमापकिकीनकेकिचं
द्रकलाप ॥ ९१ ॥ संथलसघनुलिचओ
सुहातदड्डाकिकालआननदिखात। खग
करतफूलधारनकलंकिलुटिपरतचापचिल
बलनंकि ॥ ९२ ॥ ढालनपरपचकटिहरिज
तकखपपरमंदरसमसुहाल। छलिजालक
रिघायनचचकिछुटिजालपानकढुंला

हकहकि ॥ ९३ ॥ जिनबदनइक्कनारिन
उकिहक्कुंभत मृणालतिन उदितइह ॥ मनि
कलकमंचलिंदक अमानतेसुरधूरिसज्जा
सयान ॥ ९४ ॥ बहुबीरबैठिअच्छरिबिमा
न तांडवउपेलसुनिगानतान । चितमुदित
आरिगलबाँहचाहिस्वकबंधलरतपिक्खत
सिराहि ॥ ९५ ॥ हियलिरतअंत्रजुतनिक
सिहालमानकुंसनालन्लोहितमृनाल ।उर
गिद्धबपाकिलधसतआयबैठेगृहीकिबल
भीलनाय ॥ ९६ ॥ भटगिरतपायअटकत
रकाबघुम्मतघनेकिउन्मत्तसराव । तुटिजा
ततंगअजरतपलानकटिपरतबाजिगलओ
छवान ॥ ९७ ॥ कढिजातकुंतफक्करक्कि
कारिबढ़िजालरुहिरजिमजंत्रवारि ।कटि
कासिनकेतुउड़तअकासमानकुंमयूरगन

भद्दमास ।। ९८ ।। इमपरतरखग्गबक्कुमत्न अं
गभ्रमतकिपटीरतरुपरभुजंग। झुममच्चिय
घोरआहवअनूपबक्कुकटिदक्खिनभटकुव
बिरूप ।। ९९ ।। उडिचलियअग्गिजद्धिओ
रओरजमुनाजलसुक्कियतापजोर। सकुलि
यमच्छुखलभत्तिसुमारपन्नगकिआहितु
डिकटिपार ।। १०० ।। यहँभयउदेलदिल्ली
सओरघनकटियजंगमरहट्टघोर। लूटट्ठ
समस्तलिन्नीछुरायदक्खिनबिहाल। कअ
बलदाय ।। १०१ ।। श्रियमंतभीतगतिमा
बिसरिभज्ज्योसुक्योंनबंभनभिखारि। इहि
भजतभज्योदक्खिनअनीकघनबिक
हाकहियेघनीक ।। १०२ ।। मूरखनभिच्छुसों
ध्योनमत्थननिकांदिसीकअ रे जियन
त्य। उद्दावताव बिभ्मलअनेकरनुचि मरिय

भातुजागलनिकेक ॥१०३॥ दोहा ॥मन
तैंमूढगुहेन हैजियनमरनस्वतजानि ।सध
नपकगडिमरियसबभक्कसुताबिबआनि
॥१०४॥मनोहरम् ॥सुनोरेसयानेंत्रिगु
ननकोतमासोजाहिसतुलैंबिचारेंसानुज्व-
ननपचारैंहैं सिंह कोंनसाथनकहोंमैंकोंन
रीतिबहैकारननकाजभोदकूंमैंधुरधारैं हैं।
बाहिजेनजानैंमाहिसत्वकरिमानैंआतेसु
देसुखकुदु:रदमाजिलेदकोंबिसारैंहैंजानैंभ
मजानैंकीपरिच्छारखेकीजानिडारिवेकी
तोरधीरवीरदेहडारैंहैं ॥१०५॥षट्पदी॥
इमहेनहिंमरवायमरकिभज्जिगहिजको
तरभलसेसनसाजिसत्यमुदिगमतिमुरवभ-
यमज्झर।पिक्खिसिंहकोंस्वारपदकिज्ञ्छा
रपत्तायरकिरिकैंमहनकाजअनारिबेकी

टापर आयउ । चालीस दिवसतोसनलरकल
रिप्पञदलनकव १०००००० लिखउरपा
लअलपसलवनडुमति ।जिवहदक्रिवनस
चरिय ॥ १०६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करे हसि
राश्र्वेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे एकच-
त्वारिंशो ४१ मयूखः । ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
षट्पदी ॥ इतदिल्लीसुबीरजिनिसंगर मर-
हट्ठन हरिलिंगयउ हजरसाहबुधदिसउरी
झिरन । इकइकप्रति आदाबउचितसबलि
यसलामकोर । दूजेदिवसफलोजरवानकु-
वर्ऑलहेंहाजरि । माकोंकुदलवैरअभ्रतु-
ललियसबपृथकसलामनल हरिलाहिस
नदोरांकहिय लुब्बंदर बलनचल ॥ १ ॥
दोहा ॥ सुनिसाहकु परिस्लदसफलमुसाकि

यअ्श्रासबमत्त। अद्दाहक्कुकतिकनकरिय अपानरक्खियतत्त॥ २ ॥खानकलीजन-बाबयहयथायाकनीजीम। जिहिंअगगैंग जासिंहजुतभखेदलावरभीम ॥ ३ ॥जिहिं अक्खियसह बुद्धिजोरहिहैसाहतिंहार।बे गहिंबंदरनच्छिहैपुरदिक्खियप्राकार॥ ४ ॥ यहसुनिसाहसिराहिकछुपच्छोपारियरोस ।पैंधपिनक्किगस्योसमयसोनलखैंअपसोस ॥ ५ ॥सोजादोनसोंइक्कसभयेपंचदिक्कोस ।कलकापिसायनमुदितहियइच्छतरतहीं स ॥ ६ ॥मनोहरम् ॥ गानमैंगडजेबारन कालमैंबडेजेबारुनीकलइक्कायेतेघुमडन घनेंलगे।रैंअतकीरमनिरजीलीजौंलिछोरै लारिबिबनकुलाबरव्यारद्वैद्वैचारखनेंलगे। कखितकुराणकीबिसारिबैठेबालिसभनै

जोरीतिकीतो चुपमूढभाखनेंलगे दिल्लीके
घरानें उलटी करिइलाहसोंबबुलिके ठिकानें
पंड पायुराखनेंलगे ॥ ७ ॥ दोहा ॥ जुमांम-
हज्जतजातननसुरामत्तसठसाह। रहैंअभि-
नांदिनरसिकीलहैं सुरतरसलाह ॥ ८ ॥ इक
दिनकाजिय दियअरज उचितमहज्जतआ
न। कोउबिधिबैठीमुचितजत्थ विचारियजा
न ॥ ९ ॥ षट्पदी ॥ तहिंदिनरचिआपानअ-
धिकआसवबनिउद्धतसंगहितैसंडगनअरु
सबपत्तमहज्जत। बिरचिबिरचिगलबांह
साहजुतरबहिंनमैंसब। यहकोरीतिअयुक्त
नरकिजंपियकाजीतब। सुनिहसिनराहअ
किवयसबनरेननाहिंदजानतरुचित मसरुक-
जननआसिकमिलनआदिरीतिसुनियत
उचित ॥ १० ॥ दोहा ॥ काजीतबहिकुरान

कीअपनेसिरदियउढ़ि । आयउआलय
साधनसाहिरंचकसाहिकुलढ़ि ॥ ११ ॥ नीतिर
हितरितिलियजवरछनमद्धिगअजेर । कोउसु
नतनकाहुकीवरघर हारलखेर ॥ १२ ॥ क-
कुलखानदोरांकोहियसाहधुनिअरिसीस ।
राकौंखानकलीजअधवरछलकुडुंनपरीस ॥
॥ १३ ॥ तिहिंवजीरपलटायलियखानजनमर
दीतन । बहुरिसहादतखानप्रतिपठयोद्रस्ब
नो ॥ १४ ॥ खानसहादतहोयहेतुजरदरबदे
स । हाजरिसवआयोरिहि दरबदेजिहिंपेस ।
॥ १५ ॥ ताथनिजखानकलीजकैपतोखरपत्र ।
हहाँसुकलकातुकोरिजोआदकुलकोउनअत्र ।
॥ १६ ॥ सोरठा ॥ जिनउपजीरजिनाजप्रभु
नाहीनहिंरचकाँ । सेनशाहकोकुजनहताहिं
[illegible]हिं[illegible] ॥ १७ ॥ रहेंनिरंकुसहोय

पटकिजोरकछुसाहपर।सेनापतितुमसोयहम
वजीरअबइक्कुव॥ १८ ॥षट्पदी॥हमतुम
सम्मलिहनहिंखानदोरोंकपटीखल।लबसेनाप-
तितुमहिंसाहकरिहेगिनिसबल।सुसुनिसहा
दतखानसेनसज्जितपूरबसन॥लगिसेनाप-
तिलोभआयदिलियचहिअप्पन।अठस
त८००तोपजिहिंबसिअतुलदगतबेरको
सनदहत।लहिगाहहेतुताकेंहरदलककहर
भाडभुंजाकहत॥ १९॥ दोहा॥आयस-
हादतखानवहमिलिकलीजसहमोद।इक्क
वजीरहुअप्पहैहिरच्योकपटविनोद॥ २०॥
षट्पदी॥नादरसाहसुनामतपतईरानजात
नइतप्रबलसवाहिंअत्यंतजाहिअतजित
हीतित।भाजुहीजकेंकलीजभाडभुंजतजुत
भाये॥बुल्लननादरसाहपत्तईरानपठाये।भ

चक्कुनिसंकसुलतानइततियदिल्लियतुम
कोंचहत। सम्मुहचलाककोउनसुभटमचत
दंददिनदिल्लमहत॥ २१ ॥ पद्धतिका ॥
यहसुनियकल्लपुरइस्फहानअतिबढियसो
रजलपदद्दरान। अत्यंतमुख्यबुलवायपंचप
कुरनियसाहनादरप्रपंच॥ २२॥ तामाचकु-
लीनामकवजीरखलिमिलियअलीनिसुरूल
अधीर। खसालपुनिकअनकुलबसूरगाजीकु
सेनहाजीगरूर॥ २३॥ रुस्तुमसलेमसेरनस-
हीमकालनकमालरोसनकरीम। मारूफमलि
कमहमूदबीरश्रालमनअलीसय्यदसधीर॥
॥२४॥ दारूदसेरवइसहाकदीनमेंहैदीरमुक्कु
मदमोंनदीन॥ अहमदनियाजमसुऊदश्रा
यसादीकुरेससीरनसुभाय॥ २५ ॥ गालिब
हबीबखालनगुमानपीरोजफतेनासियबपरा

न ॥ २६ ॥ आगास हसन यूसफ अली हु दरि-
याव खान पुनि मोजदी हु ॥ २६ ॥ याकुब अ-
लीरु अम्मन इमाम नासेर असद पुनि नूर ना-
म । इत्यादि साह भट बर अव्वल सहस चिय कि-
न्नई कृत समस्त ॥ २७ ॥ सब भटन साह नाद-
र सु भाय दियलव कलीज कम्मर दिखाय । कहि
अब न जोर मुगुलन निकेत दि क्षिय कटाक्ष म-
म ओर देत ॥ २८ ॥ अवरंग जेब मिरजा मरे त-
ध्वर हिंदु धवन धार कअरंत । सचिवनन जानभ-
ट सानुकूल मिटि गयर स्थूलमज हब समूल
॥ २९ ॥ गायक इन्यों हि आलम अजान पुनि
मोजदीन अतिमस्त पान । मिलि बहुरि हिंदु
सय्यद बिमंद फ़रक गहिमा कोपासि फंद ॥
३० ॥ मुगलेस दो अपुनि सालमन्ध जाहलन
रु नेजेइन अब्दा । सय्यद अमीन पुनि तपन

...मुकुन्दपट्टपाय ॥ ३१ ॥ स-
...पुलिकोमसीर...मुकुन्दभोव
...कमल पदकिजोर हिंदुनकरबो
...लोर ॥ ३२ ॥ जितितितगिनीमदब्ब
...बढ़िरे...लकीन । अब
...लिकलीजनयबि
...॥ ३३ ॥ ...रतिदीहलु
... । ...चहंतमा
...मालिक...हान ॥
३४ ॥ ...तिनसमेतजोकहत
...लित । नहिं...किमब
...बितेक ॥ ३५ ॥
...लहीसलजिनां
... । ...गायकनदियअ-
...प्रीति ॥ ३६ ॥

याग्नीभाषा ॥ मस्तदिलौं अज्ञामैंशराबेदि
ल्ली अकुलदूबसूनेरुबाक सुहबतबदाव
दाना दिलॉन ताजीमतह अुलमुकूबिलॉन
॥ ३७ ॥ गह दरनगुजारदू शाहरबाब शैतॉ
नशीनदू हस्तवाब । अफ्बाजिदावनू आ
मदूबजोर कुजराथकलॉगरदीदकोर ॥ ३८ ॥
किश्तुमुल्ककसॉरापासवॉनमरदसूबजमा-
नैंदर अमॉन । दूनूसाफअदलग फ्तह ब-
ज्योर अजूरवासुआम आमदूबशोर ॥ ३९
आयेंदेशीप्राकृतामिश्रितभाषा ॥ रोज्जानि-
माजकलमॉनरत्तमहरीनसंगजाडरत्तलस
त्त रिवारुअदकबिचपृथुलराजरध्वनय-
बिहीनबिगरतसमाज ॥ ४० ॥मालवलि-
यक किवनदलनआय दिल्लीलगलुट्टिवदु
सहदाय । बिनु चेतमुगलबास्तरबिलास-

लसजकुल्लानरोध्धक दिखात ॥ ४१ ॥ तामाच
कुलीब हसुनिवजीर कुल्लिय त्तिराहि भुजठो
किल्लीर । जुलिकरनसिकंदर आगगाय जि
तिय जमीन हिंदुन हराय ॥ ४२ ॥ तैमूर व-
ड़ोरे गोरीपठान हत्थ्थान सब जित्तिय हिंदवान
। लकुलुस्सपठानन रहियराजसो लियबहोरि
जुगलनससाज ॥ ४३ ॥ अगैंगुमाय दिल्लि-
यजीतिय सुथ्थोजु हमायोमुगलभीति । आ
योंजुहहांपुर इस्फहानसुरतानमदतिदित्रीस-
मान ॥ ४४ ॥ ईरानदलकलबजायसंगलै द्वि-
सउराजजेजीतिजग । सुरतान हिंदुइमक
लजोरे दिल्ली कुल्ला जीतियबहोरि ॥ ४५ ॥
पुनितासुतअकबर भयोसो जितत होरि
सपरसहाय । ताकेसुत सलीमकसुतक होरि आल
लमपहलिय जंगजोरि ॥ ४६ ॥ ताकेकुलनय

अकबरात्मजनाम आयो सु मरन अत्यहि अधा
म। पुनि मारिय अत्य कछु रोगपाय दिल्ली हिन
तो देले भिलाय॥ ४७॥ यों मुगलयाहि पर क
मु त्राम दिल्ली सुरक्खिन महि सकत थाम। तो अ-
बजमीन अथ न रा सुधारिवधहि सपच आयस
ल्हिवारि॥ ४८॥ गोगन सकैं न जो गवालरक्खिव
अवरहि तब अथ तस्स सिक्खिव। करिबग-
नसकादिक औरवरैं न तो अक्खियापदु न उचित
दैंन॥ ४९॥ जोर क्खिव सक्कहि तुमक्कुक्कमजोरि
अहैं तो दिल्लिय दैब हारि। तामाच कुलीय यह
कहिय तत्थ सुनि सजिय साह नादर समत्थ
॥५०॥ इति श्रीवंशभास्करे दक्षिणायने न
वमराशौ बुधसिंहचरित्रे द्विचत्वारिंशो ४२
मयूख:॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५

नि:शाणी ॥ नादरसाह ईरानके अवरंगेनस-
जाआलम्याधायनिसालपैंधनजानिधुराया
। अरुहौंदिक्पालकैंनटसालरखुभायाहाक
नकीबोंहल्लकोंदरकुंचसुनाया ॥ १ ॥ जंगी
डैरूडसंकियाअंबकाअहकायाईरानीभटउप्फ
नेबधुलउठावनाया । टोपबकत्तरजालिकार-
नओपरचायाजेतेतुम्मनवधिकेंकटिखग्ग
कसाया ॥ २ ॥ केबेचापकहादुरोंफटकारिब
जायातांहितदेखडुसानभैनरबाजिनमाया । के
अफगानपठानकोंमुगलानमिलायाबलकीक
जुलबासकेबेहैंहककछाया ॥ ३ ॥ अरबी
रसीउज्जबकीहररबाय्रहकायारबसीरूमी
रूपहीरनरज्जुसुहाया । आलम्मबालीअफ-
रसीकासबाहकहायाअरमनीसीधीहूतैंआ
देरउम्हाया ॥ ४ ॥ फारसकुम्मलितुउपकनेसम

सेर सजाया रवधारी जागेर वरे बहु तीस बुलाया। श्रोलंदेजी रुक्कलेकर मुच्छ मिलाया रन। तिब्बत तातार के दातार दिखाया ॥ ५ ॥ तीर-तुरखारीका जिसीर सबीर रचाया। काश्मीर-कासिदी लर नैंनि लुभाया ॥ रून्नानी रु सह दिया सब संग सिधाया। माली लीचपर गिंगिनी धर सेन बढ़ाया ॥ ६ ॥ जङ्घा केच्मर बीजिते मक्का मन लाया। जिदके ऋरु काबली सह सेन सजाया। त्रानक हीरात के मीरात मिला या भिगरी के कालीसे के दल जोर हलाया॥ ७ ॥ तके तुरकनि पोर्टि के पत्तेकसि आया हल्लेहुक्कलक घौंजकन दिल्ली करि जाया। पंच निसार्जी पूतरे बलम सेवदाया कैन मुकुन्द निजनबी रख केन रचाया ॥ ८ ॥ कबुलेहु-सहाक च्योदाऊद दिपाया के लाकुश हिलरोन

कौंश्रकूवैंबलआया। श्रमीनादवकेअर-
भतसैंजलाया।। केथेअपश्राहसकैंसल-
तीनभुलाया ॥ ९ ॥ केतेयरसभेवेदकौंचि
त्तैंचितलाया। सुलेमानमतकेकितेहिंदवान
हकाया। इत्यादिकश्रोलगबकेचढिमिच्छ
चलाया। नादरसाहसलाहकेबिनुदेहदिपा-
या ॥ १० ॥ चोलाकालबनातकासुहिटोप
सुहाये। करदेंकुरानलैमनमेलवगाये।
मिसरकेस्यदनबहुचढिबेगचलाया।हाकन-
कीधैंकिक्षकैंदलडाकडगाये ॥ ११ ॥ उग्र-
बिडालीश्रंरिकेजुमिच्छबढाये। केश्र-
श्ररश्रीकारसीवुक्षेबिकसाये। पंचकटंकी
चापजेकरवैंभुजभाये। चकैंसबक्रूररकजे
ममकूरनमाये ॥ १२ ॥ ताजीमकतरसजु
केताजीवलछाये। ईरानीअरबीकितेजर

जीनसजाया।बैंडेहस्थिनझुंडकेधुजदंड
झुकाया।नादरसाहउछाहकैंसहसेनचला-
या॥ १३॥सत्यलोकलगऔंरुर्ये पाताल
पचाया।कहारीढकसेसकाफनमालफिरा-
या।हल्लीजुग्गिनिसंगहीथईईश्वरकायाफाल
फलंगीडाकिनीकरतालबजाया॥ १४॥का
बलसीमाहैं कंदकअवअटक निराया।हाक
परीहिंदवानमैंसबसोकअघाया।लंघिअटक
पंजाबकाथाँनाँघनघाया।सूबानायकसाह
कासबफोरिमिलाया॥ १५॥आनचला
याअप्पनौंमुगलानमिटाया।सूरइरानीसंचरे
मगरूरमचाया।यौंनादरअतिबेगसोंदिल्ली
सिरआया।पानीपथकिरनालपैंझंडालझुका
या॥ १६॥दोहा॥सोरमचिगदिल्लीसहर
जोरइरानिनजानि।साहमुहम्मदअबसुनी

सहायसब्बीमानि ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ ईगन-
गसुनिआतसरप्रसन्नसबद्दीमच्चिव । सोकन
तद्विसमानइक्करवानदोरौंउदग ॥ १८ ॥
षट्पदी ॥ कूरमप्रतिजयनैरखानदोरौंपठये
दललहुइरकमच्चाहस्माहलोहाकौंसज्जलआ
वतहलईरानरचक्कुदिक्खियसवायरन । हमतु
सहुछलहोयमुक्खिकोरहिंवासमुगन मम
रोसमारआरुकुआमिलसातोसनअबउतर-
हिंसिरधरिकुरानकरिअतसपथजोउपकत
यहबोसरहिं ॥ १९ ॥ दोहा ॥ तेरीहीयहबे
रहैआवकुसंदलउछाह । तोहिंदुरगरनथम
अबरीजिसलपयहिंसाह ॥ २० ॥ इम अनेक
कमान लिखिसाहसमपतिअरुर । सबैकुरिकै
सपथसोकरसाहिलैंलहिकर ॥ २१ ॥ सैआव
तदुसमसाहजतबाहरकरइमुकाम । यौंले

खलिखिदल्लनक्कालेक्रमकलुखदुकाम ।।
२२ ।। षट्पदी ।। भजवनन विश्वासटैरुकर
मच्छलकिन्नो अनदपुरानजअरिदिलदस्य
पुरकुलिदिच्चसावधानसहसत्थरहोजोप्र
क्रमघाते । सहस्याइजलिखिअलदाऊमर
नलकिन्नीलखिअमरकुनरेश ।। हडुवआखेल
यकजनि कउद्दतल किकोऊनगयउदिक्रि-
यक्षल अकसहाग्वियदूचो ।। २३ ।। दो
हा ।। दारिद्र क्रूरकिलबस्तदिल्लीअनीक
।सबलखानदोरी तजिय सम्मुह कहतासमीक
।। २४ ।। इहिं अनरपापवद जेतासालमल-
द । दिल्लीआयसदास । छनजवनप्रत
।। २५ ।। पानीपथ आयअनमुनिसदनतजि
अवसाद । सेनापतिकेआलसमदगपेयकु
चरलज ।। २६ ।। तोटकम् ।। कटकेर पल

सबसज्जकरीप्रतिहारनकीबनहाकपरी।बल
पायनिसाननघायबजेलखिजेघनभद्दवनद्द
लजे॥२७॥खुरसाननफूलकृपानखिरेचमका
तनिनंगिलबाढखिरे।ऊननंकिकुलासनधारऊ
रीधुनन किबजीगजघंटघरी॥२८॥परदैत
पटैतघनेउमहेकमनैतकटैतनजातकहे।घ
कुबाजियबाजियसज्जबनेजबजानमनोंपब
मानजने॥२९॥नकचच्छदकन्नमनोंकालि
काकचयालललखैंभुजगावलिका।सहनाइसु
रेवजिनमोश्वसदापयलोलमनोंगनिकाप्रमदा
॥३०॥कलिजित्तनकंधरबंककसैंकुलटाकि
कियापटुलंककसैं।टरिजातउडातकरीटका
रीसकरीकिसिरत्रानबनैंचकरी॥३१॥बिथुरे
गजगाहनकीजितजेजबकेबलगाहनकीजित
जे।परवेजरजीनसजेसरबेरनकिमंडतचीरब

केमरखरे ॥ ३२ ॥ धरिधोरितबल्गितधावधपैं मनकी गतिजेछिनमाँहिंमपैं । छलिगातचला नुनातछितीकिलकोटदटीविचबत्तकिती ॥ ३३ ॥ भटकेमनभायकिरैंलटकेधटकेनिपजेकिं चलानढके । कुलसैंकरिछिन्नुलिकीहसनारवमैं नभुतक्किय्यकीरसला ॥ ३४ ॥ रवुरराज्ञतराज तधत्तरवरेजिनपक्कमहायसनालजरे । लगि- यों रवुरसों रवुरनालनसैं गहिकैं स्वरभानुकिचं दयसैं ॥ ३५ ॥ चलबोधितरुच्छदसेचमकैं झ- पटातकनीनियज्योंझमकैं । असवारचहैंसुकरैं अनुटीमलपैंवनिफालगुलालमुटी ॥ ३६ ॥ परिसंगकुरंगनजेपकरैं छितिचोकरमैं पलटा छकरैं । बपुजोरउझक्कतप्रोथबजैंसफरीपल टानउडानसजें ॥ ३७ ॥ रसलेहरवलीनअथी नहैंगतिमैंभरिबल्यनझुम्मिगहैं । करिझप्पब-

हैं नटकी न कला चलि जात दिखात मनों चप-
ला॥ ३८॥ प्रतिमल्ल बनैं नभ पच्छिन पै बढ़
रैं उडि दौय बरच्छिन पै। कुल जाति बनायुज
आदिक ते जवमैं पवमान उडान जिते॥ ३९
॥ कुलटै उलटै उछटा तकरी पलटैं मनु पातरि
की पतरी। इकलक्ख ५०००० तरंगमया
जातेकी दर तीस हजार २०००० भलो भाँतिके॥
४०॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ४१
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ४२॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

॥४३॥बद्दरखावनरावनमानबनेंजलमैंच नकाजग्गगस्तिजनैं।मरवल्लस्नकलापकर्क्र- धकसेलगिगत्तबरत्तननहुलम्र। ४४॥पल जगियहोदनसज्जभयबलमच्चरपेनाहिंपेपठ ये।कटसुंडिकलापकरंगेरच्छेबड्डच्छिन्नच्छित रनकेबिरचे॥ ४५ ॥बहुत्र्यनिनिदतउच्च पनेभजजूलरुपैजमदूलमनें।बलकेसिरत जमहाबलजेसनिरादूलमोगुनसामलजे॥ मदद्दादनच्छुमतपैंडमतेबलबाढहिं माचलसोंबदते।तृनमानबडेतरुतोरतजेम- ननेरबिकेतुमरोरतजे॥४७॥कनकाचल लडुबगोटगिनैंरदिन्नदमलोदनगोटगिनैं किलेकारततारनपैंकररेचलसुड्डिचलातघले चरे॥४८॥कटपैंकरुबिंदप्रकासकरैसनि भोम्मभिरजजुलगिगरे ......हरितालसु

ढालकस्योगुरुजानिबिधुंतुदपासिपस्यो ॥
४९ ॥चरखीनचिकैंनचलाहटपैंउडिजात
अयानकआहटपैं।कतिबीरनकुंतलगैंक
टसौं बलिनिढ्ढिबहोरतउब्बटसौं॥ ५० ॥ज-
नकौंनियरायरचैंजबरीबढिखेंचतबग्घन
कीजबरी॥ ।अनलगरपायधरैंजितनैंजमकी
हुकारजुवद्दबनैं॥ ५१ ॥ सिरपैंमनिहाटक
जातसिरी भरमाचलसोंभततीकिसिरी। इमइ
क्कहजारबडेइभजे निकसेसजिबद्दलकेनि
भजे॥ ५२ ॥तुरकानतयारभयोरनपैंफरके
भुजखंडफनीफनपैं।खगउद्धतसय्यदसेरव
रिक्खलेभिरजासुगलानपठानमिले॥ ५३ ॥
भुजदंडकमाननकेकधरैंसलुलायपरवालन
बेधकरैं।बहुबीरबंदुकनदावरचैंकसिसत्तजु
रैंभयानांहिबचैं॥ रिकेक आगन

तैंखुरली बहिं धावन दाव बचात बली। तर-
वारिन बार करैं कितने घम कावत संगिन लं-
च्छ घुने ॥ ५५ ॥ सब दिल्लिय मीर उमीर सजे
रन मैं भट भीम रहीम रजे। प्रतिबासर पच्छनि-
माज पढैं कलमा बिच गुल बयान कढैं ॥ ५६ ॥
छिर चैं बहु ... जैं ... नचिंति रुस्तलमु-
कुम्मद ... । ... कुरान सिरी फर हैं बल उच्च
रुडड्डि ... कुच्छ बहैं ॥ ५७ ॥ खरिब मुच्छन लं
बसिख वाजिन ... बिधि ... नियरीति प्रतीपि
नकी। छबिके बहु मुद्गर ... प्रतिमल्ल घु-
मावत फौंकि पटे ॥ ५८ ॥ बदके क कितेक त
जैं कपटै रबधीर वलीन अलीन रटैं। असिढ
... मल्ल अपुच्छ अरें कति बान बिहंगन बेध
कौं ॥ ५९ ॥ खटटंक कमानन खैंचत जे अ-
त ... पयल ... अैं चत जे। बद खान कलीं जस

हादनसेंबलिसूद्दवजीरसुहब्बतसे॥ ६० ॥ अद्दुरसुल्ल्हान्ध्वमूपभलसजिकैंदल दिक्खि यसौंनिकले। वाहिफीलमुक्कसदसाहचढ्यो कंजिहक्कानिसानन्हानवढ्यो॥ ६१ ॥ बल केहरबख्शलकेबढतैं कटोपुरतोरनकेकढतैं ।गजबालमलंबसुतुहिपरोकलिमंडलमडल कूककरी॥ ६२ ॥ सिलसूकउरक्लनहूकदई होरिझोलभयानकरोलछई। अपसौंनउ पम्प्रतिगिरिद्वीदकनकारओपीतेदिद्दिक की॥ ६३ ॥ उनमसकलनकम्मालनरव्योर हिगबदंतदिखातनलञ्चा॥ तिरमैंहिलता यमिलैसमहेवदिगालकरालविडालकके ॥ ६४ ॥ हमगानकुसानकमदाक्बीजैमनउक्कत वीरनउेनसमैं। जिमबंधविरचनंकोलुरवतैम- नजौगिरजासवदारवतै॥ ६५ ॥ जिम-

जान्हविब्रह्मंडकटाहकतैं करखाकिउदीचि
जलाहकतैं। रचनाकिगुनत्रयतैंबिकसीघल
नाइमदिल्लियतैंनिकसी॥ ६६ ॥फुवहाक
नकीजहज्जारनकीहलकारबढीप्रतिहारन
की। मगडोरिनमप्पतफौजचलीउरमीजि-
मसागरतैंउछली॥ ६७ ॥उमडातडमाल
बलीबलकों भ्रमकातधुजातरसालनकों।
इकअक्खहिंनादरकोंगहिहैंइकअक्खन-
हिंक्रूरनमेंरहिहैं॥ ६८ ॥इकअक्खहिजि-
न्हिइरानलईइकअक्खहिंमंत्रिनसाहमई
।इकअक्खहिंखानकलीजफट्योरुखजोंब
सहादनपैपलट्यो॥ ६९ ॥इकअक्खहि
अप्पनसेनपतीसब जित्तहिंतोरिइरानत-
ती।इकअक्खहिंजित्तहिंनादरहीपतिदि-
ल्लियबुद्धिप्रमादरही॥ ७० ॥इमचंडचल्यो

दल दिल्लियको हठ जानि हगामिनके हियको। फनिस्सारगसत्त मुकाम करे पथ पानियसों ब-ससीपपरे॥ ७१ ॥ खटकोस इरान अनीकर ह्यो कमलस्थ चमूप मुकाम कह्यो। असवार हजार असी ८०००० उतरे अरु बीस २०००० कबीनन सज्ज अरे॥ ७२॥ दोहा ॥ दिल्लि यपति अब उत्तरिय परिय अनीक प्रपात। रह सिरखान दौरां रहिय बदल इरानिन बात ॥ ७३ ॥ दल ईस खानदौरां लिखि पत्र पठा-या ईरान ईस अग्गौं जुनरसी स सुनाया। तुमतो-खेतरारे चलुरग चलाया लाहोर आदि सूबा कदफैलफटाया॥ ७४॥ पंजाब पेस घांनां नि-ज आनन आया हिंदू सबै हराशी सीने सुलगा-या। दिलदौर और औरैं कर जोर लगाया गैनि-हस्पहान बुड्ढी पर लोभ लुभाया॥ ७५॥ और-

तब अनूप दिल्ली लिखि दाव चलाया जानी य-हैनको ऊबर तास बनाया। सैतानके सिखाये मगरूर मचाया दिल्लीस सौं नसं को दिल मस्तादि खाया ॥ ७६ ॥ मुलतानकी जमी पैं समसेरस जाया कसबीस की फतैकै मुलतान लुटाया। दरियाव कौं दगासौं लहि नाव लंघाया पाया पुकार सो पैं मुलतान पचाया ॥ ७७ ॥ चाहो-सुलाह जो तो करि जाकु पयानौं जो जगकी ज-रूरी तो देर न जानौं। दिल्लीसकी गुलामी प्रति रोज प्रमानौं मुलतान दरजमानैं बरनाय बभा-नौं ॥ ७८ ॥ इम पत्र खान दोरां पठये ति पठाये ईरानसाह मंत्री उमराव बुलाये। एकांत लै इ-जौं के अहवाल सुनाये भेजे तिरखान दोरां दल खोलि दिखाये ॥ ७९ ॥ ईरानसाह अकबी माताच कुली सौं तैं ही वजीर आनें अक आजि

खुलीसों। रातोनंहींनिहारेततबीरडुली
तों आलाबजोर आयेसमसेंतुलीसों॥ ८०॥
हिंदून राक आयासबसोरडानेंतोदूबला-
रख १०००० ताजीपरवैरैतपलानें। हत्थी
हजारजत्ते घनरूप घुमानेंलक्खोंसवार अ-
च्छेवरकूरखुमानें॥ ८१॥ तोपैंहजारदोयैं
नीसानफिरानें छोहैंलगे छवीनोंमदधीर भि-
रानें। लक्खोंपयादजंगीसमसेरसजानेंखुद
सोजरखानदोरांवरफोजरवजानें॥ ८२॥ रातो
न ल्हीजरखांकानाहककरेंनहैगाफिलजरा
तादिल्लीजरजोरजंवहै। सबहीसुलाहमंडें
करलोकिजंगनांउनतोयहैकहांईहमकोंदि
खलां॥ ८३॥ ईरानसाहअकबीसबकोंसुना
यकैंउमरावलीरबोलेमनमंत्रलायकैं। नि-
त अलीहाजीकाजीकरीमगाजीहुसैन

रुस्तुमरोसनरहीमसे ॥ ८४ ॥ बुल्लेकलीजखाँ
पैंश्रद्दवालपठावैं पाजीसुक्यौं बुलाये बरजो
र सुनावैं । जाहिल्ल दगाजनायो नाँकिस्स न
नाकहैंहमक्क हरामतोपैं कातिल्लकजाकहैं
॥ ८५ ॥ ईरानसाहग़ोसैं लिखिपत्रपठाया
आयाकलीजखाँपैं इनमंत्र उपाया । जुरि-
मल्लखाँकमर्दी दिल्ली वजीरजो दूजो सुभट
भुंजाजालमूसरीरजो ॥ ८६ ॥ मिलितीन
मंत्रकीनौं अपनीजमीनहैं असाहपै सुद्ध
मद अपनैं अधीनहै । इनसौं बखानदौरा
दुसमनमरायकैं कछु दंडदेरुपैयेदे हैं पठा-
यकैं ॥ ८७ ॥ इमसंत्रमंडिपच्छौत इपत्रपठा
योडरियेइजरनाँहीं हमकामबनायो । सज
रावरे रज्जहै तुमसौंनरारि हैं इकनाँजुखानदौ-
राँपर्दाहिमारिहैं ॥ ८८ ॥ तुमजामकीकहा-

वोनकबूलमामलैतबसज्जुरखानदौरांऐ-
हैंतमामलै। हमरावरेभटोंसैंमिलि
रिहैंईरानकीदुहाईबजमांवियारिहैं। ८९
॥ सुनिराहसाहनादरबरजोरकहाईपठांहि-
खानदौरांतुमसौंबलराई। सुनिराहखानदौ
रांसबसेनसजाईदुकुंओरहोतऐसैंवहर-
त्तिबिताई॥ ९० ॥ अबप्रातकालआयाक्क
कबाकुकुकानैंअरबिंदतैंउडेकेअलिरत्ति
रुकानैं। परदारकोरिछातीनरजारपलाया
गिरिराजकीगुफामैंतमतोमचलाया॥ ९१॥
दरघंटदेहरोंमैंबरनादबजायाचहिभागच
कचक्कीसुखमेलसजाया। तारेनमंदतेजी-
दबिब्बबदुरायामंथानग्वालगेहोंघनघोरघु
राया॥ ९२ ॥ तजिपंथचोरतक्केछिपनोंदरी
नमैंगहिमोनघूकबैठेतरुकोटरीनमैं। उदया

द्रिपैं अनुठीइकरोचिलरवाईचल चाटकेर
चौंकेचहकानिमचाई ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ सेन
खानदोरांसजियस्वामि धरम धरिसीस । अ-
नयसहादतमंडिइतरचिगसाहपरीस ॥
९४ ॥ षट्पदी ॥ कहियसहादतकजलबा-
सबैभवसमलुहृतदेहुसाहआदेसनरनाह-
कसिरतुट्टनतबलगअक्खियसाहपृथकलर
नौंनउचितअब ॥ कहौंअंकुरहिंसज-
हिंतुमहमकलीजसब कहितदपिभाडभुंज
ककुटिलसबकातरदिल्लीसदलपिक्ख्यौन
जातहमतैंप्रबलबिरचतलूटइरानबल ॥ ९५
॥ यहसुनिअक्खियसाहपृथकलरिमरकु
सहादतअधमसुनतडुलउडिभाडभुंजककुम
तिउट्टतचढिनिजदललैचलिअखानदोरां
प्रतियोंकहि । दीजैहमहिंसहायचमूअधिरा

जा कि जय चहि इम अक्खि जाय ईरान दलमि
ल्यो मुहल्ल वह्नुनल ल्यो सब भेद साह नादर स-
मुझि अधम सहादत उच्चरयो ॥ ९६ ॥ दोहा ॥
मूल सहादत जो मिल्यो चहि ईरान अधीस। प-
च्यो यों कहि मुक्कुली अतुल भार मम सीस ॥ ९७
सुनि साह खान दौरान चढि वेग चला या वाकोस-
हाय दैवे कुलको हलाया। दिल्लीसकी च
मूको अधिराज वीर जो हर वल्ल हैरु हंक्यो ध-
स नव्व धीर जो ॥ ९८ ॥ अच्छे सिपाह लेके
अवल आह उडाये मानों घटा उदीची आसार स
नाये। धरनी धमंकि धुजी सिर फूटि सेसका दि
नचंद सा दिखान्नों दिपनों दिनेसका ॥ ९९ ॥
दलभार मार दड्ढा बरकी बराहकी कमठेस पिट्ठि
फट्टी बल आह आहकी। काली तथा कपाली
आये उछाह सों बेताल प्रेत नच्चे चतुरंग चाह

सौं ॥ १०० ॥ गनसेनलंकगिरीगोमाखुगह कै।
जंजीरतोपजालीगजघंटबहहके। बैंडेहजा
रहत्थीबढिलैंनबिस्पारेताजीतुरंगतत्तेकम
लेलतसारे ॥ १०१ ॥ चक्रिबीररवानदेरौंइमस्से
नचलाईईसलकीअनीपैंअबगगउराई।
उलतैंहुसेनआयोसुनिय्याहिआतहीपालाल
लौंपुकारैंबकुंचीमजातही ॥ १०२ ॥ सकल-
नअंकसत्रह १७९५ बदिफग्गुनमासे र-
बिदेरवनेंरुकानौंतरकारितमासे। दुहुंओर
तोपदगीधसिधूलधोरनीकनैंबिसानकारे
ग्रातिगाजउप्फानी ॥ १०३ ॥ उगमारिगेमदिल्ली
कोंगिरिकूटनिरानैंसोरेलातडागलिगुझेपक्ष प-
च्छिपिरानैं। आकासआच्छरीवेगनगानम-
चायोडंकैंसुडाकिनीवेरसारासरचायो ॥ १०४ ॥
गोलेगरूरगजैंहत्थीनफ्लकैंबारदगारअगे

संपाकिसलक्कैं। आवाजतोपउड्डैंजिमसंख-
सागुसौंज्वालाकरालजगैंबढिचंद्रभानुसौं
॥१०५॥ आकासतूटिकंडेउडिजातओरसे
समसेरमेहनछ्बैंनभमत्तमोरसे। कटकूटका-
टिझारैंगोलेअरातिकीमानौंपिखानिपारैंग-
जभद्रजातिकी॥१०६॥ हुसियारखानदो-
ंसमसेरचलाईपक्कमीसुरंगपिक्कबीलगिर
चलाई॥फूटेकपालभेजेतरवारितरछैंके-
कुंलकटेंमैंगरसालगरक्कैं॥१०७॥केतेतु
रवारबहेंअसवारउलहैंकेईकटारभरवेहियं
कालिकचहैं।नागेदखानपुहैंमरकातरनेंह
टंकारआपनजौंसिलासुचढैं॥१०८॥ख-
यलअवेतसुमौंलकेकरावसौंमानोंगजारम
तोसरसेसराबसौं।काटिफिफ्फरेकलेजेफाविफों
रपुरावैंहैंनासमानौंहिरसूजिमजेबकनावैं

॥ १०९ ॥ सुंडाकरीनकट्टैंजिमपन्नगकारेसैं
भंभयानबज्जैंभटमिन्ननगारे। आकासआगि
परेसुरलोकउजारेमहरादिलोकवारेजनलो
कसिधारे ॥ ११० ॥ बिनुचेतबीरबक्कैंबकुद्दं
तबजावैंघोरेअनेकघुम्मैंसुरसफग्गहल्लावैं।
धाराल्लबाढबज्जैंअतिबीरबकारैंसमसेरकोंसि
राहैंसुरबमारउचारैं ॥ १११ ॥ पंचासलोयपर
मैरौंलल्लकारलगादैंलैलेलत्लामलोहिचउस
ट्ठि ६४ चढावैं। केसीसईसलैकैंगलभेदसिर
वैंकेअच्छरीअनूठीबरमालगिरावैं ॥ ११२ ॥
षट्पदी ॥ तीनपहरतरवारिखानदौरांबरब-
ज्जियअनियमोरिईरानसबलदिल्लियजय
सज्जिय ॥ रविअत्थयतरनरुक्किय[illegible]
अड्डुरह ॥ खेतसहादतखानलखनहैरिसब
कुबारहपाग्गियकहौंनपायोतदपिसैरखोसल

ईरानदलयहजानिभाडभंजकुअप्रमद्भुतप
रायउच्छृङ्खल ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ खानसहा
दतदूतदलपठयोनृपतिपास। सोहिइरा
निनजितिकैंगहिदियकाराबास ॥ ११४ ॥
अबमदोसअागमअधिकअरुतुमघाय
लअंग। कहिंहुरावकुमदलिकरिजानकु
कुनामजंग ॥ ११५ ॥ बदलिसूढईरानके
बरलसुरसहादतखान। यहकरेबकहिमुक
स्योबनिसठदीवान ॥ ११६ ॥ सेनापति
सहसुनिफिर्योजयजराकछुकउबारि। सो
सिरसमघायलसदनचल्योनृजाननहारि
॥ ११७ ॥ षट्पदी ॥ इतदिल्लीसरजीरखा
नदोरहिंसुनिआवतलारनताकहमहठहष्ट
वकुल्याजउम्मदत कहिमसाहसौंजायप्र
जिंगकालसेनापति। कजलपासलगिपि-

हिआतडारनइतआपति जैसेबाहिदेनदल
पातेमदतितोपनबल्लरीकतलिनहिं
तआविदेगो जनगजबगजरविथार..
गिनहिं॥ ११८ ।दोहा ।यहवजीरआत
घोर कियरखलोकमरदीरखान ।सेनतारू
सेनेसकोपिलोंतोपनभान॥ ११९ ॥
खानदोरहनरनगोलनउडिगोन ।
घायलहूवतदपिकुलआयउडेरनघोरन॥
१२० ॥ अतिघायरखानदोराहूसदे
यारखूनीकलीजरवोंकोंसवजीरबुलाया
मनमंत्रनीतिमडीसबकोंहिसुनायासोत
सुतोकुवाज्योंहमज्योंनगुमाया
अवतीनमनआदसे हमसोतुम
सोंलराईइकहोनदीजे। दिल्लीसहिबुह
जैनदरनमिलावोतीजेननाहिदिल्लीतुम

जायक्ष्मिरच्चो ॥ १२२ ॥ मंगोंसुदेरूपैयेभाँति
गोनवराबोकीनी तुम्है जुलेसों क्योंसोवक-
हावो। सोंञ्जरिवखानदोरोंबपुसद्यबिहा-
योसुनिसाहपेसुकुम्मद अतिसोकअधायो
॥ १२३ ॥ अबरवांकलीजकौंहिंसेनापति
कीनोपैअत्थभाइभुजककेअत्थनदीनों
।इतकौंकुसाहनादरअकुलायविचारीउ-
मरावइक्कखिल्लीमसेनदुखारी ॥ १२४ ॥
तवहीकलीजरवांपौलिरिवपत्रपठायालेदं
डकेरुपैयेहमगोंनउपाय्रा । सुनिसोकली
जरवांक्रूअतिमोदबढायारकांतसाह अ-
गौंअभपञ्चबनाया ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ क-
हैंकलीजरुकमरदीसाहअगगकरजोरि ।
सेनापतिजास्योसमुक्तिदेकुललनअबछोरि
॥ १२६ ॥ इक्ककोटिदमदम्मलेनादरपञ्छो।

जात॥ सो हि जल अवलीकर कुलरैंन कुमा-
हिलात॥ १२७॥ सनि साह यह मंत्र नवनाक-
र प्रति लिखवाय। दल को ढिल्ले जात कर अम-
नन मिलन उपाय॥ १२८॥ इक्क भाग अजु-
हील ह कुइ क्क जाय स लाहोर। इक्क भिन्न कुल ग्र-
ल अकजाइ मली जे दस ओर॥ १२९॥ यह सु-
नि नादरसाह अदकर न बिचारिय युद्ध। खान
सहादत जानि यह अब प्रभजस्बो अघ उद्ध॥
१३०॥ पादाकुलकम्॥ खान सहादत राह
बिचारी नौ हि अवर को जमद आरी। आलखा
नदौरां जब देहै सैना पति तब मो हि बनैहै॥
१३१॥ यहै बिचारि वजीर मिलायो कलह कुम-
ग्रा च यह प्रभरायो। साह कली जि किय उरै आप
तिय तैंज स्यो सहादत अब थाति॥ १३२॥
नादर प्रति इम है न सुनायै कथा कलीजि कुम-

लिंबहकारे। दिल्लियसाजदयोतुमकांरबयें
नाहैंलैतरजानकहतअब ॥ १३३ ॥ खान
कलीजमिलनमिसचुल्लकुपुनिकोरिकेदरवी
जासिरचुल्लकु। तबतुमलैबसिसाहमुकुम-
दकैहैंहुतहितजाहिंसाहसहद ॥ १२४ ॥
तबहुनरखानकलीजबुलायउकरनअवह
सहहुतआयउ। तबहिपकोरिकारानिवड़ा
लोअअनादरआलिगहसम्हारयो ॥ १२५ ॥
औनिकेसुनकुकलीजकहाबकुदिल्लीस-
हियंहेमिलनचुलादकु। सिरकुरानधरिसप-
थउचारतरकालनबैठहिंहितसम्मत ॥ १२६ ॥
तबहिंकलीजपआलिरिगप्रेरियआपक्रमिलन
हनकुहितहेरिय। यहसुनितस्वतरवानआरी
हियावलतसाहबकुबीरनरोहिय ॥ १२७ ॥
कोउकहतजाकुननहजरतकोउकहतअ-

लधेनु हयकुंजर एडक अजरु महिष दंबर देसम
॥ १५९ ॥ कटे कहर को गिने अनंत न प्रलयास
ल्यो अय जामधो रपल। यह सुनि खानकलीज
अरज किय तब नादर यह रुक्कि अभय दिय
॥ १६० ॥ फग्गुन मास विसद द्वादसि दिन इम पु
रकतल किय उ ईरानिन । नादर दल- भय अ-
बजानिय तब लस भट नको ग्रसि लानिय ॥
१६१ ॥ रहि नादर दुव मास बितायउ दिल्लीप
तिसन लिखित लिखायउ। होसैं साहजु हिंदु
वानपति सो जित्यो नादर ईरानपति ॥ १६२ ॥
ज्यान मातबर खांनिका किय उसब सो मैं लियउ
अधीन भयउ अमल। इमलिखाय नादर दलालि
नों कहुन मुकुम दअादर किनों ॥ १६३ ॥
छिन्नि बिन मूलि लई सब बर बरसन महमन ९७
अनमोल जवाहर। हीराइक आयत तन्तु रयु

त्तजोंबुं दीसभोज कियबाफ़ुल ॥१६४॥ सो
हीराकुकिन्निलियनादर तरवलदम्मनवकोटि
९०००००००० मुद्रनबर। आयुधअतुलबसन
भूखनप्रिय अच्छेसबइत्यादि किन्निलिय॥
१६५॥रहिदुमासदिल्लियइमनादरकरिगय
कुच्छसेनसहसादर। अबइलखानसहादतजा
नीमैंहरामयहसाहपिछानी॥१६६॥जिय
तनोंहिंछोरहिंजरतइत्थयहबिच्चारिबिसरव
यनरच्योसठ। साहसुकुम्भदलेजनसायोलगि
कुम्भयासबबिभवलुटायो॥१६७॥दिल्लिय
निवलसबनअबजानियपुनिमरहट्टनहल्ल
प्रमानिय। इतबुधसिंहदेहअबछोरयोबुं
दियराजउदधिबिचबोरयो॥१६८॥दोहा
॥पुरबेंअसनकोसनय२नामबाघपुरग्राम
॥तत्थदेहसंभरतजियनिजबिथारिउदना-

म॥ १६९ ॥ संबतखटनवसत्तइक१७९६, अमा ३० रुमाधदमास। इमसुबुद्ध अनिरुद्ध सुवकियपरलोकनिवास॥ १७०॥ मेलकरम सब बिधिसधियमोनभूमिगजदान। बसुभा-बिनुकिहिं घरबनै बैदिकमृतकबिधान ॥ १७१॥ रम्यमहल १ सर २ बाग ३ रचिकरन नामबयकाल। सेवनआलमसाहकोसधिरहो बुद्धनृपाल॥ १७२ ॥ कछवाहीरानी कियउ पुरबिरचनप्रारंभ। जयनिवासअभिधानक-रिथप्पनभुवजसथंभ॥ १७३ ॥ बिष्नुअ तमंदिरबिरचिपुरताकेबहुपास। रानीरचन बिचारिकियजैपुरउपमितिजास॥ १७४ ॥ हैंगनेसघंटीबिहितताकेबाहिरतत्थ। दिस उत्तरकेदारतैंलग्गोबसनअतिअत्थ॥ १७५॥ बिचबलत्वरतैंहँबनिसक्योपकुपक्कआलयप॰

ठ।बिनुबुंदियरुकिबोबद्धरिलुंगनभोनभ-
लीठ॥१७६॥निलयजोधरहिनृपअनुज
न्यायजिल्लारिलसुबार।पुरतैंपच्छिमकोसपर
कामनरच्योकासार॥१७७॥नामजोधसा-
गरसरसुनिबसस्थरच्चितनवीन।बागमहलस
रसेतुबिचप्रभुमंदिरछिपीन॥१७८॥भूप-
तिभावरगंगभोजिहिंपुरपूरबजत्थ।बिरचे
उपबनबापिकाअपिहजारनअत्थ॥१७९
॥कोटवालनृपकोकथितरामचंदअभिधान।
बिरचेबापीबागजिहिंपुरबिचपच्छिमथान
॥१८०॥गजसुखभूपपुरोहितकृपपच्छिमदि
सपुरपास।दधिमतिदेबीकोसदनबिरच्यो
बिमलबिलास॥१८१॥तत्थहिबेलरूना
पिकाछलीकियजिहिंदीव।पुरकेदक्खिन
प्रातपुनिऊंचेमहलअतीव॥१८२॥नृपदा

बकुंदलबलवत।हैहाजरिभटलक्खकटारे पैहोमिलिनभलोफलप्यारे॥१३८॥काहू कीनसाहस्रुतिकीनी।चल्योमिलनसेनकुं क हिंलीनी।संगसुलेयपंचसत५००सादीपानी पथइलगयउप्रमादी॥१३९॥पावकोसलग नादरपुलकुंगयसम्मुहबेसररथजुत्तह॥ इमईरानअनीकगयोयहडोढीलगआय उसम्मुहवह॥१४०॥जायसभाबैठेइकथ्था सनभाईकहिकुबदुवसंभासन।तबनादरदि ल्लीसहिंअवरवाहिंसचिवकुसचिवमिलेहि तरकवाहिं॥१४१॥तुमवजीरकुल्लकुंयह हंयातैंहमवजीररक्खाहिंहितताति।तब दिल्लीसपत्रलिखिनिजकरभुल्लोरचीयवजी रपापपर॥१४२॥यहकागरनादरकरअ प्पियनादरताहिबुलावनअप्पिय।तबपत्री

सहअसवारपठायेचंडतिकगगरलैकुचलाये ॥१५३॥तेउद्धतआयेदिल्लियदलबदतव जीरवजीरकुजेबल।यहसुनिखानकमरदी वंपिंग निसहचल्योनाहिंकछुजपिग॥ १५४॥तबहिमेंअक्खियउमर वजंग वजीरखकु बकुनन।पापीजननसुनाह रिक्षानैंबि रीतहिंअकृलबखानैं॥१५५। काहि नजीरलकु नकोउकारिहैंसामसा हुहमदोउ।इमकहिलैदैसतअसवारनगो वजीरचितमंत्रबिचारन॥१५६॥सोकुनज रिदैदीकियनादरदिल्लियदलसुनिभजिगर हार॥अबअयानईरानसाहको अयउ पुरदिल्लियउद्धलभ्भारि॥१५७॥सकसरक्व कासराह्निक१७९५हायनपरिफग्गुनसित दसमि१०चलायअ।इमनाद दिल्लियपुर।

आयउ होय निरंकुस तोर चलायउ ॥ १४८ ॥
साह मुहम्मदखान सहादत बहुरि वजीर सुरं
कलीजबत । रच्यारि हि के दी करि आनें ईस
नी दिल्लिय प्रबिसानें ॥ १४९ ॥ अथ मुरक्ष
महल्लन निवास कियदल मिल्लान नगरै अंतर
देय । तत्थ रहत निस दोय बिताई पैसेना अ-
नुसन अकुलाई ॥ १५० ॥ कोउन बनिक ह
हूं खोलें बैठे हरि गेहन न नबोलें । दलनादर प्र
ति अरजदई तब अत्थ बनिक बेचें न अन्न अ-
र ॥ १५१ ॥ तंहं किय अरज मह बंदीजन रा-
जा जुगल किशोर प्रीति पन । दलइरानद हस्सि
गन डोलत तयाँनैं बनिक बजारन खोलत ॥ १५२
तब नादर पठइ कहि जाहर बसकु जाय मसद
पुर बाहिर । त्व आदेस अथीन कटक चढि
हिर पुर के जा लग्यो बढि ॥ १५३ ॥ तिहिं

रिलपुर उदघोस बिथार्यो महलन मैं नाद कू
हूनि डार्यो। बाको कटक भजत अब या तें पच्छ
कराकु दूजन सबन निपातें॥ १५४॥ नंद सुनि
जनन सुरे दरवाजे बडु बंदूकरू पत्थर बाजे। प-
हरदे थल समेल पचाई अब नादर प्रति अरज
रचाई॥ १५५॥ कुकम अधीन जनल बाहिर ह
मपुर जन जानन दे लकुटिल कम। बंदूकन अ्रा-
यन पुनि मारत हम सुरावरो कथित निहारत॥
१५६॥ निज दल अरजन मन्त्री करि नादर अप्पन
हिं लरवन चल्यो अन अ्रादर। सुदि सलद पिनाहि
जन सारे यह कूपर पत्थर बहु मार॥ १५७॥ नाद
र कों कुरसाय तब भारी कहदसु हि निकरि सि निका
सी। जन लाहि उज्ज्वी करि बुल्ली ईरा निन यह
सुनि रखगुल्यो॥ १५८॥ भयो कतल दिल्लि-
य पुर भारी लरवन कटे बालन रू नारी। खानबिड